'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्यालग्न : तृतीयभाव : राहु

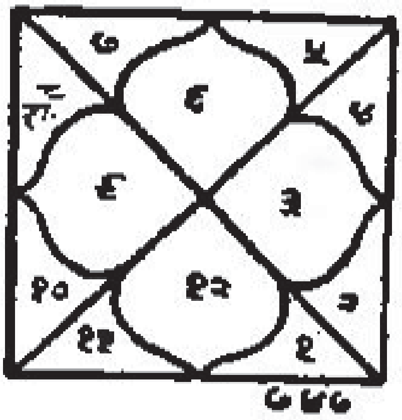

तीसरे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से परेशानी मिलती है।

ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों एवं हिम्मत के बल पर सफलता प्राप्त करता है तथा स्वार्थ-सिद्धि के लिए भले-बुरे का विचार नहीं करता।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्या लग्न : चतुर्थभाव : राहु

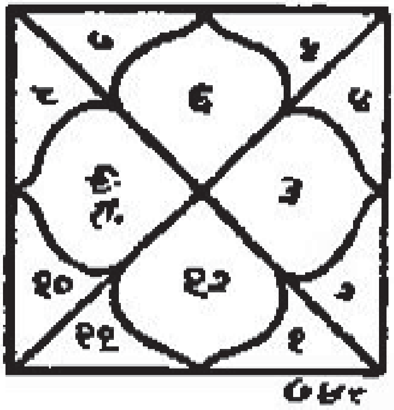

चौथे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को माता का अच्छा सुख मिलता है, परन्तु भूमि, भवन एवं घरेलू सुख में कमी रहती है। घरेलू कारणों से कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है। परदेश में रहने का योग भी उपस्थित होता है। जन्म-भूमि में उसे दुःख मिलता है, परन्तु बाहरी स्थान में सुख प्राप्त होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्या लग्न : पंचमभाव : राहु

पाँचवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की सन्तान-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्या के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं।

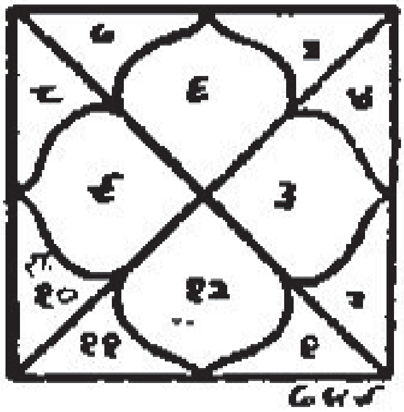

ऐसा व्यक्ति विद्वान् न होने पर भी बातें करने में बड़ा चतुर होता है तथा अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए सत्यासत्य का विचार भी नहीं करता। कभी-कभी उसे चिन्ताएँ भी परेशान करती रहती हैं।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्या लग्न : षष्ठभाव : राहु

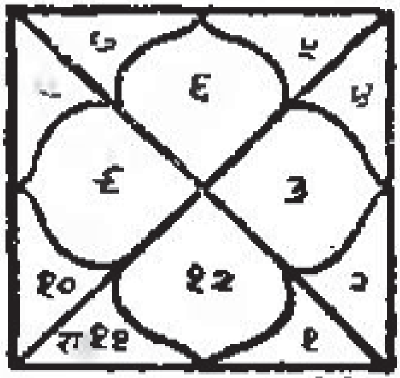

७४०

छठे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर प्रभावशाली रहता है तथा झगड़ों एवं संकटों के समय हिम्मत तथा धैर्य से काम लेकर, अपनी कमजोरी को प्रकट नहीं होने देता।

वह कठिन संकटों के समय भी विचलित नहीं होता और उन पर अपनी गुप्त युक्तियों द्वारा नियन्त्रण पा लेता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्या लग्न : सप्तमभाव : राहु

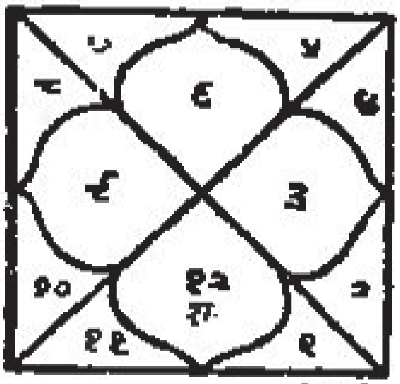

७४१

सातवें भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं। उसको मूत्रेन्द्रिय में विकार भी हो सकता है।

ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के बल पर ही अपना काम चलाता रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्या लग्न : अष्टमभाव : राहु

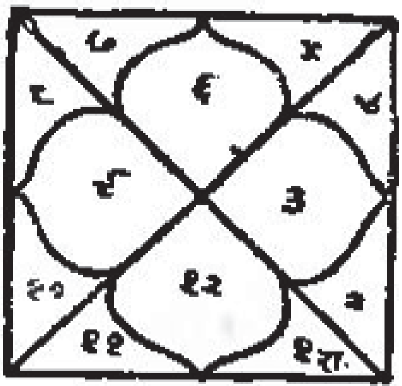

७४२

आठवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को जीवन में अनेक बार खतरों का सामना करना पड़ता है तथा मृत्यु-तुल्य कष्ट भी भोगने पड़ते हैं। उसके पेट में भी विकार रहता है।

गुप्त युक्तियों, धैर्य तथा साहस के बल पर वह आगे बढ़ता है। उसे चिन्ताएँ तथा परेशानियाँ हमेशा घेरे रहती हैं।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्या लग्न : नवमभाव : राहु

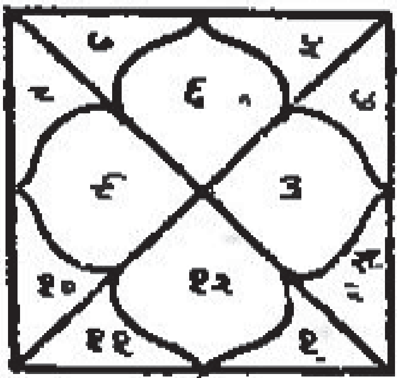

७४३

नवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक अपनी भाग्योन्नति के लिए कठोर परिश्रम करता है तथा धर्म का उचित पालन नहीं कर पाता।

कभी-कभी उसे भाग्य के विषय में घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त युक्तियों, धैर्य तथा साहस के बल पर ही थोड़ी बहुत उन्नति कर पाता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्या लग्न : दशमभाव : राहु

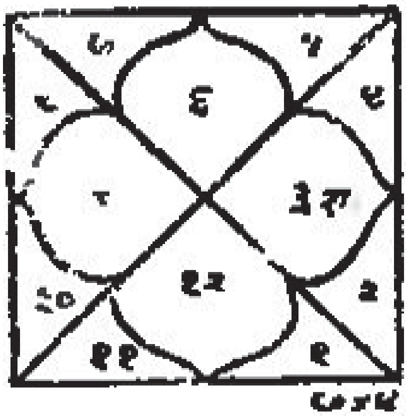

दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित उच्च 'राहु' के प्रभाव से जातक अपने पिता के साथ संघर्ष करता हुआ उन्नति करता है। राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी उसे गुप्त युक्ति एवं चातुर्य के बल पर ही सम्मान एवं सफलता की प्राप्ति होती है। कभी-कभी संकट भी आते हैं, परन्तु फिर स्थिति ठीक हो आती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्या लग्न : एकादशभाव : राहु

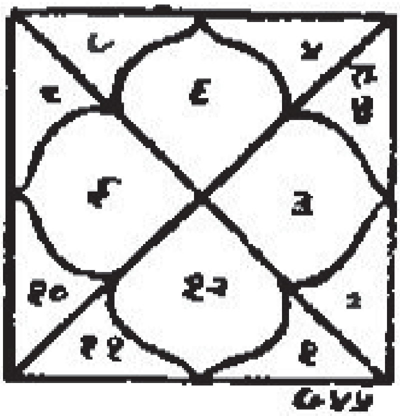

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की आमदनी खूब रहती है, परन्तु कठिनाइयों का सामना भी बहुत करना पड़ता है। उसे कभी बहुत लाभ तो कभी बहुत घाटा होता है। वह अपनी गुप्त युक्तियों, धैर्य, साहस तथा परिश्रम के सहारे लाभ उठाता है, परन्तु कभी-कभी धोखा भी खा जाता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : राहु

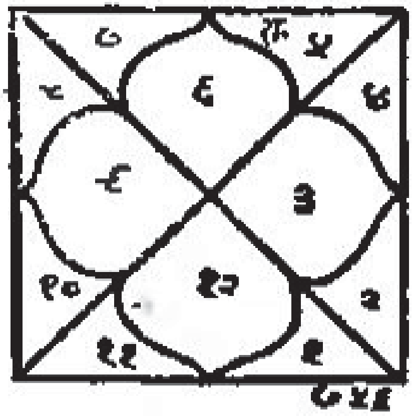

बारहवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को खर्च-सम्बन्धी कठिनाइयाँ बहुत रहती हैं तथा बाहरी सम्पर्कों से भी कष्ट होता है।

ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों, धैर्य, साहस तथा परिश्रम के सहारे अपना खर्च चलाता है। कभी-कभी उसे आकस्मिक धन-लाभ भी हो जाता है।

'कन्या' लग्न में 'केतु'

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्या लग्न : प्रथमभाव : केतु

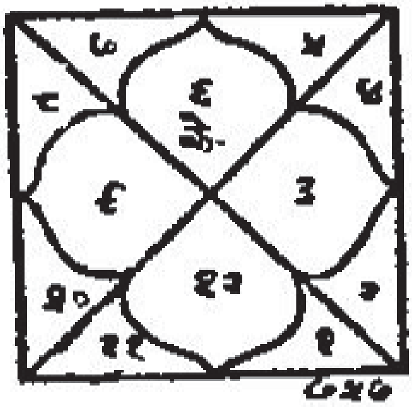

पहले भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को शारीरिक कष्ट एवं चिन्ताओं का सामना करना पड़ता है। शरीर पर कोई गहरी चोट लगने अथवा रोग होने का योग भी बनता है। शारीरिक सौन्दर्य में कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों वाला, हिम्मती, धैर्यवान् तथा अक्खड़ स्वभाव का होता है।

'कन्या' लग्न की कुंडली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वितीयभाव : केतु

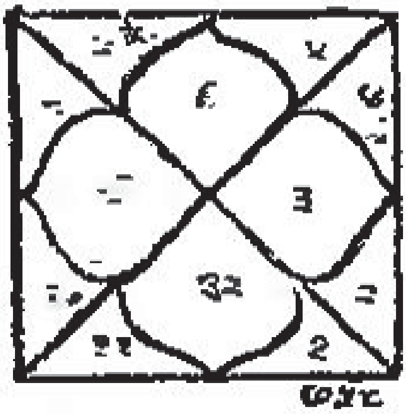

दूसरे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के धन तथा कौटुम्बिक सुख में कमी आती है। कभी-कभी आकस्मिक धन-हानि भी होती है तो कभी-कभी आकस्मिक रूप से धन-लाभ भी हो जाता है।

ऐसा व्यक्ति धन की वृद्धि के लिए अथक परिश्रम करता है, तथा हर समय परेशान बना रहता है।

'कन्या' लग्न की कुंडली में 'तृतीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्या लग्न : तृतीयभाव : केतु

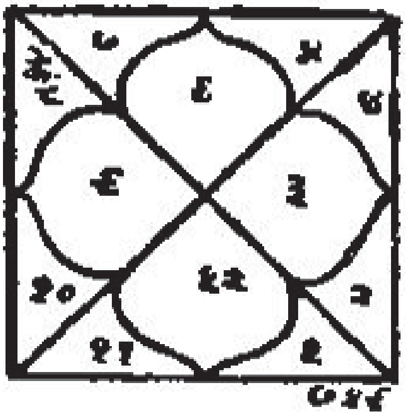

तीसरे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से परेशानी मिलती है।

ऐसा व्यक्ति संकट के समय भी हिम्मत नहीं हारता तथा अपने ही बाहु-बल का भरोसा रखता है। वह कठिन परिश्रमी भी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्या लग्न : चतुर्थभाव : केतु

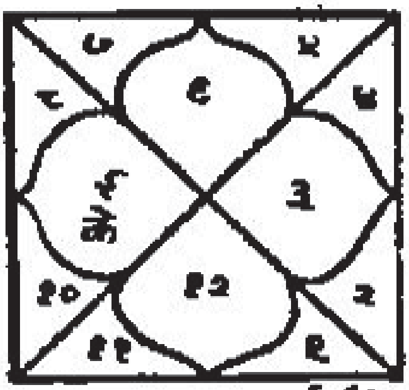

७८०

चौथे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। घरेलू जीवन ठाठदार होता है। इसके लिए उसे विशेष परिश्रम भी करना पड़ता है।

कभी-कभी घरेलू सुख में संकट भी आता है और कभी सुख में वृद्धि भी हो जाती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्या लग्न : पंचमभाव : केतु

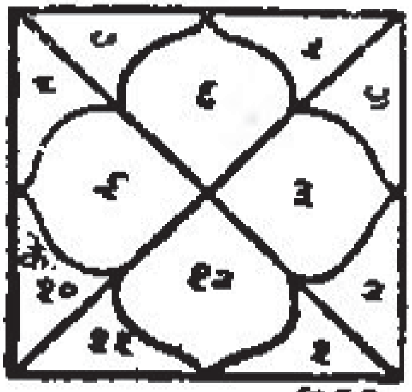

७८१

पाँचवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से चिन्ता रहती है तथा विद्या-प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है।

ऐसा व्यक्ति अपनी विद्या-बुद्धि में कमी को स्वयं अनुभव करता है, परन्तु फिर भी स्वयं को बड़ा समझदार तथा योग्य प्रदर्शित करता है। वह बातचीत में बड़ा तेज होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्या लग्न : षष्ठभाव : केतु

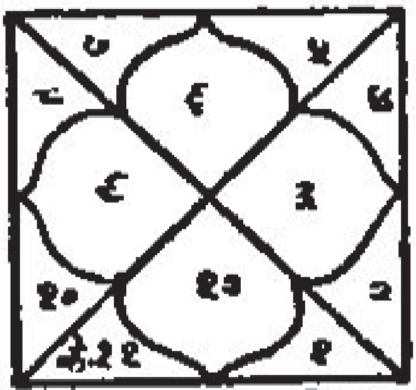

७८२

छठे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अपना विशेष प्रभाव रखता है। उसे ननसाल-पक्ष से परेशानी उठानी पड़ती है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा धैर्यवान्, गुप्त युक्तियों वाला, बहादुर, निर्भय तथा अक्खड़ स्वभाव का होता है और इन्हीं विशेषताओं के कारण अपना काम बना लेने में सफलता भी प्राप्त करता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्यालग्न : सप्तमभाव : केतु

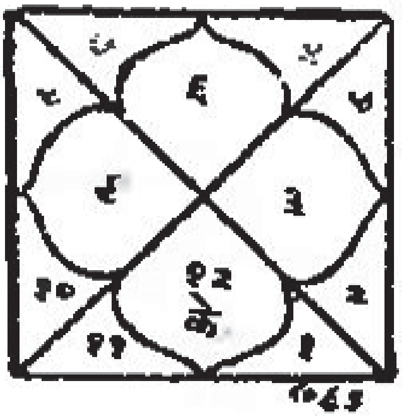

सातवें भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की स्त्री-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी बड़ी कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु वह अपनी गुप्त युक्ति, धैर्य तथा साहस के बल पर उनके निराकरण का प्रयत्न करता है। उसका गृहस्थ-जीवन बड़ी कठिनाइयों से सफल बनता है। उसकी मूत्रेन्द्रिय में विकार होने की संभावना भी रहती है।

'कन्या' लग्न की कुंडली में 'अष्टमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्यालग्न : अष्टमभाव : केतु

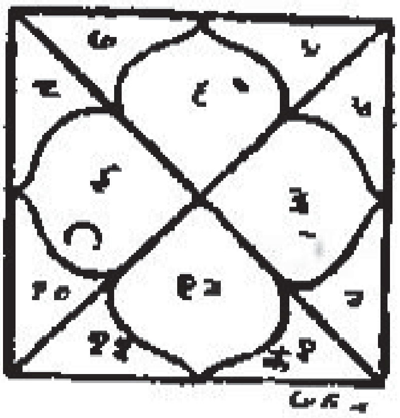

आठवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के जीवन में अनेक बार प्राणान्तक कष्ट उपस्थित होता है तथा पुरातत्त्व की हानि भी होती है। उसके पेट में भी विकार रहता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी, क्रोधी, धैर्यवान्, हिम्मत तथा तेजी से काम करने वाला होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्यालग्न : नवमभाव : केतु

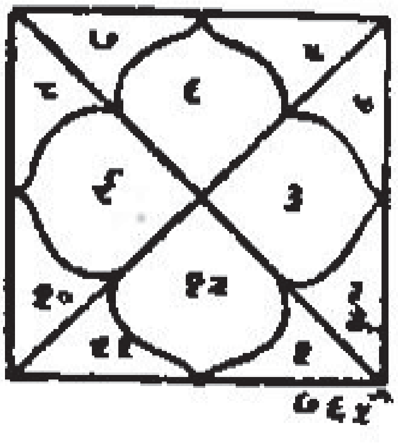

नवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की धर्म-क्षेत्र में कमी रहती है तथा भाग्योन्नति में भी बड़े संकट आते हैं।

ऐसा व्यक्ति अपने चातुर्य, गुप्त युक्तियों, बुद्धि तथा साहस के बल पर संकटों से अपनी रक्षा करता है तथा कभी-कभी विशेष चिन्तनीय स्थितियों में होकर भी गुजरता है।

'कन्या' लग्न की कुंडली में 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्या लग्न : दशमभाव : केतु

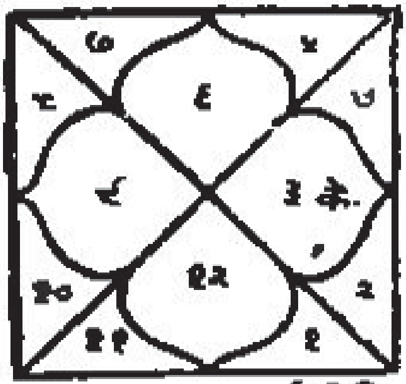

७६६

दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को पिता के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक प्रभाव स्थापित नहीं होता। उसे मान-हानि, धन-हानि आदि का शिकार बनना पड़ता है। वह झगड़े-झंझट तथा परेशानियों में अक्सर फंसता रहता है।

'कन्या' लग्न की कुंडली में 'एकादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्या लग्न : एकादशभाव : केतु

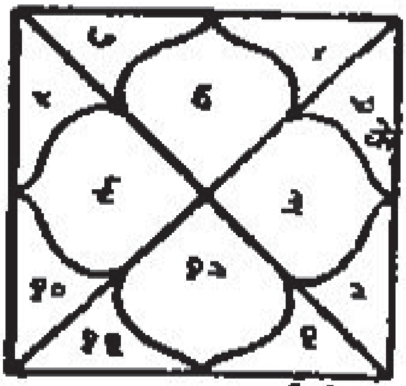

७६७

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की आमदनी के साधनों में वृद्धि होती है, परन्तु उसे मानसिक-परेशानियाँ भी बहुत रहती हैं। कभी-कभी उसे संकट एवं हानि का सामना करना पड़ता है तो कभी-कभी आकस्मिक लाभ भी होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा धैर्यवान् तथा परिश्रमी होता है।

'कन्या' लग्न की कुम्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : केतु

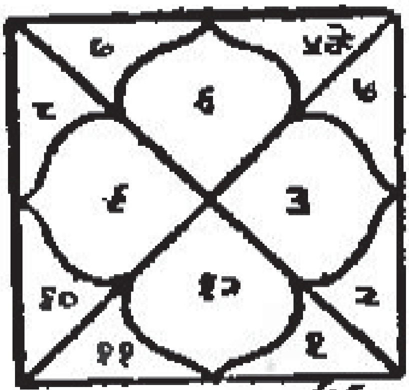

७६८

बारहवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को खर्च के कारण अनेक चिन्ताओं तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध भी कष्टकारक सिद्ध होते हैं। वह कभी-कभी संकटों का शिकार भी बनता है, परन्तु अपने धैर्य एवं गुप्त युक्तियों के बल पर जैसे-तैसे छुटकारा भी पा लेता है।

'तुला' लग्न

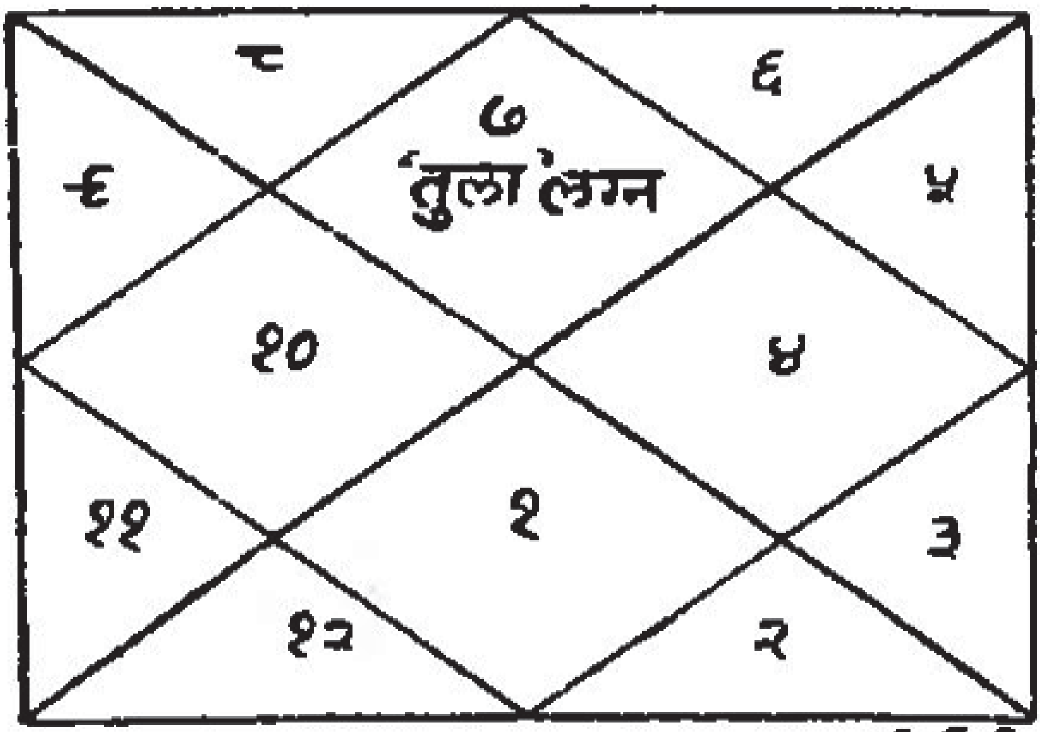

७६६

['तुला' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'तुला' लग्न का फलादेश

'तुला' लग्न में जन्म लेने वाला जातक गौर वर्ण, शिथिल शरीर तथा मोटी नाक वाला होता है। वह कफ प्रकृति वाला एवं वीर्यविकारयुक्त भी होता है।

ऐसा व्यक्ति गुणी, धनी, यशस्वी, परोपकारी, प्रियवादी, सत्यवादी, सतोगुणी, तीर्थ-प्रेमी, निर्लोभ, व्यवसाय-कुशल, ज्योतिषी, भ्रमणशील तथा अपने कुल का भूषण होता है। वह राज्य द्वारा सम्मानित, देव-पूजन में चित्त लगानेवाला तथा पर-स्त्रियों से प्रेम रखने वाला भी होता है।

'तुला' लग्न में जन्म लेने वाले जातक को अपनी आरंभिक अवस्था में दुःख भोगना पड़ता है, मध्यमावस्था में वह सुख प्राप्त करता है तथा अन्तिमावस्था सामान्य स्थिति में बीतती है।

'तुला' लग्न के जातक का भाग्योदय ३१ अथवा ३२ वर्ष की आयु में होता है।

'तुला' लग्न वालों की अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या ७७० से ८७७ के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली से ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

'तुला' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१—'तुला' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७७० से ७८१ के बीच देखना चाहिए।

२—'तुला' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'सूर्य'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ७७०
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ७७१
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ७७२
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७७३
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७७४
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ७७५
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ७७६
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ७७७
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ७७८
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ७७९
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ७८०
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ७८१

'तुला' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१—'तुला' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७८२ से ७९३ के बीच देखना चाहिए।

२—'तुला' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दिन 'चन्द्रमा'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ७८२
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ७८३
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ७८४
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७८५
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७८६
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ७८७

(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ७८८
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ७८९
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ७९०
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ७९१
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ७९२
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ७९३

'तुला' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१—'तुला' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी फलादेश संख्या उदाहरण-कुण्डली ७९४ से ८०५ के बीच देखना चाहिए।

२—'तुला' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मंगल'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ७९४
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ७९५
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ७९६
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७९७
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७९८
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ७९९
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८००
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८०१
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ८०२
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ८०३
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ८०४
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ८०५

'तुला' लग्न में 'बुध' का फलादेश

१—'तुला' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८०६ से ८१७ के बीच देखना चाहिए।

२—'तुला' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली से विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल'

का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'बुध'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ८०६
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ८०७
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ८०८
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ८०९
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ८१०
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ८११
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८१२
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८१३
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ८१४
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ८१५
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ८१६
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ८१७

'तुला' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१—'तुला' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८१८ से ८२९ के बीच देखना चाहिए।

२—'तुला' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'गुरु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ८१८
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ८१९
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ८२०
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ८२१
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ८२२
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ८२३
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८२४
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८२५
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ८२६
(ञ) 'मकर' राशि-पर हो तो संख्या ८२७
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ८२८
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ८२९

यस

'तुला' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१—'तुला' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८३० से ८४१ के बीच देखना चाहिए।

२—'तुला' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ८३०
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ८३१
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ८३२
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ८३३
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ८३४
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ८३५
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८३६
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८३७
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ८३८
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ८३९
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ८४०
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ८४१

'तुला' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१. 'तुला' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८४२ से ८५३ के बीच देखना चाहिए।

२. 'तुला' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए।

जिस वर्ष में 'शनि'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ८४२
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ८४३
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ८४४
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ८४५
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ८४६
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ८४७

(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८४८
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८४९
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ८५०
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ८५१
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ८५२
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ८५३

'तुला' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१. 'तुला' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८५४ से ८६५ के बीच देखना चाहिए।

२. 'तुला' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—
(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ८५४
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ८५५
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ८५६
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ८५७
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ८५८
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ८५९
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८६०
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८६१
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ८६२
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ८६३
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ८६४
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ८६५

'वृष' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१. 'तुला' लग्न वालों की अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८६६ से ८७७ के बीच देखना चाहिए।

२. 'तुला' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु'

का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'केतु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ८६६
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ८३७
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ८६८
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ८६९
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ८७०
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ८७१
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८७२
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८७३
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ८७४
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ८७५
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ८७६
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ८७७

'तुला' लग्न में 'सूर्य'

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुलालग्न : प्रथमभाव : सूर्य

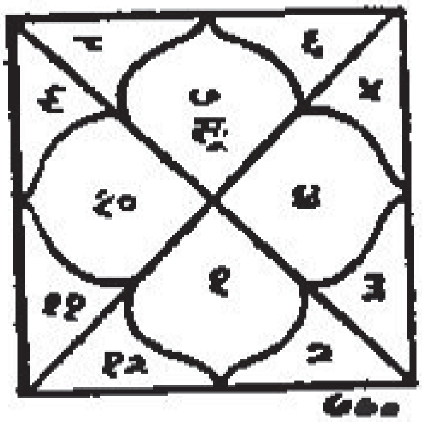

८८०

शरीर-स्थान में अपने शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित नीच के शनि के प्रभाव से जातक को शरीर में सदा दुर्बलता तथा सौन्दर्य की कमी का अनुभव होता है। वह किसी की गुलामी करने में हानि समझता है। पराक्रम की भी कमी रहती है। सातवीं उच्च दृष्टि से मित्र मंगल की राशि में सप्तम भाव को देखने से स्त्री पक्ष से लाभ होता है। सुन्दर स्त्री मिलती है। भोग-शक्ति तथा व्यवसाय पक्ष की उन्नति होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुला लग्न : द्वितीयभाव : सूर्य

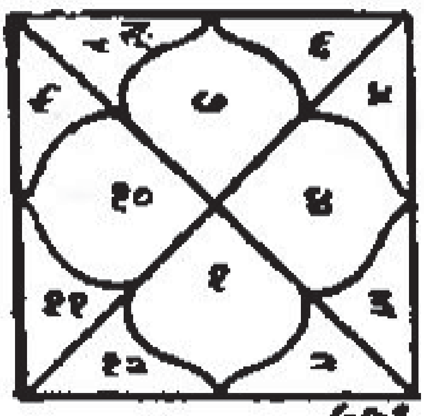

८८१

दूसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का पर्याप्त सुख मिलता है और वह धनी तथा प्रभावशाली भी होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से पुरातत्त्व तथा आयु के पक्ष में कुछ कमी बनी रहती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुला लग्न : तृतीयभाव : सूर्य

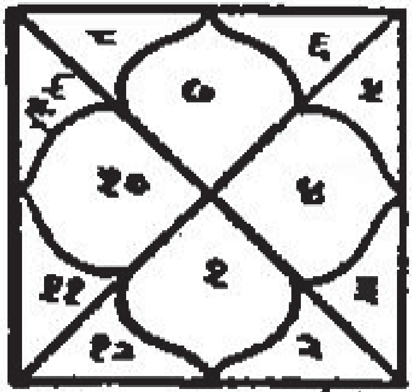

७७२

तीसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति अपने बाहु-बल का भरोसा अधिक रखता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म में वृद्धि होती है तथा आमदनी अच्छी बनी रहती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुला लग्न : चतुर्थभाव : सूर्य

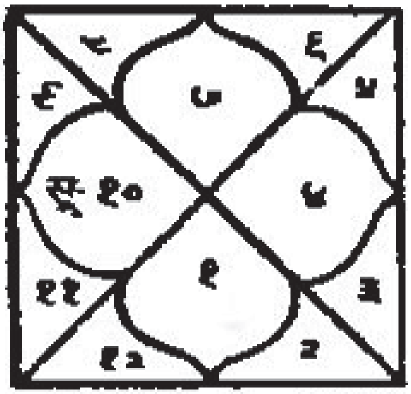

७७३

चौथे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' से प्रभाव से जातक को भूमि, भवन तथा माता का अपूर्ण सुख रहता है तथा आय से पक्ष में भी कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सफलता, यश तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुला लग्न : पंचमभाव : सूर्य

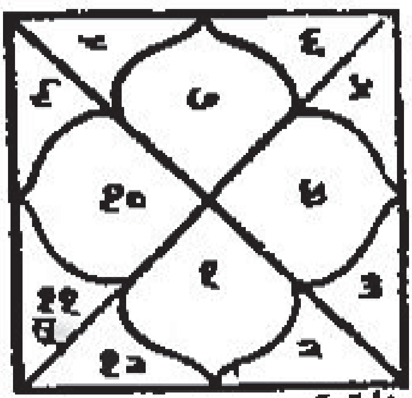

७७४

पाँचवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से असंतोषपूर्ण लाभ होता है तथा विद्याध्ययन में भी बड़ी कठिनाइयों से सफलता मिलती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के एकादश भाव को देखने से बुद्धि-योग का तथा कठिन परिश्रम द्वारा श्रेष्ठ आमदनी का लाभ मिलता है, परन्तु दिमाग में कुछ परेशानियाँ भी रहती हैं।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुला लग्न : षष्ठभाव : सूर्य

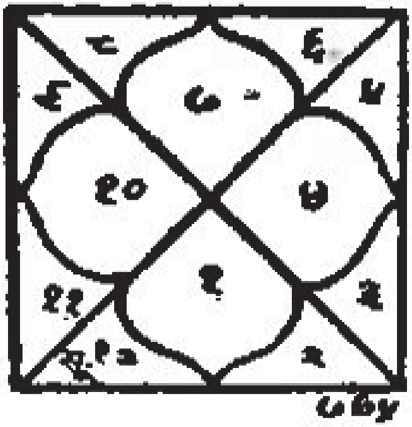

छठे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा शत्रुओं से लाभ भी होता है। आमदनी भी अच्छी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा बहादुर तथा हिम्मती होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुला लग्न : सप्तमभाव : सूर्य

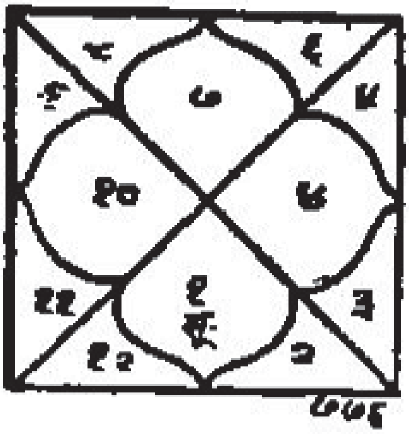

सातवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को सुन्दर पत्नी मिलती है तथा स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष से लाभ भी खूब होता है।

सातवीं नीचदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा चित्त भी चिन्ताग्रस्त बना रहता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुला लग्न : अष्टमभाव : सूर्य

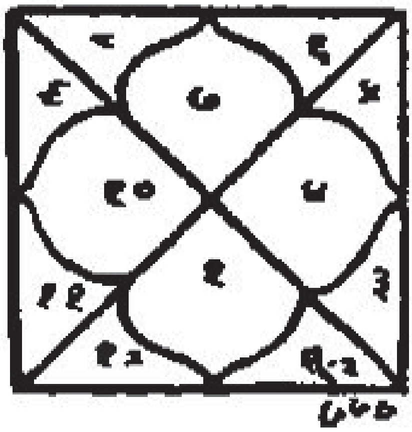

आठवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित एकादशेश 'सूर्य' के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम से धनोपार्जन करता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व-लाभ में कमी आती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से जातक धन-वृद्धि के लिए प्रयत्नशील बना रहता है तथा कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त करता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुला लग्न : नवमभाव : सूर्य

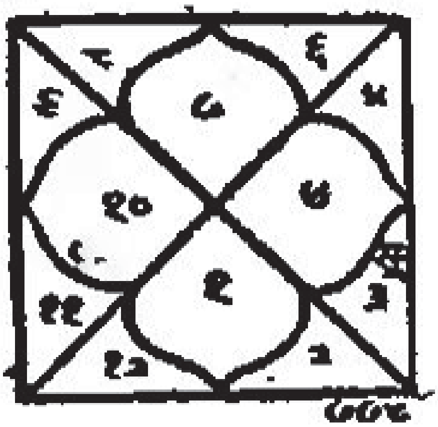

७०८

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती रहती है। उसे मान तथा सुख पर्याप्त मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुला लग्न : दशमभाव : सूर्य

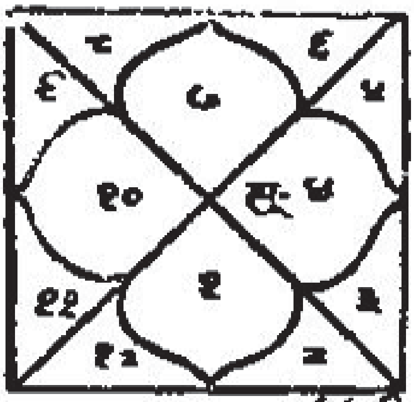

७०९

दसवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'सूर्य' से प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है। आमदनी में खूब वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी बनी रहती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुला लग्न : एकादशभाव : सूर्य

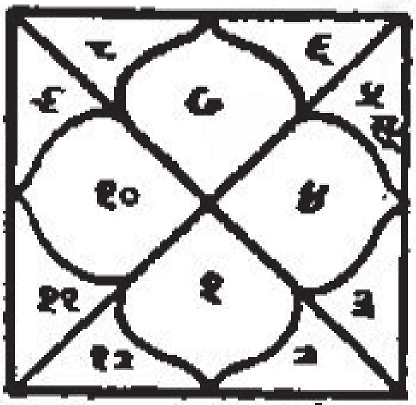

७१०

ग्यारहवें भाव में स्वराशि-स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की आमदनी में बहुत वृद्धि होती रहती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान के पक्ष से कुछ असन्तोष रहता है तथा विद्याध्ययन में भी कमी रहती है। ऐसे व्यक्ति की वाणी में तेजी पाई जाती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुला लग्न : द्वादशभाव : सूर्य

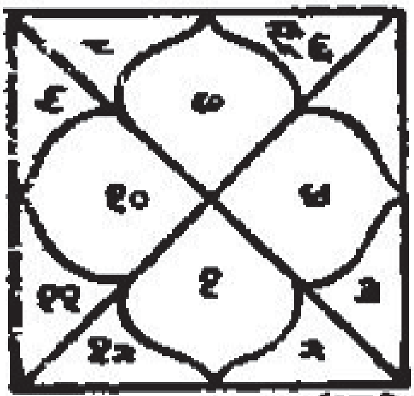

७८१

बारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' से प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से सुख, सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष से मित्रता स्थापित होती है, झगड़ों से लाभ होता है तथा प्रभाव की वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न में 'चन्द्रमा'

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुला लग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

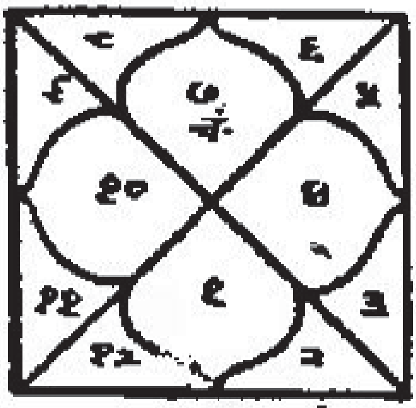

७८२

पहले भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व की प्राप्ति होती है। उसे राजनीति के क्षेत्र में सम्मान मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से सुन्दर स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी लाभ होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुला लग्न : द्वितीयभाव : चन्द्र

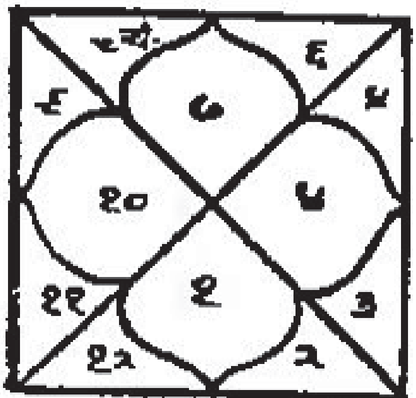

७८३

दूसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित नीच के 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के सुख में कमी का सामना करना पड़ता है। धन-संचय के लिए गुप्त युक्तियों का सहारा भी लेना पड़ता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुला लग्न : तृतीयभाव : चन्द्र

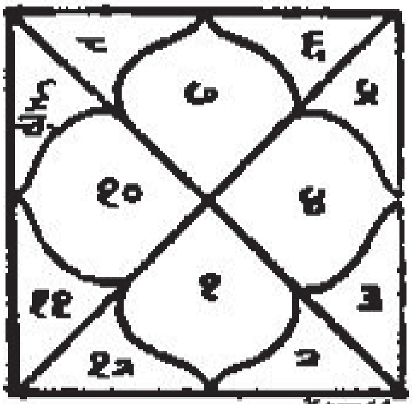

७८४

तीसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से जातक के धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुला लग्न : चतुर्थभाव : चन्द्र

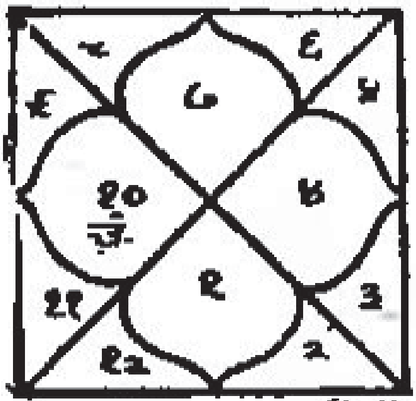

७८५

चौथे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन का त्रुटिपूर्ण लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सहयोग सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुला लग्न : पंचमभाव : चन्द्र

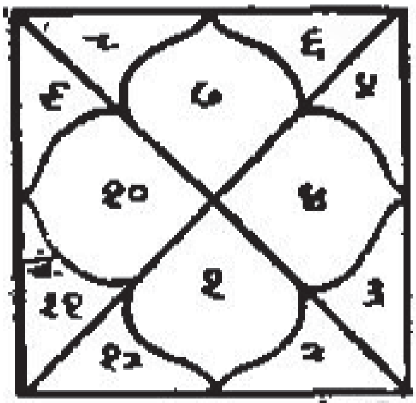

७८६

पाँचवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है। राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ी तीक्ष्ण बुद्धि वाला होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी में पर्याप्त वृद्धि होती है तथा जातक धनी होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुला लग्न : षष्ठभाव : चन्द्र

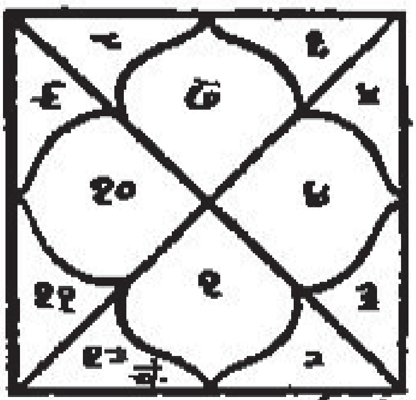

७८७

छठे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' से प्रभाव से जातक को अपनी चतुराई, मनोबल तथा शान्त स्वभाव के कारण शत्रु-पक्ष पर सफलता मिलती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ रुकावटें आती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ भी होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुला लग्न : सप्तमभाव : चन्द्र

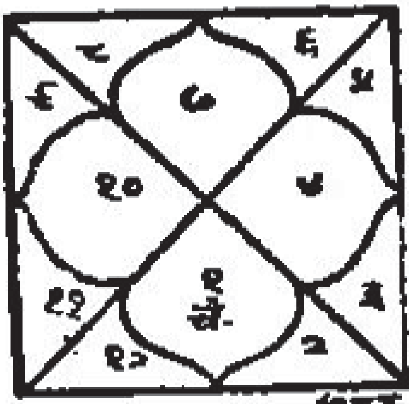

७८८

सातवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को व्यवसाय-पक्ष में अत्यधिक सफलता मिलती है तथा स्त्री द्वारा उन्नति एवं प्रभाव की वृद्धि होती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय-पक्ष से भी यश तथा लाभ मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य, प्रभाव तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुला लग्न : अष्टमभाव : चन्द्र

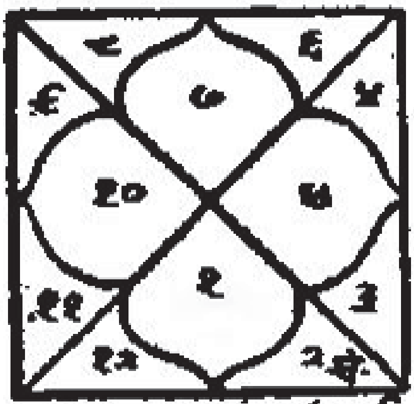

७८९

आठवें भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित उच्च के 'चन्द्रमा' से प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। दैनिक जीवन आनन्दमय रहता है, परन्तु पिता-पक्ष से हानि, राज्य-पक्ष से सामान्य सम्मान तथा व्यवसाय-पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ की प्राप्ति होती है।

सातवीं नीचदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख भी कमजोर रहता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुला लग्न : नवमभाव : चन्द्र

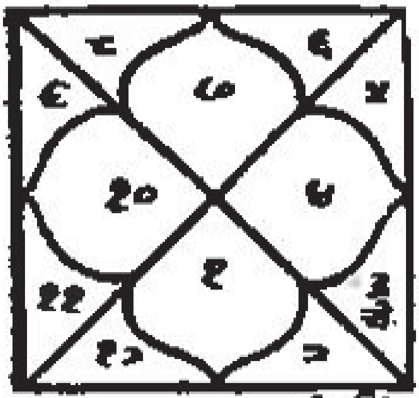

६८०

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय-पक्ष से भी यश, सहयोग तथा सम्मान का लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुला लग्न : दशमभाव : चन्द्र

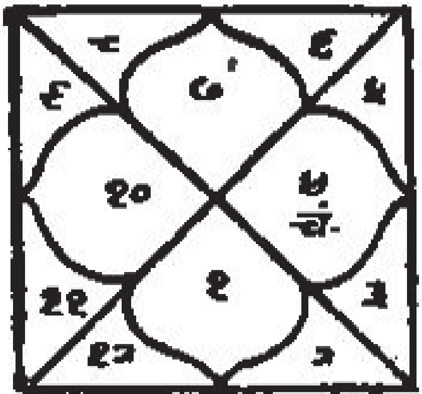

६८१

दसवें भाव में स्वराशि-स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में शक्ति, सहयोग, सम्मान, यश तथा धन का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति स्वाभिमानी तथा समाज में प्रतिष्ठित होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुलालग्न : एकादशभाव : चन्द्र

६८२

ग्यारहवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि में स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को लाभ के अवसर निरन्तर मिलते रहते हैं। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष में भी सफलता, सम्मान तथा यश आदि की यथेष्ट प्राप्ति होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान के पक्ष से सामान्य असंतोष रहता है, परन्तु विद्या-बुद्धि का यथेष्ट लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति होशियार, चालाक तथा स्वार्थी होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुलालग्न : द्वादशभाव : चन्द्र

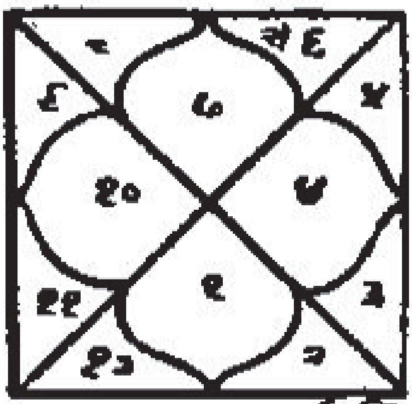

७८३

बारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ एवं उन्नति भी होती है। पिता, व्यवसाय तथा राज्य-पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ती है। प्रतिष्ठा-मान में भी कमी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में शक्ति एवं चातुर्य द्वारा सफलता प्राप्त होती है।

'तुला' लग्न में मंगल

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुलालग्न : प्रथमभाव : मंगल

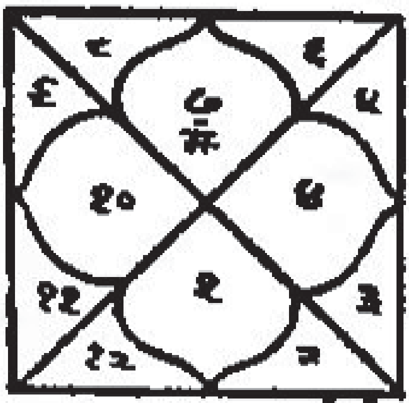

७८४

पहले भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को शारीरिक सुख तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है।

चौथी उच्च दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का विशेष सुख मिलता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री का सुख मिलता है तथा व्यवसाय में उन्नति होती है। आठवीं सामान्य मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है, परन्तु उदर-विकार रहता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित मंगल का फलादेश

तुलालग्न : द्वितीयभाव : मंगल

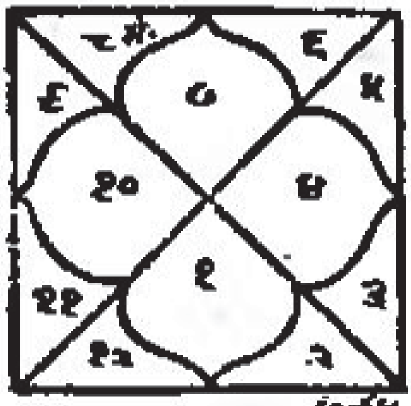

७८५

दूसरे भाव में स्वराशि-स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। चौथी शत्रु-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि का लाभ कुछ कठिनाइयों के साथ होता है।

सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। आठवीं मित्रदृष्टि के नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुलालग्न : तृतीयभाव : मंगल

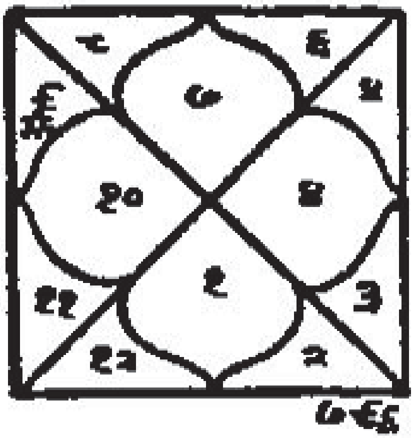

तीसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। धन-लाभ भी खूब होता है तथा स्त्री-पक्ष में भी सफलता मिलती है। चौथी मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की उन्नति होती है। आठवीं नीचदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ रुकावटें आती हैं।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुलालग्न : चतुर्थभाव : मंगल

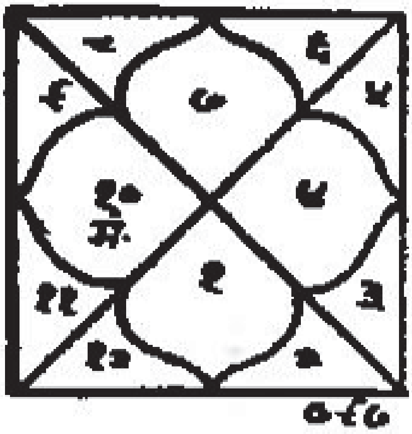

चौथे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन का विशेष सुख मिलता है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय से भी सुख मिलता है।

सातवीं नीचदृष्टि से मित्रराशि में दशमभाव को देखने से पिता से सुख में कमी आती है तथा राज्य एवं व्यवसाय से क्षेत्र की उन्नति में रुकावटें आती हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी खूब अच्छी बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति धनी तथा सुखी होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुलालग्न : पंचमभाव : मंगल

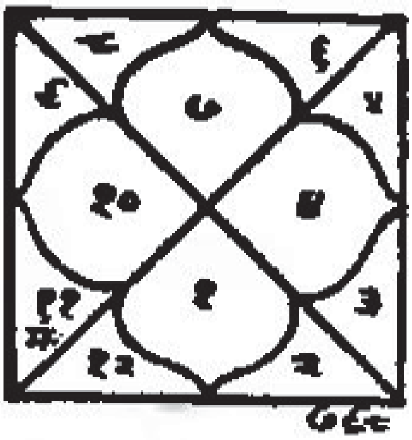

पाँचवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। कुटुम्ब तथा स्त्री से कुछ वैमनस्य रहता है। बुद्धि-बल से व्यवसाय में सफलता मिलती है। चौथी शत्रु-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा कुछ कठिनाइयों से साथ पुरातत्त्व का लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी खूब होती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुला लग्न : षष्ठभाव : मंगल

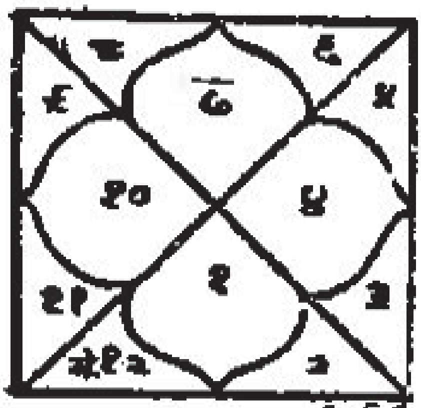

७६६

छठे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर बड़ा प्रभाव रखता है। धन-संचय में कमी रहती है तथा स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। चौथी मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। आठवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है। ऐसे व्यक्ति को झगड़े-मुकद्दमे आदि से लाभ होता रहता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुला लग्न : सप्तमभाव : मंगल

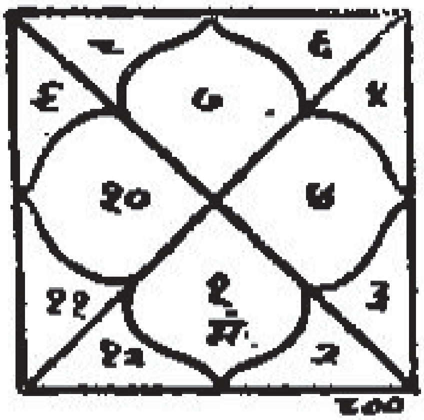

७७०

सातवें भाव में स्वराशि-स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कुछ बन्धन-सा रहता है, परन्तु भोग की यथेष्ट प्राप्ति होती है। दैनिक व्यवसाय भी अच्छा रहता है। चौथी नीच-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य तथा स्थायी व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शरीर में गर्मी अथवा रक्त-विकार रहता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का अच्छा सुख प्राप्त होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुला लग्न : अष्टमभाव : मंगल

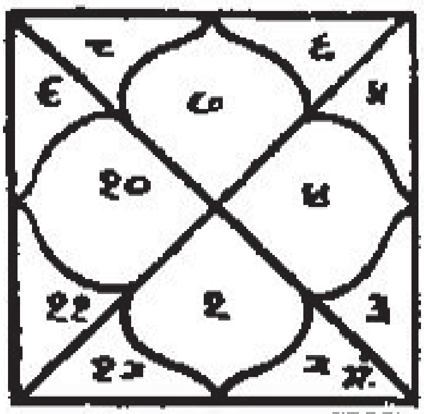

७७१

आठवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष तथा दैनिक व्यवसाय के कुछ कष्ट होता है। बाहरी स्थानों के व्यवसाय से तथा पुरातत्त्व से लाभ होता है। चौथी मित्र-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी खूब होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख परिश्रम द्वारा प्राप्त होता है। आठवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों का सामान्य सुख मिलता है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुला लग्न : नवमभाव : मंगल

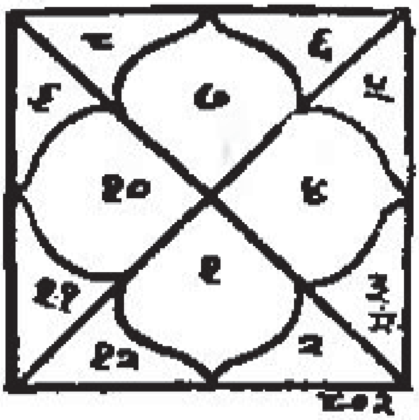

८०४

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति खूब होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। स्त्री भाग्यशालिनी मिलती है, फलतः विवाहोपरान्त विशेष लाभ होता है। चौथी मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है। आठवीं उच्च-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का पर्याप्त सुख मिलता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुला लग्न : दशमभाव : मंगल

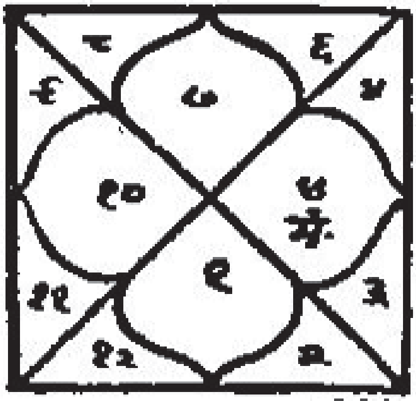

८०५

दसवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं तथा स्त्री एवं कुटुम्ब के सुख में भी कमी रहती है।

चौथी मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर दुर्बल रहता है, परन्तु सम्मान की प्राप्ति होती है। सातवीं उच्च दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। आठवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से वैमनस्य रहता है तथा विद्या-बुद्धि में कुछ कमी बनी रहती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुला लग्न : एकादशभाव : मंगल

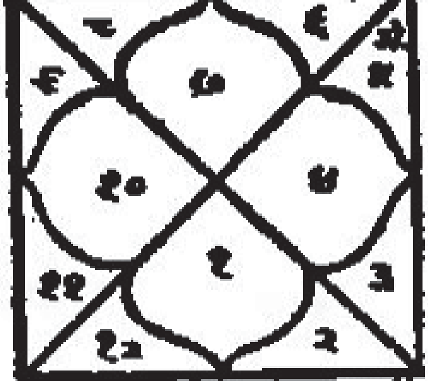

८०६

ग्यारहवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से धन का पर्याप्त लाभ होता है। स्त्री-पक्ष से भी सुख तथा लाभ की प्राप्ति होती है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख भी पर्याप्त मिलता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान से असन्तोष तथा विद्या-बुद्धि में कमी रहती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री-पक्ष में भी कुछ कमी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से व्यवसाय में लाभ होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुला लग्न : द्वादशभाव : मंगल

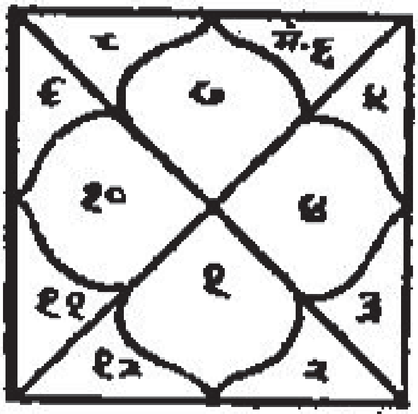

८०५

बारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। धन, कुटुम्ब, स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष में हानि एवं असन्तोष के अवसर उपस्थित होते हैं। चौथी मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठ-भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में सफलता प्राप्त होती है।

आठवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से व्यवसाय में लाभ होता है तथा स्त्री-पक्ष में कुछ कमी रहती है।

'तुला' लग्न में 'बुध'

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : प्रथमभाव : बुध

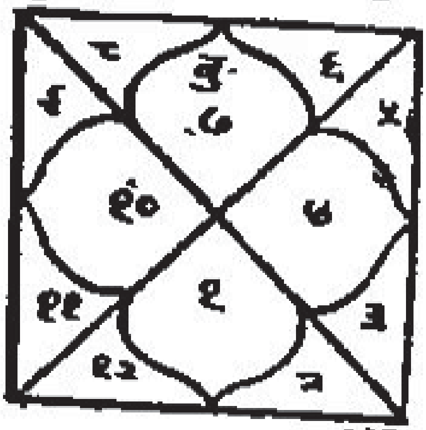

८०६

पहले भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल होता है तथा वह बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता और खूब खर्च करता है। भाग्य में कमी होते हुए भी भाग्यवान् समझा जाता है तथा धर्म का पालन भी करता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : द्वितीयभाव : बुध

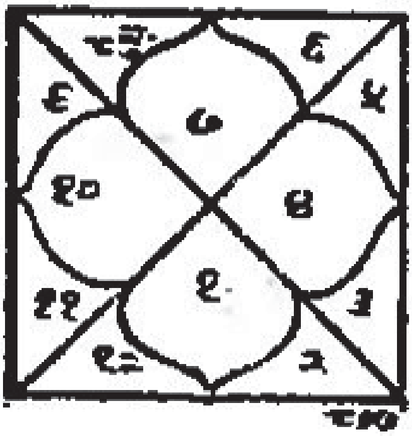

८०७

दूसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के सुख में कुछ कमी रहती है। धन खूब खर्च करता है तथा स्वार्थ के लिए ही धर्म का पालन भी करता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्व का यथेष्ट लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति सामान्यत: धनी माना जाता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : तृतीयभाव : बुध

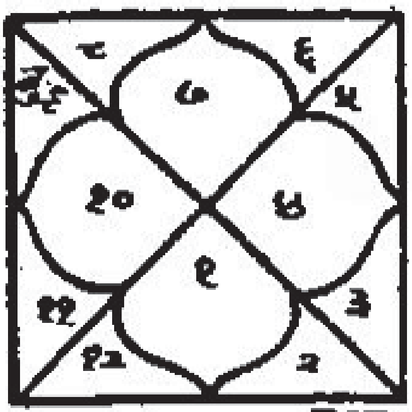

८०८

तीसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है तथा भाग्योन्नति में सामान्य रुकावटें आती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखने से भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी धर्मात्मा तथा यशस्वी होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : चतुर्थभाव : बुध

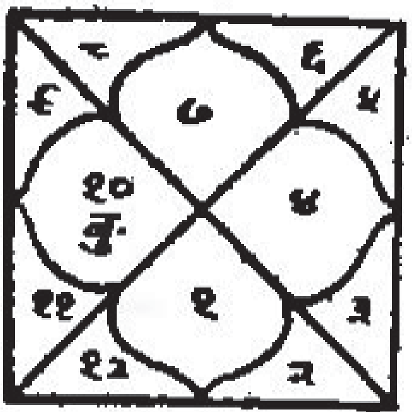

८०९

चौथे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। बाहरी संबंधों से यथेष्ट लाभ होता है। वह खर्च भी खूब करता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सहयोग, प्रतिष्ठा, यश, मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : पंचमभाव : बुध

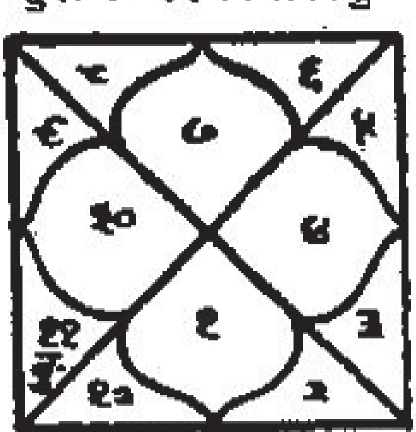

८१०

पाँचवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से शक्ति मिलती है तथा विद्या-बुद्धि का लाभ कुछ कमी के साथ होता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भाग्य की वृद्धि होती है। खर्च भी खूब रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी यथेष्ट रहती है। ऐसा व्यक्ति धर्म का पालन करने वाला, प्रतिष्ठित तथा भाग्यशाली होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : षष्ठभाव : बुध

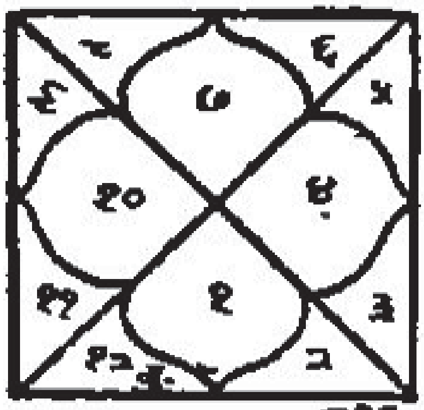

च ११

छठे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित नीच के 'बुध' के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं तथा खर्च भी कठिनाई से चलता है। धर्म एवं भाग्य के क्षेत्र में भी कमजोरी रहती है परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादशभाव को देखने से खर्च की अधिकता बनी रहती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : सप्तमभाव : बुध

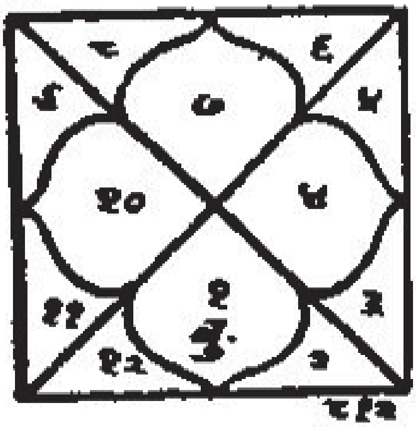

च १२

सातवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित व्ययेश 'बुध' के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। गृहस्थी का खर्च अच्छी तरह चलता है तथा धर्म का पालन भी होता है। बाहरी स्थानों से लाभ मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सुख तथा मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवान् समझा जाता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : अष्टमभाव : बुध

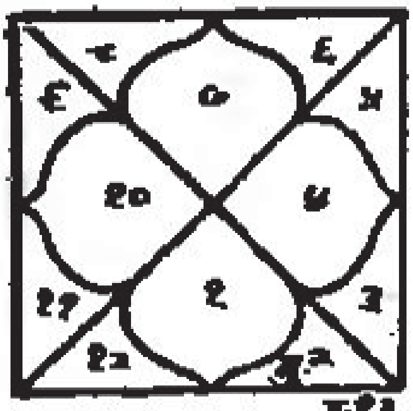

च १३

आठवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है परन्तु भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमजोरी रहती है। बाहरी संबंधों से कठिनाइयों के साथ लाभ होता है तथा खर्च चलाने में भी परेशानियाँ आती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से कठिनाइयों के साथ धन की वृद्धि होती है, परन्तु यश कम ही मिलता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : नवमभाव : बुध

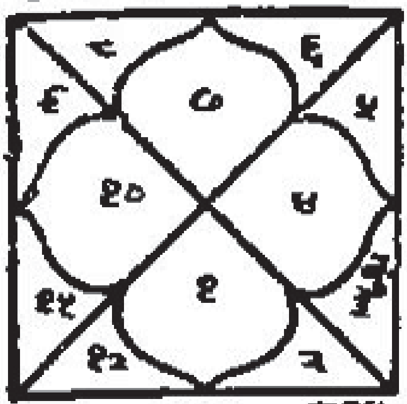

८२५

नवें भाव में स्वराशि-स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा कुछ कठिनाइयों के साथ पराक्रम में भी वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : दशमभाव : बुध

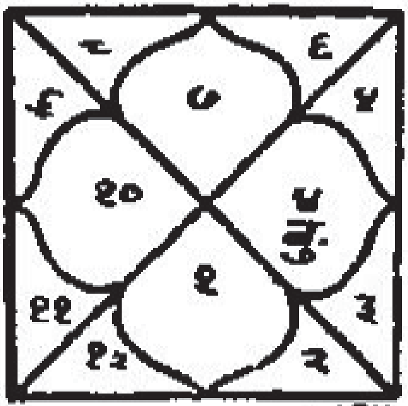

८२५

दसवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति करने के लिए कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। धर्म का पालन भी कम ही होता है। भाग्योन्नति भी कम होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का पर्याप्त सुख मिलता है जिसके कारण वह धनी समझा जाता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : एकादशभाव : बुध

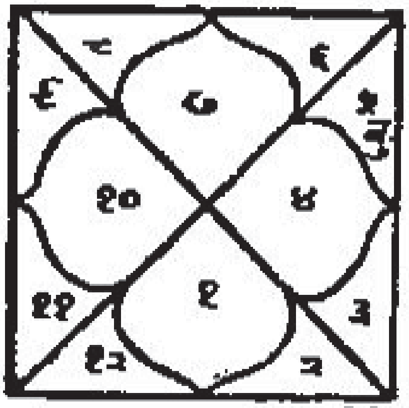

८२६

ग्यारहवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की आमदनी यथेष्ट रहती है। वह धर्मात्मा तथा भाग्यवान् होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। ऐसा व्यक्ति अपनी बुद्धि तथा वाणी के बल पर विशेष उन्नति करता है। परन्तु बुध के व्ययेश होने के कारण हर क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : द्वादशभाव : बुध

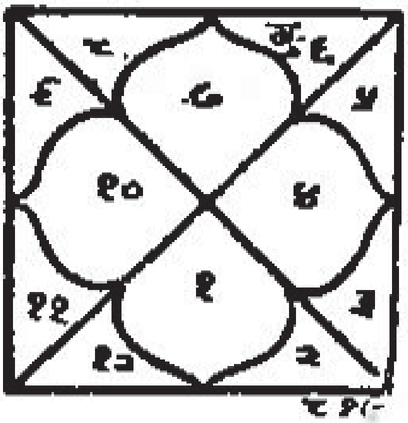

बारहवें भाव में स्वराशि-स्थित उच्च के 'बुध' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ कठिनाइयों के साथ भाव तथा सुख की प्राप्ति होती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में कुछ परेशानियाँ आती हैं तथा कुछ अनुचित उपायों के सहारे शत्रु-पक्ष में काम निकालना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति धनी तथा सुखी होता है।

'तुला' लग्न में 'गुरु'

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

तुला लग्न : प्रथमभाव : गुरु

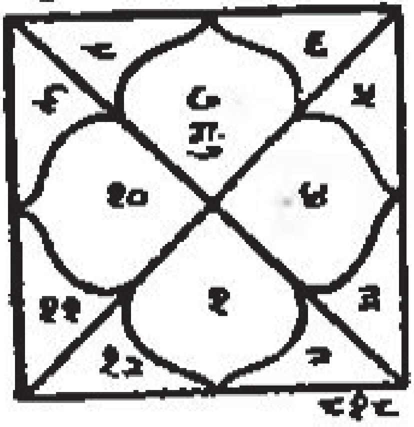

पहले भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के शारीरिक प्रभाव, पुरुषार्थ तथा प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी आती है। शत्रु-पक्ष में हिम्मत के बल पर प्रभाव स्थापित होता है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से वैमनस्य रहता है, परन्तु विद्या-बुद्धि का लाभ होता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ होता है। नवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

तुला लग्न : द्वितीयभाव : गुरु

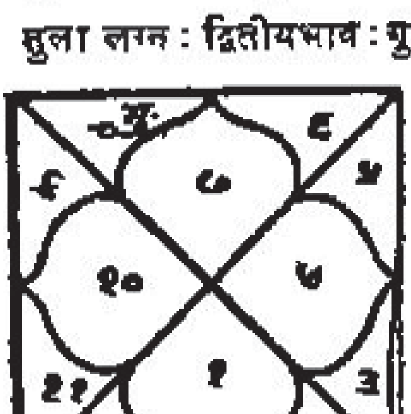

दूसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के पुरुषार्थ द्वारा धन की वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों के सुख में कमी रहती है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने से जातक अपने धन के बल से शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है।

नवीं उच्च तथा मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में यश, शुभ सम्मान तथा लग्न लाभ प्राप्त होते हैं।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

तुलालग्न : तृतीयभाव : गुरु

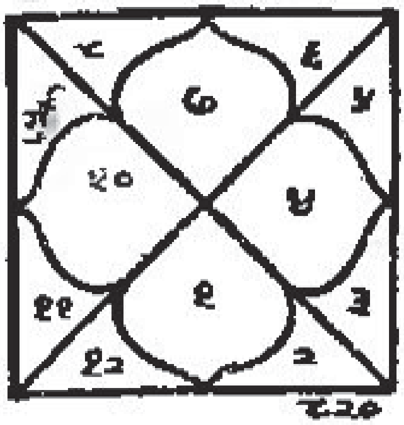

८२०

तीसरे भाव में स्वराशि-स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों के सुख में सामान्य कमी आती है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में खूब सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी, धर्मात्मा तथा भाग्यशाली होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली से 'चतुर्थभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

तुलालग्न : चतुर्थभाव : गुरु

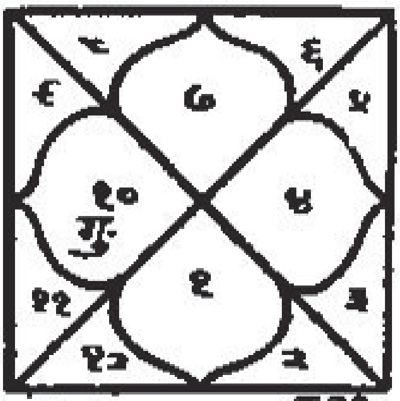

८२१

चौथे भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित नीच के 'गुरु' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है तथा शत्रु-पक्ष में भी परेशानी उठानी पड़ती है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का कुछ लाभ होता है।

सातवीं मित्र तथा उच्च-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिलती है। नवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

तुला लग्न : पंचमभाव : गुरु

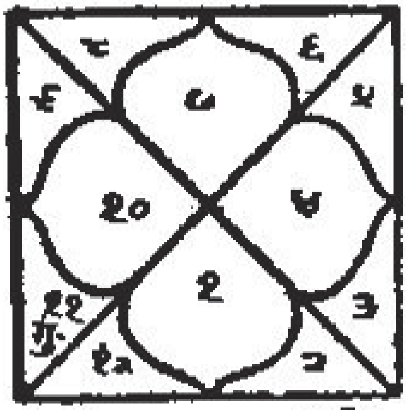

८२२

पाँचवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है तथा शत्रु-पक्ष में प्रभाव बढ़ता है। भाई-बहिनों से कुछ मतभेद भी रहता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से पुरुषार्थ द्वारा भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी खूब होती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक शक्ति, प्रभाव तथा बल की प्राप्ति होती है, परन्तु स्वास्थ्य में कुछ कमी बनी रहती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : षष्ठभाव : गुरु

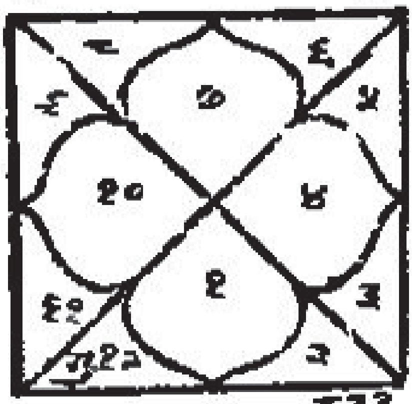

च २१

छठे भाव में स्वराशिस्थ 'गुरु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में प्रभाव स्थापित करता है। भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य रहता है तथा पुरुषार्थ में भी कुछ कमी रहती है। पाँचवीं उच्च-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, व्यवसाय एवं राज्य के क्षेत्र में यथेष्ट सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों से लाभ होता है। नवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन की वृद्धि होती है, परन्तु कुटुम्ब से कुछ मतभेद बना रहता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

तुला लग्न : सप्तमभाव : गुरु

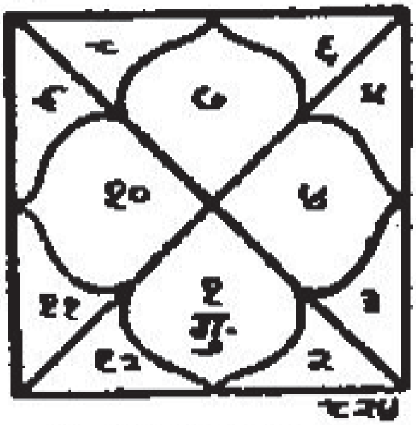

च २४

सातवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक पुरुषार्थ द्वारा व्यवसाय की उन्नति करता है तथा स्त्री की शक्ति भी पाता है, परन्तु स्त्री से कुछ मतभेद रहता है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से पुरुषार्थ द्वारा यथेष्ट धनोपार्जन होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर में कुछ परेशानियाँ रहती हैं, परन्तु प्रभाव की वृद्धि होती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि के तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : अष्टमभाव : गुरु

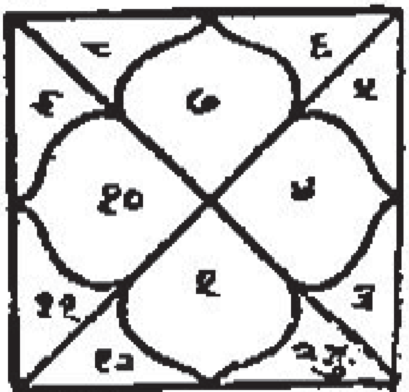

च २५

आठवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के पुरातत्व एवं आयु की वृद्धि होती है। परन्तु भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी आती है। शत्रु-पक्ष में भी परेशानी रहती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख की वृद्धि होती है। नवीं नीचदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी रहती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

तुला लग्न : नवमभाव : गुरु

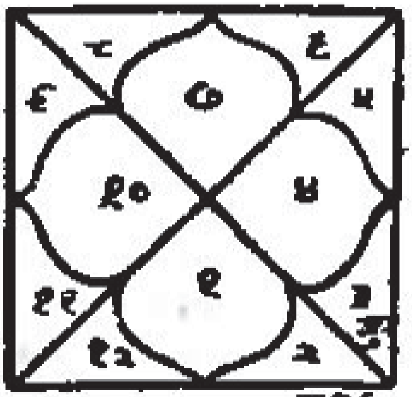

२२६

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है तथा वह यशस्वी भी होता है। शत्रुपक्ष अथवा अन्य झगड़ों के कारण भाग्योन्नति में कुछ कठिनाइयाँ भी आती हैं। पाँचवी शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर में कुछ कमजोरी रहती है, परन्तु प्रभाव में वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

नवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान से कुछ वैमनस्य रहता है, परन्तु विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

तुला लग्न : दशमभाव : गुरु

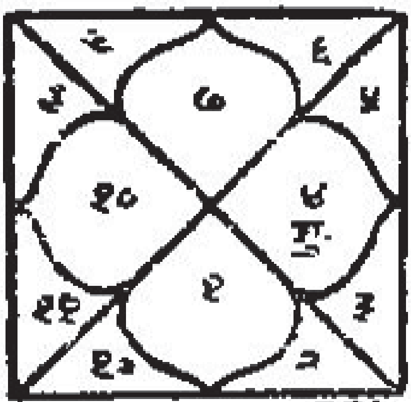

२२७

दसवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। भाई-बहिन का सुख भी मिलता है, परन्तु कुछ मतभेद भी रहता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है।

सातवीं नीचदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी आती है।

नवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

तुलालग्न : एकादशभाव : गुरु

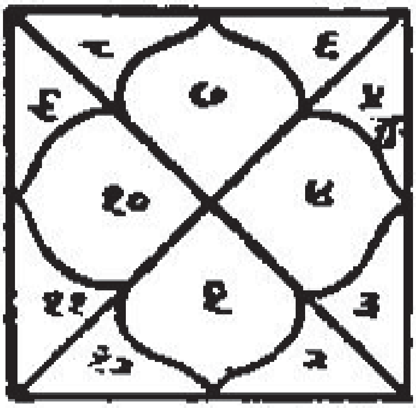

२२८

ग्यारहवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा अपनी आय तथा ऐश्वर्य को बढ़ाता है। उसे शत्रु-पक्ष में भी लाभ होता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को स्वराशि में देखने से भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या तथा संतान के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। परन्तु बुद्धि अधिक होती है।

नवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

तुलालग्न : द्वादशभाव : गुरु

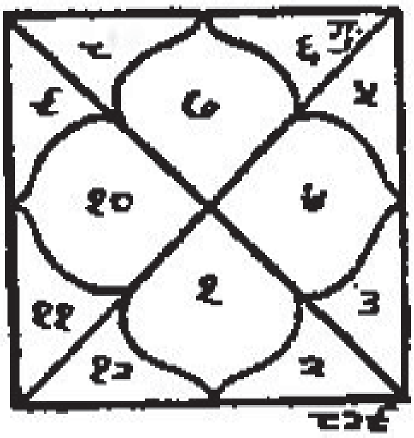

च० २९

बारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। भाई-बहिन के सुख में कमी आती है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है। पाँचवीं नीचदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन के सुख में भी कुछ कमी आती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने से गुप्त युक्तियों द्वारा तथा कुछ दबकर शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है। नवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ पुरातत्त्व एवं आयु का लाभ होता है।

'तुला' लग्न में 'शुक्र'

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुलालग्न : प्रथमभाव : शुक्र

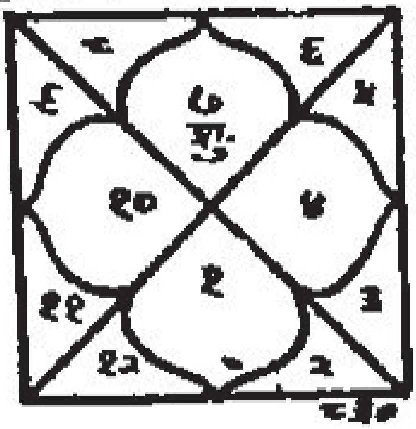

च० ३०

पहले भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के शारीरिक तथा आत्मिक बल एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। उसे आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी मिलता है, परन्तु शुक्र के अष्टमेश होने के कारण कभी-कभी शरीर में परेशानी का अनुभव भी होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री के सुख में कुछ कमी रहती है तथा व्यवसाय की उन्नति के लिए भी कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुलालग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

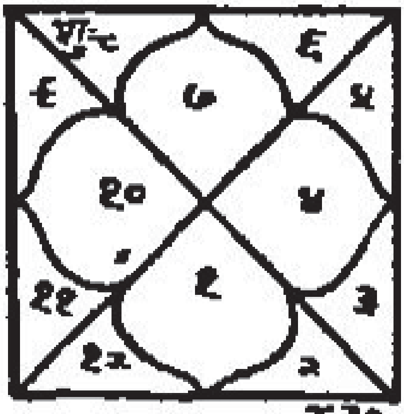

च० ३१

दूसरे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को धन-संचय के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है, परन्तु उसे कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। कभी-कभी उसे कठिनाइयाँ भी आती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अमीरी ढंग का जीवन बिताता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुलालग्न : तृतीयभाव : शुक्र

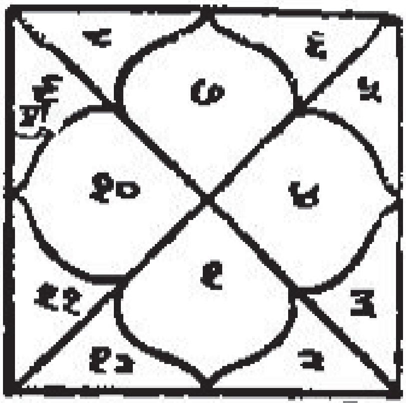

८३२

तीसरे भाव में सामान्य शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक का भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य रहता है परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की उन्नति होती है। ऐसा व्यक्ति प्रभाव-शाली जीवन बिताता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुलालग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

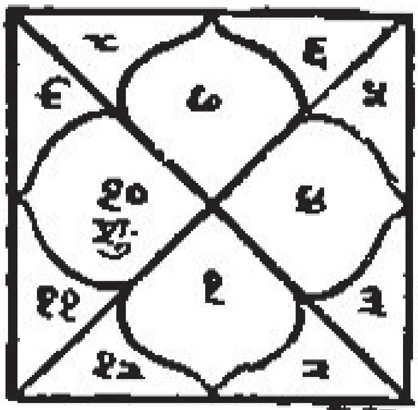

८३३

चौथे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को कुछ कमी के साथ माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सम्मान, लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुला लग्न : पंचमभाव : शुक्र

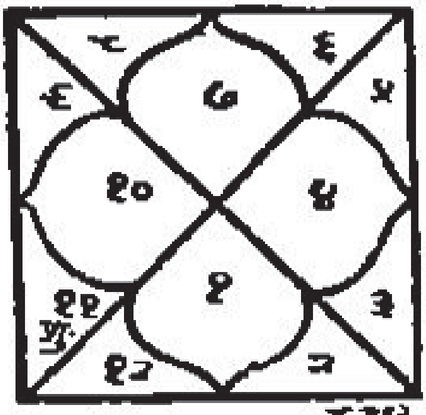

८३४

पाँचवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है, परन्तु सन्तान के पक्ष में कुछ कम-जोरी रहती है। आयु तथा पुरातत्त्व का श्रेष्ठ लाभ होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से लाभ भी अच्छा रहता है। ऐसा जातक अपने बुद्धि-बल से उन्नति करता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुला लग्न : षष्ठभाव : शुक्र

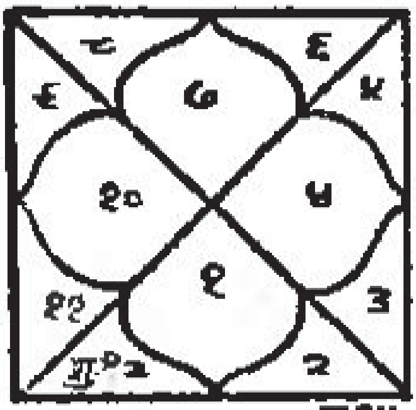

८३५

छठे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित उच्च के 'शुक्र' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर विशेष प्रभाव रखता है तथा बड़ी-बड़ी कठिनाइयों पर भी विजय पा लेता है। उसे आयु तथा पुरातत्त्व का सामान्य लाभ भी होता है।

सातवीं नीचदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च तथा बाहरी सम्बन्धों के कारण कुछ परेशानी रहती है। ऐसा व्यक्ति ठाठ-बाट का जीवन बिताता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुलालग्न : सप्तमभाव : शुक्र

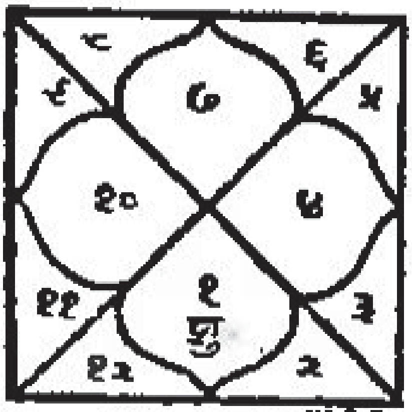

८३६

सातवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को स्त्री के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के रहते हुए भी उनसे शक्ति प्राप्त होती है तथा शारीरिक परिश्रम द्वारा दैनिक व्यवसाय में भी सफलता मिलती है और आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशिस्थ प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, आत्म-बल एवं प्रभाव की प्राप्ति भी होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुला लग्न : अष्टमभाव : शुक्र

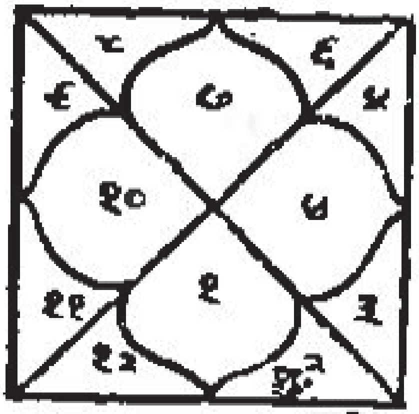

८३७

आठवें भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी आती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से जातक को धन-संचय के लिए चतुराई का सहारा लेना पड़ता है तथा कुटुम्बियों से उसका कुछ मतभेद बना रहता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुला लग्न : नवमभाव : शुक्र

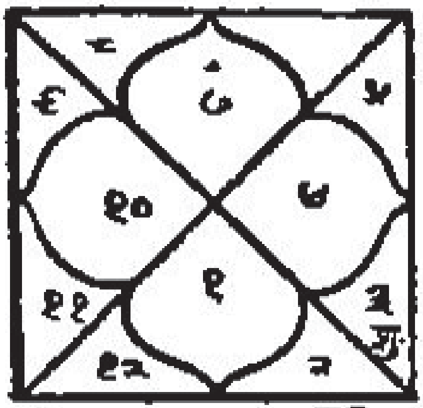

च३८

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की उन्नति कुछ कमी के साथ होती है। उसे आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति भी प्राप्त होती है। शारीरिक सौन्दर्य एवं शील भी मिलता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम में तो वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से सामान्य मतभेद बना रहता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुला लग्न : दशमभाव : शुक्र

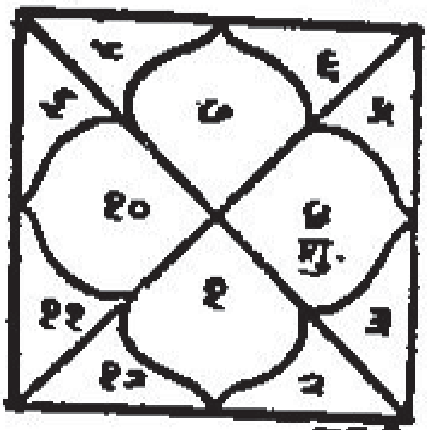

च३९

दसवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। सफलता का मूल कारण चातुर्य एवं शारीरिक श्रम होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख यथेष्ट प्राप्त होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुला लग्न : एकादशभाव : शुक्र

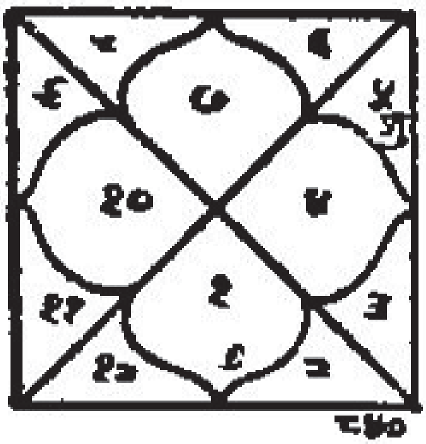

च४०

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक शारीरिक श्रम तथा चातुर्य के द्वारा पर्याप्त लाभ कमाता है। उसे आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति भी मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है, परन्तु विद्या-बुद्धि तथा वाणी की शक्ति में पर्याप्त वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुलालग्न : द्वादशभाव : शुक्र

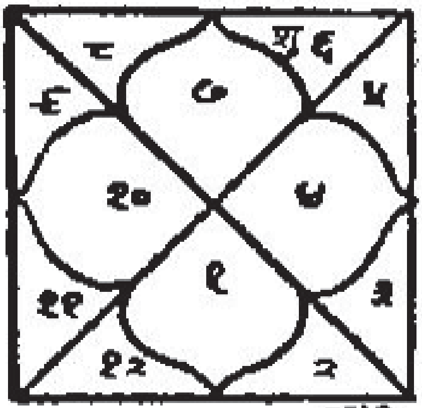

चक्र १

बारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित नीच के 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को खर्च के बारे में कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं तथा बाहरी सम्बन्धों से भी कष्ट होता है। आयु, पुरातत्त्व तथा शारीरिक क्षेत्र में भी कुछ कमी रहती है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष पर विशेष प्रभाव रहता है तथा झगड़े-झंझटों में हिम्मत तथा चतुराई से सफलता मिलती है।

'तुला' लग्न में 'शनि'

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

'तुलालग्न : प्रथमभाव : शनि

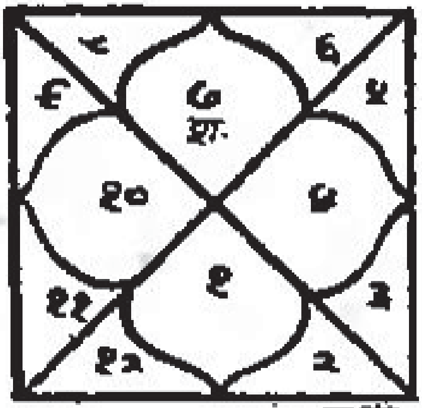

चक्र २

पहले भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक स्थूल शरीर का तथा प्रभाव शाली होता है। उसे माता, भूमि, भवन, सन्तान तथा विद्या का सुख भी उत्तम रहता है। तीसरी शत्रुदृष्टि से तीसरे भाव को देखने से भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य रहता है तथा पराक्रम भी कठिनाई से ही बढ़ पाता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री से कुछ मतभेद रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयां आती हैं। दसवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता के सुख में कमी रहती है, परन्तु व्यवसाय तथा राज्य के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

तुलालग्न : द्वितीयभाव : शनि

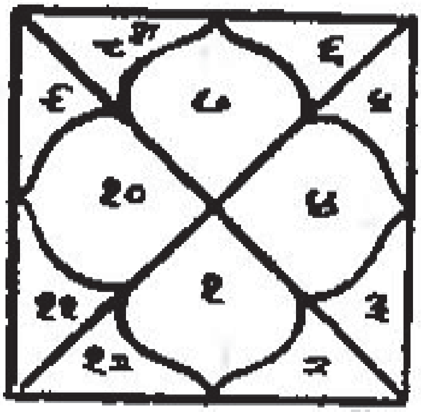

चक्र ३

दूसरे भाव में 'शत्रु' 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को धन-संचय में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा कुटुम्बियों से कुछ मत-भेद रहता है। सन्तान के पक्ष में कमी तथा विद्या-बुद्धि के पक्ष में लाभ होता है।

तीसरी दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है।

दसवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ आम-दनी अच्छी रहती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

तुलालग्न : तृतीयभाव : शनि

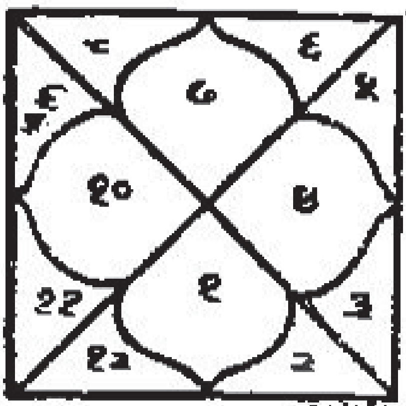

८५४

तीसरे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से कुछ मतभेद रहता है। माता द्वारा भी शक्ति मिलती है।

तीसरी दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखने से विद्या तथा सन्तान की यथेष्ट शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु सन्तान से कुछ मतभेद भी रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। दसवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ मिलता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

तुलालग्न : चतुर्थभाव : शनि

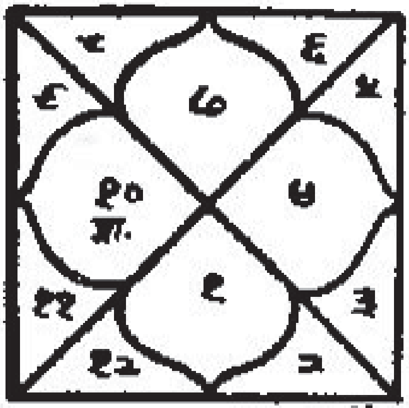

८५५

चौथे भाव में स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है। सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर विशेष प्रभाव रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता से मतभेद रहते हुए भी सुख मिलता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

दसवीं उच्च-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, यशस्वी, मानी तथा प्रभावशाली होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

तुलालग्न : पंचमभाव : शनि

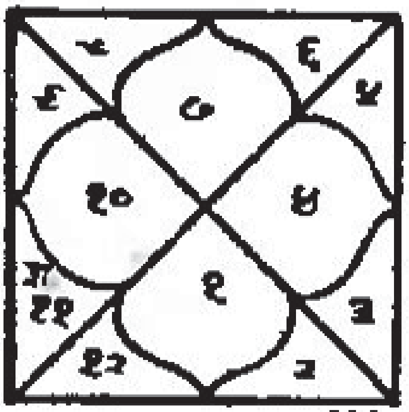

८५६

पाँचवें भाव में स्वराशि-स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है। तीसरी नीचदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री से मतभेद रहता है तथा दैनिक व्यवसाय में कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-संचय में भी कठिनाइयाँ आती हैं तथा कुटुम्ब से मतभेद बना रहता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

तुलालग्न : षष्ठभाव : शनि

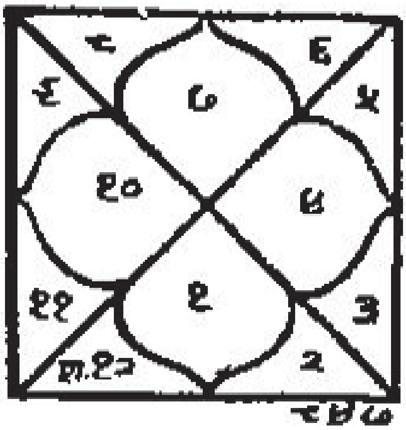

छठे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को बुद्धि-बल द्वारा शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है। माता, भूमि तथा भवन के सुख एवं विद्या तथा सन्तान के क्षेत्र में सफलता भी कुछ कठिनाइयों के बाद प्राप्त होती है। तीसरी मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य रहता है, परन्तु पुरुषार्थ की वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

तुलालग्न : सप्तमभाव : शनि

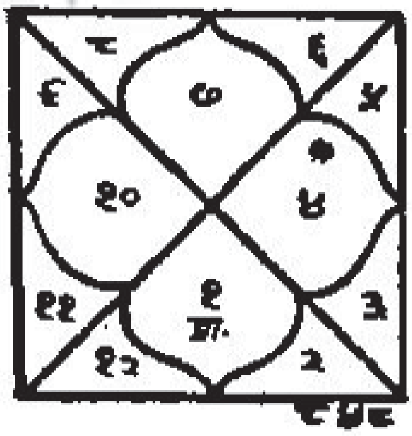

सातवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित नीच के शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री, गृहस्थी तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाई और अशान्ति का सामना करना पड़ता है। विद्या तथा सन्तान का पक्ष भी कमजोर रहता है। तीसरी मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है।

सातवीं उच्च दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से जातक के शरीर का कद लम्बा होता है तथा उसे शारीरिक सुख भी मिलता है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कठिन परिश्रम द्वारा प्राप्त होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

तुलालग्न : अष्टमभाव : शनि

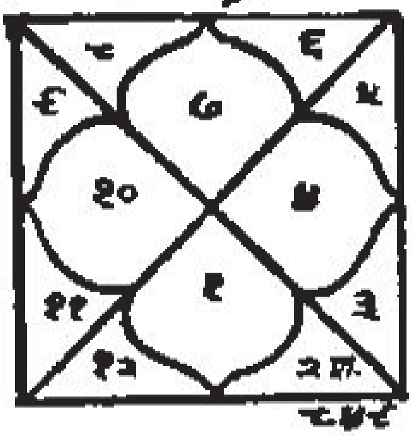

आठवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का अच्छा लाभ होता है। माता, भूमि, भवन, सन्तान तथा विद्या के पक्ष में कमी आती है।

तीसरी शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय में कमी रहती है तथा कौटुम्बिक सुख में भी व्यवधान पड़ता है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखने विद्यासे एवं सन्तान का सामान्य लाभ होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

तुला लग्न : नवमभाव : शनि

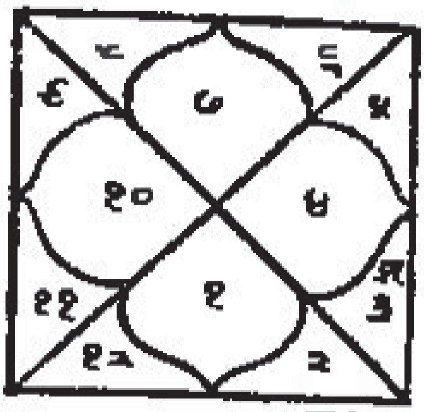

८५०

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक बुद्धि द्वारा भाग्योन्नति करता है तथा धर्म का पालन भी करता है। विद्या, सन्तान, भूमि, भवन एवं माता का सुख भी अच्छा मिलता है। तीसरी शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के मार्ग में रुकावटें आती हैं।

सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों से मतभेद रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से बुद्धि-बल द्वारा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुला लग्न : दशमभाव : शनि

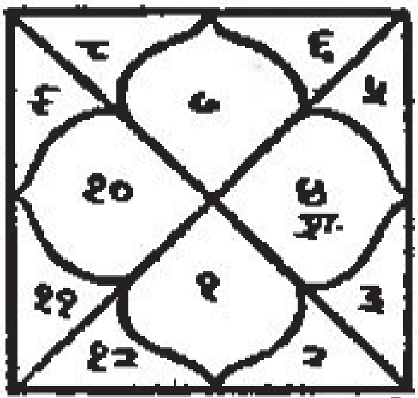

८५१

दसवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। वह स्वयं विद्वान् होता है, परन्तु सन्तान से मतभेद बना रहता है। तीसरी मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के चतुर्थभाव में देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख भी मिलता है। दसवीं नीच दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री के सुख में कुछ कमी रहती है तथा व्यवसाय में भी कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

तुला लग्न : एकादशभाव : शनि

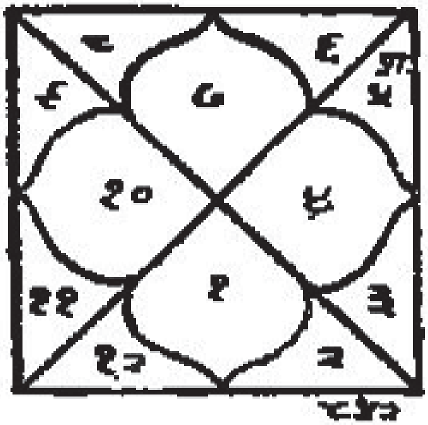

८५२

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आमदनी कुछ कठिनाइयों के साथ खूब होती है। माता, भूमि तथा भवन आदि का भी यथेष्ट सुख मिलता है। तीसरी उच्च तथा मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक शक्ति एवं प्रभाव में वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष में सफलता प्राप्त होती है। दसवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति बढ़ती है। ऐसा व्यक्ति मनमौजी, लापरवाह तथा स्वार्थी स्वभाव का होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

तुला लग्न : द्वादशभाव : शनि

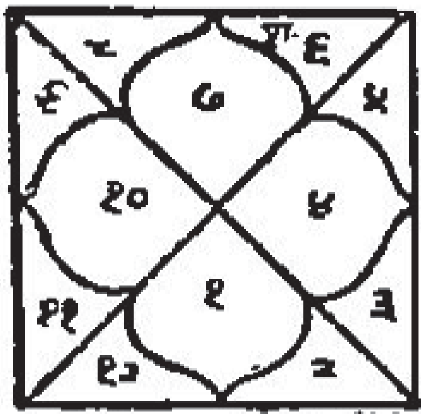

न० ५४३

बारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा उसे बाहरी संबंधों से लाभ होता है। माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है।

तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन के संचय में कमी आती है तथा कुटुम्ब से मतभेद रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर सामान्य प्रभाव बना रहता है।

दसवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। ऐसे व्यक्ति की बुद्धि तथा वाणी कुछ भ्रम-युक्त भी बनी रहती है।

'तुला' लग्न में 'राहु'

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

तुला लग्न : प्रथमभाव : राहु

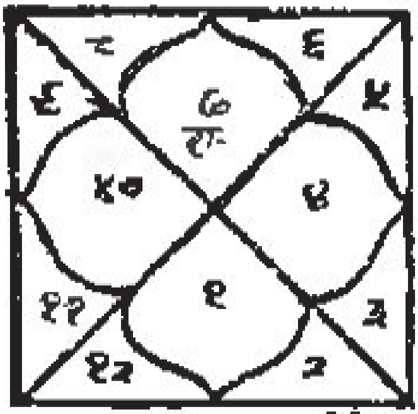

न० ५४४

पहले भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल होता है। वह परेशान भी रहता है। वह अपनी उन्नति के लिए गुप्त चातुर्य का आश्रय लेता है तथा कठिन परिश्रम करता है। कभी-कभी उसे बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु अपनी सूझ-बूझ से उन पर विजय भी पा लेता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

तुला लग्न : द्वितीयभाव : राहु

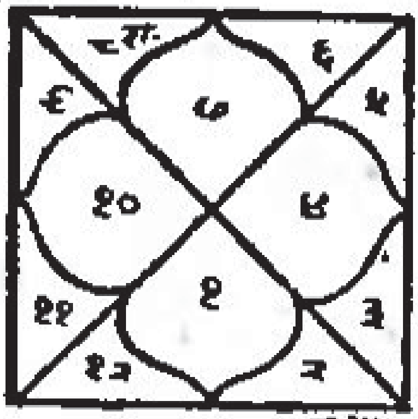

न० ५४५

दूसरे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को धन के संग्रह करने में बड़ी कठिनाइयाँ आती हैं। कभी आकस्मिक रूप से धन-प्राप्ति होती है तो कभी घोर आर्थिक संकट भी आते हैं। वह गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर किसी प्रकार अपना काम चलाता है। उसे कुटुम्बियों द्वारा भी कष्ट प्राप्त होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

तुला लग्न : तृतीयभाव : राहु

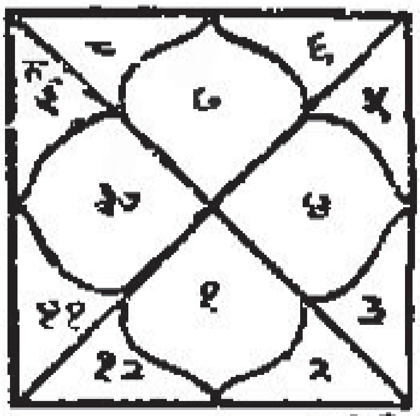

८४६

तीसरे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में कमी आती है, परन्तु वह युक्तियों का आश्रय लेकर उसमें वृद्धि करता है तथा अनुचित मार्ग भी अपनाता है। उसे भाई-बहिनों से कष्ट मिलता है तथा जीवन में कभी-कभी अन्य प्रकार के घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है। चातुर्य, युक्ति और पुरुषार्थ के बल पर ही वह कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर पाता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

तुला लग्न : चतुर्थभाव : राहु

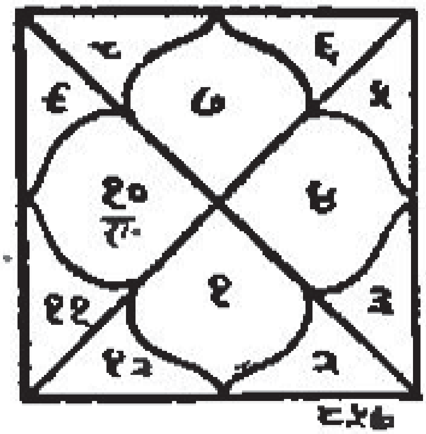

८४७

चौथे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है, परन्तु गुप्त युक्तियों, साहस तथा दृढ़ता के बल पर वह संकटों का सामना करके अन्त पर विजय पा लेता है। उसका जीवन बड़ा संघर्षपूर्ण बना रहता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

तुला लग्न : पंचमभाव : राहु

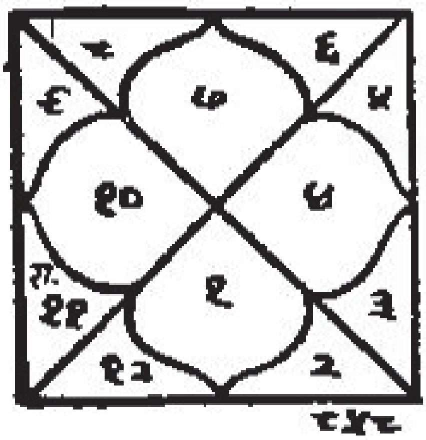

८४८

पाँचवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्याध्ययन में भी कठिनाइयाँ आती हैं। वह सदैव चिन्तित तथा परेशान बना रहता है। स्वार्थ-सिद्धि के लिए वह उचित-अनुचित का विचार नहीं करता तथा गुप्त युक्तियों से काम लेकर ऊपर से बड़ी दृढ़ता प्रदर्शित करता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

तुला लग्न : षष्ठभाव : राहु

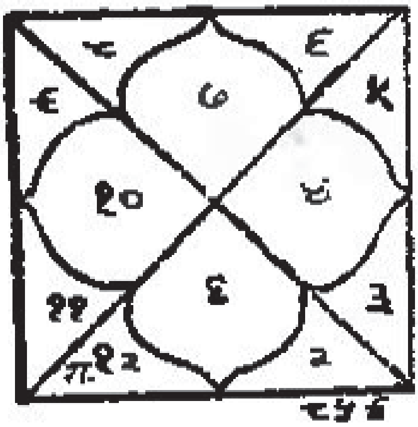

छठे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में कठिनाइयाँ उठाकर भी विजय प्राप्त करता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा बहादुर, हिम्मती तथा गुप्त युक्तियों का ज्ञाता होता है। अपना प्रभाव स्थापित करने में उसे सफलता मिल जाती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

तुला लग्न : सप्तमभाव : राहु

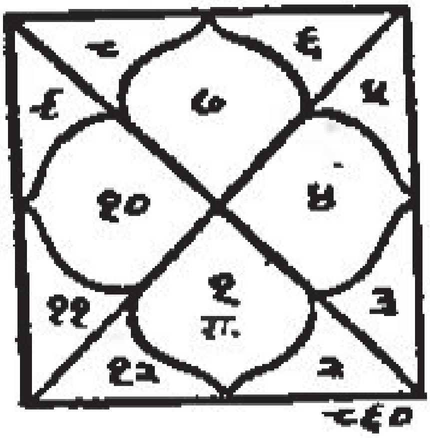

सातवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से संकटों का सामना करना पड़ता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं।

व्यवसाय में भी कभी-कभी बड़े संकट आते हैं, परन्तु वह अपनी गुप्त युक्ति, धैर्य और साहस के बल पर उन सभी बाधाओं पर विजय प्राप्त कर लेता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

तुलालग्न : अष्टमभाव : राहु

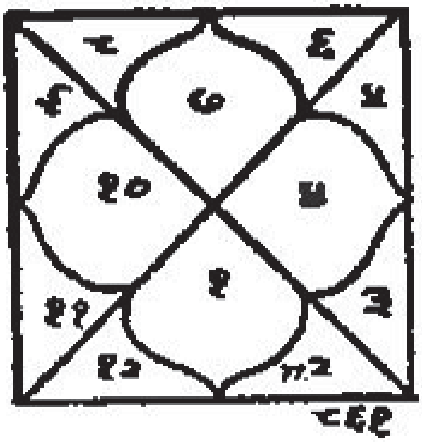

आठवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को आयु पर उसे बड़े संकट आते हैं, परन्तु मृत्यु नहीं होती। पुरातत्त्व की हानि भी होती है। दैनिक जीवन में भी अनेक संघर्ष, चिन्ता। । परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

तुलालग्न : नवमभाव : राहु

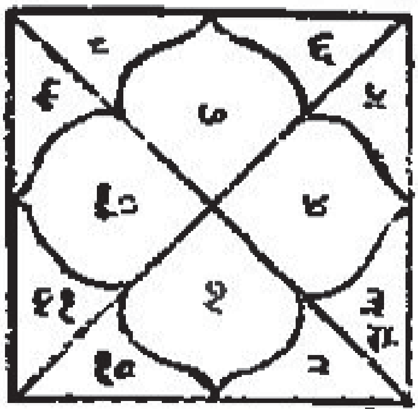

च९२

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक गुप्त युक्तियों के बल पर अपने भाग्य की विशेष उन्नति करता है तथा धर्म का पालन भी करता है। उसकी भाग्योन्नति में कभी-कभी बाधाएँ आती हैं, परन्तु वह अपने चातुर्य, धैर्य एवं गुप्त युक्तियों के बल पर इन सब पर विजय पा लेता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

तुलालग्न : दशमभाव : राहु

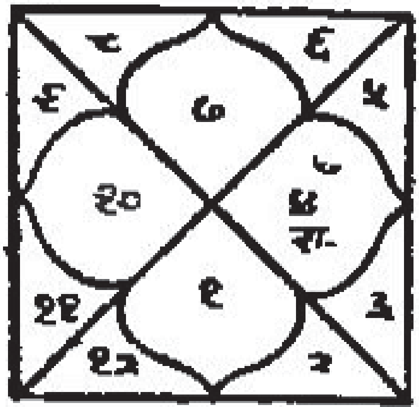

च९३

दसवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को पिता के सुख में कमी रहती है। राज्य के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी संकट आते हैं। उन्नति के मार्ग में आने वाली सभी बाधाओं को पार करने के बाद ही उसे सफलता मिलती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

तुलालग्न : एकादशभाव : राहु

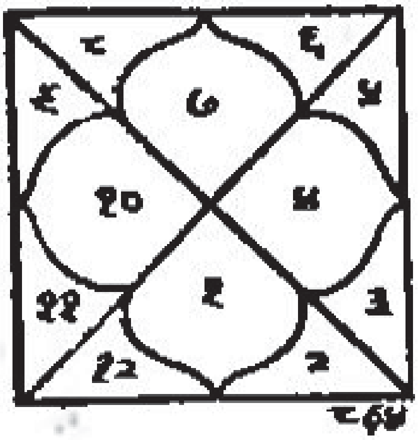

च९४

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं जिन पर वह गुप्त युक्तियों, चतुराई, धैर्य एवं हिम्मत के बल पर विजय पाता है तथा उन्नति करता है। कभी-कभी उसे विशेष संकटों का सामना भी करना पड़ता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

तुलालग्न : द्वादशभाव : राहु

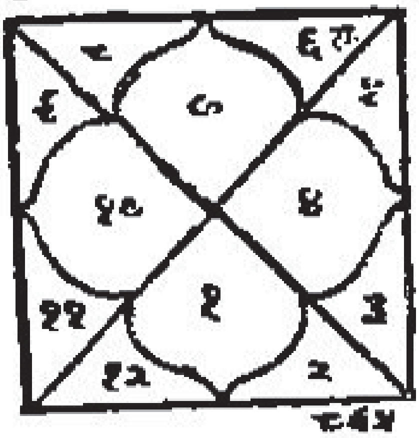

बारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा कभी-कभी बड़े संकटों का शिकार भी बनना पड़ता है। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ लाभ भी मिल जाता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा विवेकी, कूट-नीतिज्ञ, परिश्रमी, धैर्यवान् तथा हिम्मती होता है।

'तुला' लग्न में 'केतु'

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

तुलालग्न : प्रथमभाव : केतु

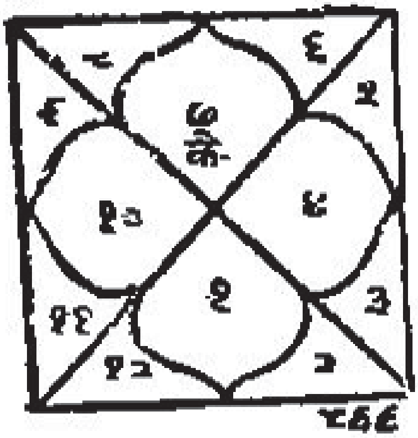

पहले भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को कभी-कभी विशेष शारीरिक संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु वह अपने गुप्त चातुर्य तथा साहस के बल पर उन पर विजय पाता है और भीतर से गुप्त कमजोरी रहते हुए भी ऊपर से बड़ा हिम्मती दिखाई देता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

तुलालग्न : द्वितीयभाव : केतु

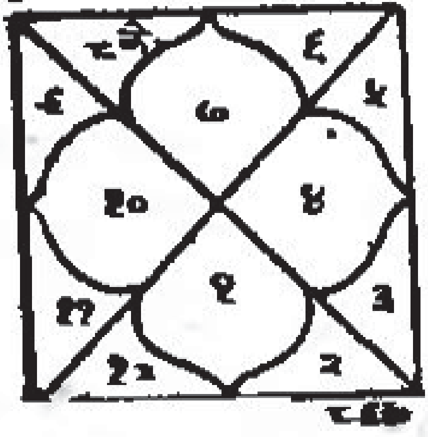

दूसरे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की धन-प्राप्ति एवं धन-संचय के मार्ग में बड़े संकट आते हैं। वह गुप्त युक्तियों के बल पर ही धनोपार्जन करता है, परन्तु हमेशा चिन्तित तथा परेशान ही बना रहता है। उसे अपने कुटुम्बियों द्वारा भी कष्ट मिलता है। फिर भी वह बड़ा हिम्मती तथा धैर्य वाला होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

तुलालग्न : तृतीयभाव : केतु

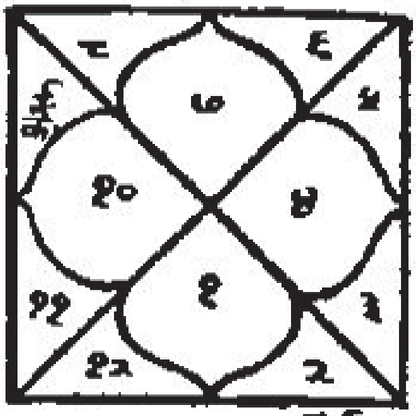

८९८

तीसरे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित उच्च के 'केतु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी खूब मिलता है। कभी-कभी भाई-बहिनों के कारण उसे कष्ट भी उठाना पड़ता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, परिश्रमी तथा धैर्यवान् होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

तुलालग्न : चतुर्थभाव : केतु

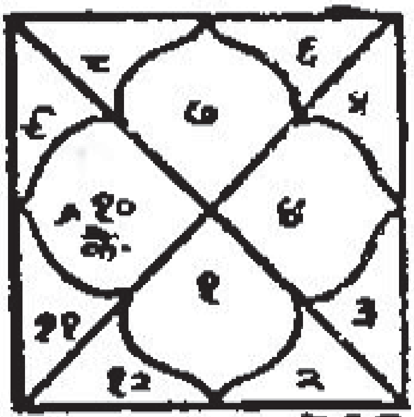

८९९

चौथे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। घरेलू झगड़े भी बहुत रहते हैं, फिर भी वह अपने धैर्य, साहस तथा गुप्त युक्तियों के बल से कठिनाइयों पर विजय पाने का प्रयत्न करता है और कुछ सफलता भी पा लेता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

तुलालग्न : पंचमभाव : केतु

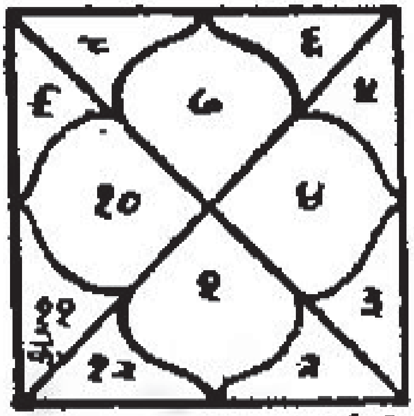

९००

पाँचवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को संतान-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं।

ऐसा व्यक्ति अनेक कठिनाइयों के बाद विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में थोड़ी-बहुत सफलता पाता है, फिर भी उसके संकट बने ही रहते हैं।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

तुल; लग्न : षष्ठभाव : केतु

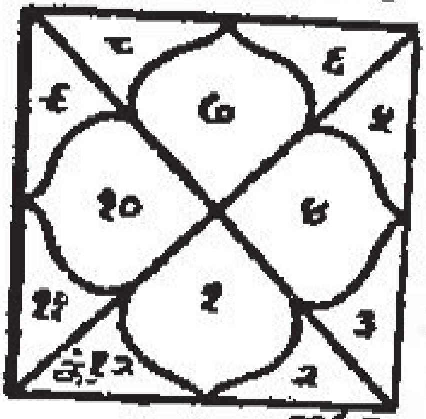

८६१

छठे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक झगड़े-झंझट, रोग तथा शत्रुपक्ष में बड़ी हिम्मत, बहादुरी तथा धैर्य से काम लेकर सफलता प्राप्त करता है और कभी डरता या घबराता नहीं है। उसे अपने उद्देश्य में सफलता भी मिलती है। ऐसे व्यक्ति का ननसाल-पक्ष प्राय: कमजोर रहता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

तुल; लग्न : सप्तमभाव : केतु

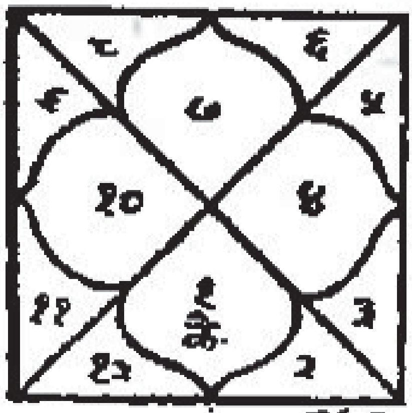

८६२

सातवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से विशेष कष्ट मिलता है तथा दैनिक आमदनी में भी बड़ी कठिनाइयाँ आती हैं। वह स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष में सफलता पाने के लिए धैर्य, हिम्मत, पराक्रम तथा गुप्त युक्तियों का सहारा लेता है और थोड़ी-बहुत सफलता भी प्राप्त करता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

तुल; लग्न : अष्टमभाव : केतु

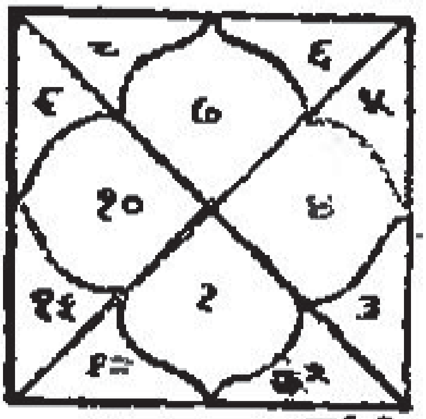

८६३

आठवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की आयु पर अनेक बार संकट आते हैं तथा उसे पुरातत्त्व की भी हानि उठानी पड़ती है। पेट में कुछ विकार भी रहता है।

ऐसा व्यक्ति सदैव चिन्तातुर रहता है तथा अपने साहस, धैर्य एवं गुप्त युक्तियों के बल पर कुछ सफलता भी प्राप्त कर लेता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

तुला लग्न : नवमभाव : केतु

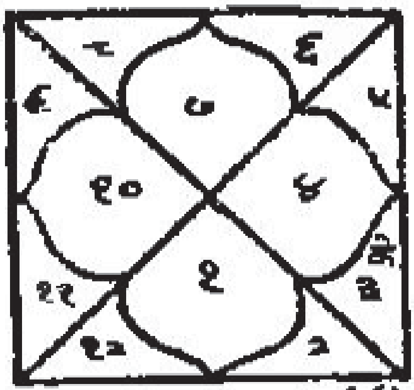

८७४

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में अनेक बाधाएँ आती हैं तथा कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है।

ईश्वर तथा धर्म के विषय में भी उनकी श्रद्धा कम होती है। वह धर्म के विरुद्ध चलने में भी नहीं चूकता तथा स्वार्थ-सिद्धि के लिए अनुचित साधनों का प्रयोग कर अपयश भी पाता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

तुला लग्न : दशमभाव : केतु

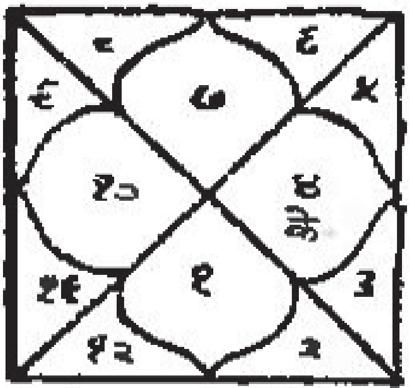

८७५

दसवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को अपने पिता द्वारा कष्ट प्राप्त होता है तथा राज्य-पक्ष से भी परेशानी होती है। व्यवसाय में उसे विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ता है। उसे अपने जीवन में प्रायः अनेक उतार-चढ़ाव देखने पड़ते हैं।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

तुला लग्न : एकादशभाव : केतु

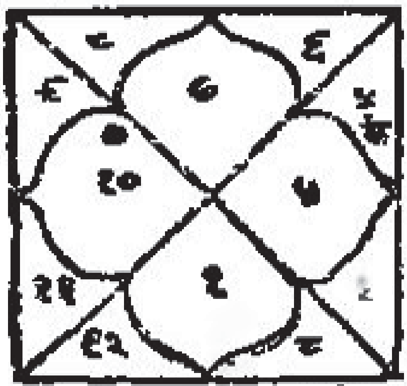

८७६

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है परन्तु वह अपने धैर्य, परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर उन्हें दूर करके सफलता प्राप्त करता है। कभी-कभी उसे लाभ के बजाय बहुत घाटा भी उठाना पड़ता है। अनेक संकटों को पार करने के बाद ही उसे सफलता मिलती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

तुला लग्न : द्वादशभाव : केतु

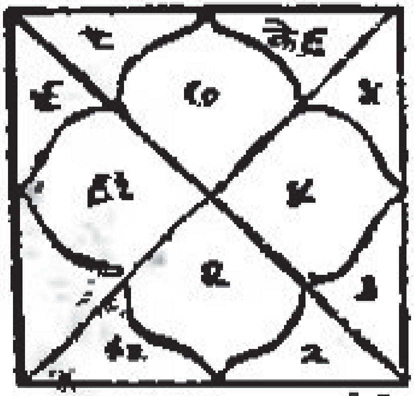

८७७

बारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित केतु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से उसे लाभ भी प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपना खर्च चलाने के लिए विवेक-बुद्धि से काम लेता तथा कठिन परिश्रम करता है, फिर भी उसे कभी-कभी बड़ी कठिनाइयों का शिकार बनना पड़ता है तथा अन्त में सफलता भी प्राप्त हो जाती है।

'वृश्चिक लग्न'

●

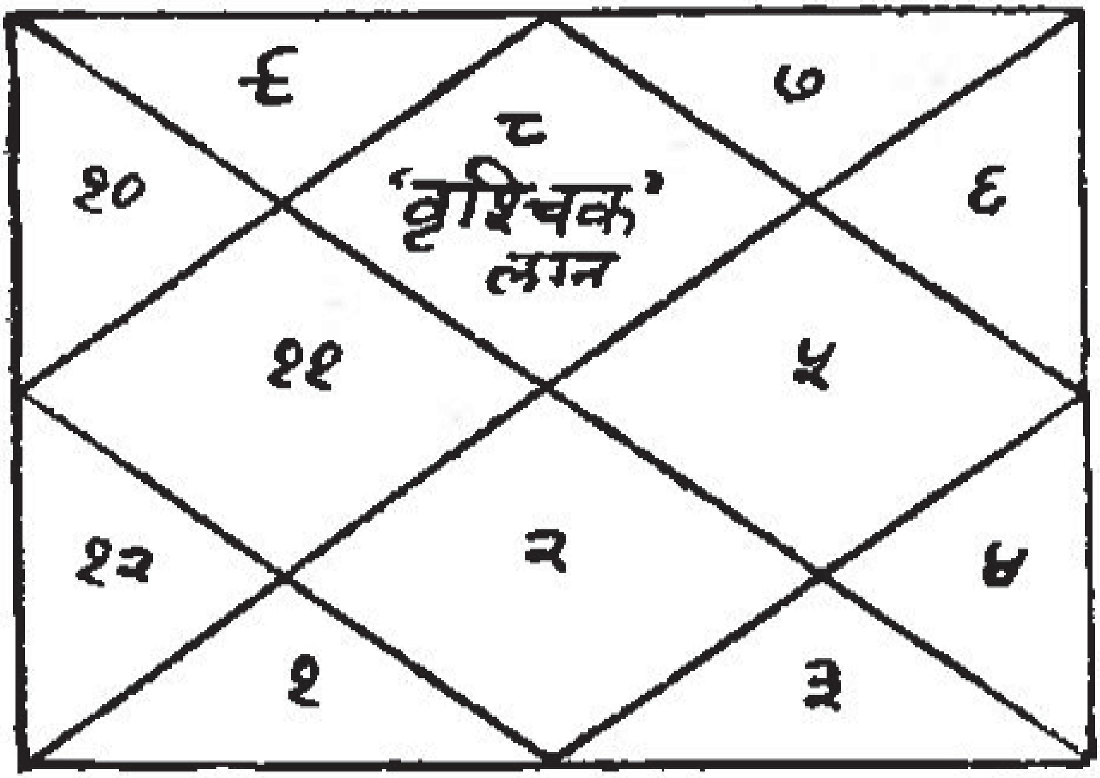

८७८

['वृश्चिक' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'वृश्चिक' लग्न का फलादेश

'वृश्चिक' लग्न में जन्म लेने वाला जातक ठिगने तथा स्थूल शरीर का होता है। उसकी आँखें गोल तथा छाती चौड़ी होती है। ऐसा व्यक्ति क्रोधी, पाखण्डी, मिथ्यावादी, तमोगुणी, कपटी, कड़वे स्वभाव का, पर-निन्दक, दयाहीन, भिक्षा-वृत्ति करने वाला, भाइयों से द्वेष रखने वाला, शत्रु-नाशक तथा सेवा-कर्म करने वाला होता है। परन्तु इसके साथ ही वह शास्त्रज्ञ, विद्या के आधिक्य से युक्त, गुणी, शूरवीर, अत्यन्त विचारशील तथा ज्योतिषी भी होता है। दूसरों के मन की बात जान लेने में वह बड़ा निपुण होता है।

'वृश्चिक' लग्न में जन्म लेने वाला जातक अपनी प्रारंभिक अवस्था में दुःखी रहता है तथा मध्यमावस्था में सुख भोगता है। २० से २४ वर्ष की आयु के बीच उसका भाग्योदय होता है।

वृश्चिक लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या ८७६ से ९८६ के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें—इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

●

'वृश्चिक' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१. 'वृश्चिक' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८७६ से ८९० के बीच देखना चाहिए।

२. 'वृश्चिक' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'सूर्य'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ८७६

(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ८८०

(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ८८१

(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ८८२

(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ८८३

(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ८८४

(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८८५

(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८८६

(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ८८७

(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ८८८

(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ८८९

(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ८९०

'वृश्चिक' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१. 'वृश्चिक' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८९१ से ९०२ के बीच देखना चाहिए।

२. 'वृश्चिक' लग्न वालों की गोचरकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दिन 'चन्द्रमा'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ८९१
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ८९२
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ८९३
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ८९४
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ८९५
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ८९६
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८९७
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८९८
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ८९९
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ९००
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ९०१
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ९०२

'वृश्चिक' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१. 'वृश्चिक' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित मंगल का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९०३ से ९१४ के बीच देखना चाहिए।

२. 'वृश्चिक' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित मंगल का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मंगल'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ९०३
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ९०४
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ९०५
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ९०६
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ९०७
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ९०८
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ९०९

(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ९१०
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ९११
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ९१२
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ९१३
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ९१४

'वृश्चिक' लग्न में 'बुध' का फलादेश

१. 'वृश्चिक' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९१५ से ९२६ के बीच देखना चाहिए।

२. 'वृश्चिक' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'बुध'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ९१५
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ९१६
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ९१७
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ९१८
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ९१९
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ९२०
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ९२१
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ९२२
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ९२३
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ९२४
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ९२५
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ९२६

'वृश्चिक' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१. 'वृश्चिक' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९२७ से ९३८ के बीच देखना चाहिए।

२. 'वृश्चिक' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'गुरु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ९२७
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ९२८

(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ९२९
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ९३०
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ९३१
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ९३२
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ९३३
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ९३४
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ९३५
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ९३६
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ९३७
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ९३८

'वृश्चिक' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१. 'वृश्चिक' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९३९ से ९५० के बीच देखना चाहिए।

२. 'वृश्चिक' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ९३९
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ९४०
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ९४१
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ९४२
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ९४३
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ९४४
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ९४५
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ९४६
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ९४७
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ९४८
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ९४९
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ९५०

'वृश्चिक' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१. 'वृश्चिक' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९५१ से ९६२ के बीच देखना चाहिए।

२. 'वृश्चिक' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'शनि'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ९५१
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ९५२
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ९५३
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ९५४
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ९५५
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ९५६
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ९५७
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ९५८
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ९५९
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ९६०
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ९६१
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ९६२

'वृश्चिक' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१. 'वृश्चिक' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९६३ से ९७४ के बीच देखना चाहिए।

२. 'वृश्चिक' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ९६३
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ९६४
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ९६५
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ९६६
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ९६७
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ९६८
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ९६९
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ९७०
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ९७१
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ९७२
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ९७३
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ९७४

'वृश्चिक' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१. 'वृश्चिक' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९७५ से ९८६ के बीच देखना चाहिए।

२. वृश्चिक' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में केतु'—

(क) मेष' राशि पर हो तो संख्या ९७५
(ख) वृष' राशि पर हो तो संख्या ९७६
(ग) मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ९७७
(घ) कर्क' राशि पर हो तो संख्या ९७८
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ९७९
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ९८०
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ९८१
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ९८२
(झ) धनु' राशि पर हो तो संख्या ९८३
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ९८४
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ९८५
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ९८६

'वृश्चिक' लग्न में 'सूर्य'

वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : प्रथमभाव : सूर्य

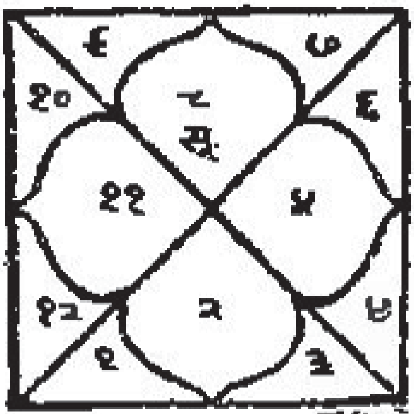

९८७

शरीर-स्थान में अपने मित्र मंगल को वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक सौन्दर्य से युक्त, हृष्ट-पुष्ट, आत्माभिमानी, क्रोधी, प्रभावशाली और दबंग होता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय-पक्ष से जातक को सुख, सहयोग और सम्मान प्राप्त होता है। वह सुन्दर वस्त्रों तथा आभूषणों का शौकीन और यशस्वी होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की राशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री से वैमनस्य रहता है तथा दैनिक व्यवसाय में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : द्वितीयभाव : सूर्य

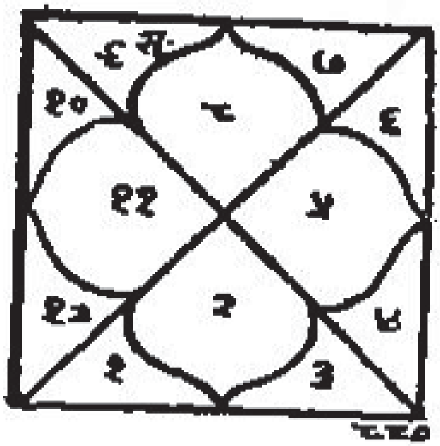

दूसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को पितृपक्ष से धन की प्राप्ति होती है तथा कौटुम्बिक सुख भी मिलता है। राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी लाभ होता है, परन्तु पिता के सुख में कुछ कमी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति भी प्राप्त होती है। ऐसे व्यक्ति का दैनिक जीवन सुखी तथा प्रभावपूर्ण बना रहता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : तृतीयभाव : सूर्य

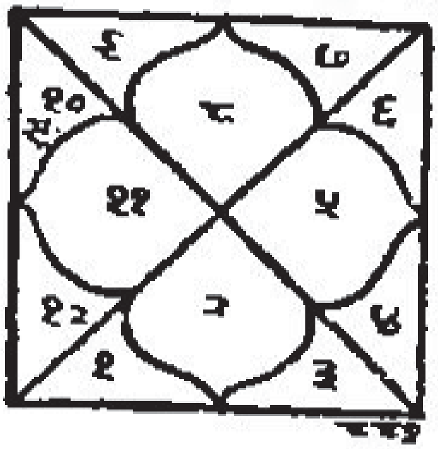

तीसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ प्राप्त होती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति तेजस्वी तथा पुरुषार्थी होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : चतुर्थभाव : सूर्य

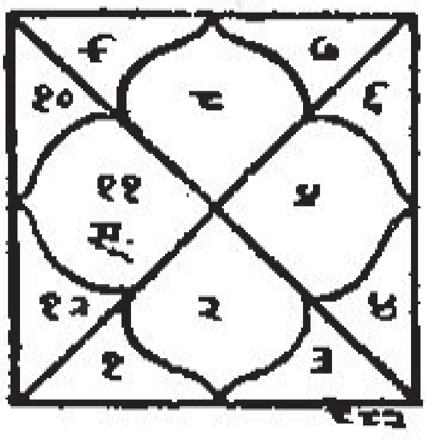

चौथे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक का अपनी माता के साथ मतभेद रहता है तथा भूमि-भवन के सुख में कुछ कमी आती है। घरेलू सुख में भी कुछ त्रुटियाँ बनी रहती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में दशम भाव को देखने से राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग सम्मान, लाभ तथा सफलता की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति स्वयं उन्नति करता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : पंचमभाव : सूर्य

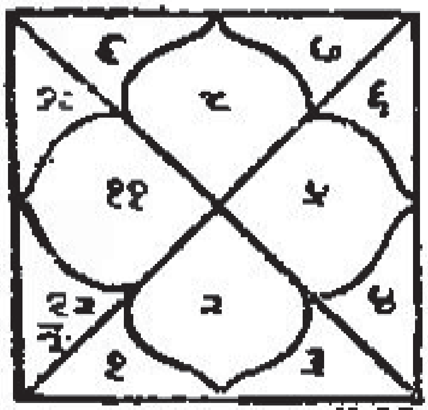

८८३

पाँचवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है। राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सम्मान, सहयोग एवं लाभ मिलता है। राजनीतिक क्षेत्र में उन्नति मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से लाभ के श्रेष्ठ साधन प्राप्त होते हैं। ऐसा व्यक्ति उच्च कोटि का जीवन बिताता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : षष्ठभाव : सूर्य

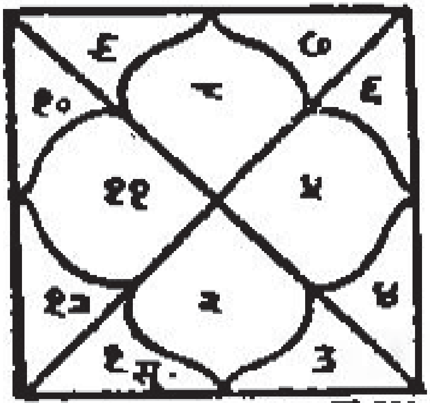

८८४

छठे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है। राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है, परन्तु माता एवं पिता से कुछ मतभेद बना रहता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च के मामले में कठिनाइयाँ बनी रहती हैं तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी परेशानी देता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : सप्तमभाव : सूर्य

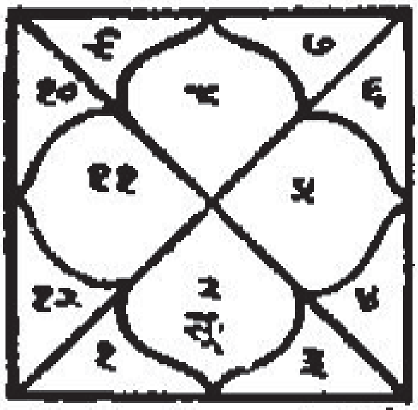

८८५

सातवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से संतोष एवं शक्ति की प्राप्ति होती है तथा दैनिक व्यवसाय में भी सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से जातक का शरीर सुन्दर तथा व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है। ऐसा व्यक्ति प्रभावशाली, त्यागी तथा उन्नतिशील होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : अष्टमभाव : सूर्य

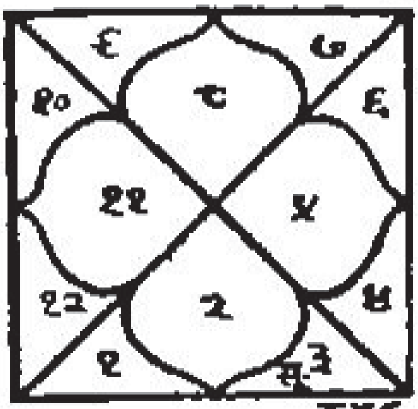

८६

आठवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व में वृद्धि होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, धन एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से परिश्रम द्वारा धन की पर्याप्त वृद्धि होती है तथा कौटुम्बिक सुख भी प्राप्त होता है। बाहरी स्थानों से भी सम्बन्ध जुड़ता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : नवमभाव : सूर्य

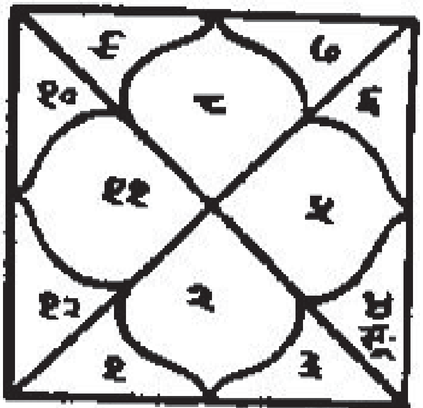

८७

नवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के धर्म तथा भाग्य की उन्नति होती है एवं पिता, राज्य और व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों मतभेद रहता है तथा पराक्रम में सामान्य वृद्धि होती है।

संक्षेप में, ऐसा व्यक्ति सुखी जीवन बिताता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : दशमभाव : सूर्य

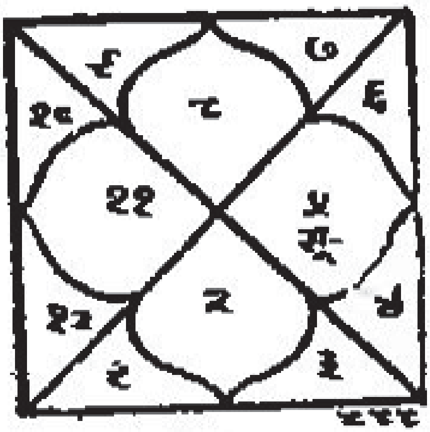

८८

दसवें भाव में स्वराशि-स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, सहयोग, लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। वह अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए उग्र कर्म भी करता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से जातक का अपनी माता के साथ वैमनस्य रहता है तथा भूमि एवं भवन के सुख में कमी रहती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : एकादशभाव : सूर्य

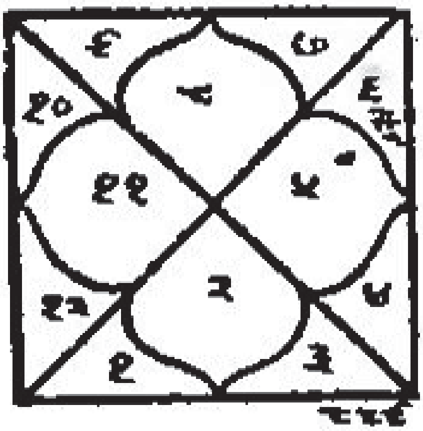

८८९

ग्यारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को अपने पिता द्वारा श्रेष्ठ लाभ होता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सम्मान, धन, लाभ एवं सहयोग की प्राप्ति होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से मित्र, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष से भी श्रेष्ठ लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति स्वाभिमानी, तेज स्वभाव का, प्रतिष्ठित तथा यशस्वी होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : द्वादशभाव : सूर्य

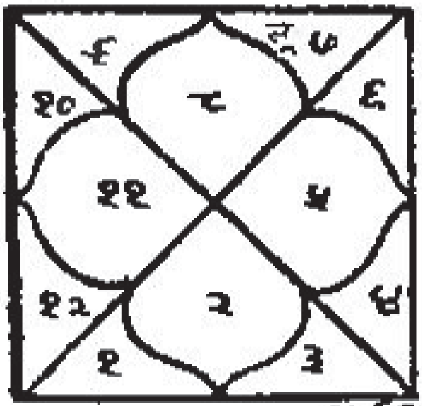

८९०

बारहवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित नीच के 'सूर्य' के प्रभाव से जातक बड़ी कठिनाई से खर्च चलाता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी कष्ट होता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं उच्च मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है तथा झगड़े-मुकदमे आदि से भी लाभ मिलता है।

'वृश्चिक' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

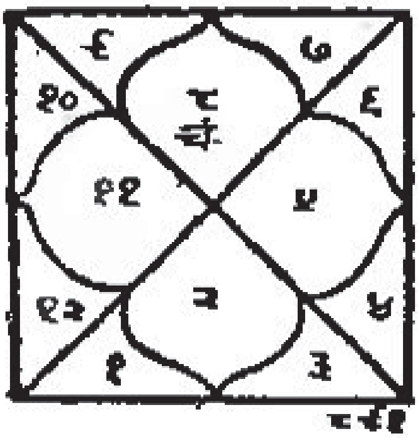

८९१

पहले भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक का शरीर कुछ दुर्बल रहता है तथा यश भी कठिनाई से मिलता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से सुन्दर तथा मनोनुकूल स्त्री प्राप्त होती है एवं दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती रहती हैं।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'चन्द्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : द्वितीयभाव : चंद्र

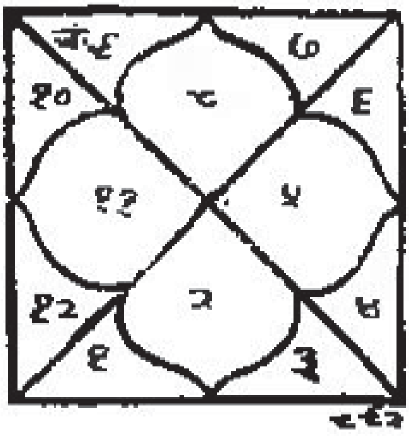

दूसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को धन-संचय में सफलता मिलती है तथा कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त होता है। परन्तु वह धर्म का यथाविधि पालन नहीं करता।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा आयु की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा भाग्यशाली होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'चन्द्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : तृतीयभाव : चंद्र

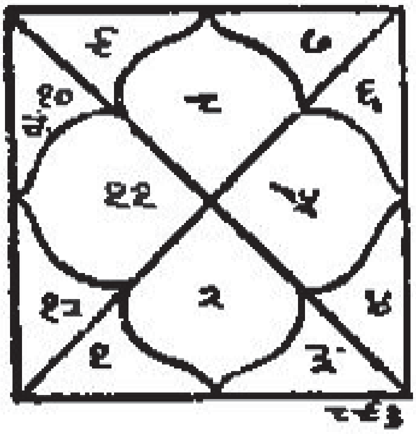

तीसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी आती है। मानसिक शक्ति बहुत प्रबल होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में नवम भाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की उन्नति होती है। ऐसा व्यक्ति अपने पुरुषार्थ द्वारा यशस्वी एवं भाग्यशाली बनता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'चन्द्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : चतुर्थभाव : चंद्र

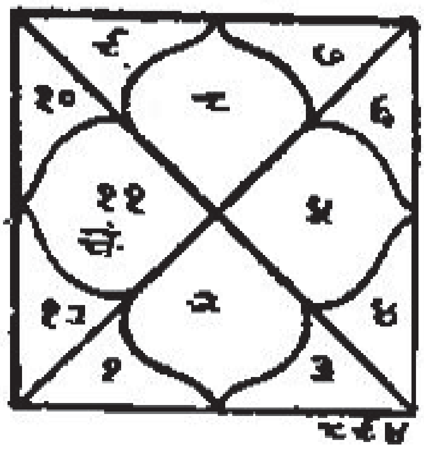

चौथे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को कुछ असन्तोष के साथ माता, भूमि एवं भवन का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। वह धर्म का पालन करता है तथा मनोयोग के द्वारा भाग्य की उन्नति करता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में सुख, सम्मान, लाभ एवं सफलता की प्राप्ति होती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'चन्द्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : पंचमभाव : चंद्र

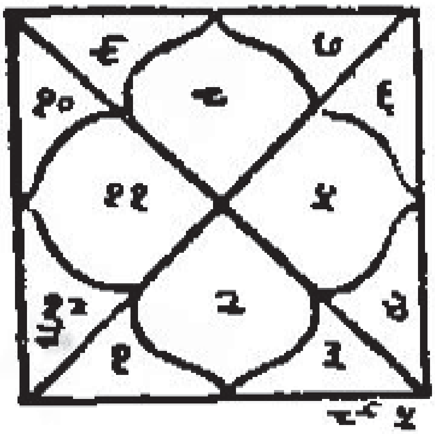

चक्र ५

पाँचवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में अच्छी सफलता मिलती है। वह सज्जन, विनम्र, मधुरभाषी, धर्मात्मा तथा अपने बुद्धि-बल से भाग्य की उन्नति करने वाला भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से भाग्य की वृद्धि होती है तथा लाभ भी खूब होता रहता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'चन्द्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : षष्ठभाव : चंद्र

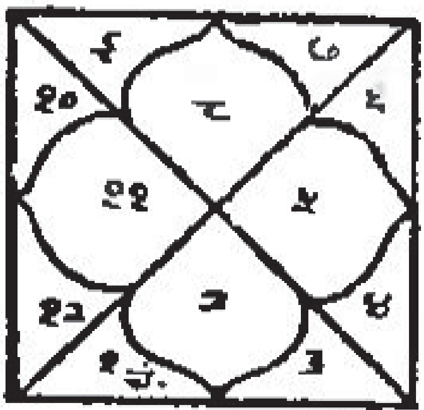

चक्र ६

छठे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में अपनी शान्ति-नीति से सफलता मिलती है। यों, शत्रुओं के कारण मन में अशान्ति भी बनी रहती है।

सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से भाग्य-बल पर खर्च चलता रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ एवं सफलताओं की प्राप्ति भी होती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'चन्द्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : सप्तमभाव : चंद्र

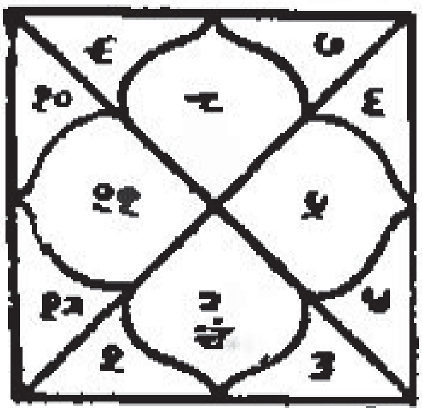

चक्र ७

सातवें भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित उच्च के 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को सुन्दर तथा भाग्यशालिनी स्त्री मिलती है। उसका गृहस्थ जीवन सुखमय रहता है। दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं। मनोबल बढ़ा रहने के कारण भाग्य तथा यश में भी वृद्धि होती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शरीर में कुछ कमजोरी रहती है तथा भाग्य एवं धर्म के पक्ष में भी कुछ न्यूनता बनी रहती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'चन्द्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : अष्टमभाव : चन्द्र

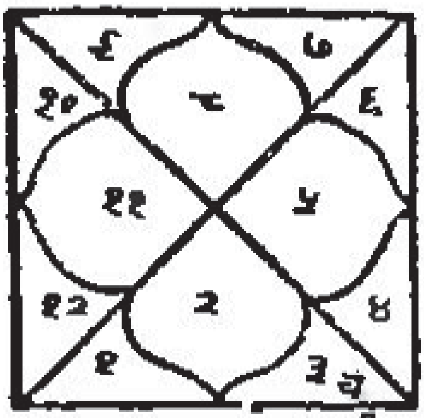

८९८

आठवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख का लाभ भी पर्याप्त मिलता है।

ऐसा व्यक्ति शान्त स्वभाव वाला, धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'चन्द्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : नवमभाव : चन्द्र

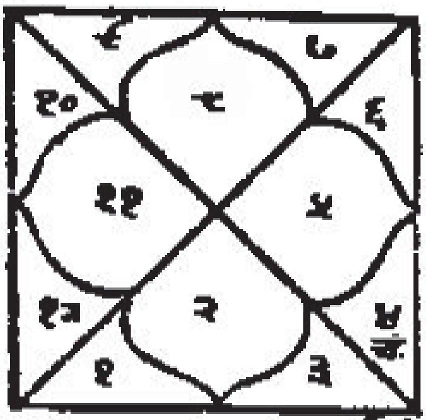

८९९

नवें भाव में स्वराशिस्थ 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के धर्म तथा भाग्य की अच्छी उन्नति होती है। वह यशस्वी तथा धनी होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों का सुख त्रुटिपूर्ण रहता है, परन्तु पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है।

ऐसा व्यक्ति सुख तथा समृद्धि से युक्त जीवन बिताता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'चन्द्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : दशमभाव : चन्द्र

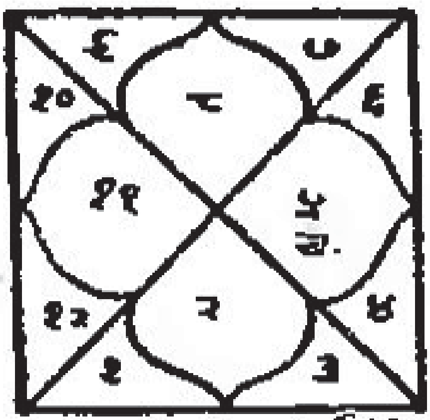

९००

दसवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलताएँ मिलती हैं। वह धर्मात्मा तथा भाग्यशाली होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी रहती है। परन्तु जातक सुखी, यशस्वी, सन्तुष्ट तथा धनी जीवन बिताता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : एकादशभाव : चन्द्र

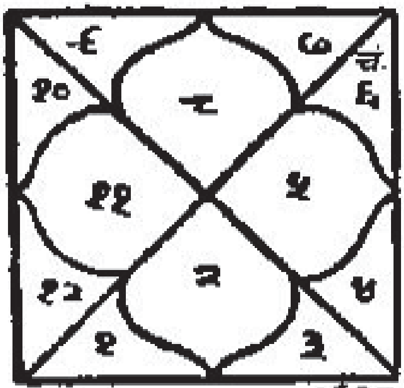

९०१

ग्यारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को श्रेष्ठ लाभ होता रहता है। वह धर्मपरायण, भाग्यशाली, सुखी तथा यशस्वी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या-बुद्धि एवं सन्तान का श्रेष्ठ लाभ होता है, वाणी में शक्ति रहती है तथा मनोबल बढ़ा-चढ़ा रहता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'चन्द्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : द्वादशभाव : चन्द्र

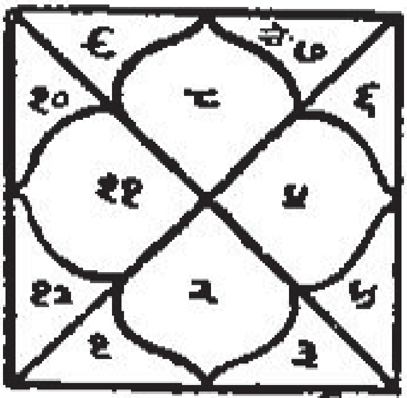

९०२

बारहवें भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु उसकी पूर्ति के लिए किसी कठिनाई का अनुभव नहीं होता। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से अत्यधिक लाभ होता है। स्वदेश में भाग्य कमजोर रहता है, परन्तु विदेश में तरक्की होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में शक्ति से काम निकालता है तथा भाग्य-बल से कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता है।

'वृश्चिक' लग्न में 'मंगल'

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : प्रथमभाव : मंगल

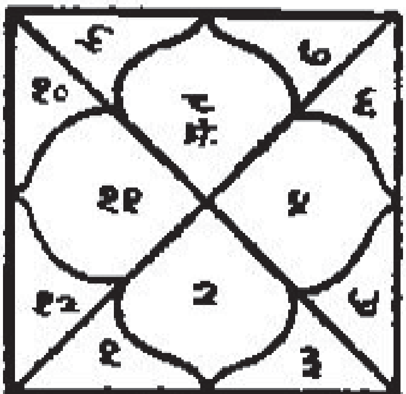

९०३

पहले भाव में स्वराशि में स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है तथा शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है।

चौथी शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : द्वितीयभाव : मंगल

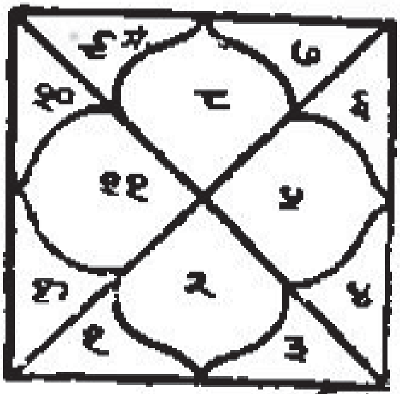

९०४

दूसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक अपने शारीरिक श्रम द्वारा धनोपार्जन करता है तथा कुछ परेशानियों के साथ कौटुम्बिक सुख भी प्राप्त करता है। शारीरिक सुख एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है किन्तु शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। चौथी मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। आठवीं नीच-दृष्टि से नवम भाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की हानि होती है और यश की भी कमी रहती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : तृतीयभाव : मंगल

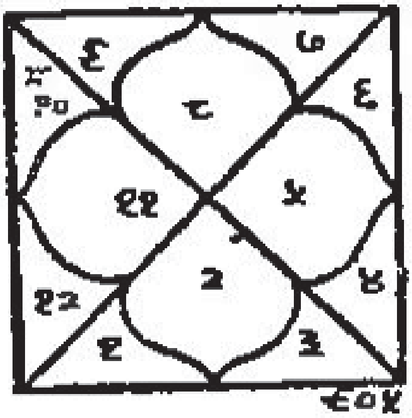

९०५

तीसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों से सामान्य वैमनस्य रहता है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से नवम भाव को देखने से धर्म का यथाविधि पालन नहीं होता तथा भाग्य की अपेक्षा पुरुषार्थ का अधिक भरोसा रखा जाता है। आठवीं मित्र-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में सुख, सहयोग, लाभ तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : चतुर्थभाव : मंगल

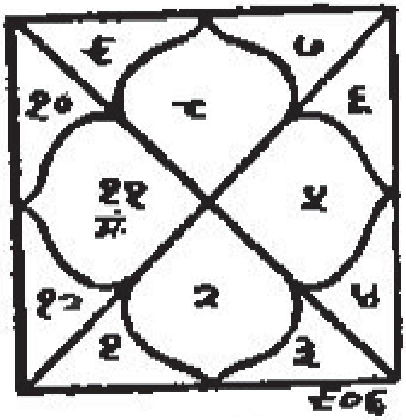

९०६

चौथे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी रहती है। चौथी सामान्य शत्रु-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री-पक्ष से सामान्य मतभेद-युक्त सुख प्राप्त होता है तथा दैनिक व्यवसाय में सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सफलता, लाभ एवं यश की प्राप्ति होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी बहुत अच्छी रहती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : पंचमभाव : मंगल

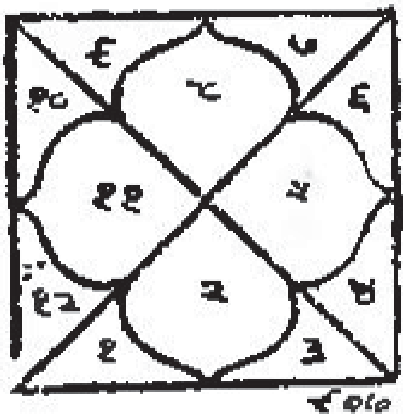

पाँचवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। शत्रु-पक्ष पर विजय पाने के लिए गहरी चालें चलनी पड़ती हैं। चौथी मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी खूब होती है।

आठवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहने में परेशानी का अनुभव होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : षष्ठभाव : मंगल

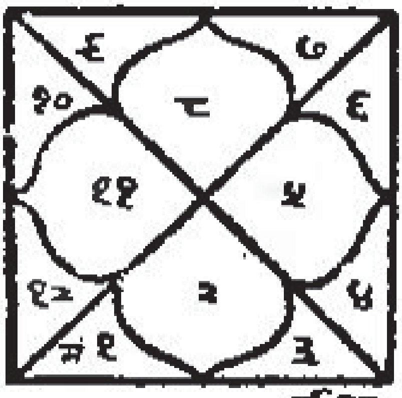

छठे भाव में स्वराशि में स्थित 'मंगल' के प्रभावसे जातक को शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है। चौथी नीच-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म में कमी रहती है। सम्मान में भी कमी आती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादश भाव से देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों से सम्बन्ध से लाभ होता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथमभाव को देखने से शरीर के प्रभाव तथा आत्म-बल में सामान्य वृद्धि होती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : सप्तमभाव : मंगल

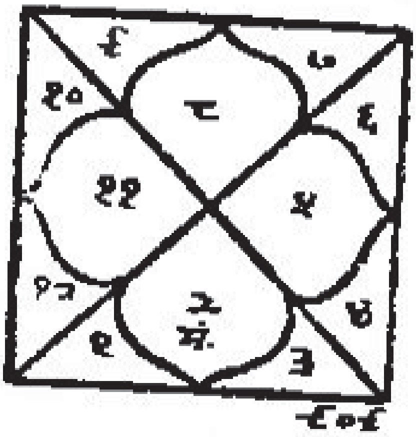

सातवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कुछ परेशानी रहती है, जननेंद्रिय में विकार होता है तथा दैनिक व्यवसाय में भी कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। चौथी मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय पक्ष में सुख-सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के प्रथमभाव को देखने से शारीरिक शक्ति एवं व्यक्तित्व का विकास होता है। आठवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति मानाभिमान-सुखी रहता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : अष्टमभाव : मंगल

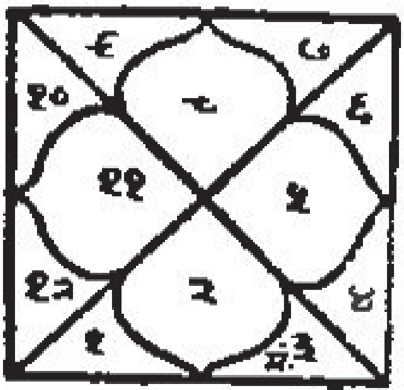

९१०

आठवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा सुख में कमी आती है। आयु तथा पुरातत्व के लाभ में भी कमी रहती है। पेट में विकार रहता है तथा शत्रु-पक्ष से परेशानी होती है। चौथी मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कौटुम्बिक सुख की वृद्धि विशेष प्रयत्न से होती है। आठवीं उच्च दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन की शक्ति प्राप्त होती है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : नवमभाव : मंगल

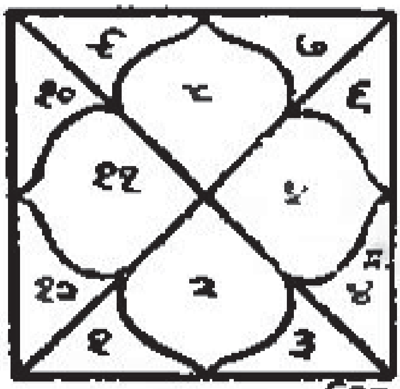

९११

नवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित नीच के 'मंगल' के प्रभाव से जातक के धर्म तथा भाग्य में कुछ कमी रहती है। शत्रु-पक्ष के झंझट से भी भाग्योन्नति में बाधा पड़ती है। वैसे जातक धनी होता है। चौथी शत्रु-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में वृद्धि होती है। आठवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : दशमभाव : मंगल

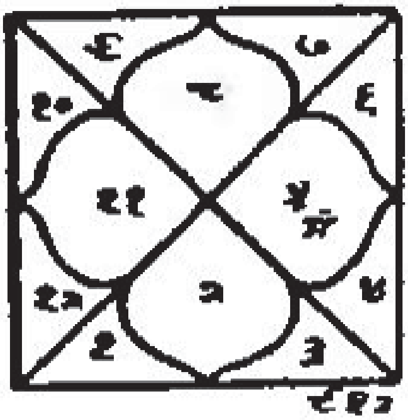

९१२

दसवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर 'स्थित' मंगल के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सफलता, सहयोग तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में प्रथम भाव को देखने से शारीरिक शक्ति प्रबल रहती है। ऐसा व्यक्ति सगवत तथा स्वाभिमानी होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी रहती है। आठवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : एकादशभाव : मंगल

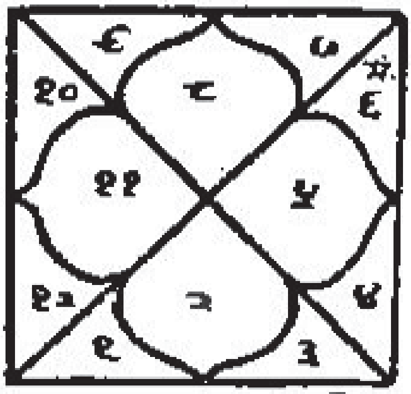

६६३

ग्यारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक शारीरिक परिश्रम द्वारा पर्याप्त लाभ कमाता रहता है। परन्तु शत्रु-पक्ष से कुछ कष्ट होता है तथा शरीर रोगी भी हो जाया करता है। चौथी मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन एवं कुटुम्ब के सुख में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठम भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है तथा ननसाल पक्ष से लाभ होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : द्वादशभाव : मंगल

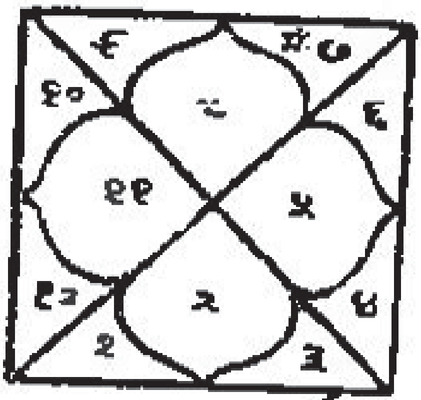

६६४

बारहवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख-शान्ति मिलती है। चौथी उच्च-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठ-भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती रहती है।

आठवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री से कुछ वैमनस्य रहते हुए भी सुख मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय में कुछ परेशानियों के साथ लाभ होता है।

'वृश्चिक' लग्न में 'बुध'

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : प्रथमभाव : मंगल

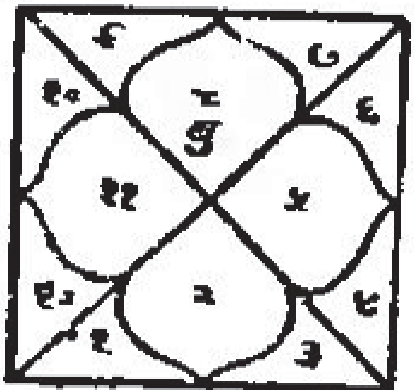

६६५

पहले भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के शारीरिक प्रभाव में वृद्धि होती है। उसे आयु एवं शक्ति का लाभ भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री-पक्ष में कुछ कठिनाई के लाभ सहयोग मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय में भी परिश्रम के बाद ही सफलता मिलती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : द्वितीयभाव : बुध

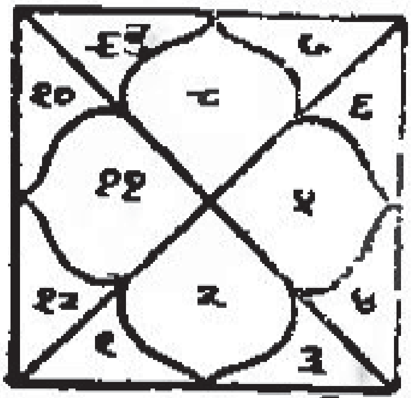

९१९

दूसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है।

ऐसी ग्रहस्थिति वाला व्यक्ति शान-शौकत का जीवन बिताता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : तृतीयभाव : बुध

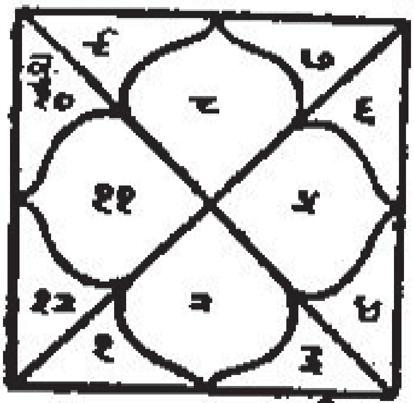

९२०

तीसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी प्राप्त होता है। साथ ही आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से नवम भाव को देखने से जातक स्वविवेक-शक्ति द्वारा भाग्य एवं धर्म की उन्नति करता है।

ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी, धर्मात्मा तथा पराक्रमी होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : चतुर्थभाव : बुध

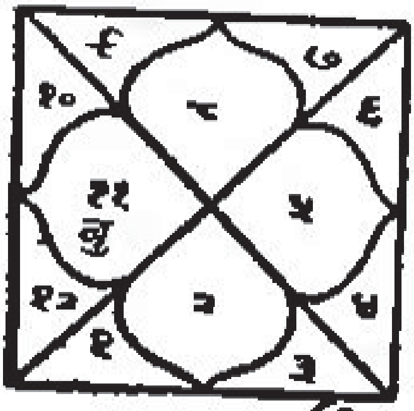

९२१

चौथे भाव में, मित्र-'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है तथा आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि भी होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सुख, सफलता, लाभ तथा यश की प्राप्ति होती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली से 'पंचमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : पंचमभाव : बुध

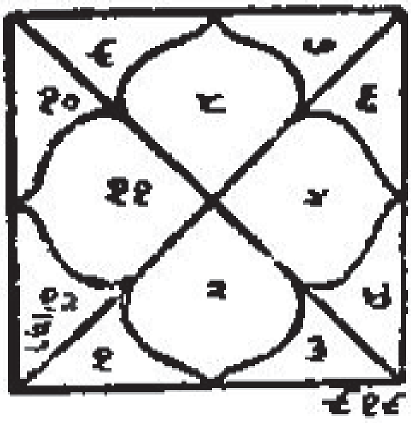

९१९

पाँचवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित नीच के 'बुध' के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष में कष्ट का सामना करना पड़ता है, परन्तु स्वविवेक-शक्ति से लाभ भी होता है। आयु के क्षेत्र में कुछ परेशानी आती है। पुरातत्त्व का स्वल्प लाभ होता है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से स्वराशि में एकादश भाव को देखने से आमदनी बहुत अच्छी रहती है तथा जीवन सुख से बीतता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : षष्ठभाव : बुध

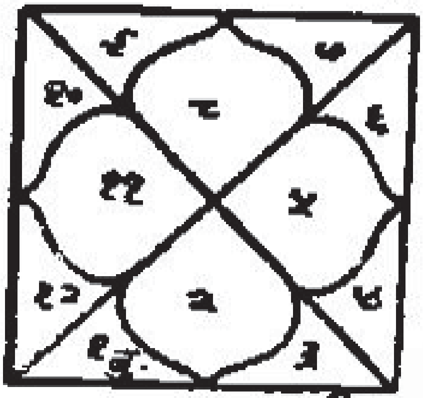

९२०

छठे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक शत्रुपक्ष पर विजय पाता है। कुछ कठिनाइयों के साथ आमदनी बढ़ती है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ भी मिलता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : सप्तमभाव : बुध

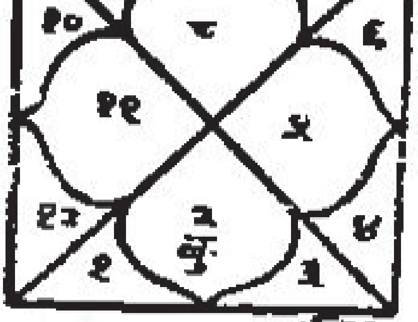

९२१

सातवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा आयु एवं पुरातत्त्व का भी लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक बल एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है तथा दैनिक जीवन लाभ-शौकत से व्यतीत होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : अष्टमभाव : बुध

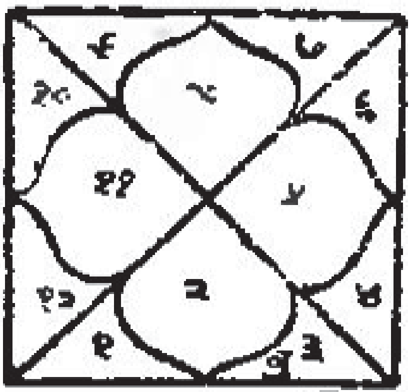

कुं २२

आठवें भाव में स्वराशि स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से जातक स्वविवेक द्वारा धन का संचय करता है। उसे कौटुम्बिक सुख भी प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अमीरी ढंग का जीवन बिताता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : नवमभाव : बुध

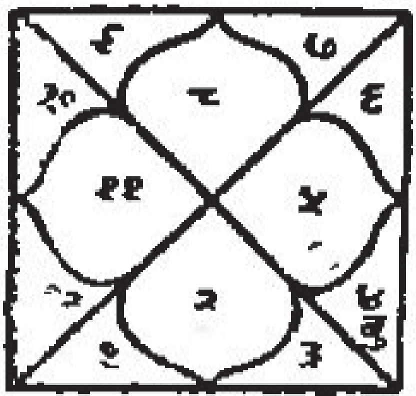

कुं २३

नवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। साथ ही आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से कुछ कमियों के साथ ही भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि भी होती है। ऐसा व्यक्ति प्रायः सुखी तथा भाग्यशाली जीवन बिताता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : दशमभाव : बुध

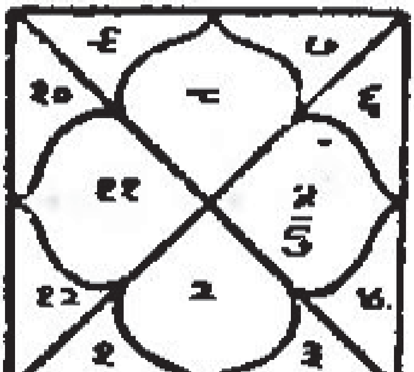

कुं २४

दसवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ पिता का सुख एवं लाभ तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सम्मान और सफलता की प्राप्ति होती है। पुरातत्त्व एवं आयु का लाभ भी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ माता, भूमि एवं भवन आदि का सुख भी प्राप्त होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : एकादशभाव : बुध

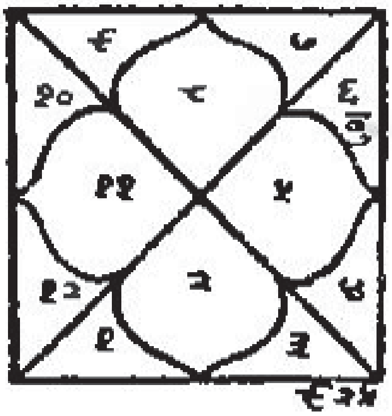

ग्यारहवें भाव में स्वराशि-स्थित उच्च के 'बुध' के प्रभाव से जातक की आमदनी खूब रहती है। आयु तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में अच्छी सफलता मिलती है।

ऐसा व्यक्ति कुछ रूखे स्वभाव का भी होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : द्वादशभाव : बुध

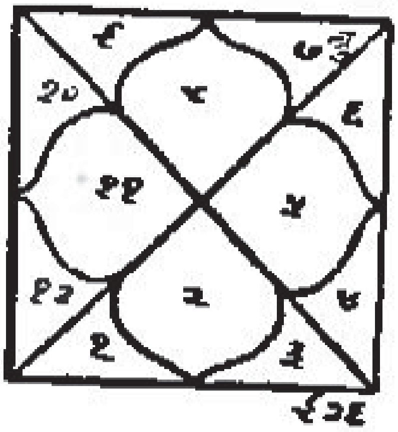

बारहवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ भी होता है। आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति भी बढ़ती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में विवेक-बुद्धि एवं विनम्रता से काम निकालता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन भ्रमणशील होता है तथा चित्त में कुछ अशान्ति भी बनी रहती है।

'वृश्चिक' लग्न में 'गुरु'

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : प्रथमभाव : गुरु

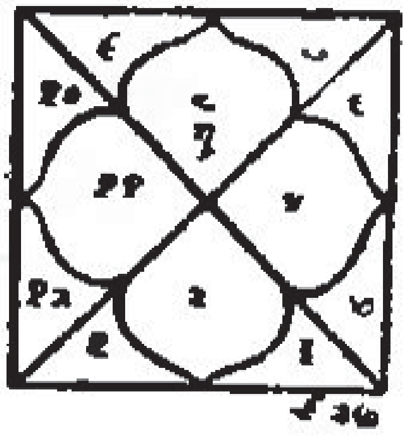

पहले भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति तथा प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में श्रेष्ठ सफलता मिलती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री से कुछ मतभेद रहता है तथा दैनिक व्यवसाय में पहले सामान्य कठिनाइयाँ आती हैं, किन्तु बाद में लाभ भी होता है। स्त्री से भी सुख मिलता है।

नवीं उच्चदृष्टि से नवम भाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की विशेष उन्नति होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी तथा भाग्यशाली होता है।

ंश्चक' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

श्चिक लग्न : द्वितीयभाव : बुध

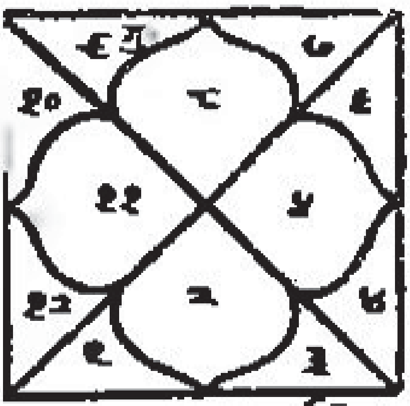

६२८

दूसरे भाव में स्वराशि में स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का उत्तम सुख प्राप्त होता है। सन्तान-पक्ष में कुछ कमी रहती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में बुद्धिमानी से सफलता मिलती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है। नवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य, पिता एवं व्यवसाय के द्वारा सुख, सम्मान म तथा यश की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा बुद्धिमान तथा धनी होता है।

श्चिक' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

श्चिक लग्न : तृतीयभाव : गुरु

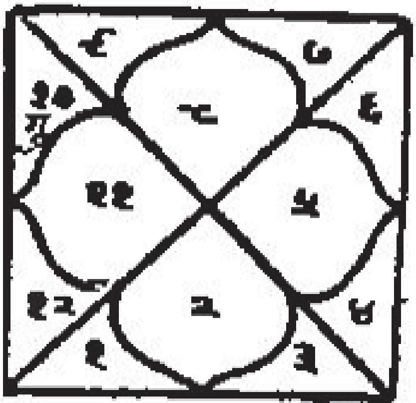

६२९

तीसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के सुख में बाधा आती है तथा पराक्रम में भी कमी रहती है। विद्या, धन तथा कुटुम्ब का सुख भी कम रहता है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री से कुछ वैमनस्य रहता है तथा व्यवसाय में कठिनाई से सफलता मिलती है।

सातवीं उच्च दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। वीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी में खूब वृद्धि होती है। ऐसा क्ति सुखी तथा धनी होता है।

श्चिक' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

श्चिक लग्न : चतुर्थभाव : गुरु

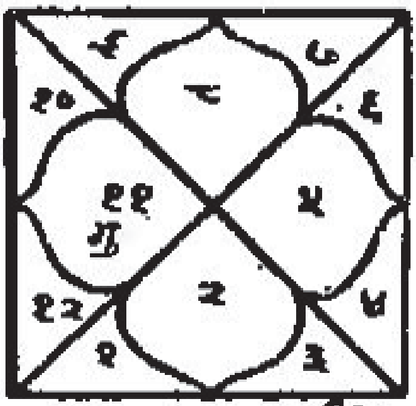

६३०

चौथे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक का माता के साथ कुछ वैमनस्य रहता है तथा भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। विद्या तथा सन्तान-पक्ष में भी कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ, ग्र, सहयोग तथा सम्मान मिलता है। नवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से र्च की अधिकता रहती है तथा बाहरी सम्बन्धों से सामान्य लाभ होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : पंचमभाव : गुरु

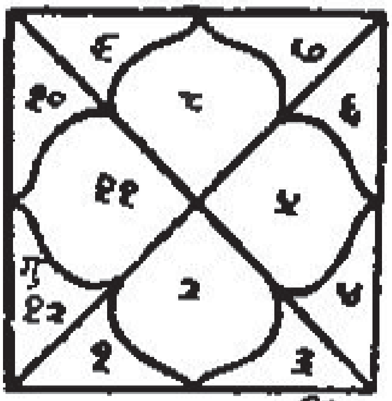

९३१

पाँचवें भाव में स्वराशि-स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी उसे मिलता है। पाँचवीं मित्र तथा उच्चदृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की विशेष उन्नति होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी खूब रहती है। नवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, शक्ति, सम्मान, प्रतिष्ठा तथा यश की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा ऐश्वर्यशाली होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : षष्ठभाव : गुरु

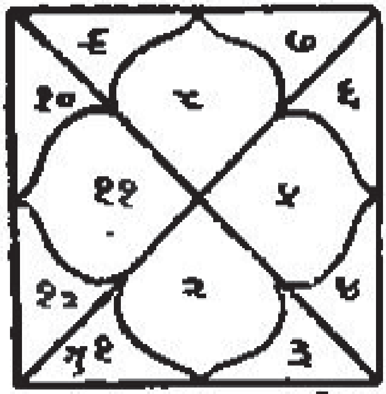

९३२

छठे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में बुद्धि-बल से सफलता पाता है तथा धन एवं कुटुम्ब के कारण झगड़ों में फंसता है। विद्या तथा सन्तान पक्ष कमजोर रहता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के द्वारा लाभ, सुख, सम्मान आदि की प्राप्ति होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है। कुटुम्ब से कुछ वैमनस्य भी रहता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : सप्तमभाव : गुरु

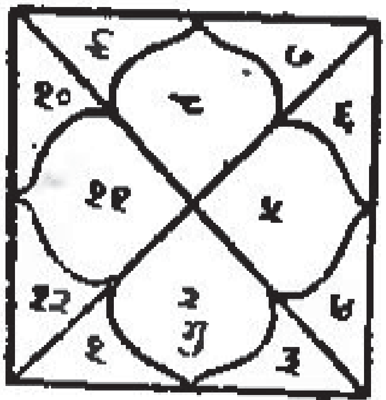

९३३

सातवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को सामान्य मतभेदों के बावजूद स्त्री का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है तथा व्यवसाय में सफलता मिलती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी खूब रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव की प्राप्ति होती है। नवीं नीचदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी का अनुभव होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : अष्टमभाव : गुरु

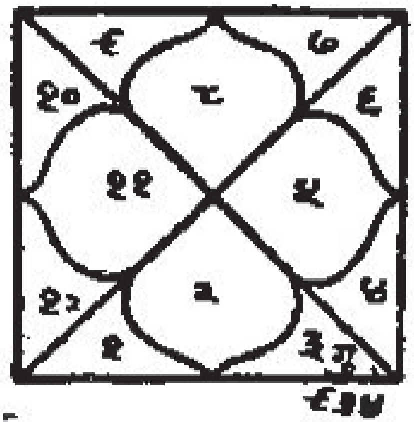

आठवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व का श्रेष्ठ लाभ होता है, परन्तु विद्या, बुद्धि, सन्तान, धन एवं कुटुम्ब के सुख में कमी रहती है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानो के सम्बन्ध से कुछ लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कौटुम्बिक सुख की वृद्धि होती है। नवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कठिनाइयों के साथ मिलता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : नवमभाव : गुरु

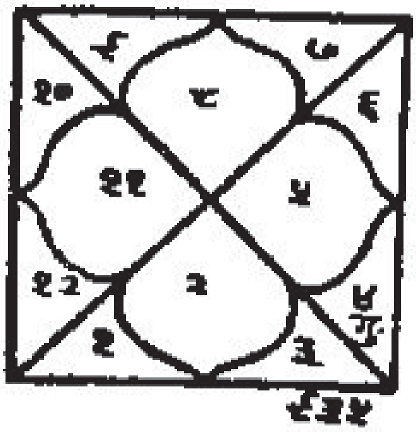

नवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित उच्च के 'गुरु' के प्रभाव से जातक के धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त होता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक प्रभाव एवं मान सम्मान की उपलब्धि होती है।

सातवीं नीचदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी रहती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखने से सन्तान एवं विद्या-बुद्धि की विशेष उन्नति होती है तथा जातक यशस्वी बनता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : दशमभाव : गुरु

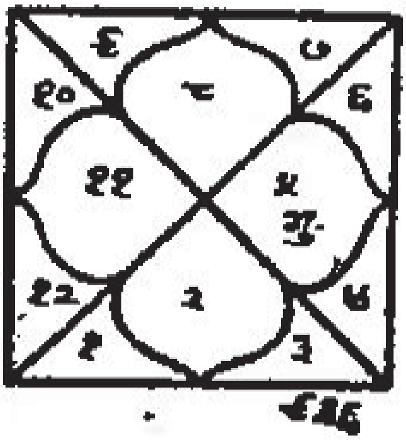

दसवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, लाभ, सफलता तथा यश की प्राप्ति होती है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख की वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ असन्तोष के साथ प्राप्त होता है।

नवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में बुद्धिमानी से सफलता एवं विजय प्राप्त होती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : एकादशभाव : गुरु

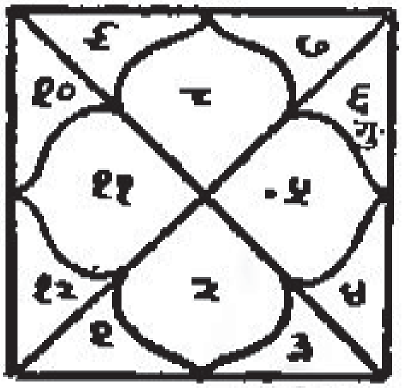

६३७

ग्यारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। पाँचवीं शत्रु तथा नीच दृष्टि से तृतीयभाव में देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी आती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि तथा सन्तान-पक्ष की विशेष उन्नति होती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से पत्नी के साथ कुछ वैमनस्य रहते हुए भी लाभ होता है तथा दैनिक व्यवसाय में भी कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : द्वादशभाव : गुरु

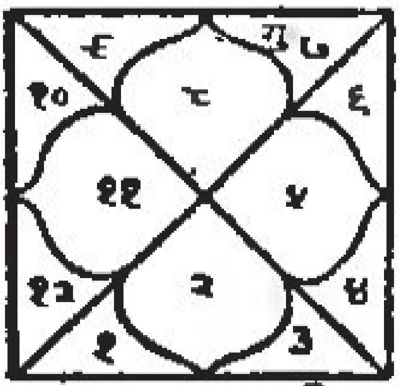

६३८

बारहवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्ध भी कमजोर रहते हैं। धन, कुटुम्ब, विद्या तथा सन्तान के क्षेत्र में भी कमी रहती है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में चतुराई से सफलता प्राप्त होती है। नवीं मित्र दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की अच्छी शक्ति प्राप्त होती है। ऐसी ग्रह-स्थिति वाले जातक का चित्त प्रायः अशान्त ही बना रहता है।

'वृश्चिक' लग्न में 'शुक्र'

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : प्रथमभाव : शुक्र

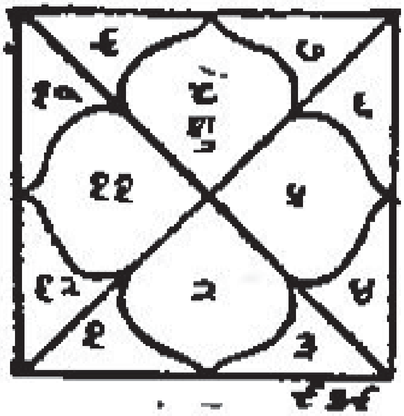

६३९

पहले भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' से प्रभाव से जातक का शरीर कमजोर रहता है, परन्तु प्रभाव, चातुर्य एवं कार्य-कुशलता में वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री का सुख मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय में भी सफलता प्राप्त होती रहती है, परन्तु शुक्र के व्ययेश होने के कारण इन क्षेत्रों में सामान्य कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

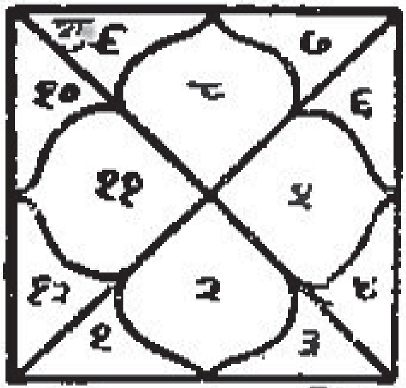

६६०

दूसरे भाव में सामान्य शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के धन तथा कौटुम्बिक सुख में कुछ परेशानी रहती है यद्यपि धन का लाभ भी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु में वृद्धि होती है, परन्तु पुरातत्व का लाभ कम रहता है। ऐसा व्यक्ति धनी तथा चतुर समझा जाता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : तृतीयभाव : शुक्र

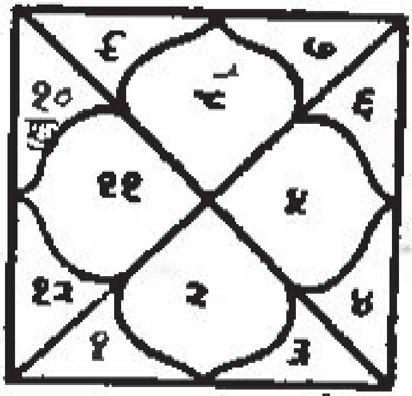

६६१

तीसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के सुख तथा पुरुषार्थ में कमी प्राप्त होती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ भी होता है। स्त्री-पक्ष में भी कुछ कमी रहती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्योन्नति में कुछ कमी रहती है तथा धर्म का पालन भी थोड़ा ही होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

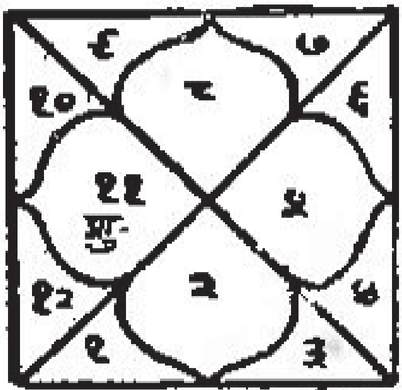

६६२

चौथे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी रहती है। स्त्री-पक्ष भी कमजोर रहता है। बाहरी सम्बन्धों से सुख प्राप्त होता है और खर्च आराम से चलता रहता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के बाद लाभ, सुख, यश एवं सफलता की प्राप्ति होती रहती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : पंचमभाव : शुक्र

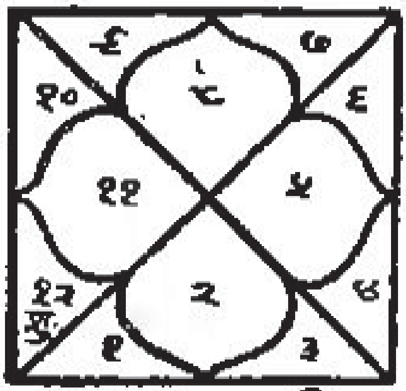

९५३

पाँचवें भाव में सामान्य शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित उच्च के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है, परन्तु ग्रह किसी कला का विशेषज्ञ भी अवश्य होता है। ऐसा व्यक्ति स्त्री के प्रभाव में रहने वाला तथा वाक्-चतुर होता है। उसे बाहरी सम्बन्धों से शक्ति एवं लाभ भी प्राप्त होता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के मार्ग में भी कुछ कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : षष्ठभाव : शुक्र

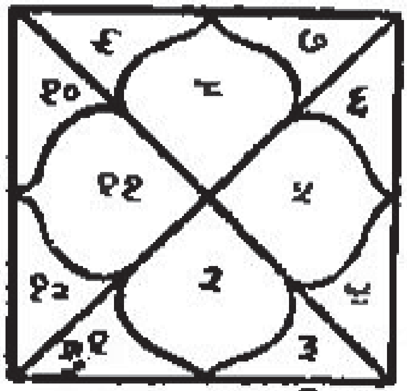

९५४

छठे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक शान्तिपूर्ण उपायों द्वारा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है। गृहस्थी के संचालन में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादशभाव को देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से अधिक परिश्रम द्वारा सामान्य लाभ प्राप्त होता है तथा खर्च की अधिकता बनी रहती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : सप्तमभाव शुक्र

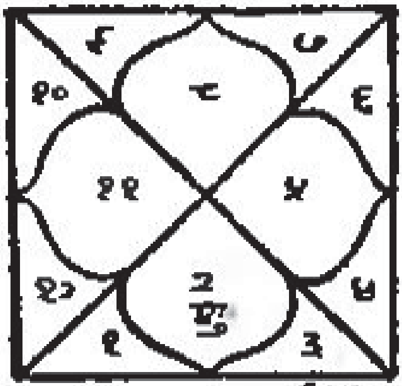

९५५

सातवें भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को स्त्री एवं दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छी सफलता मिलती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से अपना खर्च चलाने में सहायता भी मिलती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा बुद्धिमान होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर में दुर्बलता रहती है, फिर भी जातक यशस्वी, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला तथा कार्य-कुशल होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : अष्टमभाव : शुक्र

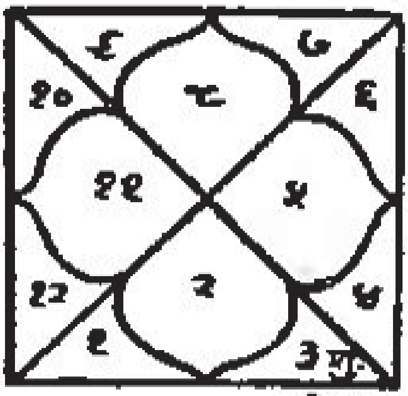

६७६

आठवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में संकटों तथा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यही स्थिति स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी रहती है, परन्तु गुप्त चातुर्य एवं कठिन परिश्रम द्वारा सफलता प्राप्त होती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख में भी कठिनाइयाँ आती हैं। बड़ी चतुराई से काम लेकर जातक किसी तरह अपनी इज्जत बचाता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : नवमभाव : शुक्र

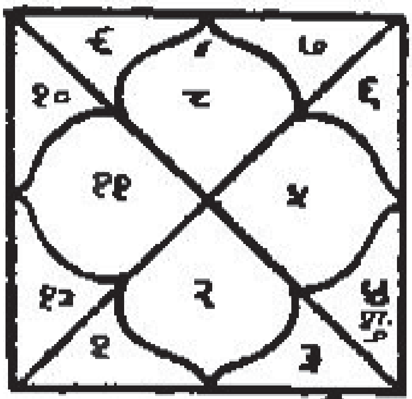

६७७

नवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति तथा धर्म-पालन के क्षेत्र में कठिनाइयां आती हैं। स्त्री-पक्ष से भी परेशानी रहती है। वह बड़ी चतुराई से काम निकालता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ उठाता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन एवं पराक्रम के क्षेत्र में भी असन्तोष-जनक स्थिति बनी रहती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : दशमभाव : शुक्र

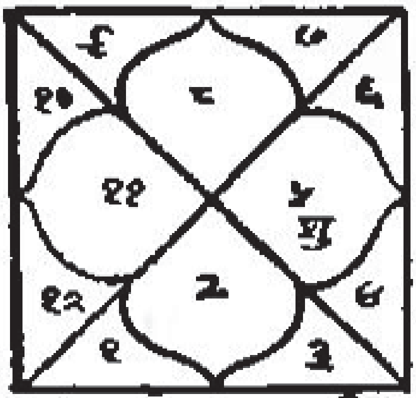

६७८

दसवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी कमी बनी रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख-सहयोग प्राप्त होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : एकादशभाव : शुक्र

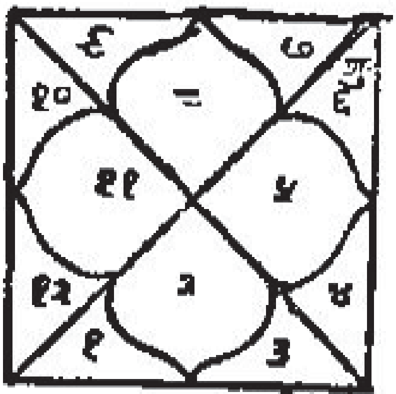

६४९

ग्यारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित नीच के 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की आमदनी में कमी आती है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय का क्षेत्र भी असन्तोषजनक रहता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से चातुर्य द्वारा कुछ लाभ भी मिलता है।

सातवीं उच्च तथा शत्रु दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि की शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु सन्तान-पक्ष में कुछ कमजोरी बनी रहती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली से 'द्वादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : द्वादशभाव : शुक्र

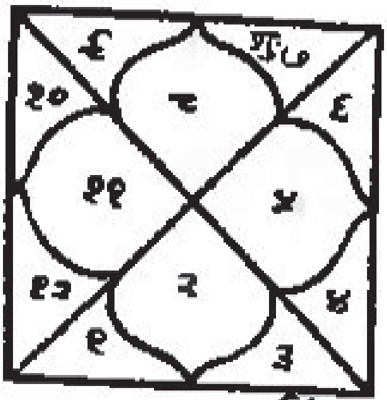

६५०

बारहवें भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के पक्ष में भी कुछ परेशानियाँ रहती हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में भी कुछ परेशानियों के बाद ही सफलता प्राप्त होती है।

'वृश्चिक' लग्न में 'शनि'

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : प्रथमभाव : शनि

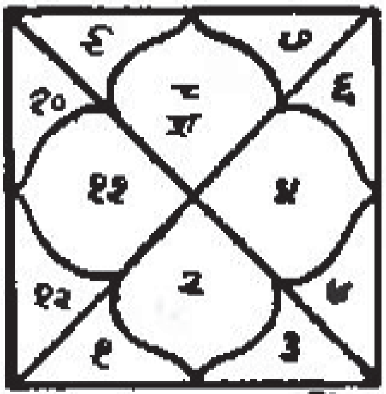

६५१

पहले भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक का स्वभाव शान्त तथा उग्र दोनों प्रकार का होता है। माता, भूमि तथा भवन का सामान्य सुख मिलता है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में तृतीयभाव को देखने से पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख प्राप्त होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों के बाद ही सफलता मिलती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : द्वितीयभाव : शनि

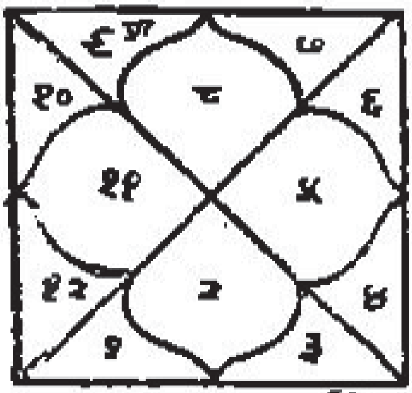

६४२

दूसरे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को धन, कुटुम्ब का सामान्य सुख मिलता है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। दसवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। ऐसा जातक सुखी तथा धनी जीवन बिताता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : तृतीयभाव : शनि

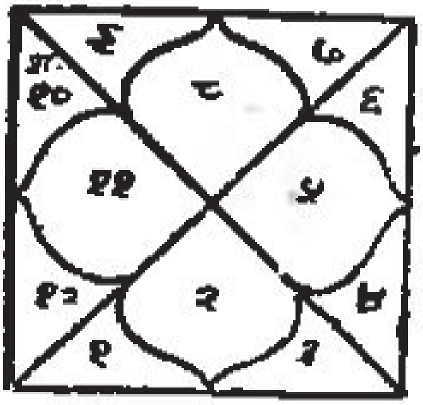

तीसरे भाव में स्वक्षेत्री 'शनि' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। माता, भूमि एवं भवन का सुख भी मिलता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य की उन्नति होती है तथा मतभेदों के साथ धर्म का भी पालन होता है। दसवीं उच्च तथा मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अच्छी तरह चलता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : चतुर्थभाव : शनि

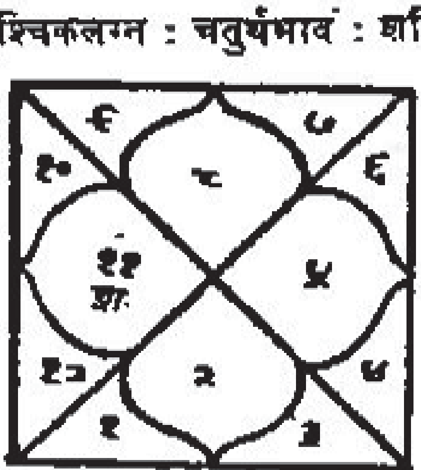

६४४

चौथे भाव में स्वराशि-स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है। तीसरी नीच-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष द्वारा अशान्ति मिलती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता से मतभेद रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी अधिक सफलता नहीं मिलती। दसवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है किन्तु जातक बहुत परिश्रमी होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : पंचमभाव : शनि

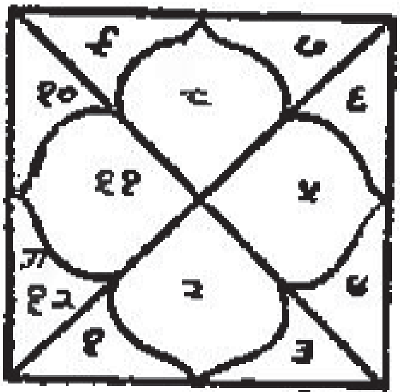

६५५

पाँचवें भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को सन्तान-सुख तो मिलता है, परन्तु सन्तान से मतभेद भी रहता है। विद्या-बुद्धि पर्याप्त रहती है। माता से वैमनस्य रहता है तथा भूमि-भवन का सामान्य सुख प्राप्त होता है। तीसरी मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में पूर्ण सुख एवं सफलता की प्राप्ति होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से कुटुम्ब से वैमनस्य रहता है तथा अधिक प्रयत्न करने पर भी धन का विशेष संचय नहीं हो पाता।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : षष्ठभाव : शनि

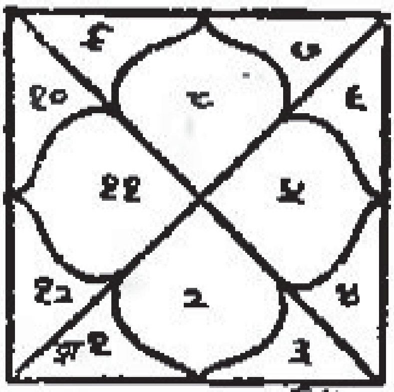

६५६

छठे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में युक्ति से काम निकालता है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी अल्प मात्रा में प्राप्त होता है। तीसरी मित्र दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीयभाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है तथा विरोध रहते हुए भी भाई-बहिनों का सुख मिलता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : सप्तमभाव : शनि

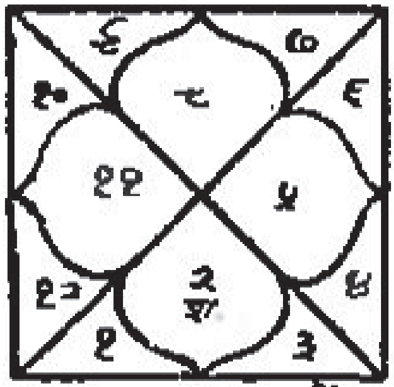

६५७

सातवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सुख एवं सफलता की प्राप्ति होती है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कमी रहती है तथा श्रम अधिक करना पड़ता है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। दैनिक जीवन प्रभावशाली तथा आमोदपूर्ण रहता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : अष्टमभाव : शनि

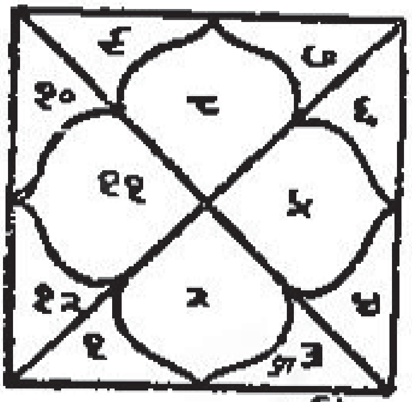

६५८

आठवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु माता के सुख में बहुत कमी आती है। भूमि, भवन तथा भाई-बहिनों का सुख भी कम ही मिलता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय में कमी तथा कुटुम्ब से वैमनस्य रहता है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का पक्ष अपूर्ण रहता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : नवमभाव : शनि

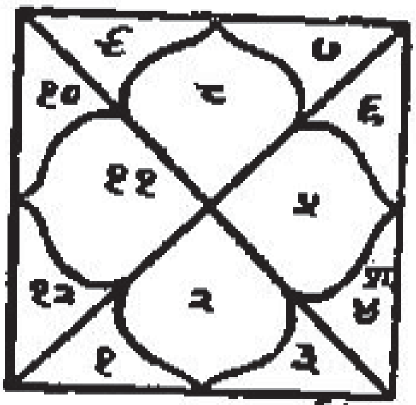

६५९

नवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित शनि' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति कुछ रुकावटों के साथ होती है तथा धर्म का पालन भी कठिनाई सहित होता है। माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। तीसरी मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखनेसे आमदनी खूब रहती है तथा धन का अच्छा लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। दसवीं नीच तथा शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष में परेशानी रहती है तथा ननसाल पक्ष कमजोर रहता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : दशमभाव : शनि

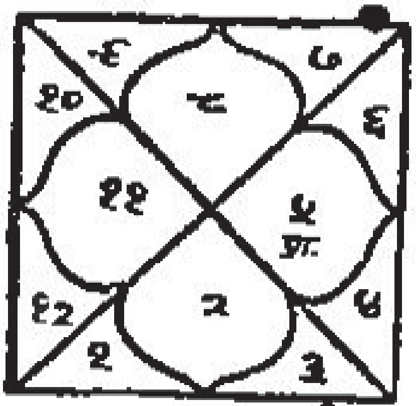

६६०

दसवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, सहयोग तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। भाई-बहिनों का सुख भी कम ही मिलता है परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है। तीसरी मित्र तथा उच्च दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता से कुछ मतभेद रहता है तथा भूमि, भवन का सुख प्राप्त होता है। दसवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छी सफलता मिलती है तथा घरेलू जीवन सुखमय बना रहता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : एकादशभाव : शनि

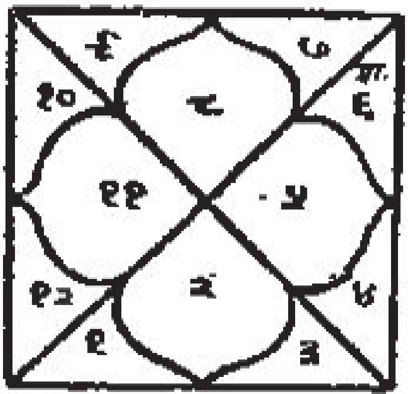

९९१

ग्यारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आमदनी में अच्छी वृद्धि होती है। भाई-बहिन, माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है तथा पराक्रम भी बढ़ता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या एवं सन्तान का लाभ होता है। दसवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से जातक दीर्घायु होता है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : द्वादशभाव : शनि

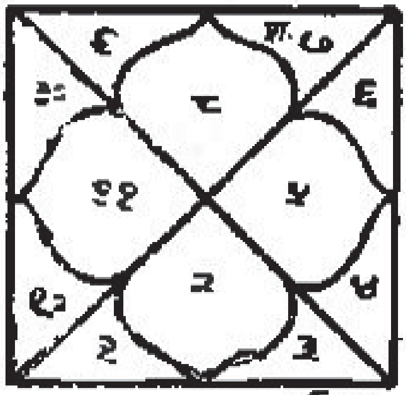

९९२

बारहवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित उच्च के 'शनि' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से सुख एवं लाभ की प्राप्ति भी होती है। भाई-बहिन, माता तथा भवन के सुख में भी कुछ कमी आ जाती है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख में कमी रहती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रुपक्ष से परेशानी रहती है। दसवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अधिक धनी न होते हुए भी अमीरी ढंग से जीवन बिताता है।

'वृश्चिक' लग्न में 'राहु'

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : प्रथमभाव : राहु

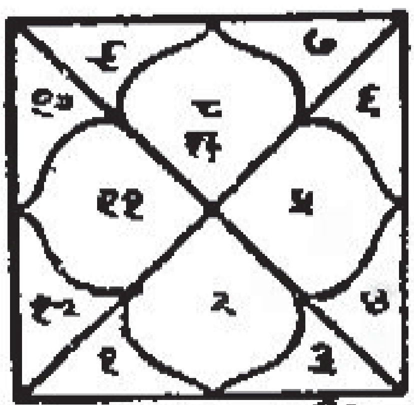

९९३

पहले भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शरीर में किसी गुप्त कष्ट अथवा चिन्ता का निवास रहता है। कभी-कभी उसे मृत्यु-तुल्य शारीरिक कष्ट भी होता है।

वह उन्नति के लिए कठिन परिश्रम करता है तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है। ऐसा व्यक्ति तेज स्वभाव का, स्वार्थी तथा असुन्दर होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : द्वितीयभाव : राहु

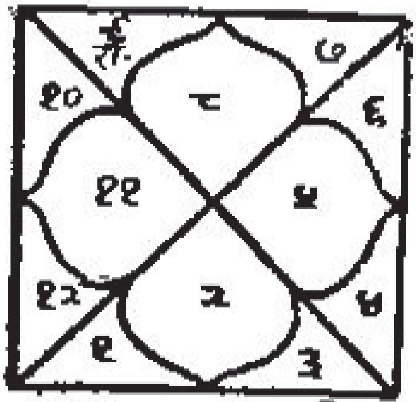

९८४

दूसरे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को धन-प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा कुटुम्ब के विषय में चिन्ताएँ बनी रहती हैं।

अनेक गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर भी वह ऋणी ही बना रहता है। आर्थिक चिन्ताओं से छुटकारा नहीं पाता।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : तृतीयभाव : राहु

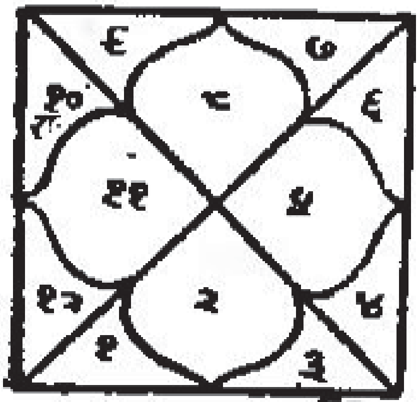

९८५

तीसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। उसे भाई-बहिनों का सुख भी खूब मिलता है, परन्तु उनके बारे में चिन्ताएँ भी बनी रहती हैं।

ऐसा व्यक्ति चतुर, हिम्मत वाला, धैर्यवान्, असाधारण साहसी तथा कठिन परिश्रमी होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : चतुर्थभाव : राहु

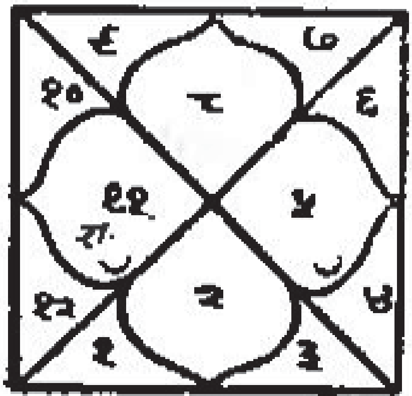

९८६

चौथे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी-बनी रहती है।

कभी-कभी पारिवारिक संकटों का सामना भी करना पड़ता है, जिनके निराकरण के लिए उसे गुप्त युक्तियों, हिम्मत तथा धैर्य का सहारा लेना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति होशियार तथा परिश्रमी भी होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : पंचमभाव : राहु

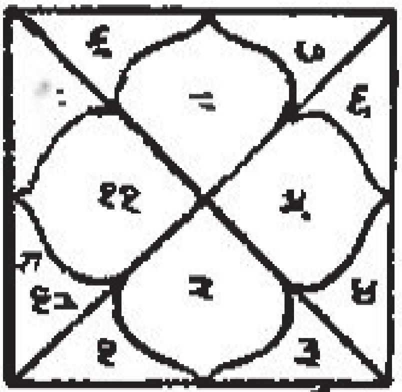

९८७

पाँचवें भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन तथा सन्तान के पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं, बाद में कुछ सफलता भी मिलती है।

ऐसा व्यक्ति चतुर, गुप्त युक्तियों में प्रवीण तथा हर समय चिन्तित रहने वाला होता है, परन्तु वह अपनी परेशानियों को किसी पर प्रकट नहीं करता।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : षष्ठभाव : राहु

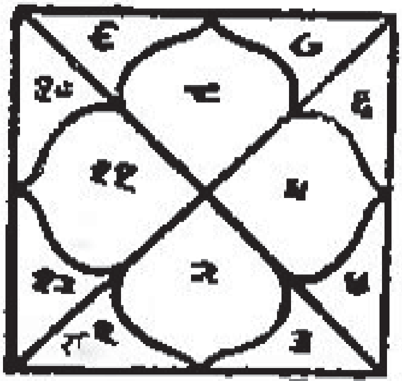

९८८

छठे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक शत्रुओं पर अत्यधिक प्रभाव रखता है तथा उन पर विजयी होता है।

ऐसा व्यक्ति गुप्त चातुर्य, धैर्य, हिम्मत, कठिन परिश्रम तथा युक्तियों के बल पर हर प्रकार की कठिनाइयों पर विजय पाता रहता है तथा कभी भी हिम्मत नहीं हारता।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : सप्तमभाव : राहु

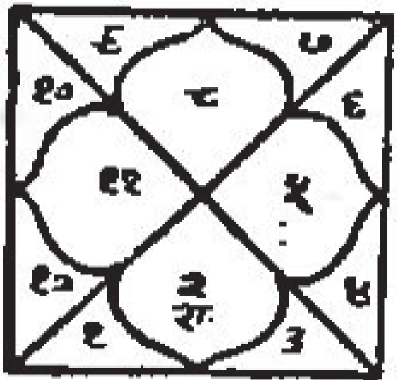

९८९

सातवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं। कभी-कभी स्त्री अथवा व्यवसाय के कारण घोर संकटों में भी फँस जाना पड़ता है, परन्तु वह अपनी हिम्मत, युक्ति, चतुराई एवं धैर्य के बल पर उन सब कठिनाइयों को पार कर जाता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : अष्टमभाव : राहु

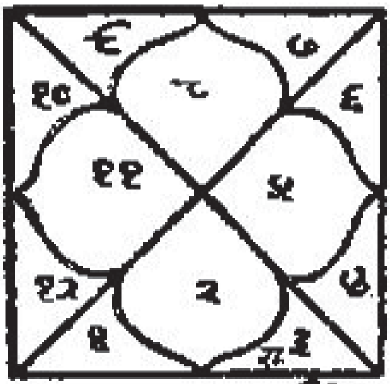

९६०

आठवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा आयु में वृद्धि होती है। उसका जीवन उमंग एवं उत्साह से भरा रहता है। वह बड़े ठाट-बाट की जिंदगी बिताता है, परन्तु कभी-कभी उसे हानि भी उठानी पड़ती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा यशस्वी भी होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : नवमभाव : राहु

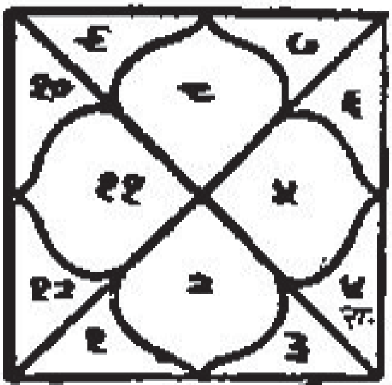

९६१

नवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में बहुत बाधाएँ आती हैं तथा धर्म के प्रति भी अश्रद्धा रहती है। वह मानसिक चिन्ताओं से ग्रस्त रहता है। कई बार निराश भी हो जाता है। अनेक प्रकार के कष्ट भोगने के बाद अन्त में उसे थोड़ी-बहुत सफलता मिलती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : दशमभाव : राहु

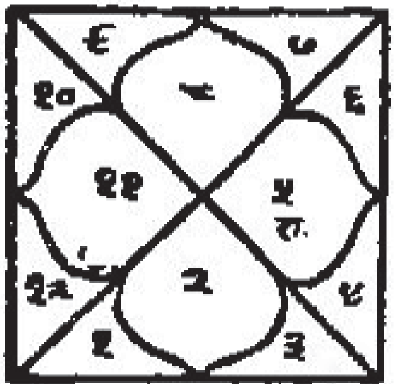

९६२

दसवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को अपने पिता द्वारा परेशानी रहती है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कष्ट उठाने पड़ते हैं। कभी-कभी वह अत्यधिक निराश भी हो जाता है। अन्त में धैर्य, साहस एवं चातुर्य के बल पर किसी प्रकार उन संकटों पर विजय पाकर थोड़ी-बहुत उन्नति कर लेता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : एकादशभाव : राहु

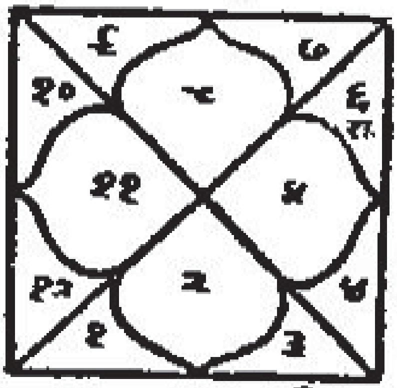

६७३

ग्यारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की आमदनी के क्षेत्र में खूब सफलता मिलती है। वह अधिक मुनाफा कमाने के लिए उचित-अनुचित का विचार भी नहीं करता।

ऐसा व्यक्ति भीरु स्वार्थी तथा चतुर होता है। कभी-कभी उसे आकस्मिक धन-लाभ होता है, तो कभी अचानक ही भारी घाटा भी चला जाता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : द्वादशभाव : राहु

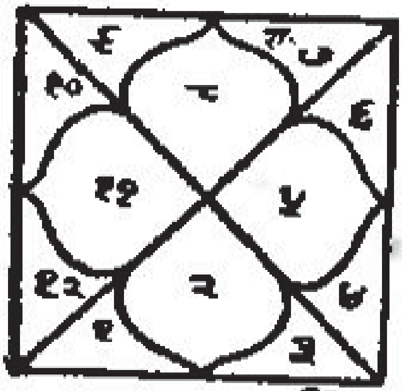

६७४

बारहवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण उसे परेशानियाँ रहती हैं। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ भी होता है। कभी आकस्मिक धन-लाभ तो कभी आकस्मिक धन-हानि के अवसर भी उपस्थित होते हैं। अन्य प्रकार के कष्ट भी उठाने पड़ते हैं।

'वृश्चिक' लग्न में 'केतु'

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : प्रथमभाव : केतु

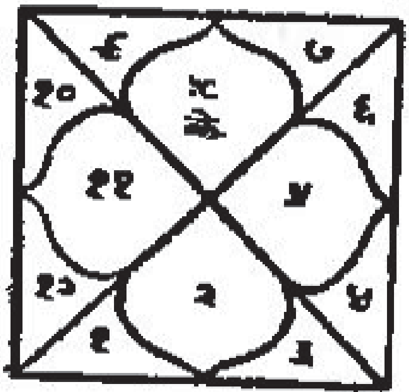

६७५

पहले भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के शरीर में कई बार चोट लगती है तथा शारीरिक सौन्दर्य में कमी आ जाती है।

ऐसा व्यक्ति स्वभाव का उग्र, दिमाग का कमजोर तथा कठिन शारीरिक श्रम करने वाला होता है। उसके शरीर पर चोट आदि का कोई स्थायी चिन्ह भी बनता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : द्वितीयभाव : केतु

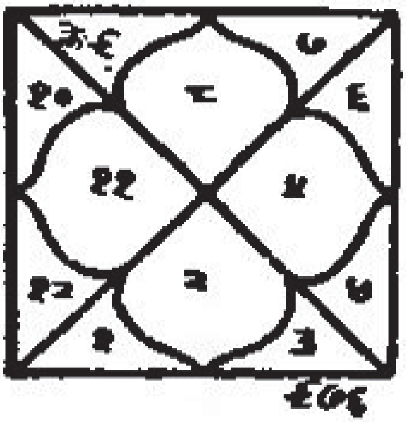

दूसरे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक धन-प्राप्ति के लिए प्रयत्न करता है। कभी-कभी आकस्मिक रूप से भी धन-लाभ हो जाता है। कौटुम्बिक सुख में कुछ कमी बनी रहती है।

ऐसा व्यक्ति अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिए सदैव सतर्क बना रहता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : तृतीयभाव : केतु

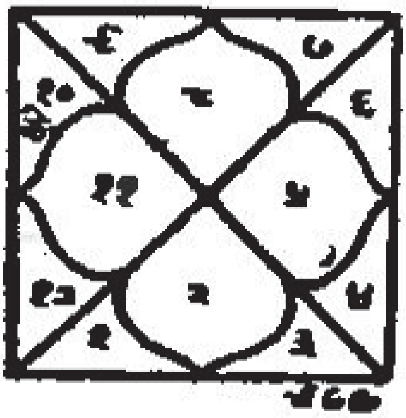

तीसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। भाई-बहिनों के संबंध के कष्ट का अनुभव होता है।

झगड़े-झंझटों में उसे सफलता प्राप्त होती है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी, परिश्रमी, धैर्यवान् तथा हिम्मती होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : चतुर्थभाव : केतु

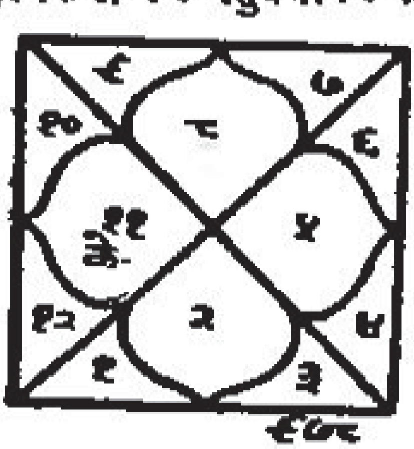

चौथे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की अपनी माता के कारण परेशानी उठानी पड़ती है। भूमि तथा भवन के सुख में भी कमी रहती है। चित्त सदैव अशान्त रहता है।

कठिन परिश्रम के बाद उसे कुछ चैन मिलता है। स्थान बदल देने अर्थात् परदेश में रहने से कुछ सुख मिलता है। घर में उसे सदैव अशान्ति ही बनी रहती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : पंचमभाव : केतु

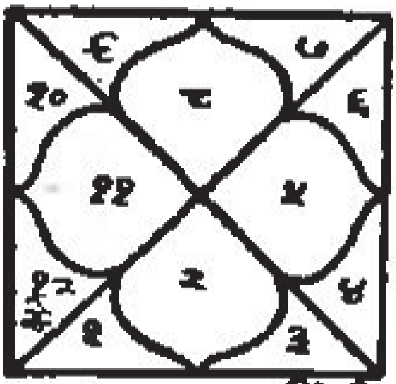

६७९

पाँचवें भाव में शत्रु 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन में कठिनाइयाँ आती हैं तथा सन्तान-पक्ष से भी कष्ट मिलता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी, दृढ़-निश्चयी, गुप्त युक्तियों से काम लेने वाला, धैर्यवान् तथा निडर होता है। वह अपनी गुप्त चिन्ताओं को किसी पर प्रकट नहीं होने देता।.

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : षष्ठभाव : केतु

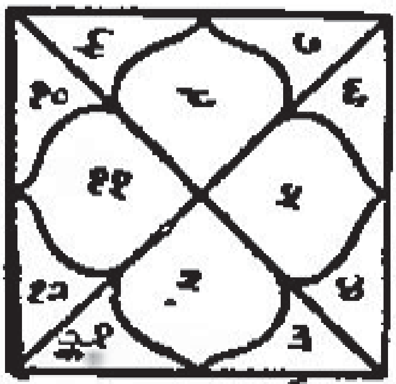

६८०

छठे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अपना विशेष प्रभाव रखता है। वह झगड़ों, कठिनाइयों आदि पर अपने साहस, गुप्त युक्ति, धैर्य, परिश्रम एवं बहादुरी के बल पर विजय पाता है। उसका ननसाल-पक्ष कमजोर रहता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : सप्तमभाव : केतु

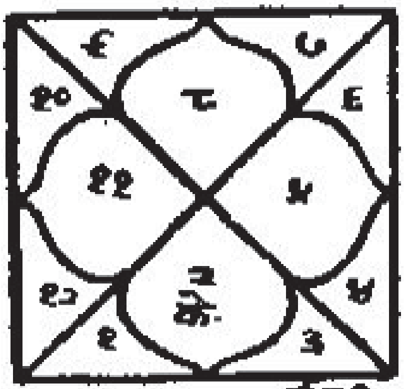

६८१

सातवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से घोर कष्ट मिलता है। गृहस्थ जीवन में अनेक संकट उठ खड़े होते हैं, दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी बड़ी कठिनाइयाँ आती हैं।

ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त युक्तियों, धैर्य साहस आदि के बल पर संकटों का कुछ निवारण कर पाने में समर्थ हो जाता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : अष्टमभाव : केतु

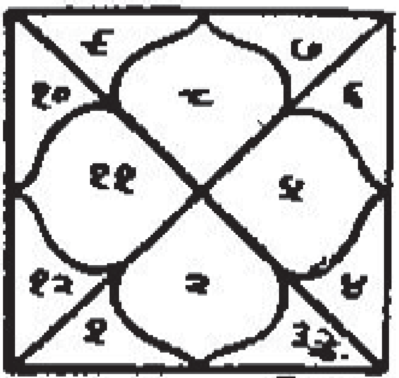

९८२

आठवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित नीच के 'केतु' के प्रभाव से जातक को अपने जीवन में अनेक बार मृत्यु-तुल्य कष्टों का सामना करना होता है। पुरातत्व की भी हानि होती है।

ऐसा व्यक्ति जीवन-निर्वाह के लिए कठिन परिश्रम करता है तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है परन्तु संकटों से मुक्ति नहीं मिल पाती।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : नवमभाव : केतु

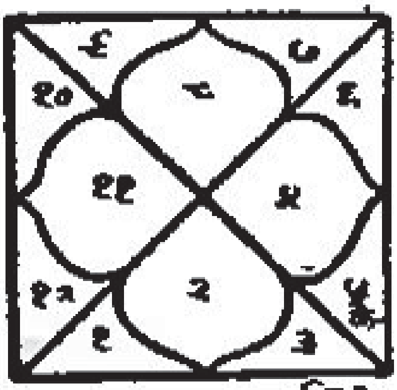

९८३

नवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में बड़े संकट आते हैं तथा धर्म की हानि होती है।

ऐसा व्यक्ति हर समय चिन्ताओं से घिरा रहता है। कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करता है। गुप्त युक्तियों एवं कठिन परिश्रम के बल पर भाग्य को बनाने की चेष्टा करते रहने पर भी सफलता नहीं मिल पाती।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : दशमभाव : केतु

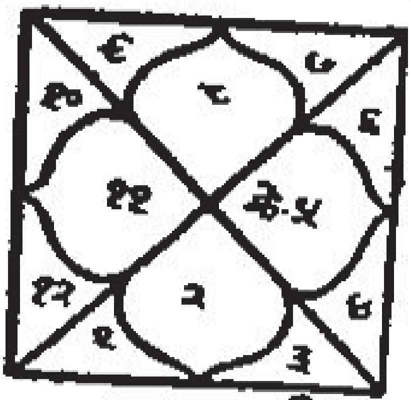

९८४

दसवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को अपने पिता द्वारा कष्ट प्राप्त होता है। राज्य के क्षेत्र में मान-भंग होता है तथा व्यवसाय-क्षेत्र में घोर संकट आते रहते हैं। यद्यपि वह धैर्य, हिम्मत एवं गुप्त युक्तियों के आश्रय से अन्ततः थोड़ी-बहुत राहत भी प्राप्त कर लेता है, परन्तु उसका जीवन सुख से नहीं बीतता।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : एकादशभाव : केतु

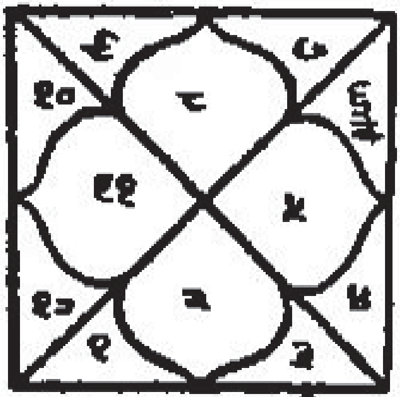

९८५

ग्यारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है। कभी-कभी आकस्मिक धन का लाभ होता है तो कभी-कभी संकट भी आते हैं।

ऐसा व्यक्ति चालाक, स्वार्थी, धूर्त तथा मतलबी होता है। उसे अपनी आमदनी से कभी सन्तोष नहीं होता।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : द्वादशभाव : केतु

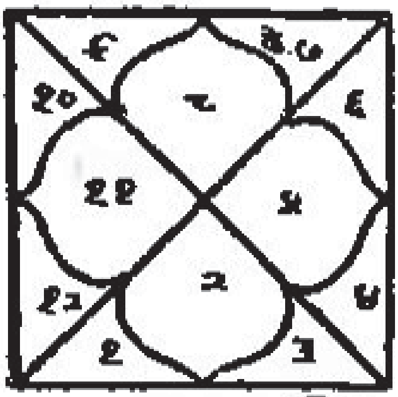

९८६

बारहवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ भी मिलता है।

वह गुप्त युक्ति, चातुर्य तथा परिश्रम के बल पर अपने खर्च को चलाता है, परन्तु कभी-कभी उसे घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है। फिर भी वह अपने धैर्य को कभी नहीं छोड़ता।

'धनु' लग्न

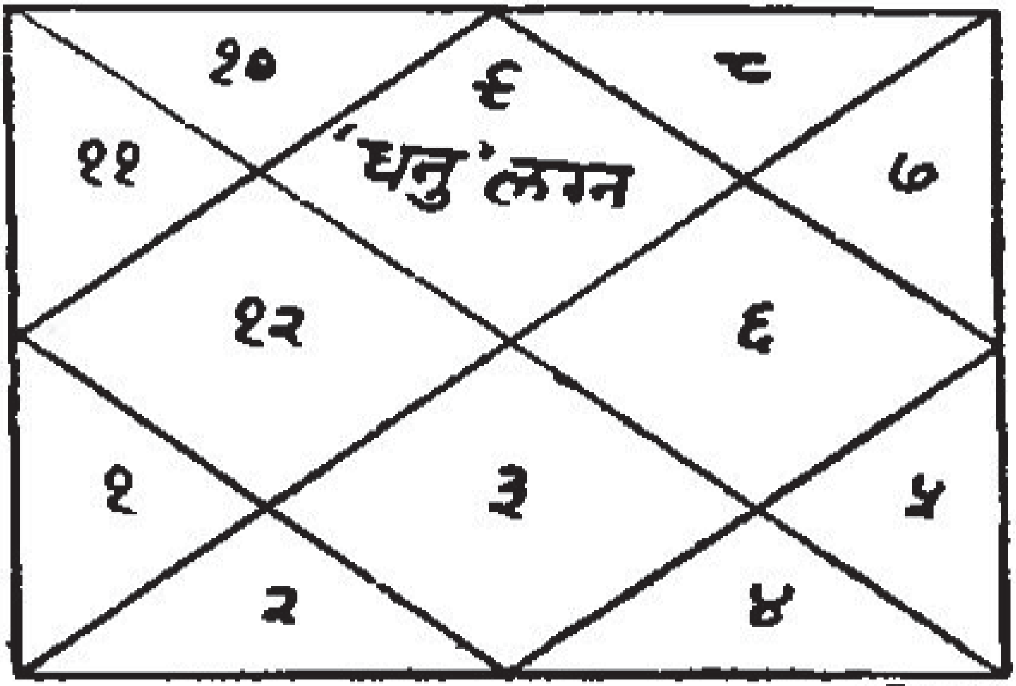

६८७

['धनु' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'धनु' लग्न का फलादेश

'धनु' लग्न में लग्न लेने वाला जातक पिंगलवर्ण, बड़े दाँतों वाला घोड़े-जैसी जाँघों वाला तथा सुन्दर स्वरूप वाला होता है। वह अत्यन्त कार्य-कुशल, प्रतिभा-शाली, बुद्धिमान्, सतोगुणी, श्रेष्ठ स्वभाव वाला, सत्य-प्रतिज्ञ, पराक्रमी, तथा ऐश्वर्यवान् होता है।

ऐसा व्यक्ति यात्रा-प्रेमी, व्यवसायी, ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, प्रेम के वश में रहने वाला, मित्रों के काम आने वाला, अनेक कलाओं का जानकार अथवा कवि तथा लेखक होता है। उसे घोड़े पालने का शौक भी होता है।

'धनु' लग्न में जन्म लेने वाला जातक बाल्यावस्था में अधिक सुख भोगता है, मध्यमावस्था में सामान्य जीवन व्यतीत करता है तथा अन्तिमावस्था में धन-धान्य पूर्ण होता है। २२ अथवा २३ वर्ष की आयु में उसे धन का विशेष लाभ होता है।

'धनु' लग्न वालों के अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या ९८८ से १०९५ के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

'धनु' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१. 'धनु' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९८८ से ९९९ के बीच देखना चाहिए।

२. 'धनु' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'सूर्य'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ९८८
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ९८९
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ९९०
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ९९१
(च) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ९९२
(छ) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ९९३
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ९९४
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ९९५
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ९९६
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ९९७
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ९९८
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ९९९

'धनु' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१. 'धनु' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १००० से १०११ के बीच देखना चाहिए।

२. 'धनु' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दिन 'चन्द्रमा'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १०००
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १००१
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १००२
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १००३
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १००४
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १००५
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १००६
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १००७
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १००८
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १००९
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १०१०
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या- १०११

'धनु' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१. 'धनु' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०१२ से १०२३ के बीच देखना चाहिए।

२. 'धनु' लग्नवालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मंगल'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १०१२
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १०१३
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १०१४
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १०१५
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १०१६
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १०१७
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १०१८
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १०१९
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १०२०
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १०२१
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १०२२
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १०२३

'धनु' लग्न में 'बुध' का फलादेश

१. 'धनु' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०२४ से १०३५ के बीच देखना चाहिए।

२. 'धनु' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'बुध'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १०२४
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १०२५
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १०२६
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १०२७
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १०२८
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १०२९
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १०३०
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १०३१
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १०३२
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १०३३
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १०३४
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १०३५

'धनु' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१. 'धनु' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०३६ से १०४७ के बीच देखना चाहिए।

२. 'धनु' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'बुध'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १०३६
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १०३७
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १०३८
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १०३९
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १०४०

(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १०४१
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १०४२
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १०४३
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १०४४
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १०४५
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १०४६
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १०४७

'धनु' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१. 'धनु' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०४८ से १०५९ के बीच देखना चाहिए।

'धनु' लग्नवालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १०४८
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १०४९
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १०५०
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १०५१
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १०५२
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १०५३
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १०५४
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १०५५
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १०५६
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १०५७
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १०५८
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १०५९

'धनु' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१. 'धनु' लग्नवालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६२४ से ६३५ के बीच देखना चाहिए।

२. 'धनु' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि'

का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'शनि'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १०६०
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १०६१
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १०६२
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १०६३
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १०६४
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १०६५
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १०६६
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १०६७
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १०६८
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १०६९
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १०७०
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १०७१

'धनु' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१ 'धनु' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०७२ से १०८३ के बीच देखना चाहिए।

२- 'धनु' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १०७२
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १०७३
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १०७४
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १०७५
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १०७६
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १०७७
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १०७८
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १०७९
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १०८०
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १०८१
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १०८२
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १०८३

'धनु' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१. 'धनु' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०८४ से १०९५ के बीच देखना चाहिए।

२. 'धनु' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'केतु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १०८४

(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १०८५

(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १०८६

(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १०८७

(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १०८८

(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १०८९

(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १०९०

(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १०९१

(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १०९२

(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १०९३

(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १०९४

(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १०९५

'धनु' लग्न में सूर्य

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : प्रथमभाव : सूर्य

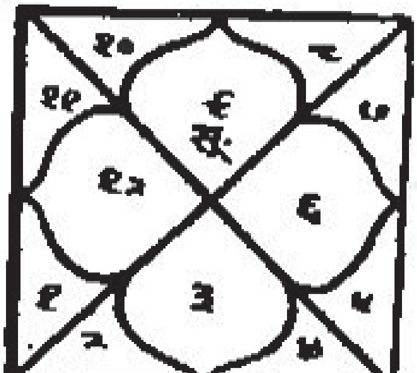

केन्द्र तथा शरीर-स्थान में अपने मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को उत्तम शक्तिशाली शरीर की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली, धार्मिक रुचि वाला तथा आस्तिक होता है। सातवीं दृष्टि से बुध की राशि में सप्तमभाव को देखने से जातक को सुन्दर स्त्री का सहयोग और गृहस्थ-सुख प्राप्त होता है। साथ ही दैनिक व्यवसाय में लाभ भी होता है।

१०९६

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : द्वितीयभाव : सूर्य

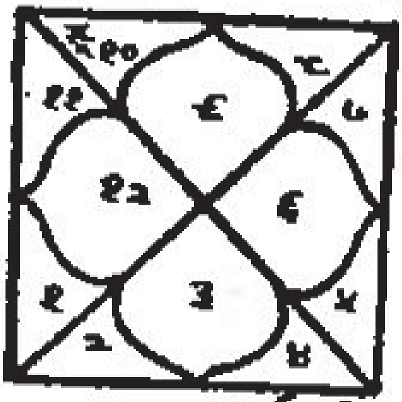

९८९

दूसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ धन-संग्रह में श्रेष्ठ सफलता मिलती है तथा कुछ मत-भेदों के साथ कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थ-सिद्धि के लिए धर्म का पालन करता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। ऐसे व्यक्ति की भाग्योन्नति भी अच्छी होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : तृतीयभाव : सूर्य

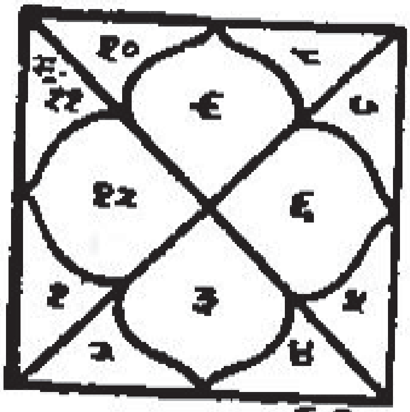

९९०

तीसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख कुछ असंतोष के साथ मिलता है तथा पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखने से पुरुषार्थ द्वारा भाग्य की अत्यधिक वृद्धि होती है, साथ ही धर्म का भी पालन होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती तथा यशस्वी होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : चतुर्थभाव : सूर्य

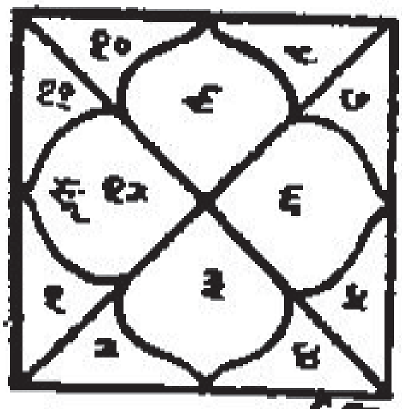

९९१

चौथे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य के प्रभाव से जातक को माता का सुख अधिक मिलता है तथा भूमि, भवन का सुख भी प्राप्त होता है। धर्म तथा भाग्य की उन्नति भी होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, सम्मान, लाभ तथा सफलता के अवसर भी प्राप्त होते रहते हैं।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : पंचमभाव : सूर्य

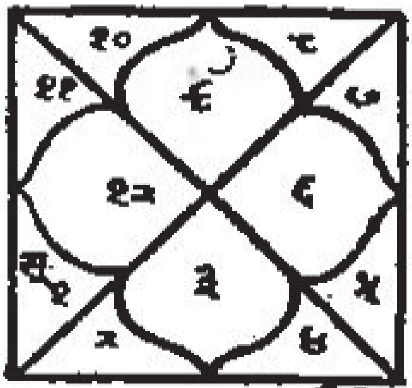

९६०

पाँचवें भाव में मित्र 'मंगल' को राशि पर स्थित उच्च के 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या एवं बुद्धि का यथेष्ट लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा विद्वान्, धर्मात्मा, ज्ञानी तथा बुद्धिमान् होता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। वाणी में सुप्रखरता तथा शिष्टाचार एवं सज्जनता में कमी होने के कारण आर्थिक उन्नति अधिक नहीं होती।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : षष्ठभाव : सूर्य

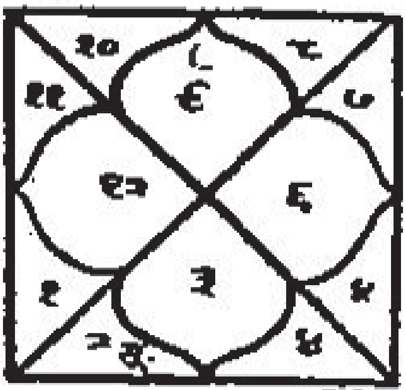

९६३

छठे भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अत्यधिक प्रभाव रखता है तथा झगड़े के मामलों से लाभ उठाता है। धर्म-पालन में विशेष रुचि नहीं होती।

बारहवें भाव में मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है, जिसके कारण खर्च चलता है तथा भाग्य की वृद्धि भी होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : सप्तमभाव : सूर्य

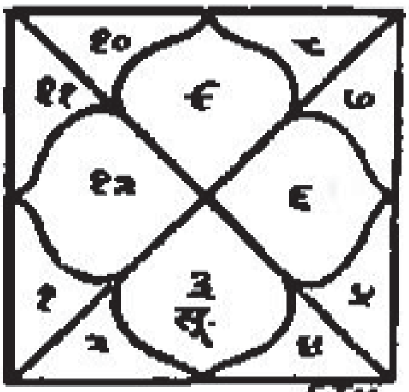

९२४

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से सुख मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय में सफलताएँ मिलती रहती है। वह भाग्यशाली तथा ईश्वरभक्त भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से श्रेष्ठ शारीरिक सुख एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व की प्राप्ति होती है।

ऐसे व्यक्ति की पत्नी कुछ तेज स्वभाव की होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : अष्टमभाव : सूर्य

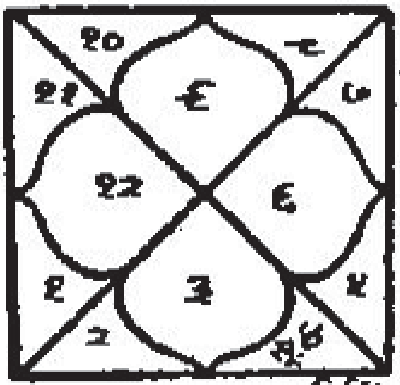

९९५

आठवें भाव में मित्र 'चंद्रमा' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। दैनिक जीवन प्रभावपूर्ण रहता है, परन्तु भाग्योन्नति में अनेक रुकावटें आती हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख के क्षेत्र में भी कुछ कमी रहती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : नवमभाव : सूर्य

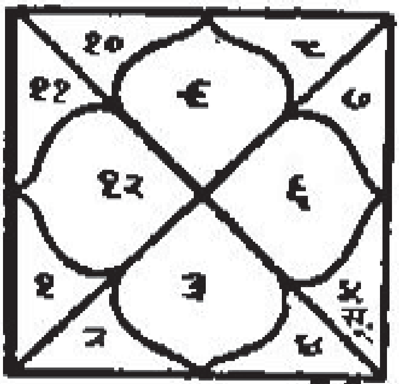

९९६

नवें भाव में स्वराशि-स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती है। वह बड़ा यशस्वी तथा प्रभावशाली होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम में कुछ कमी आती है तथा भाई-बहिनों के साथ कुछ मतभेद बना रहता है।

ऐसा व्यक्ति भाग्य पर आश्रित रहने वाला होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : दशमभाव : सूर्य

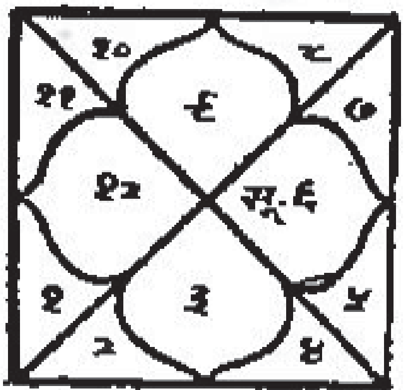

९९७

दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा अत्यधिक सह-योग मिलता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ प्राप्त होती हैं। ऐसा व्यक्ति बड़ा भाग्यवान् तथा आर्थिक विचारों का होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से जातक को माता, भूमि एवं भवन का यथेष्ट सुख मिलता है और यश तथा प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : एकादशभाव : सूर्य

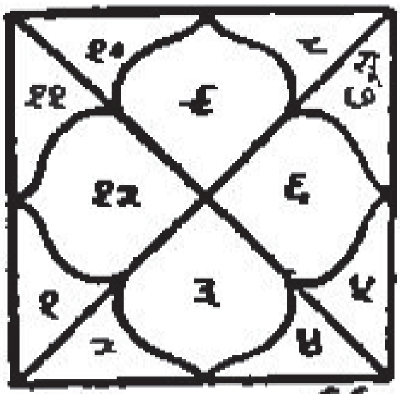

९९८

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक की आमदनी में कुछ कठिनाइयों के साथ अच्छी वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र तथा उच्च दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में भी पर्याप्त सफलता मिलती है।

ऐसा व्यक्ति गुणी, विद्वान्, सज्जन, मधुरभाषी तथा सुखी होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : द्वादशभाव : सूर्य

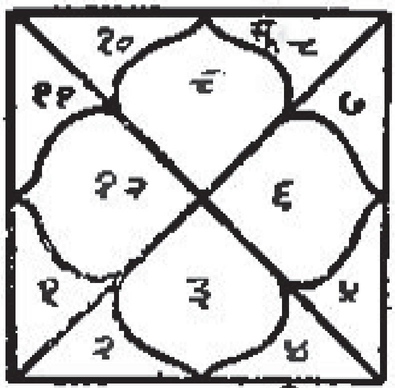

९९९

बारहवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ विलम्ब के साथ सफलता मिलती है और लाभ होता है। धर्म-पालन में रुचि अधिक नहीं होती, परन्तु धर्म तथा परोपकार में ही अधिक खर्च होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रुओं पर प्रभाव बना रहता है तथा शत्रु-पक्ष, झगड़े, मुकदमे आदि से लाभ एवं विजय की प्राप्ति भी होती है।

'धनु' लग्न में 'चन्द्रमा'

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

धनु लग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

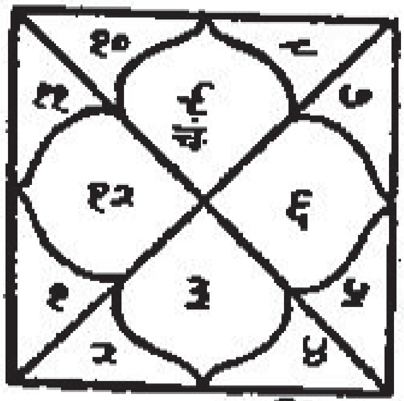

१०००

पहले भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित अष्टमेश 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। शरीर सुन्दर तथा स्वस्थ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के बाद स्त्री का सुख मिलता है तथा दैनिक आमदनी में भी जातक को कुछ कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

धनुलग्न : द्वितीयभाव : चंद्र

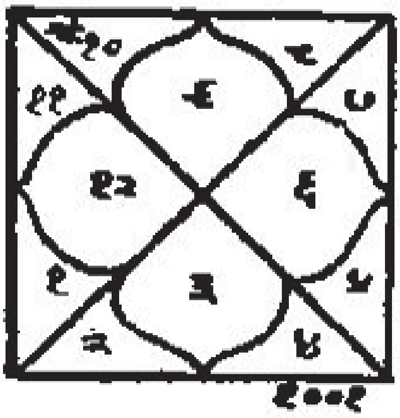

६००१

दूसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक धन का संचय नहीं कर पाता तथा कौटुम्बिक सुख में भी कमी बनी रहती है, परन्तु रहन-सहन अमीरी ढंग का होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। मन में कुछ बेचैनी भी रहती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

धनु लग्न : तृतीयभाव : चंद्र

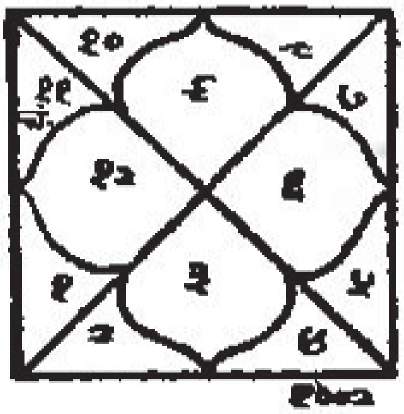

६००२

तीसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चंद्रमा' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के सुख में कमी प्राप्त होती है तथा पराक्रम की वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ता है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। सामान्यतः जातक भाग्यशाली तथा संघर्ष-पूर्ण जीवन जीने वाला होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

धनु लग्न : चतुर्थभाव : चंद्र

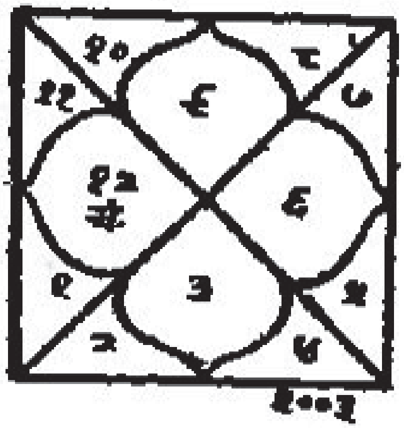

६००३

चौथे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कुछ कमी रहती है। उसे मातृभूमि से दूर जाकर भी रहना पड़ता है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। दैनिक जीवन प्रभावशाली बना रहता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'चंद्रमा' का फलादेश

धनु लग्न : पंचमभाव : चंद्र

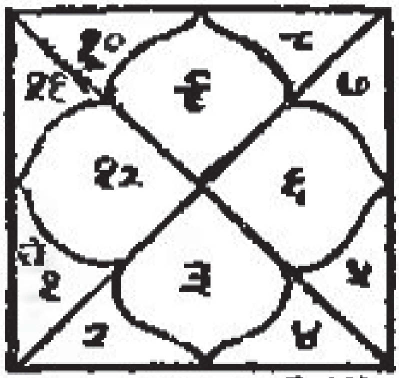

१००४

पाँचवें भाव में 'मंगल' की राशि पर स्थित अष्टमेश 'चंद्रमा' के प्रभाव से जातक की विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में कुछ कमियों का सामना करना पड़ता है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, किन्तु मस्तिष्क में चिन्ताएं भी रहती हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में भी बड़ी कठिनाइयों के साथ सामान्य सफलता मिलती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'चंद्रमा' का फलादेश

धनु लग्न : षष्ठभाव : चंद्र

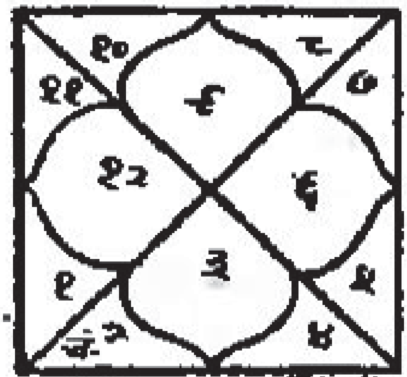

१००५

छठे भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित उच्च के 'चंद्रमा' के प्रभाव से जातक का शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च की परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध भी अच्छे सिद्ध नहीं होते।

ऐसे व्यक्ति को शत्रु-पक्ष के कारण कुछ मानसिक परेशानियां भी रहती हैं।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'चंद्रमा' का फलादेश

धनु लग्न : सप्तमभाव : चंद्र

१००६

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित अष्टमेश 'चंद्रमा' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय में भी कठिनाइयां आती हैं। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा दैनिक जीवन भी कुछ आनन्दमय बना रहता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में वृद्धि होती है, परन्तु स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता। थोड़े परिश्रम से ही थक जाया करता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'चंद्रमा' का फलादेश

धनु लग्न : अष्टमभाव : चंद्र

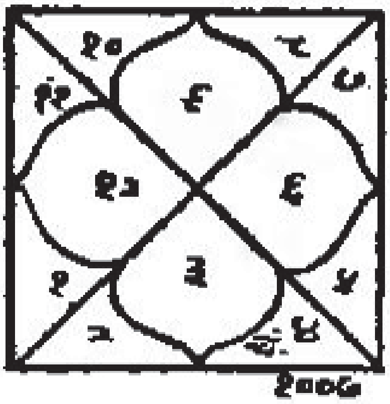

आठवें भाव में स्वराशि में स्थित 'चंद्रमा' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का यथेष्ट लाभ होता है। दैनिक जीवन बड़े ठाठ-बाट का रहता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से धन के बारे में चिन्ताएं बनी रहती हैं तथा कौटुम्बिक सुख में भी कमी रहती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

धनु लग्न : नवमभाव : चंद्र

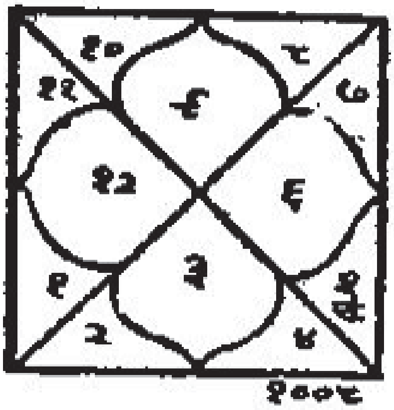

नवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'चंद्रमा' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कुछ परेशानियां आती हैं तथा यश भी कम मिल पाता है। धर्म का यथाविधि पालन नहीं होता। आयु तथा पुरातत्त्व में वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों से मतभेद रहता है तथा पराक्रम में भी यथोचित वृद्धि नहीं हो पाती। जीवन सामान्य ढंग से व्यतीत होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

धनु लग्न : दशमभाव : चंद्र

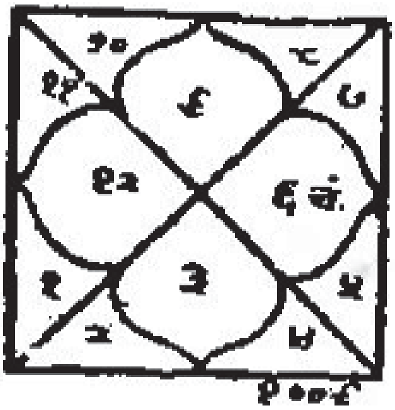

दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'चंद्रमा' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयां आती हैं, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है जिसके कारण जीवन ठाठ से बीतता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख कुछ कमी एवं परेशानी के साथ मिलता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

धनु लग्न : एकादशभाव : चंद्र

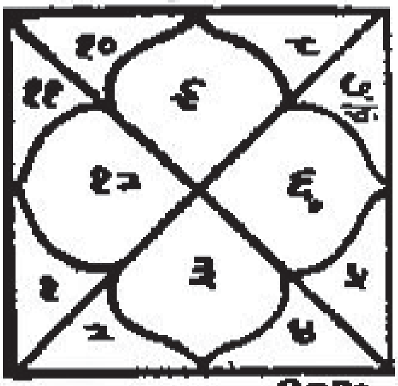

२०१०

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'चंद्रमा' के प्रभाव से जातक को कुछ परेशानियों के साथ लाभ होता है। आयु तथा पुरातत्त्व की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है तथा दैनिक जीवन आनन्दपूर्ण बना रहता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है तथा मस्तिष्क में चिन्ताएँ घिरी रहती हैं।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

धनु लग्न : द्वादशभाव : चंद्र

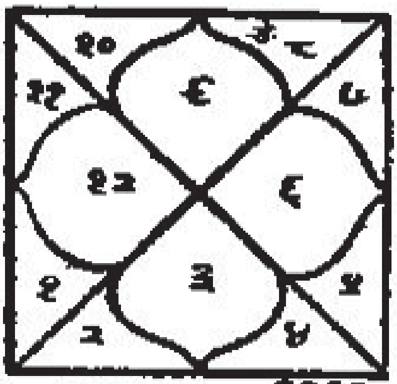

२०११

बारहवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित नीच के 'चंद्रमा' के प्रभाव के जातक को खर्च के बारे में बड़ी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कष्ट मिलता है। आयु तथा पुरातत्त्व की भी हानि होती है। दैनिक-जीवन अशान्तिपूर्ण रहता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है तथा झगड़े-मुकदमों में सदैव विजय प्राप्त होती है।

'धनु' लग्न में 'मंगल'

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनु लग्न : प्रथमभाव : मंगल

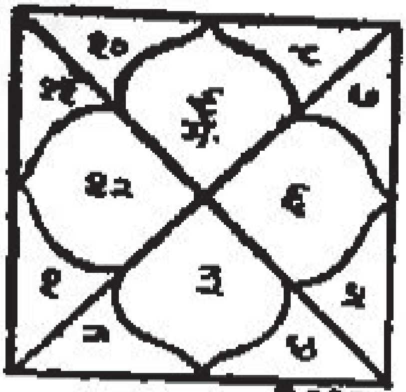

२०१२

पहले भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति अच्छी रहती है तथा परिश्रमी भी होता है। विद्या, सन्तान तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है :

चौथी मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि, भवन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से कुछ कमी के साथ स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ होता है। आठवीं नीचदृष्टि से अष्टम-भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व का क्षेत्र कमजोर रहता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनु लग्न : द्वितीयभाव : मंगल

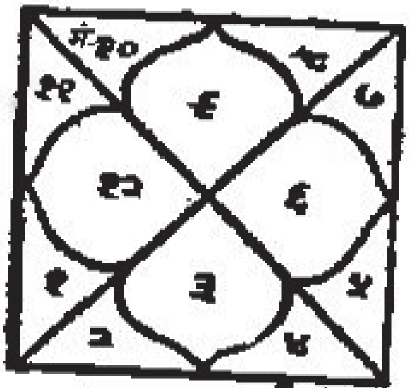

१०७३

दूसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक धन का सामान्य संचय करता है तथा उसे कौटुम्बिक सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में पंचम भाव को देखने से विद्या तथा सन्तान की शक्ति प्राप्त होती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कमी रहती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से बड़ी कठिनाइयों के साथ भाग्योन्नति में थोड़ी-बहुत सफलता मिलती है तथा धर्म का पालन भी कम ही हो पाता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनुलग्न : तृतीयभाव : मंगल

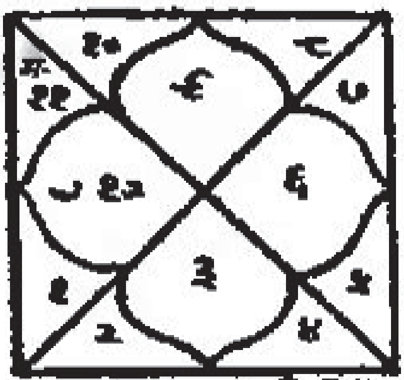

१०७४

तीसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। विद्या तथा सन्तान-पक्ष भी कमजोर रहता है। चौथी शत्रु-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु पक्ष पर विजय मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि के नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में न्यूनाधिक सफलता मिलती रहती है। जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनु लग्न : चतुर्थभाव : मंगल

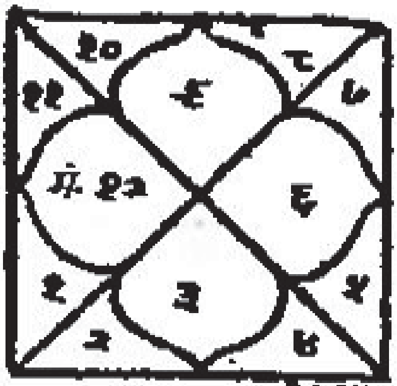

१०७५

चौथे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से माता, भूमि तथा भवन के सुख की हानि होती है। सन्तान तथा विद्या का पक्ष भी कमजोर रहता है। चौथी मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों से काम चलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है। आठवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से बुद्धियोग के आमदनी बढ़ती है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनु लग्न : पंचमभाव : मंगल

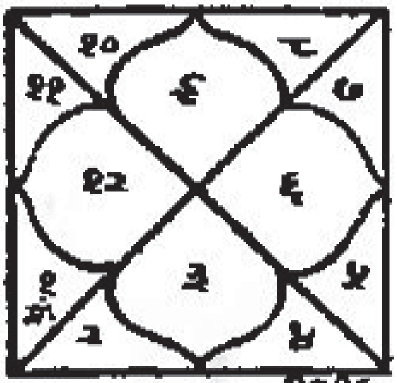

२०२६

पाँचवें भाव में स्वराशि-स्थित व्ययेश 'मंगल' के प्रभाव से जातक को कुछ परेशानियों के साथ विद्या एवं संतान के क्षेत्र में कुछ सफलता मिलती है। चौथी नीच-दृष्टि से मित्र राशि में अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व में कमी रहती है तथा उदर-विकार बना रहता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से बुद्धियोग द्वारा आमदनी के क्षेत्र में कुछ सफलता मिलती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों से विशेष लाभ भी होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनुलग्न : षष्ठभाव : मंगल

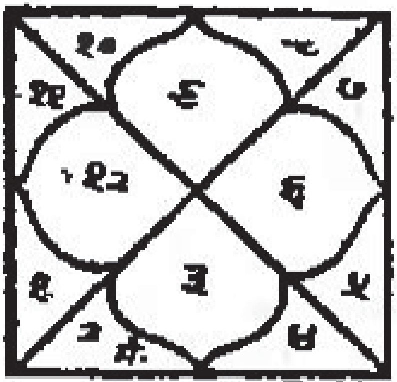

२०२७

छठे भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है। परन्तु सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में कमी रहती है। चौथी मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने से कुछ परेशानियों के साथ भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबन्धों में कठिनाइयाँ आती हैं। आठवीं मित्र-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी तथा मस्तिष्क में परेशानी रहती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनुलग्न : सप्तमभाव : मंगल

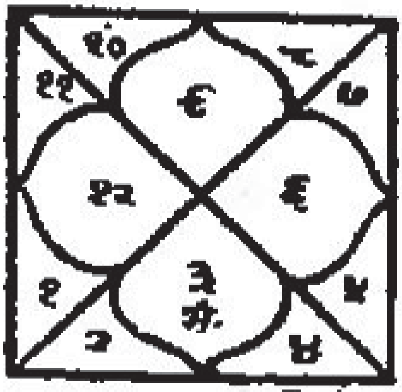

२०२८

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा व्यवसाय में हानि होती है। बाहरी स्थानों से कुछ अच्छा संबंध रहता है, जिसके बल पर खर्च चलता रहता है। चौथी मित्र-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शरीर में कुछ कमजोरी रहती है। आठवीं उच्च-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का अच्छा सुख प्राप्त होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनु लग्न : अष्टमभाव : मंगल

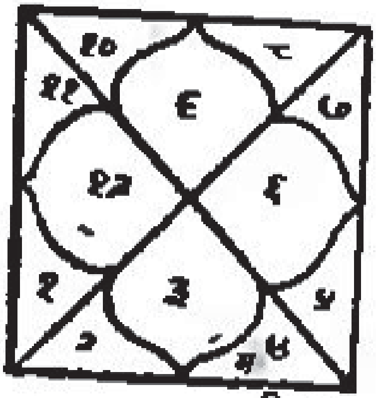

२०१९

आठवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित नीच के 'मंगल' के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व शक्ति में कमी आती है। पेट में विकार तथा मस्तिष्क में चिन्ताएँ रहती हैं। संतान पक्ष से कष्ट होता है तथा विद्या-पक्ष में कमजोरी रहती है। चौथी शत्रु-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से कठिन परिश्रम द्वारा आमदनी में वृद्धि होती है। सातवीं उच्च-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-कुटुम्ब का सामान्य सुख मिलता है। आठवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से विरोध रहता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनु लग्न : नवमभाव : मंगल

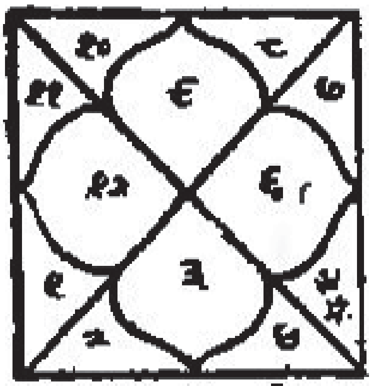

२०२०

नवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। विद्या तथा सन्तान के क्षेत्र में भी कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबन्धों से खर्च चलता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों से विरोध रहता है तथा पराक्रम में कमी आती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनु लग्न : दशमभाव : मंगल

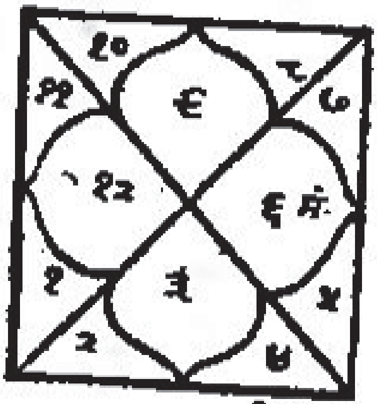

२०२१

दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को राज्य के क्षेत्र में बुद्धियोग से सफलता मिलती है तथा पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में हानि रहती है। चौथी मित्र-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है, परन्तु सन्तान-पक्ष फिर भी कमजोर रहता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'एकादश भाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनुलग्न : एकादश भाव : मंगल

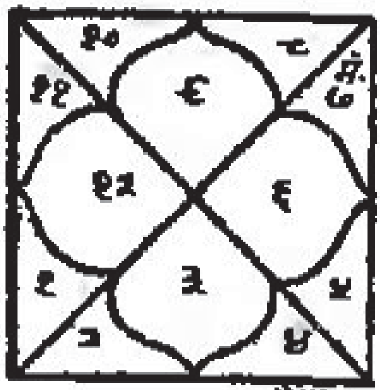

१०२२

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की आमदनी में पर्याप्त वृद्धि होती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से कुछ कठिनाई के साथ लाभ होता है। चौथी उच्च दृष्टि से शत्रुराशि में द्वितीय भाव को देखने से धन-संचय के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचम भाव को देखने से विद्या एवं सन्तान पक्ष से लाभ होता है। आठवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा झगड़ों में विजय एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनुलग्न : द्वादशभाव : मंगल

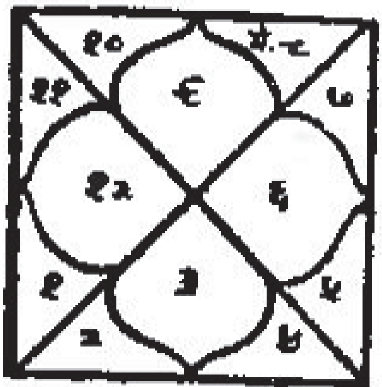

१०२३

बारहवें भाव में स्वराशि में स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। सन्तान तथा विद्या-पक्ष में कमी रहती है। चौथी शत्रु-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से भाई-बहिनों से विरोध रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है तथा झगड़ों से लाभ होता है। आठवीं मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा व्यवसाय में कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

'धनु' लग्न में 'बुध'

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनुलग्न : प्रथमभाव : बुध

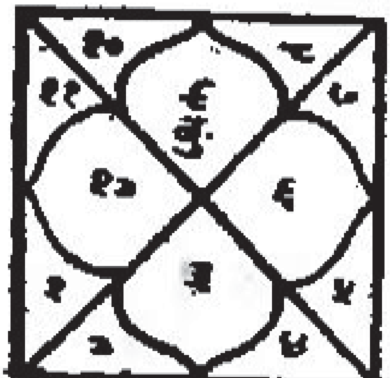

१०२४

पहले भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को श्रेष्ठ शारीरिक तथा विवेकशक्ति प्राप्त होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से स्वराशि में सप्तम भाव को देखने से सुन्दर पत्नी मिलती है तथा ससुराल से यथेष्ट धन भी प्राप्त होता है। दैनिक आमदनी भी बहुत अच्छी रहती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनु लग्न : द्वितीयभाव : बुध

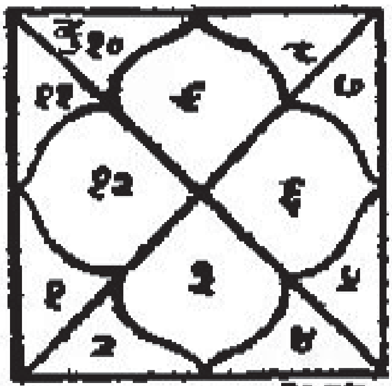

१०२८

दूसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का विशेष सुख मिलता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय से भी लाभ होता है परन्तु स्त्री-सुख में कमी रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। दैनिक जीवन उल्लासपूर्ण एवं शानदार बना रहता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनु लग्न : तृतीयभाव : बुध

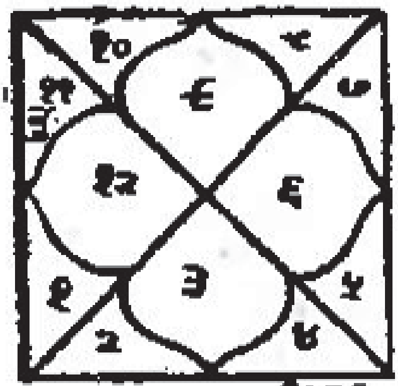

१०२९

तीसरे भाव में मित्र 'शनि की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का यथेष्ट सुख मिलता है। अपनी विवेक-बुद्धि से उसे प्रत्येक क्षेत्र में सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती रहती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनु लग्न: चतुर्थभाव: बुध

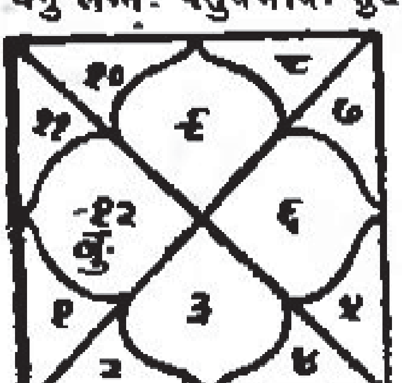

१०३०

चौथे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित नीच के 'बुध' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी प्राप्त होती है। स्त्री तथा गृहस्थी के सुख में भी कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं उच्च दृष्टि से स्वराशि में दशम भाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में शक्ति एवं सफलता प्राप्त होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनु लग्न : पंचमभाव : बुध

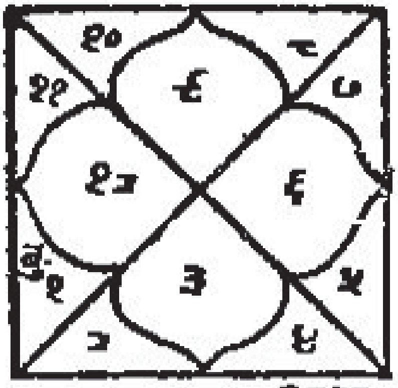

१०२८

पाँचवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा सन्तान का श्रेष्ठ लाभ होता है। स्त्री, गृहस्थी, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी उन्नति होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी खूब होती है। ऐसा व्यक्ति वार्तालाप करने में बड़ा चतुर, बुद्धिमान तथा यशस्वी भी होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनु लग्न : षष्ठभाव : बुध

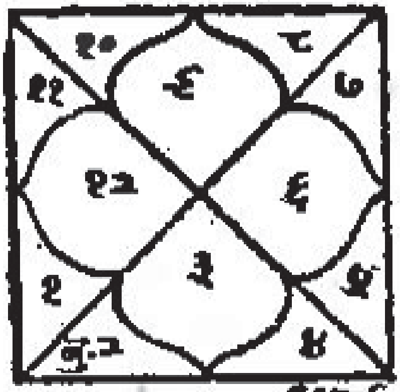

१०२९

छठे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है, परन्तु पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है। नाना के पक्ष से लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा उसे बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनु लग्न : सप्तमभाव : बुध

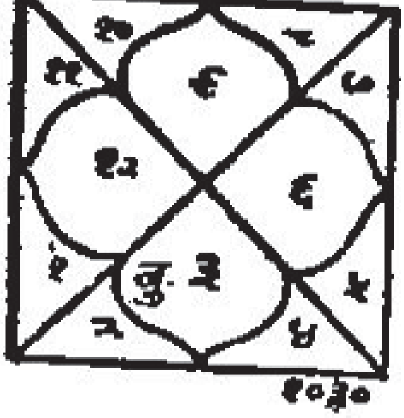

१०३०

सातवें भाव में स्वराशि स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है तथा स्त्री-पक्ष से लाभ भी होता है। दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। राज्य एवं विद्या से भी सहयोग तथा सम्मान मिलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनुलग्न : अष्टमभाव : बुध

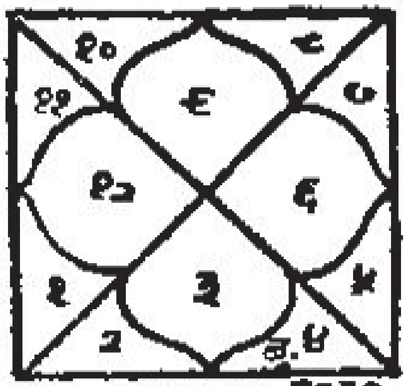

१०३१

आठवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। परंतु पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कभी-कभी बड़े घाटे तथा कठिनाइयों का सामना करना होता है। सामान्य रहन-सहन शानदार रहता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनुलग्न : नवमभाव : बुध

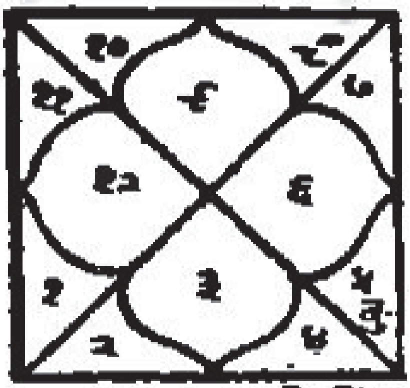

१०३२

नवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक अत्यधिक भाग्यवान् तथा धर्मात्मा होता है। पिता, राज्य, व्यवसाय तथा स्त्री-पक्ष में भी उसे अत्यन्त सफलता मिलती है। अपनी विवेक-बुद्धि से वह यथेष्ट धन तथा सम्मान अर्जित करता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम की भी अत्यधिक वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बहुत सुखी जीवन बिताता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनुलग्न : दशमभाव : बुध

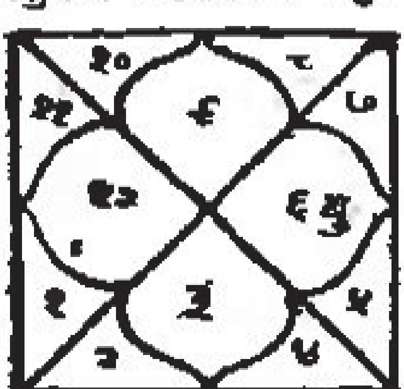

१०३३

दसवें भाव में स्वराशि-स्थित उच्च के बुध के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलताएँ मिलती हैं। उसे पर्याप्त यश, धन तथा सम्मान प्राप्त होता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के माता के सुख में कमी रहती है तथा भूमि, भवन के सुख में भी कुछ कठिनाइयाँ आती हैं।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनुलग्न : एकादशभाव : बुध

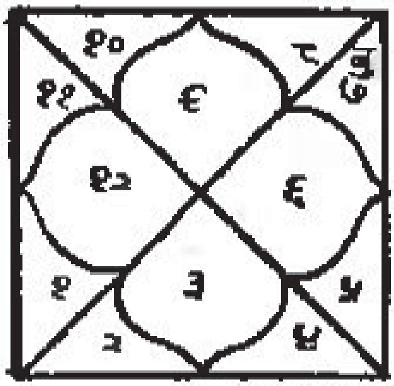

२०३५

ग्यारहवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की आमदनी खूब होती है। पिता, राज्य, व्यवसाय तथा स्त्री-पक्ष में भी पर्याप्त सुख, यश, धन, लाभ तथा सम्मान प्राप्त होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का सुख भी यथेष्ट मिलता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, विद्वान् तथा यशस्वी होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनुलग्न : द्वादशभाव : बुध

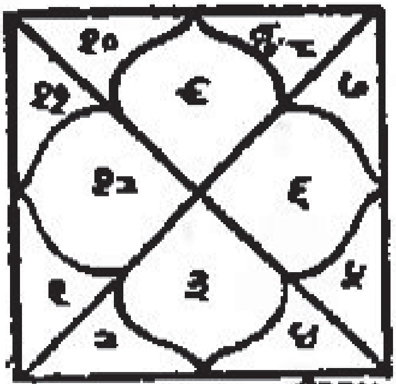

२०३६

बारहवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से लाभ प्राप्त होता है। पिता, राज्य तथा स्त्री के सुख की हानि होती है। जन्म-स्थान में रहकर व्यवसाय करने से घाटा होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष एवं झगड़े-मुकद्दमे के मामलों में सफलता होती है।

'धनु' लग्न में 'गुरु'

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

धनुलग्न : प्रथमभाव : गुरु

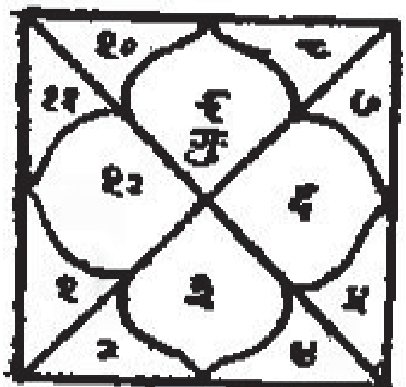

२०३७

पहले भाव में स्वराशि में स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य एवं सुख की प्राप्ति होती है। भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय का सुख भी मिलता है। नवीं मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है।

ऐसा व्यक्ति विद्वान्, गुणी, सुन्दर, धनी, धर्मात्मा, मधुरभाषी, सज्जन तथा आनन्दी होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

धनु लग्न: द्वितीयभाव : गुरु

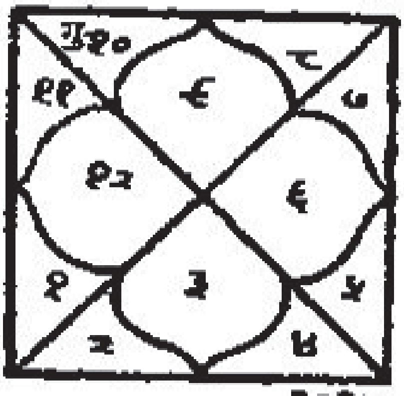

२०३७

दूसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब-सुख की हानि होती है। शारीरिक सुख तथा सौन्दर्य में भी कमी आती है। माता, भूमि तथा भवन का पक्ष भी कमजोर रहता है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है तथा झगड़े के मामलों में बुद्धिमानी से सफलता मिलती है। सातवीं उच्च-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है।

नवीं मित्र-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सम्मान, यश तथा सफलता की प्राप्ति होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

धनु लग्न : तृतीयभाव : गुरु

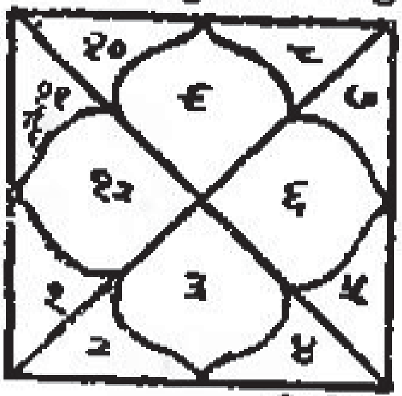

२०३८

तीसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को कुछ मतभेद के साथ भाई-बहिन का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में भी कमी आती है। भूमि, भवन तथा माता का सामान्य सुख मिलता है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री सुन्दर मिलती है तथा स्त्री से सुख और व्यवसाय में सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती रहती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

धनु लग्न : चतुर्थभाव : गुरु

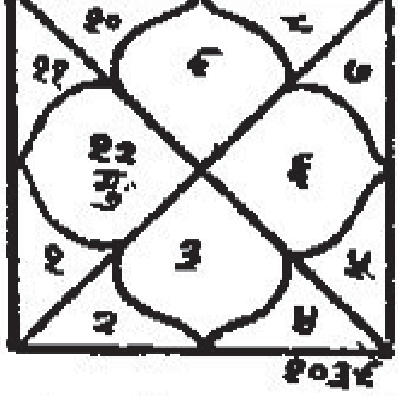

२०३९

चौथे भाव में स्वराशि में स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है। शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति भी होती है। पाँचवीं उच्च तथा मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता से सुख, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ होता है। नवीं मित्र-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अच्छी तरह चलता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

धनुलग्न : पंचमभाव : गुरु

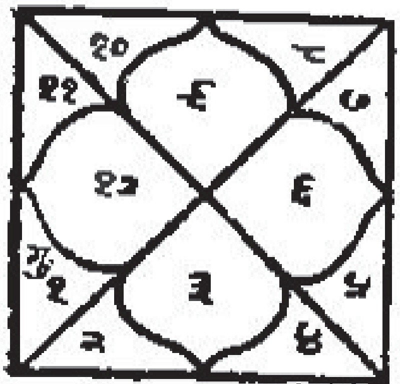

१०४०

पाँचवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा सन्तान-पक्ष में सफलता मिलती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य, प्रतिष्ठा तथा प्रभाव की प्राप्ति होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

धनुलग्न : षष्ठभाव : गुरु

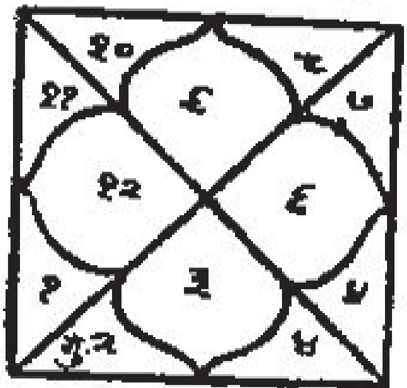

१०४१

छठे भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष तथा रोगादि से परेशानी होती है तथा बुद्धि-बल से उनका निराकरण होता है। शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में भी कमी आती है। माता का अल्प सुख होता है तथा भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त नहीं होता। पाँचवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ, सुख तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से सुख मिलता है। नवीं नीचदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब की ओर से परेशानी रहती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

धनुलग्न : सप्तमभाव : गुरु

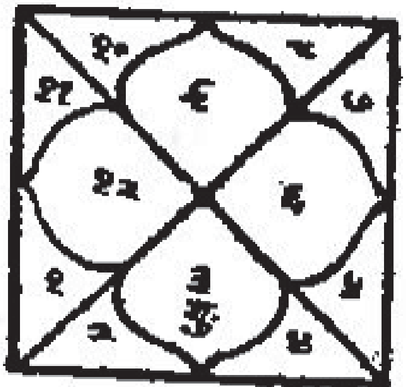

१०४२

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से सुख एवं सौन्दर्य तथा व्यवसाय में सफलता प्राप्त होती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है। श्रेष्ठ पाँचवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कुछ असंतोष रहता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य एवं स्वाभिमान की प्राप्ति होती है। नवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों से असन्तोष रहता है तथा पराक्रम में भी कुछ कमी आती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

धनुलग्न : अष्टमभाव : गुरु

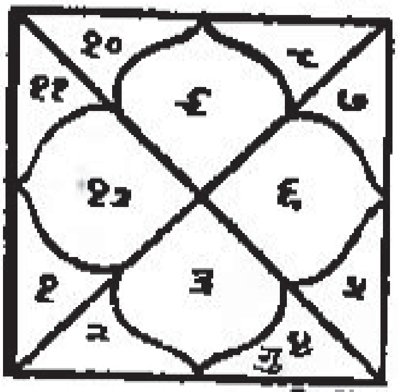

१०४३

आठवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि में स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व की श्रेष्ठ शक्ति का लाभ होता है। परन्तु शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थान के संबंधों से लाभ मिलता है।

सातवीं नीच तथा शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख में कमी आती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

धनुलग्न : नवमभाव : गुरु

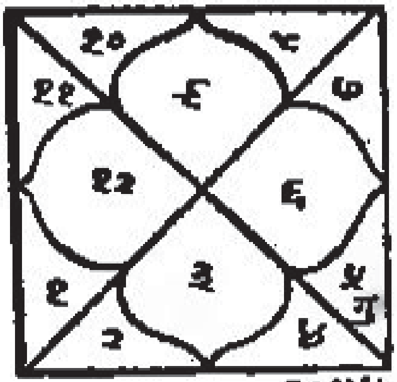

१०४४

नवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के भाग्य की अत्यधिक वृद्धि होती है तथा धर्म का यथाविधि पालन होता है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य एवं यश की प्राप्ति होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी आती है। नवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या एवं बुद्धि की वृद्धि होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

धनुलग्न : दशमभाव : गुरु

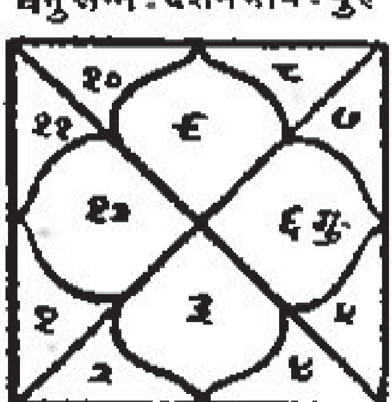

१०४५

दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, लाभ, सम्मान तथा सहयोग प्राप्त होता है। शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वाभिमान की प्राप्ति भी होती है। पाँचवीं नीच तथा शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब पक्ष से असन्तोष रहता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। नवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में बड़ी होशियारी से प्रभाव स्थापित होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

धनु लग्न : एकादशभाव : गुरु

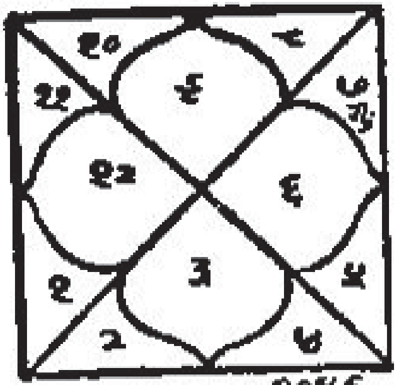

१०४६

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक शारीरिक श्रम द्वारा अपनी आय को बढ़ाता है। उसे माता, भूमि एवं भवन का सुख भी प्राप्त होता है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहनों से असन्तोष रहता है तथा पराक्रम की वृद्धि भी नहीं हो पाती।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का लाभ होता है। नवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ की प्राप्ति होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

धनु लग्न : द्वादशभाव : गुरु

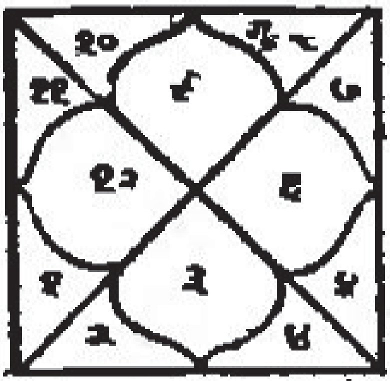

१०४७

बारहवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ होता है। शरीर में कुछ कमजोरी भी रहती है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में बुद्धिमानी से प्रभाव स्थापित होता है। नवीं उच्च तथा मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति का दैनिक जीवन भाव से बीतता है।

'धनु' लग्न में 'शुक्र'

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनु लग्न : प्रथमभाव : शुक्र

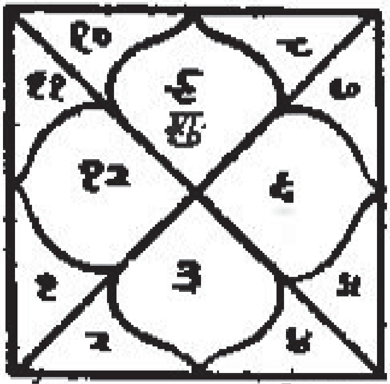

१०४८

पहले भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक का स्वास्थ्य कुछ कमजोर रहता है, परन्तु परिश्रमी तथा चतुर होता है। शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है। यशस्वी भी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री से कुछ मतभेद-युक्त सुख मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में चतुराई द्वारा सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनुलग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

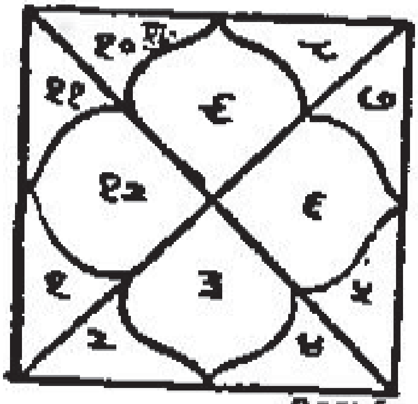

१०५९

दूसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को धन की अच्छी शक्ति मिलती है, परन्तु कुटुम्बियों से मतभेद रहता है। शत्रु-पक्ष से लाभ होता है तथा उस पर प्रभाव भी स्थापित होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है।

ऐसा व्यक्ति प्रभावशाली तथा प्रतिष्ठित होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनुलग्न : तृतीयभाव : शुक्र

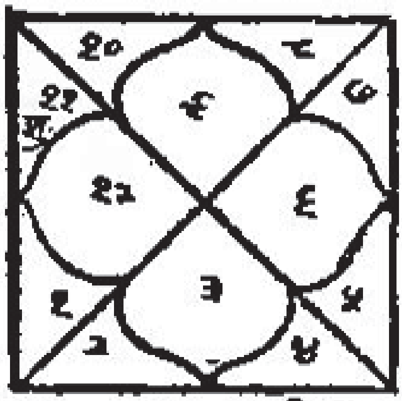

१०६०

तीसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा कुछ कमी के लाभ भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। धन का लाभ होता है तथा शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्यो-न्नति में कठिनाइयाँ आती हैं तथा धर्म में भी विशेष रुचि नहीं रहती। सामान्यतः जीवन सुखी बना रहता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनु लग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

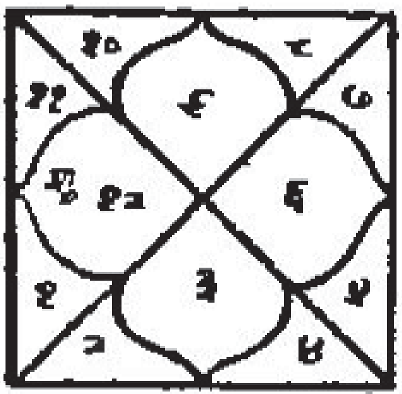

१०६१

चौथे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित उच्च 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। आमदनी अच्छी रहती है तथा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता से हानि तथा राज्य के क्षेत्र में असफलता मिलती है। व्यवसाय की उन्नति के मार्ग में भी अनेक कठिनाइयाँ आती हैं।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनुलग्न : पंचमभाव : शुक्र

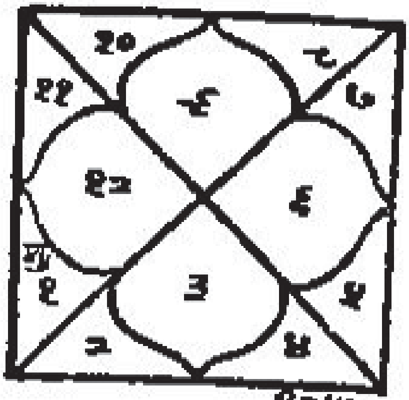

१०५२

पाँचवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव के जातक को विद्या, बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है, परन्तु सन्तान-पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। वाणी की शक्ति, चातुर्य एवं कला का लाभ भी होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में एकादश भाव को देखने से विद्या-बुद्धि द्वारा आमदनी की वृद्धि होती है तथा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनुलग्न : षष्ठभाव : शुक्र

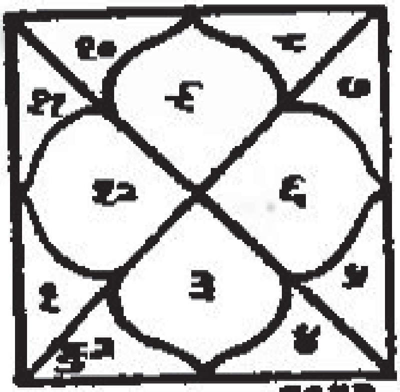

१०५३

षष्ठ भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक्र' के प्रभाव के जातक शत्रु-पक्ष पर भारी प्रभाव रखता है तथा झगड़ों से लाभ उठाता है। परिश्रम द्वारा धन एवं आमदनी के क्षेत्र में भी अच्छी सफलता मिलती है। ननसाल-पक्ष से भी लाभ होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ कठिनाइयों के साथ अच्छा लाभ होता रहता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनुलग्न : सप्तमभाव : शुक्र

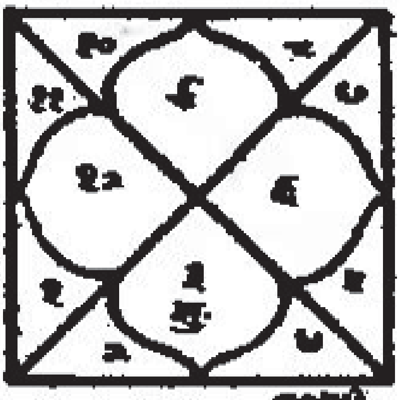

१०५४

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कुछ मतभेद-युक्त लाभ मिलता है। व्यवसाय क्षेत्र में भी कठिनाइयों के साथ लाभ प्राप्त होता है। शत्रुपक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है तथा मूत्रेन्द्रिय में विकार की संभावना भी रहती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि के प्रथम भाव को देखने से शारीरिक शक्ति एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनुलग्न : अष्टमभाव : शुक्र

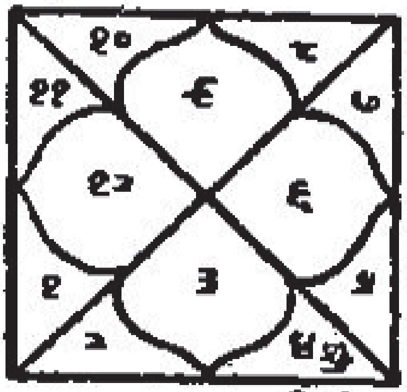

२०५५

आठवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्व का लाभ भी होता है। आमदनी के मार्ग में कठिनाइयां आती हैं। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से परिश्रम द्वारा लाभ मिलता है। शत्रुपक्ष से भी परेशानी होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से कुटुम्ब का सहयोग प्राप्त होता है तथा धन-वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनुलग्न : नवमभाव : शुक्र

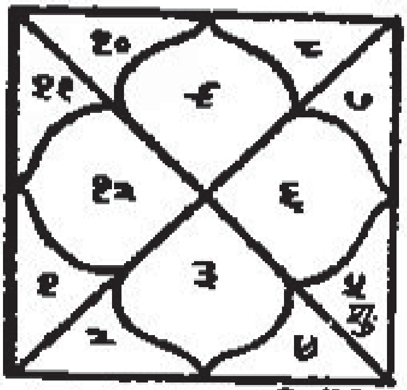

२०५६

नवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को भाग्योन्नति के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है। तथा धर्म में भी कम श्रद्धा रहती है। अपनी चतुराई द्वारा शत्रु-पक्ष से लाभ भी उठाता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

ऐसा व्यक्ति भाग्यवान् समझा जाता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनुलग्न : दशमभाव : शुक्र

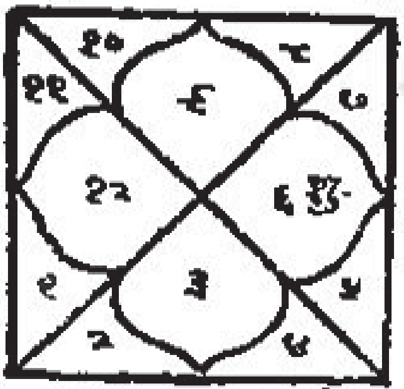

२०५७

दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित नीच के 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयों का अनुभव होता है। भाग्योन्नति में शत्रुपक्ष के कारण रुकावटें आती हैं।

सातवीं उच्च दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है तथा घर के भीतर प्रभाव भी बना रहता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनु लग्न : एकादशभाव : शुक्र

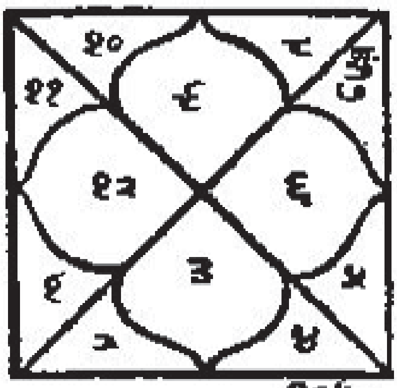

१०५८

ग्यारहवें भाव में स्वराशि में स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है तथा शत्रु पक्ष से विशेष लाभ मिलता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है, परन्तु बाद में बड़ा गुणी, चतुर तथा विद्वान् भी बनता है। सन्तान-पक्ष से त्रुटिपूर्ण साथ प्राप्त होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनु लग्न : द्वादशभाव : शुक्र

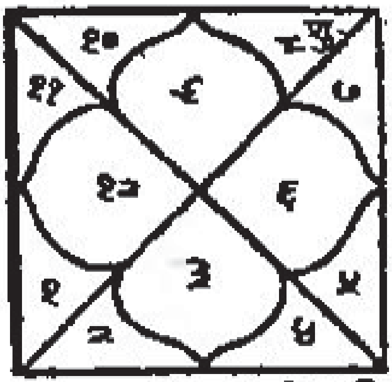

१०५९

बारहवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ भी होता है। झगड़े तथा शत्रुओं के कारण कुछ परेशानी होती है, परन्तु अपनी चतुराई से लाभ भी उठाता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर पूर्ण प्रभाव स्थापित होता है। ऐसा व्यक्ति संघर्षपूर्ण जीवन बिताता है।

'धनु' लग्न में 'शनि'

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्न : प्रथमभाव : शनि

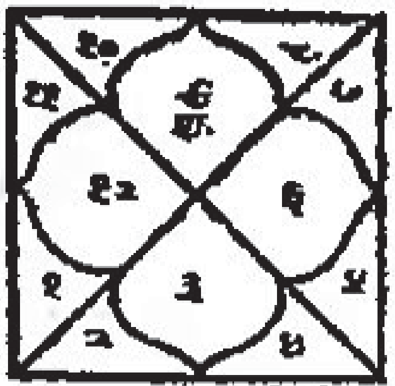

१०६०

पहले भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है। परिश्रम से धन तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। दसवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्न : द्वितीयभाव : शनि

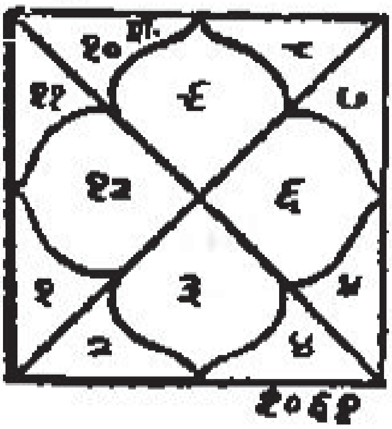

दूसरे भाव में स्वराशि-स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का पर्याप्त सुख प्राप्त होता है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है। तीसरी शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का अल्प सुख मिलता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। दसवीं उच्चदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी खूब रहती है तथा कभी-कभी आकस्मिक धन-लाभ भी होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्न : तृतीयभाव : शनि

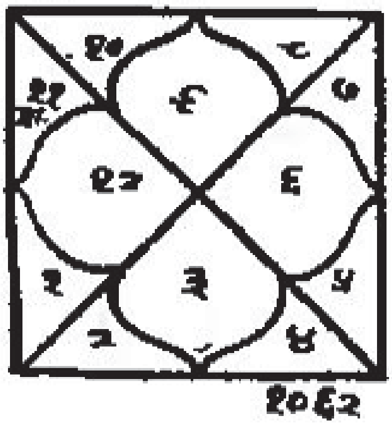

तीसरे भाव में स्वराशि-स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। तीसरी नीचदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान-पक्ष से कष्ट होता है तथा विद्या-बुद्धि में कमी रहती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा यश की उन्नति होती है परन्तु धर्म में श्रद्धा कम रहती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी लाभदायक सिद्ध नहीं होता।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्न : चतुर्थभाव : शनि

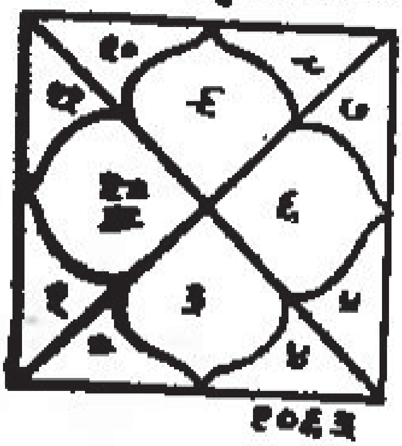

चौथे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी रहती है तथा भूमि, भवन का सामान्य सुख प्राप्त होता है। भाई-बहिन तथा कुटुम्ब का सुख भी असन्तोषजनक रहता है। तीसरी मित्रदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा झगड़ों से लाभ भी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र की उन्नति होती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्न : पंचमभाव : शनि

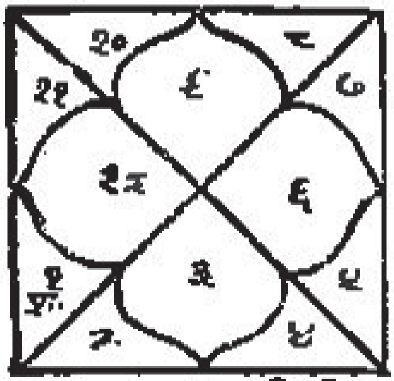

१०६४

पाँचवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित नीच के 'शनि' के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्या, बुद्धि के क्षेत्र में कमी रहती है। तीसरी मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। सातवीं उच्चदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी खूब रहती है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीय भाव को देखने से कौटुम्बिक सुख तथा धन-संचय के लिए गुप्त युक्तियों का आश्रय लेना पड़ता है तभी सामान्य सफलता मिलती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्न : षष्ठभाव : शनि

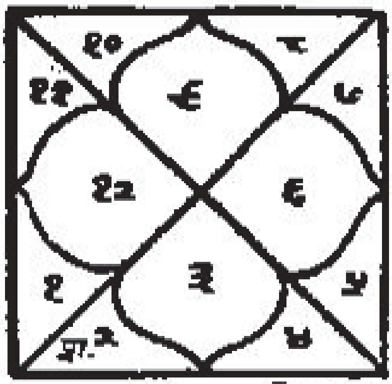

१०६५

छठे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर भारी प्रभाव रखता है तथा झगड़ों से लाभ उठाता है। कुटुम्बियों से कुछ विरोध भी रहता है। तीसरी शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु में वृद्धि होती है, परन्तु पुरातत्त्व का लाभ कम होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है। बाहरी संबंधों से भी हानि होती है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों से वैमनस्य रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति हिम्मती तथा पुरुषार्थी होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्न : सप्तमभाव : शनि

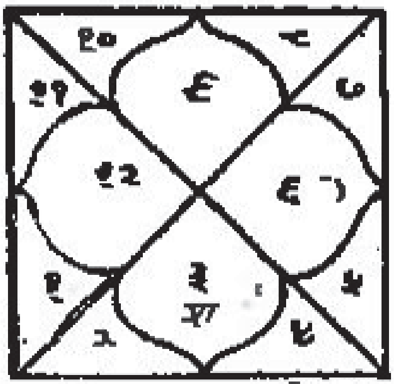

१०६६

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को स्त्री का लाभ तो होता है, परन्तु उससे सुख कम ही मिलता है, तथापि दैनिक व्यवसाय में पर्याप्त लाभ होता है। भाई-बहन तथा कुटुम्बियों से अच्छे संबंध रहते हैं। तीसरी शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाग्य के क्षेत्र में रुकावटें आती हैं।

सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर में कुछ कष्ट रहता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आ जाती है और उसे अपना स्थान छोड़कर परदेश में भी रहना पड़ता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्न : अष्टमभाव : शनि

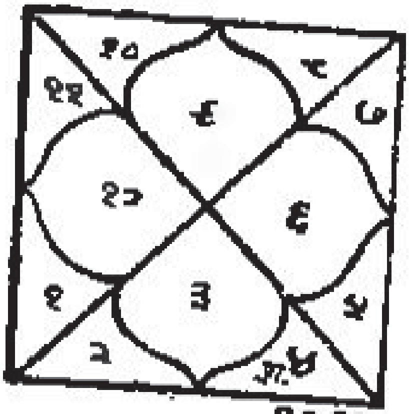

१०६७

आठवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। दैनिक सुख, धन-संचय तथा भाई-बहिन के सुख में कमी रहती है। तीसरी मित्र-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने से धन-कुटुम्ब का सामान्य सुख मिलता है। दसवीं नीच-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में कमी बनी रहती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्न : नवमभाव : शनि

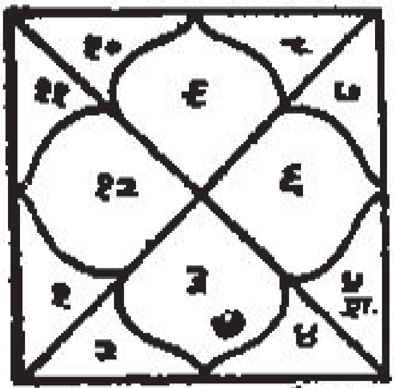

१०६८

नवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को भाग्योन्नति एवं धर्म-पालन में बाधाएं आती हैं। धन-कुटुम्ब का सामान्य-सुख मिलता है। तीसरी मित्र तथा उच्च-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी खूब रहती है तथा कभी-कभी आकस्मिक धन-लाभ भी होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। दसवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है तथा झगड़े-झंझटों से लाभ होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्न : दशमभाव : शनि

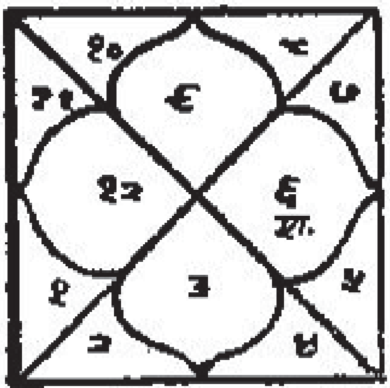

१०६९

दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को पिता से सहयोग, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ मिलता है। भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्ध भी असन्तोषजनक रहते हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी रहती है। दसवीं मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री-पक्ष से सुख तथा दैनिक व्यवसाय में सफलता की प्राप्ति होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्न : एकादशभाव : शनि

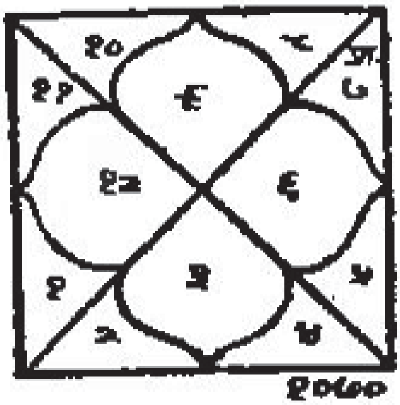

१०७००

ग्यारहवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आमदनी में विशेष वृद्धि होती है। कभी-कभी आकस्मिक धन-लाभ भी होता है। कुटुम्ब तथा भाई-बहिनों के सुख एवं पराक्रम में भी वृद्धि होती है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है।

सातवीं नीच तथा शत्रु-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान से कष्ट मिलता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कमी रहती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है परन्तु दैनिक जीवन में परेशानियों का अनुभव होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्न : द्वादशभाव : शनि

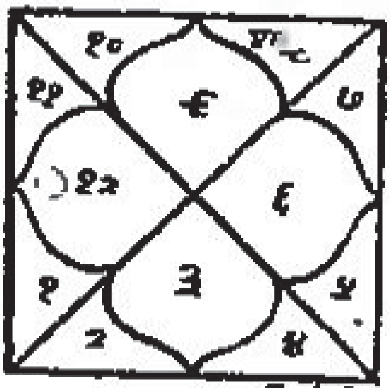

१०७०१

बारहवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों का संबंध भी असन्तोषजनक रहता है। धन-कुटुम्ब तथा भाई-बहिन के सुख में भी कमी रहती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में तीसरे भाव को देखने से धन-कुटुम्ब का सामान्य सुख प्राप्त होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है तथा गुप्त युक्तियों के सहारे लाभ भी मिलता है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं तथा धर्म का पालन भी पूर्ण रूप से नहीं हो पाता।

'धनु' लग्न में 'राहु'

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

धनु लग्न : प्रथमभाव : राहु

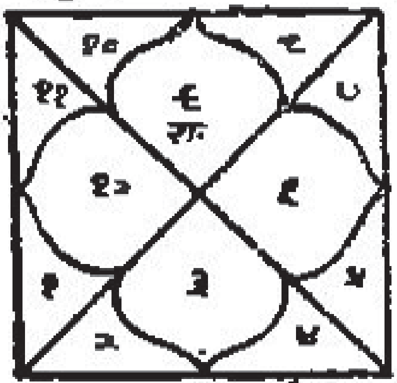

१०७०२

पहले भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी आती है। कभी-कभी कठिन शारीरिक कष्ट भी उठाना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति देखने में सज्जन परन्तु भीतर से चालाक होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

धनु लग्न : द्वितीयभाव : राहु

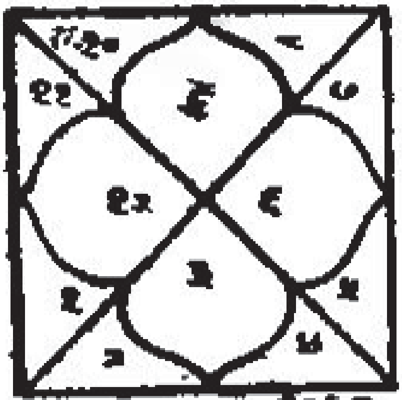

१०७३

दूसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब के सुख में कमी रहती है। कभी-कभी कौटुम्बिक कारणों से घोर संकटों का शिकार भी बनना पड़ता है।

उसे प्रायः ऋण लेकर अपना काम चलाना पड़ता है। अपनी कठिनाइयों पर वह गुप्त युक्तियों द्वारा विजय पाने का प्रयत्न करता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

धनु लग्न : तृतीयभाव : राहु

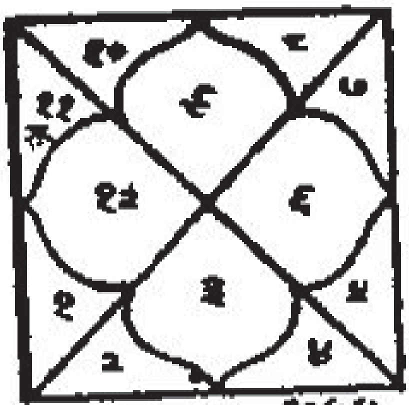

१०७४

तीसरे भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक बड़ा हिम्मती तथा बहादुर होता है। भाई-बहिनों के साथ उसके सम्बन्ध सुखकर नहीं रहते।

उसे कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु धैर्यवान् तथा साहसी होने के कारण उन्हें चुपचाप सहन कर लेता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

धनु लग्न : चतुर्थभाव : राहु

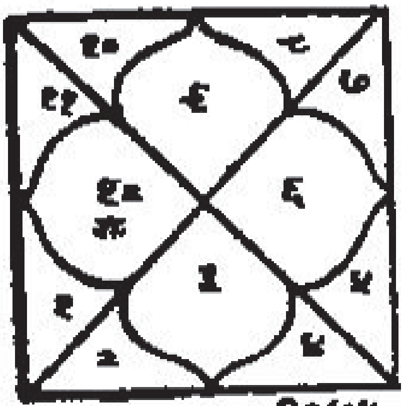

१०७५

चौथे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को माता के सुख में बड़ी कमी रहती है। भूमि तथा भवन का सुख भी नहीं मिलता। कभी-कभी घोर मुसीबतें भी उठानी पड़ती हैं। धैर्य तथा गुप्त युक्तियों के बल पर वह संकटों का सामना करता रहता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

धनुलग्न : पंचमभाव : राहु

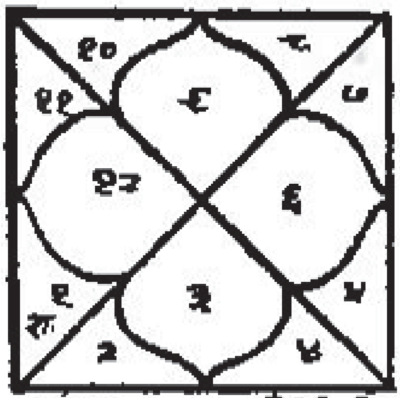

१०७६

पाँचवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की सन्तान-पक्ष से कष्ट प्राप्त होता है तथा विद्याध्ययन में भी बड़ी कठिनाइयाँ तथा कमी रहती है। उसकी बोली में रूखापन रहता है। वह धैर्य तथा गुप्त युक्तियों के बल पर काम तो चलाता है, परन्तु चिन्ताओं से घिरा रहता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

धनुलग्न : षष्ठभाव : राहु

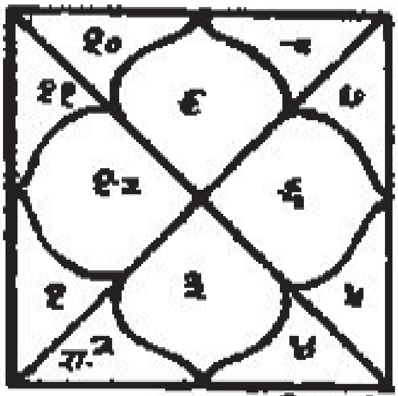

१०७७

छठे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अत्यन्त प्रभाव रखता है तथा चातुर्य एवं गुप्त युक्तियों के बल पर उन्हें परास्त करता रहता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी, बहादुर तथा धैर्यवान् होता है। वह मातृ-पक्ष को भी कुछ हानि पहुँचाता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

धनुलग्न : सप्तमभाव : राहु

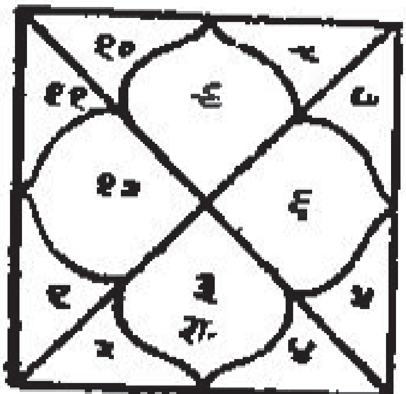

१०७८

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष की विशेष शक्ति मिलती है। उसके एक से अधिक विवाह भी हो सकते हैं। दैनिक आमदनी की वृद्धि के लिए वह अनेक उपायों का आश्रय लेता है। वह धनी तथा सुखी जीवन बिताता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

धनुलग्न : अष्टमभाव : राहु

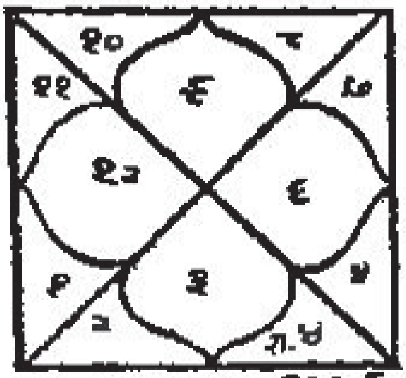

२०७९

आठवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के जीवन पर कई बार संकट आते हैं तथा मृत्यु-तुल्य स्थितियां बन जाती हैं। पेट में विकार रहता है। पुरातत्त्व की हानि होती है। ऐसा व्यक्ति परेशानियों से घिरा रहता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

धनुलग्न : नवमभाव : राहु

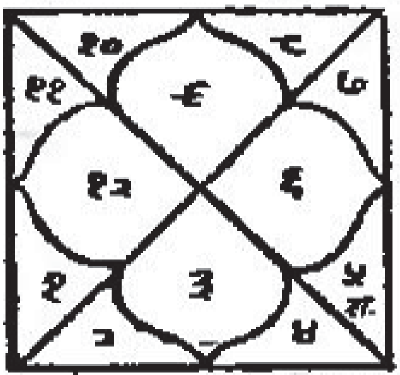

२०८०

नवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में घोर संकट आते हैं। धर्म में उसकी आस्था नहीं होती। ऐसा व्यक्ति प्रायः अनीश्वरवादी होते हुए भी भाग्योन्नति के लिए अधिकाधिक परिश्रम करता तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

धनुलग्न : दशमभाव : राहु

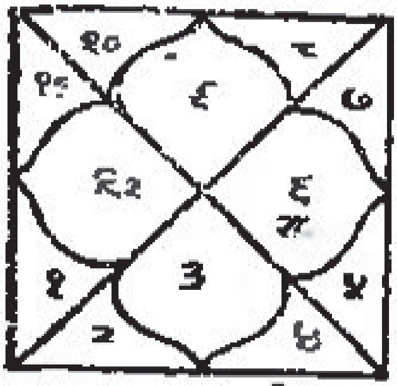

२०८१

दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा परेशानी, राज्य द्वारा संकट तथा व्यवसाय में हानि का शिकार बनना पड़ता है। वह अपनी हिम्मत तथा गुप्त युक्तियों के बल पर आगे बढ़ने का प्रयत्न करता रहता है, परन्तु अधिक सफलता नहीं मिल पाती।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

धनुलग्न : एकादशभाव : राहु

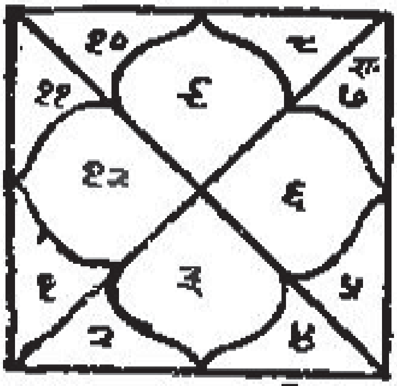

२०८२

ग्यारहवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की आमदनी में पर्याप्त वृद्धि होती है। कभी-कभी कठिनाइयां भी आती हैं, परन्तु वह अपना धैर्य नहीं छोड़ता और हिम्मत से काम लेकर कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर लेता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

धनुलग्न : द्वादशभाव : राहु

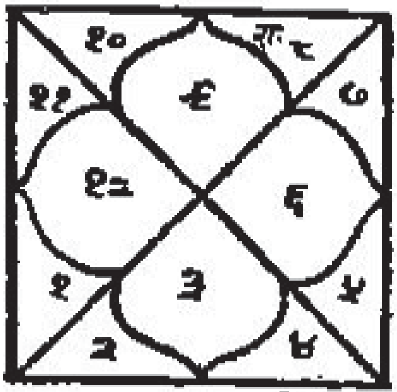

१०८३

बारहवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से भी कष्ट का अनुभव होता है। ऐसा व्यक्ति हिम्मती होने के कारण घबराता नहीं है तथा संकटों पर विजय पाने का प्रयत्न करता रहता है।

'धनु' लग्न में 'केतु'

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

धनुलग्न : प्रथमभाव : केतु

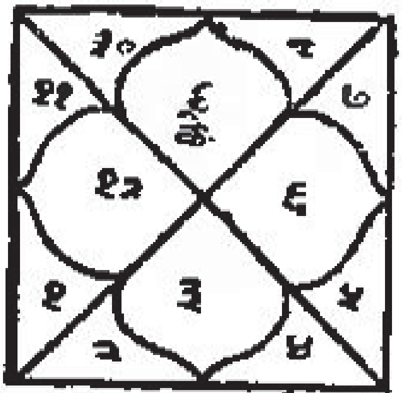

१०८४

पहले भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति एवं आकार में तो वृद्धि होती है, परन्तु शारीरिक सौन्दर्य में कमी भी अवश्य आती है। यह जिद्दी तथा हठी स्वभाव का होता है।

ऐसा व्यक्ति सब कठिनाइयों का साहस के साथ मुकाबला करने वाला, परिश्रमी तथा धैर्यवान् होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

धनु लग्न : द्वितीयभाव : केतु

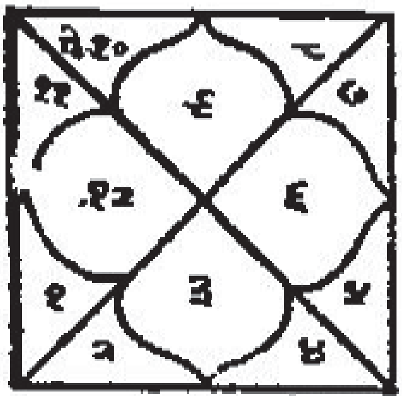

१०८५

दूसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के कौटुम्बिक सुख में कमी रहती है तथा धन-संचय के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ता है। कभी-कभी उसे घोर आर्थिक संकटों में भी फंसना पड़ता है और प्रायः ऋण लेकर काम चलाना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती तथा धैर्यवान् होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

धनु लग्न : तृतीयभाव : केतु

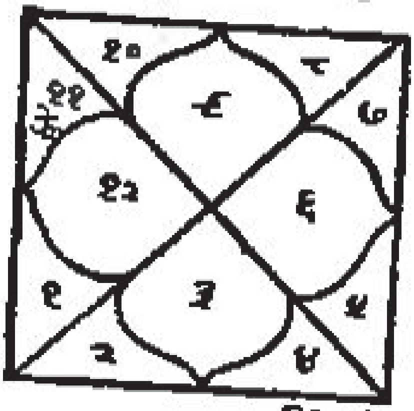

२०८६

तीसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कमी तथा कष्ट का अनुभव होता है।

ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों का आश्रय लेने वाला, साहसी तथा कठिन परिश्रमी होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

धनु लग्न : चतुर्थभाव : केतु

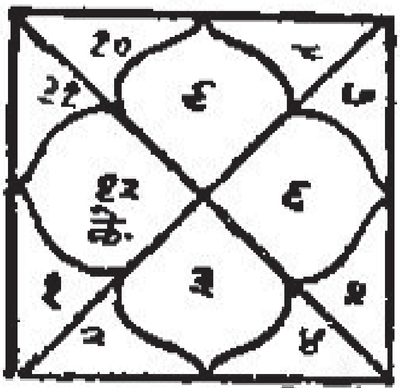

२०८७

चौथे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में बड़ी हानि उठानी पड़ती है तथा मातृभूमि का वियोग भी सहना पड़ता है। भूमि तथा भवन का सुख भी प्राप्त नहीं होता। परन्तु ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी, साहसी, धैर्यवान् तथा सन्तोषी होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

धनु लग्न : पंचमभाव : केतु

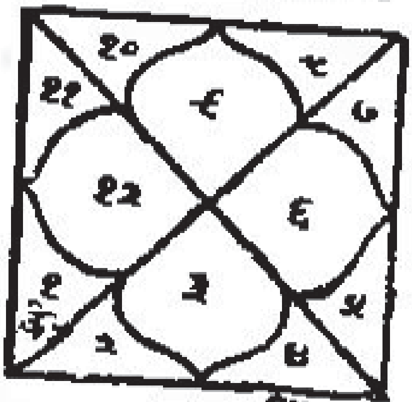

२०८८

पाँचवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष में बड़ी हानि का सामना करना पड़ता है तथा विद्याध्ययन में भी बड़ी कठिनाइयों के बाद अल्प सफलता मिलती है।

ऐसा व्यक्ति घोर परिश्रमी, जिद्दी तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेने वाला होता है। वह सदैव चिन्तित भी बना रहता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

धनु लग्न : षष्ठभाव : केतु

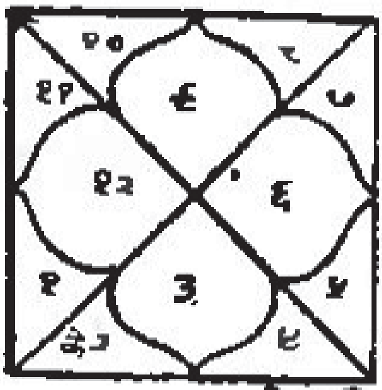

२०८६

छठे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है तथा झगड़े-मुकदमे आदि से भी वह लाभ उठाता है।

महान संकट उपस्थित होने पर भी वह कभी हिम्मत नहीं हारता तथा बहादुरी के साथ मुकाबला करता हुआ उस पर विजय प्राप्त करता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

धनु लग्न : सप्तमभाव : केतु

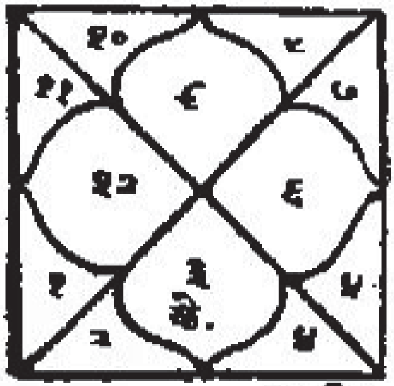

२०८७

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित नीच के 'केतु' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष में घोर हानि उठानी पड़ती है तथा दैनिक आमदनी के क्षेत्र में भी बड़ी कठिनाइयां आती रहती हैं।

वह धैर्य तथा साहस के साथ गृहस्थ जीवन को सुखी बनाने का प्रयत्न करता रहता है, परन्तु सफलता थोड़ी ही मिलती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

धनु लग्न : अष्टमभाव : केतु

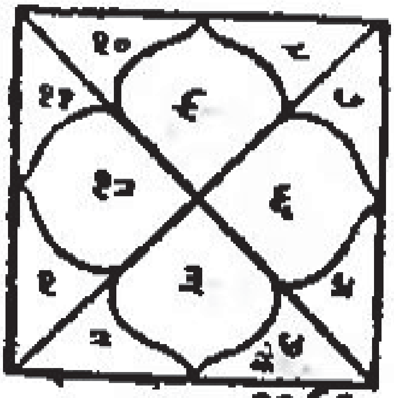

२०८८

आठवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के जीवन पर बड़े-बड़े संकट आते हैं तथा उसे मृत्यु-तुल्य कष्टों का सामना करना पड़ता है। पेट में विकार भी रहता है।

दैनिक जीवन में परेशानियां बनी रहती हैं। पुरातत्त्व की की हानि होती है। घोर परिश्रम करने पर भी सुख नहीं मिल पाता।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

धनु लग्न : नवमभाव : केतु

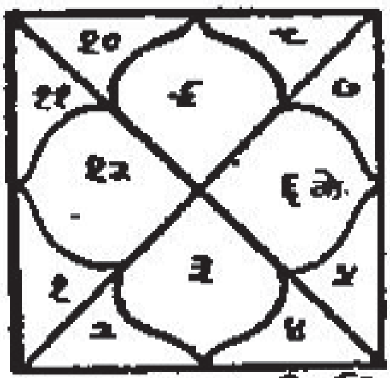

१०६३

नवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'केतु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति मे अत्यधिक बाधाएँ आती हैं। उन्हें दूर करने के लिए वह अनेक गुप्त युक्तियों तथा परिश्रम का सहारा लेता है, परन्तु आंशिक सफलता ही मिल पाती है। धर्म तथा ईश्वर में उसकी आस्था कम होती है। सदैव चिन्ताओं तथा असफलताओं का शिकार बना रहता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

धनु लग्न : दशमभाव : केतु

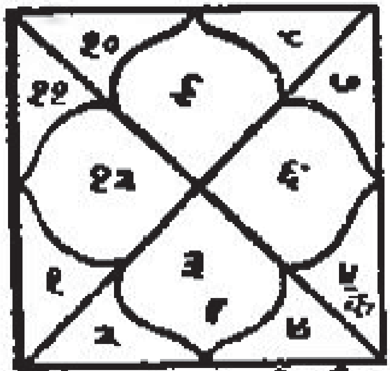

१०६२

दसवें भाव मे मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को कुछ कमियों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य लाभ, सफलता, सुख, यश, सहयोग तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। अत्यधिक परिश्रम तथा युक्ति-बल का आश्रय लेने पर भी विशेष उन्नति नहीं हो पाती।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

धनु लग्न : एकादशभाव : केतु

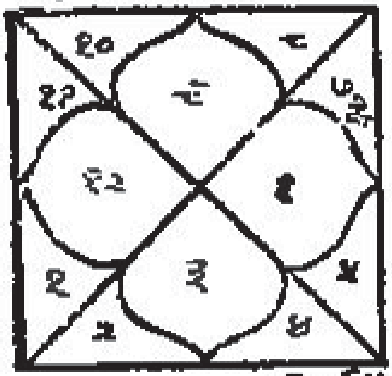

१०६४

ग्यारहवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। कभी-कभी संकटों का शिकार भी बनना पड़ता है, परन्तु उन पर वह अपनी गुप्त युक्तियों तथा कठोर परिश्रम के बल पर विजय प्राप्त कर लेता है। फिर भी पूर्ण सन्तोष नहीं मिल पाता।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

धनु लग्न : द्वादशभाव : केतु

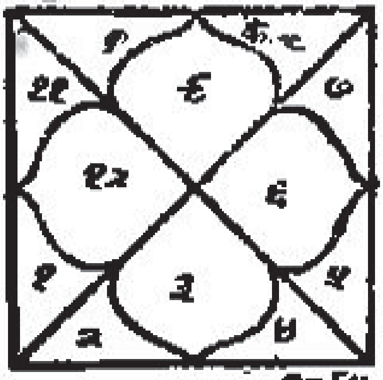

१०६५

बारहवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है जिससे उसे बड़ी परेशानी तथा संकट उठाने पड़ते हैं।

बाहरी स्थानों के सम्बन्ध के भी परेशानियां मिलती हैं। वह गुप्त युक्तियों, परिश्रम, धैर्य तथा हिम्मत के बल पर कठिनाइयों को दूर करने का प्रयत्न करता है, परन्तु अधिक सफल नहीं हो पाता।

'मकर' लग्न

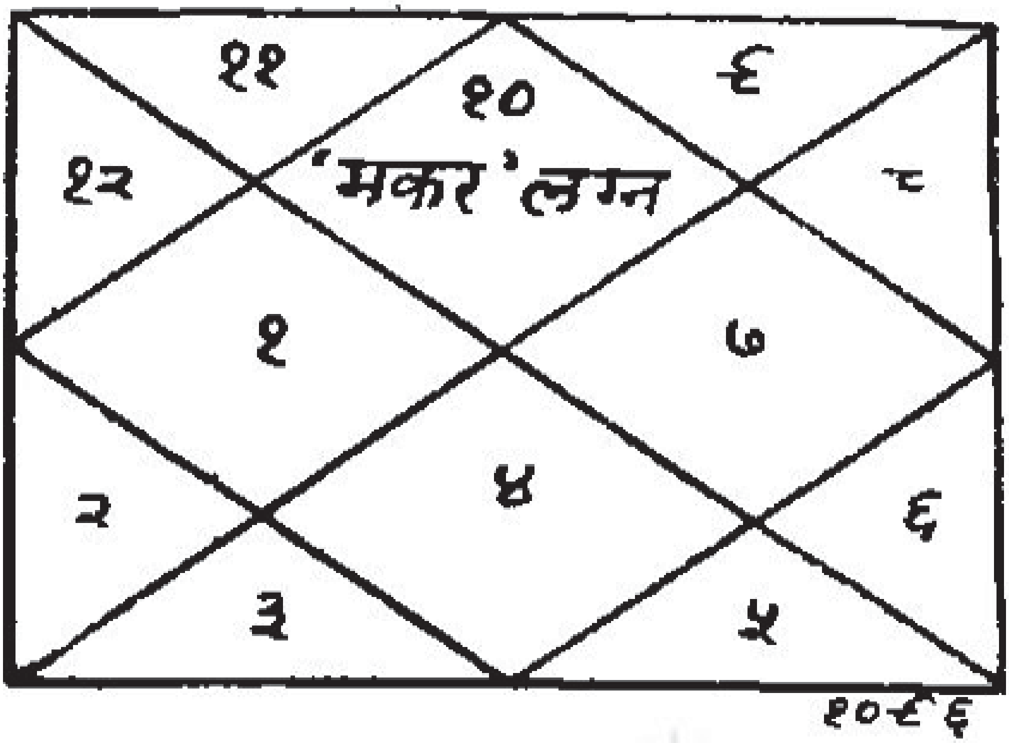

['मकर' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'मकर' लग्न का फलादेश

'मकर' लग्न में जन्म लेने वाले जातक का शरीर लम्बा होता है। वह बड़ी-बड़ी आँखों वाला, उग्र स्वभाव का, निरन्तर पुरुषार्थ करने वाला, लोभी, चतुर, वंचक, ठग, पाखण्डी, आलसी, मनमौजी, तमोगुणी तथा कफ-वायु से पीड़ित रहने वाला होता है।

ऐसा व्यक्ति भीरु, सन्तोषी, खर्चीला, लज्जा-रहित, धर्म के विरुद्ध आचरण करने वाला, अधिक सन्ततिवान्, कवियों तथा स्त्रियों में आसक्त भी होता है।

'मकर' लग्न वाला जातक अपनी प्रारम्भिक अवस्था में सुख भोगता है, मध्यमावस्था में दुःख पाता है तथा ३२ वर्ष की आयु के बाद अन्तिम समय तक सुखी बना रहता है।

ऐसे व्यक्ति की आयु पूर्ण होती है तथा उसका भाग्योदय प्रायः ३२-३३ वर्ष की अवस्था में होता है।

'मकर' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डलियों में संख्या ३३४ से ४४१ के बीच देखना चाहिए।

गोचर कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

'मकर' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१—'मकर' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०९७ से ११०८ के बीच देखना चाहिए।

२—'मकर' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'सूर्य'—

(क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या १०९७
(ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या १०९८
(ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या १०९९
(घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११००
(ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०१
(च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०२
(छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०३
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०४
(झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०५
(ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०६
(ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०७
(ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०८

'मकर' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१—'मकर' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११०९ से ११२० के बीच देखना चाहिए।

२—'मकर' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्र'

का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'चन्द्रमा'—

(क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०९
(ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११०
(ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११११
(घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११२
(ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११३
(च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११४
(छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११५
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११६
(झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११७
(ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११८
(ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित तो हो संख्या १११९
(ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२०

'मकर' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१—'मंगल' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मङ्गल' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११२१ से ११३२ के बीच देखना चाहिए।

२—'मंगल' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मङ्गल' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मङ्गल'—

(क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२१
(ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२२
(ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो थो संख्या ११२३
(घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२४
(ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२५
(च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२६
(छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२७
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२८
(झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२९
(ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११३०
(ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११३१
(ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११३२

'कर्क' लग्न में 'बुध' का फलादेश

१—'मकर' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११३३ से ११४४ के बीच देखना चाहिए।

२—'मकर' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में बुध—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ११३३
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ११३४
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ११३५
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ११३६
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ११३७
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ११३८
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ११३९
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ११४०
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ११४१
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ११४२
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ११४३
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ११४४

'मकर' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१—'मकर' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११४५ से ११५६ के बीच देखना चाहिए।

२—'कर्क' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थितु 'गुरु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'गुरु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ११४५
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ११४६
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ११४७
(ज) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ११४८
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ११४९
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ११५०

(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ११५१
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ११५२
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ११५३
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ११५४
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ११५५
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ११५६

'मकर' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१—'मकर' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११५७ से ११६८ के बीच देखना चाहिए।

२—'मकर' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न वालों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

(क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११५७
(ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११५८
(ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११५९
(घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६०
(ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६१
(च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६२
(छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६३
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६४
(झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६५
(ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६६
(ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६७
(ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६८

'मकर' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१—'मकर' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न वालों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११६९ से ११८० के बीच देखना चाहिए।

२—'मकर' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'शनि'—

(क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६९

(ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७०
(ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७१
(घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७२
(ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७३
(च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७४
(छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७५
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७६
(झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो को संख्या ११७७
(ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७८
(ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७९
(ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८०

'मकर' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१—'मकर' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११८१ से ११८२ के बीच देखना चाहिए।

२—'मकर' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

(क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८१
(ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८२
(ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८३
(घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८४
(ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८५
(च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८६
(छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८७
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८८
(झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८९
(ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११९०
(ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११९१
(ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११९२

'मकर' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१—'मकर' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११९३ से १२०४ के बीच देखना चाहिए।

२—'मकर' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'केतु'—

(क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११९३
(ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११९४
(ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११९५
(घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११९६
(ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११९७
(च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११९८
(छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११९९
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या १२००
(झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या १२०१
(ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या १२०२
(ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या १२०३
(ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या १२०४

●

'मकर' लग्न में 'सूर्य'

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मकरलग्न : प्रथमभाव : सूर्य

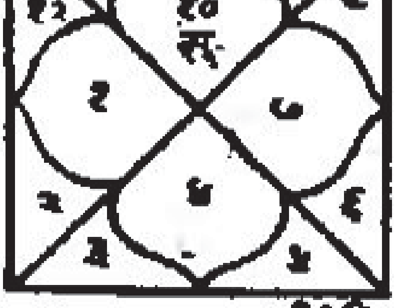

१२०५

पहले भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है तथा कभी-कभी विशेष शारीरिक कष्टों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री के पक्ष में सामान्य कठिनाई रहती है तथा दैनिक व्यवसाय में भी कुछ परेशानियाँ आती रहती हैं।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मकर लग्न : द्वितीयभाव : सूर्य

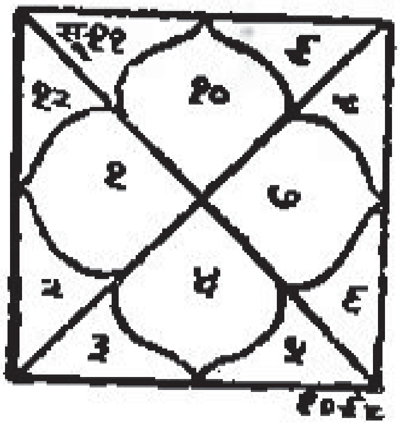

दूसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक धन का संचय नहीं कर पाता। तथा कुटम्ब के सुख में भी संकट आते रहते हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अमीरी ढंग का जीवन बिताता तथा शान-शौकत में खर्च करता रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मकर लग्न : तृतीयभाव : सूर्य

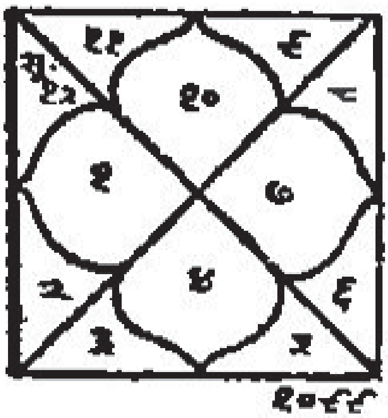

तीसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्योन्नति में कुछ रुकावटें आती हैं तथा धर्म के पक्ष में भी कमी बनी रहती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मकर लग्न : चतुर्थभाव : सूर्य

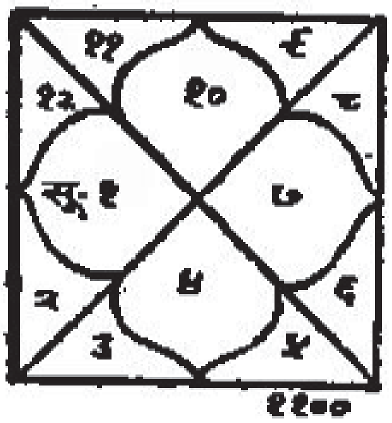

चौथे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित उच्च के 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। आयु तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। दैनिक जीवन अमीरी ढंग का रहता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता के सुख में कमी आती है तथा राज्य एवं व्यवसाय की उन्नति में रुकावटें आती हैं।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मकरलग्न : पंचमभाव : सूर्य

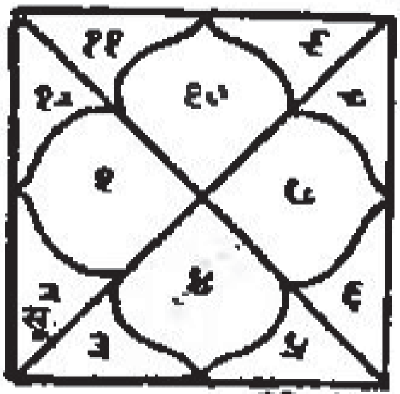

१२०१

पाँचवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्याध्ययन में कठिनाई रहती है। बुद्धि भी कम-जोर रहती है। ऐसा व्यक्ति चिन्तातुर तथा स्वभाव का क्रोधी होता है। उसे आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से लाभ-प्राप्ति के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है तभी सफलता मिल पाती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मकरलग्न : षष्ठभाव : सूर्य

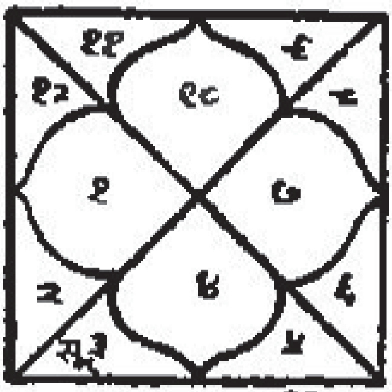

१२०२

छठे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर हमेशा विजय प्राप्त करता है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में असन्तोष भी रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मकरलग्न : सप्तमभाव : सूर्य

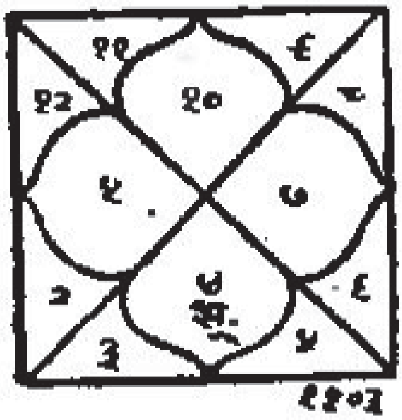

१२०३

सातवें भाव में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा कभी-कभी बहुत हानि भी उठानी पड़ती है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है तथा कभी-कभी शिकार भी बनना पड़ता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मकरलग्न : अष्टमभाव : सूर्य

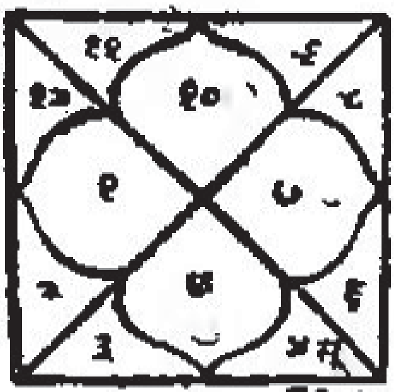

११०७

आठवें भाव में स्वराशि में स्थित 'सूर्य के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व की विशेष शक्ति प्राप्त होता है। वह बड़ा स्वाभिमानी, तेजस्वी, निडर तथा बहादुर होता है। उसका दैनिक जीवन भी बड़ा प्रभाव-पूर्ण रहता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन संचय में परेशानी रहती है तथा कौटुम्बिक सुख में बाधाएं आती हैं।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मकरलग्न : नवमभाव : सूर्य

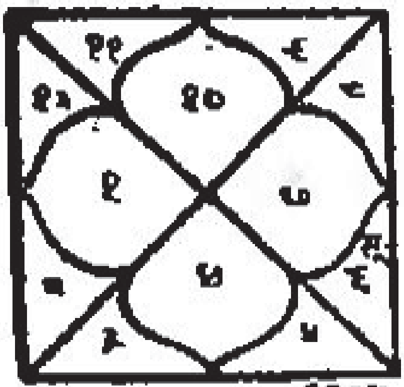

११०८

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति कुछ रुकावटों के साथ होती है। धर्म-पालन में भी थोड़ी त्रुटि रहती है तथा यश में भी कमी आती है। आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। जिससे जातक रईसी ढंग का जीवन व्यतीत करता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम की समुचित वृद्धि नहीं हो पाती।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मकरलग्न : दशमभाव : सूर्य

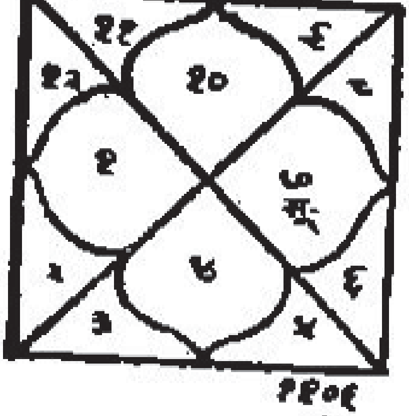

११०९

दसवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की तुला राशि पर स्थित नीच के 'सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता पक्ष से घोर कष्ट उठाना पड़ता है। राज्य पक्ष से प्रतिष्ठा में कमी तथा व्यवसाय-पक्ष में बाधाओं का का सामना करना पड़ता है। आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति को भी कुछ हानि होती है।

सातवीं मित्र तथा उच्च-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सामान्य सुख प्राप्त होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मकरलग्न : एकादशभाव : सूर्य

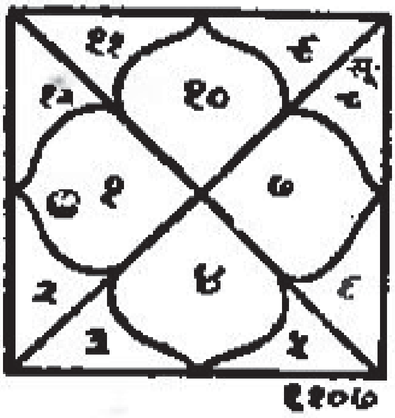

ग्यारहवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है, परन्तु कभी-कभी कुछ कठिनाइयाँ भी आती हैं। आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति का विशेष लाभ होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से कष्ट रहता है तथा विद्याध्ययन के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। ऐसा व्यक्ति उग्र स्वभाव का होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मकरलग्न : द्वादशभाव : सूर्य

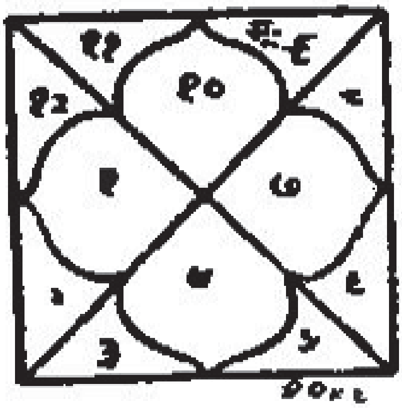

बारहवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को खर्च तथा बाहरी सम्बन्धों में कठिनाई उपस्थित होती है। पेट में विकार भी रहता है। आयु तथा पुरातत्त्व की भी कुछ हानि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है तथा झगड़े-टंटे स्वयं ही दूर होते रहते हैं।

'मकर' लग्न में 'चन्द्रमा'

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मकरलग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

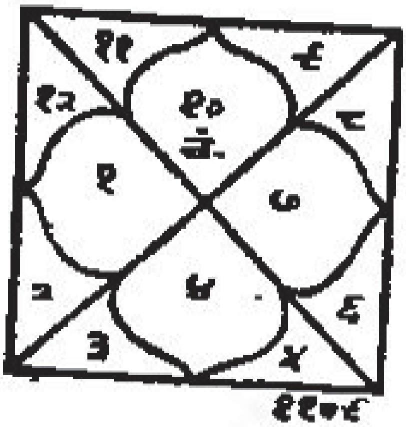

पहले भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में वृद्धि होती है। वह विनोदी, मानी, यशस्वी तथा कार्य-कुशल भी होता है

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री सुन्दर, सुयोग्य तथा स्वाभिमानिनी मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी पूर्ण सफलता मिलती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मकर लग्न : द्वितीयभाव : चंद्र

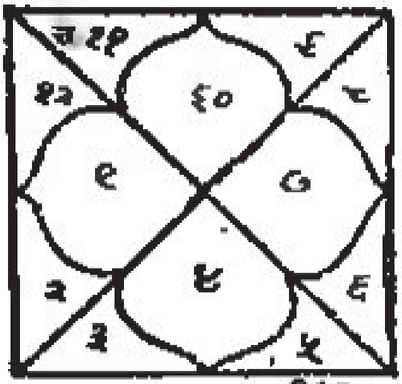

११२८

दूसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव के जातक के धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है, परन्तु स्त्री के कारण कुछ परेशानी का अनुभव भी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है। ऐसे व्यक्ति का रहन-सहन अमीरी ढंग का होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मकर लग्न : तृतीयभाव : चंद्र

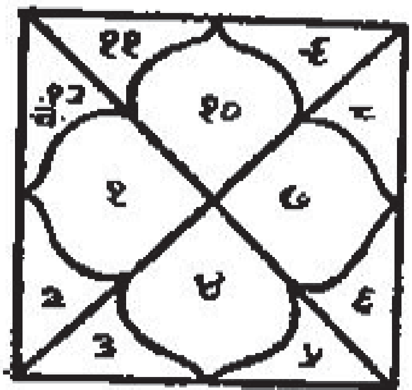

११११

तीसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का श्रेष्ठ सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। स्त्री, व्यवसाय तथा कुटुम्ब का सुख भी अच्छा रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, यशस्वी, सुखी तथा सम्पन्न होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मकर लग्न : चतुर्थभाव : चंद्र

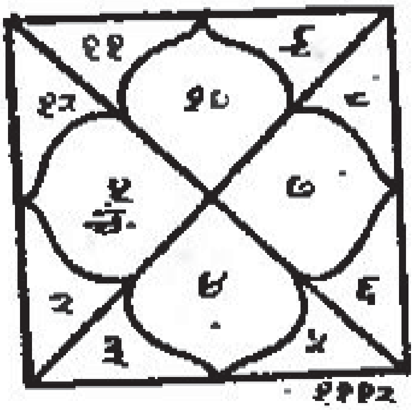

१११२

चौथे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। घरेलू वातावरण आनन्दमय रहता है। स्त्री सुन्दर मिलती है, व्यवसाय में भी सफलता मिलती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा स्थायी व्यवसाय के क्षेत्र में यश, प्रतिष्ठा, सहयोग, धन तथा अन्य लाभ प्राप्त होते रहते हैं।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मकर लग्न: पंचमभाव :चंद्र

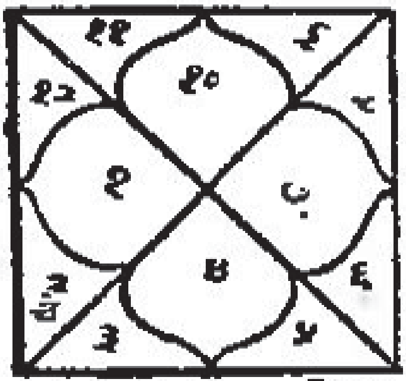

१११३

पाँचवें भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित उच्च के 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष से भी सुख मिलता है।

सातवीं नीचदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के मार्ग में कुछ रुकावटें आती हैं। ऐसा व्यक्ति हँसमुख तथा हाजिरजवाब भी होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मकर लग्न : षष्ठभाव : चंद्र

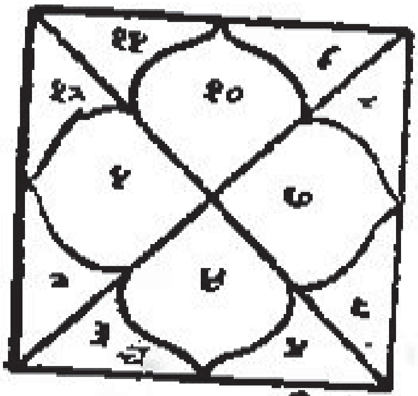

१११४

छठे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में मित्रता से काम निकालता है। स्त्री से विरोध तथा व्यवसाय में कठिनाई का सामना भी करना पड़ता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी मिलता रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मकर लग्न : सप्तमभाव : चंद्र

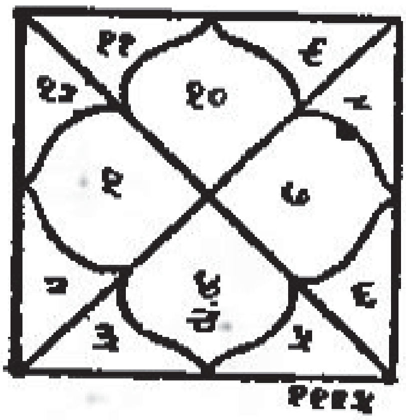

१११५

सातवें भाव में स्वराशि में स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री तथा उसके द्वारा यथेष्ट सुख की प्राप्ति होती है। व्यवसाय में भी पूर्ण सफलता मिलती है। घरेलू जीवन आनन्दमय बना रहता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक प्रभाव में कुछ असंतोषपूर्ण वृद्धि होती है। यश तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी असंतोष बना रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मकर लग्न : अष्टमभाव : चंद्र

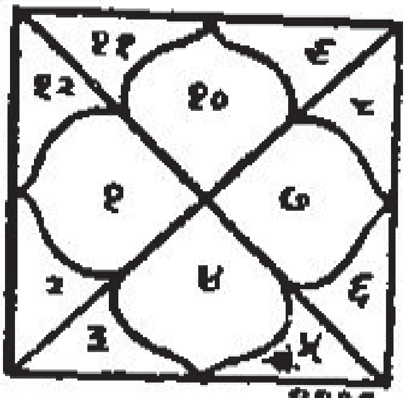

११२६

आठवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का यथेष्ट लाभ होता है, परन्तु स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। गृहस्थी का सुख भी कम रहता है। मन में अशान्ति रहती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख कुछ कठिनाइयों के साथ प्राप्त होता है। वैसे दैनिक जीवन ठाठ-बाट का रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मकर लग्न : नवमभाव : चंद्र

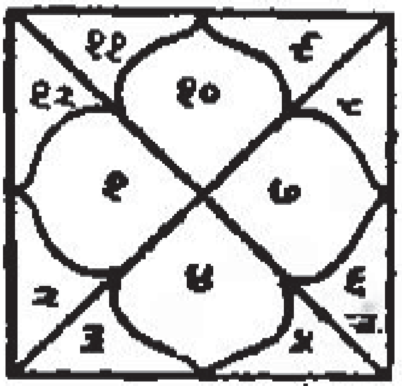

११२७

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के भाग्य की विशेष उन्नति होती है तथा धर्म में भी अत्यधिक रुचि बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति धनी, यशस्वी, न्यायी तथा धर्मात्मा होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों से सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मकर लग्न : दशमभाव : चंद्र

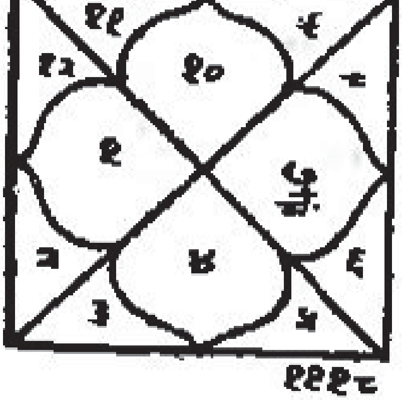

११२८

दसवें भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा सहयोग, राज्य से प्रतिष्ठा तथा व्यवसाय से लाभ की प्राप्ति होती है। मनोबल बढ़ा रहता है। स्त्री सुन्दर तथा स्वाभिमानिनी मिलती है। घरेलू जीवन उल्लासपूर्ण रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख भी यथेष्ट मिलता है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी तथा भाग्यशाली होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मकर लग्न : एकादशभाव : चंद्र

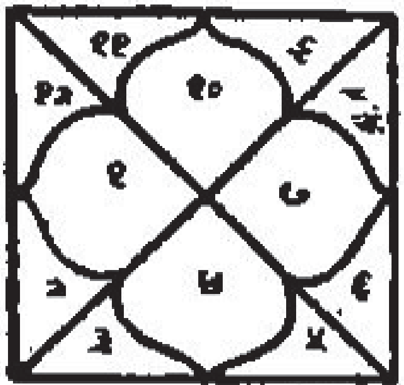

१११९

ग्यारहवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित नीच के 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की आमदनी में कुछ कमी रहती है। स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी अल्प सुख मिलता है। गृहस्थी के कारण चिंताओं का शिकार बनना पड़ता है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि तथा तथा सन्तान का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मकर लग्न : द्वादशभाव : चंद्र

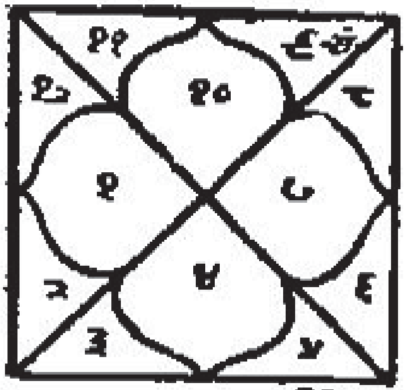

११२०

बारहवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता रहता है। स्त्री-सुख में कमी रहती है तथा दैनिक व्यवसाय में भी कठिनाइयाँ आती रहती हैं। इसी से मन चिंतित तथा अशान्त बना रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष एवं झगड़े के मामलों में जातक विनम्रता से काम निकालकर अपना प्रभाव भी स्थापित करता है।

'मकर' लग्न में 'मंगल'

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मकर लग्न : प्रथमभाव : मंगल

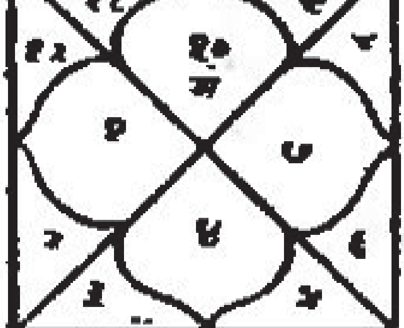

११२१

पहले भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित उच्च के 'मंगल' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं शक्ति में वृद्धि होती है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का अच्छा सुख प्राप्त होता है। रहन-सहन ठाठ-बाट का होता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्व की शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी तथा चतुर होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मकर लग्न : द्वितीयभाव : मंगल

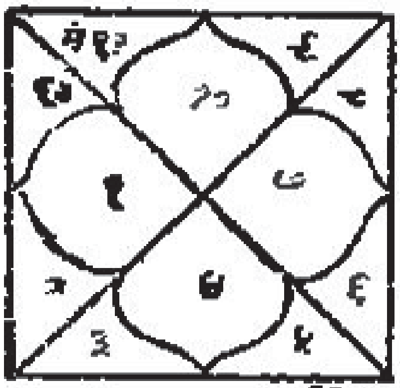

११२२

दूसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को धन-कुटुम्ब का पर्याप्त सुख सामान्य असंतोष के साथ प्राप्त होता है, परन्तु माता के सुख में कमी रहती है। भूमि एवं भवन का लाभ होता है। चौथी शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष की उन्नति होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्व की शक्ति बढ़ती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति अपने आर्थिक लाभ का अधिक ध्यान रखता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मकर लग्न : तृतीयभाव : मंगल

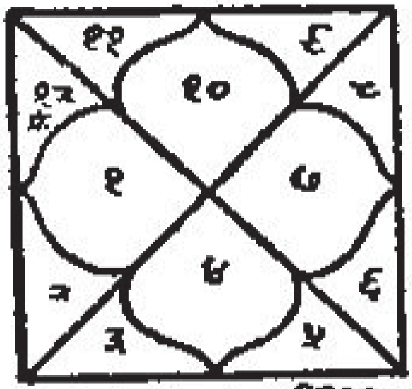

११२३

तीसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। माता, भूमि, भवन का सुख प्राप्त होता है। चौथी मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। ऐसा व्यक्ति बहादुर तथा हिम्मती भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। आठवीं सामान्य शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से कुछ कमियों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मकर लग्न : चतुर्थभाव : मंगल

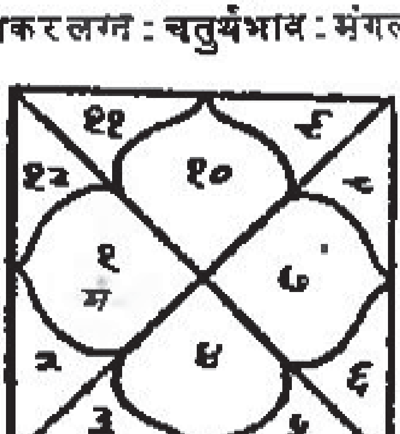

११२४

चौथे भाव में स्वराशि-स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन का विशेष सुख प्राप्त होता है। चौथी नीच-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री के सुख में कमी रहती है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयां आती हैं।

सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में एकादशभाव को देखने से आमदनी खूब रहती है तथा लाभ के साधन सरलता से मिलते रहते हैं।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मकरलग्न : पंचमभाव : मंगल

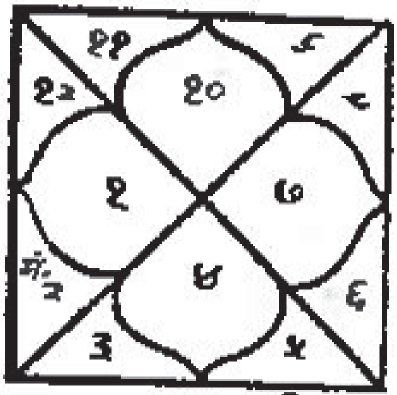

११२५

पाँचवें भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा सन्तान-सुख का लाभ होना है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है। चौथी मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ प्राप्त होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मकरलग्न : षष्ठभाव : मंगल

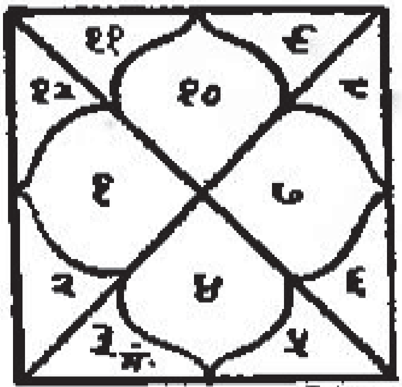

११२६

छठे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर विशेष प्रभाव रखता है तथा झगड़ों से लाभ उठाता है। माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है तथा आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ आती रहती हैं। चौथी मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि के द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। आठवीं उच्च दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य स्वास्थ्य, एवं प्रभाव में वृद्धि होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मकरलग्न : सप्तमभाव : मंगल

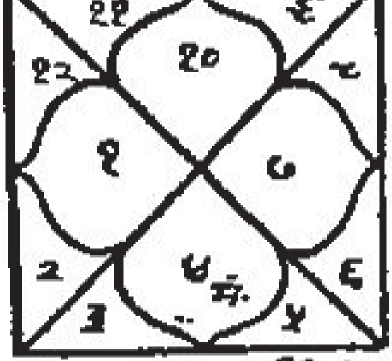

११२७

सातवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित नीच के 'मंगल' के प्रभाव से जातक की स्त्री-पक्ष तथा गृहस्थी के सुख में कमी रहती है। व्यवसाय माता, भूमि तथा भवन का सुख भी कमजोर रहता है। चौथी शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ होता है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव एवं गौरव की वृद्धि होती है। आठवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से धन-संचय में कठिनाइयाँ आती हैं तथा कुटुम्ब का सामान्य सुख प्राप्त होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मकरलग्न : अष्टमभाव : मंगल

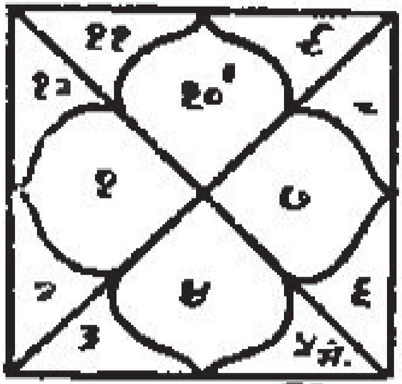

७१२८

आठवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्व की यथेष्ट शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु माता, भूमि एवं भवन का सुख कुछ दुर्बल रहता है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में एकादशभाव को देखने से आमदनी बहुत अच्छी रहती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से कुछ कमियों के साथ धन-संचय में सफलता मिलती है तथा कुटुम्ब का सुख सामान्य रहता है। आठवीं मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मकरलग्न : नवमभाव : मंगल

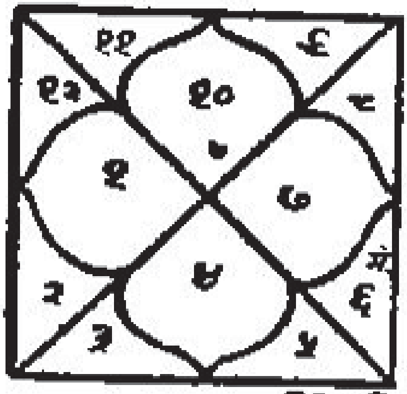

११२९

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। वह धनी, यशस्वी, धर्मात्मा तथा न्यायप्रिय होता है। चौथी मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीतभाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति धनी, यशस्वी, सुखी, पराक्रमी तथा विनोदी होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मकरलग्न : दशमभाव : मंगल

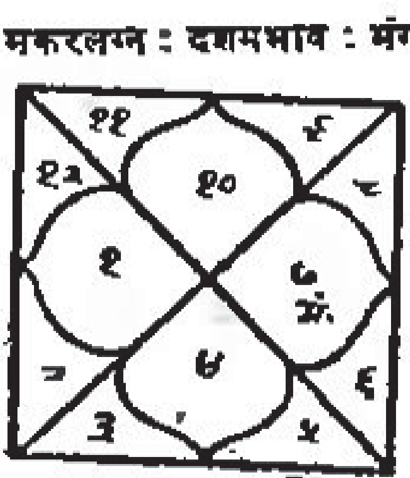

११३०

दसवें भाव में सामान्य शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। चौथी शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने के शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने के माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। आठवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या एवं बुद्धि की वृद्धि होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मकरलग्न : एकादशभाव : मंगल

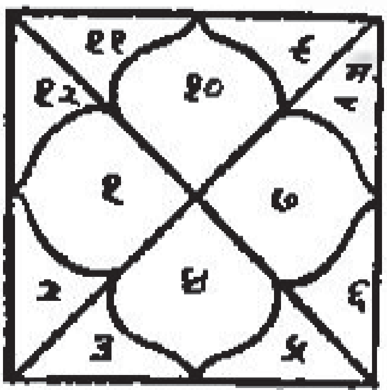

११३१

ग्यारहवें भाव में स्वराशि-स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती होती है। माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख भी प्राप्त होता है। चौथी शत्रु-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन और कुटुम्ब का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है।

सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि तथा सन्तान का श्रेष्ठ सुख मिलता है। आठवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर अत्यधिक प्रभाव रहता है तथा झगड़ों से लाभ होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मकरलग्न : द्वादशभाव : मंगल

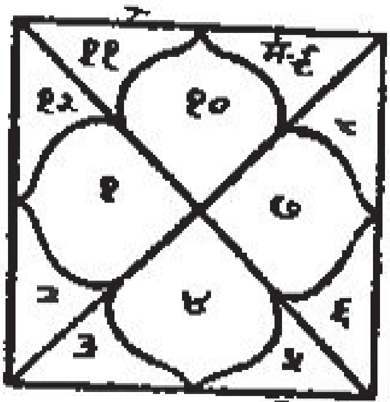

११३२

बारहवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। चौथी मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। आठवीं नीच-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री के सुख में कुछ कमी आती है तथा व्यवसाय-पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ती है।

'मकर' लग्न में 'बुध'

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न : प्रथमभाव : बुध

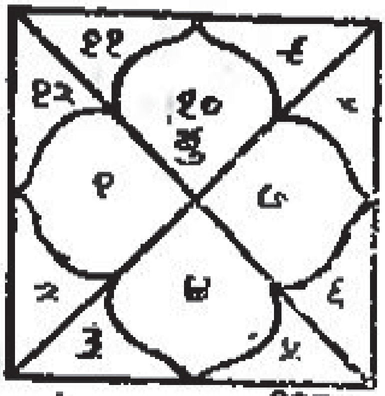

११३३

पहले भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के शारीरिक प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। यह शत्रु-पक्ष पर स्वविवेक से प्रभाव स्थापित करता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता मिलती है, परन्तु व्यवसाय में कभी-कभी कठिनाइयाँ भी आती हैं।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न: द्वितीयभाव : बुध

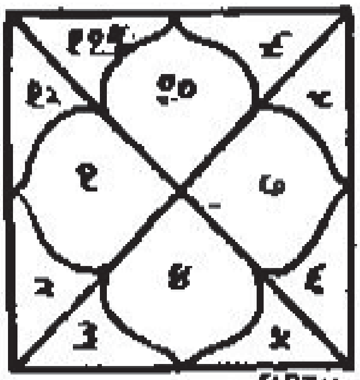

११३४

दूसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के धन तथा कौटुम्बिक सुख की वृद्धि होती है। मान, प्रतिष्ठा तथा धर्म में रुचि भी रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। परन्तु कभी-कभी भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न : तृतीयभाव : बुध

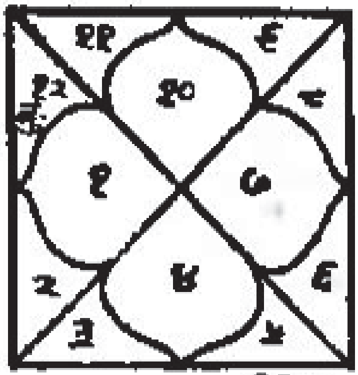

११३५

तीसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी का अनुभव होता है। भाग्योन्नति तथा धर्म-पालन में भी कठिनाइयाँ आती हैं। शत्रु पक्ष से भी कुछ परेशानी होती है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखने से स्वविवेक-बुद्धि द्वारा भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती रहती है।

मकर' लग्न की कुण्डली से 'चतुर्थभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न : चतुर्थभाव : बुध

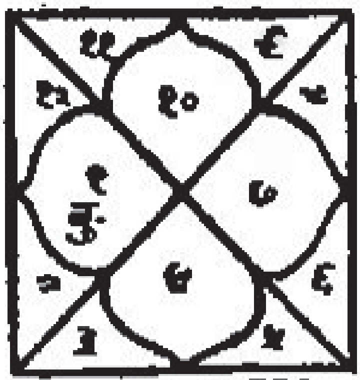

११३६

चौथे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है तथा भाग्य की भी उन्नति होती है। घरेलू सुख-शान्ति में कुछ विघ्न आते हैं।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा शत्रु-पक्ष में विजय प्राप्त होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न : पंचमभाव : बुध

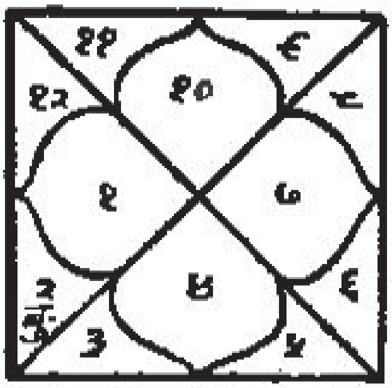

११२३७

पाँचवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। वह स्वपरिश्रम से आमदनी तथा धर्म की उन्नति भी करता है। शत्रु-पक्ष में भी सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से भाग्य की शक्ति में यथेष्ट वृद्धि होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न : षष्ठभाव : बुध

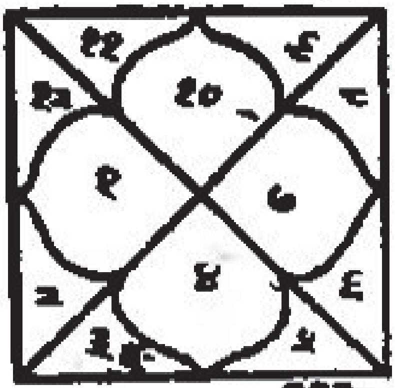

११२३८

छठे भाव में स्वराशि में स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है। भाग्य तथा धर्म की उन्नति में कुछ कठिनाइयाँ तो आती हैं, परन्तु बाद में वे दूर भी हो जाती हैं।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ तथा सुख भी मिलता रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न : सप्तमभाव : बुध

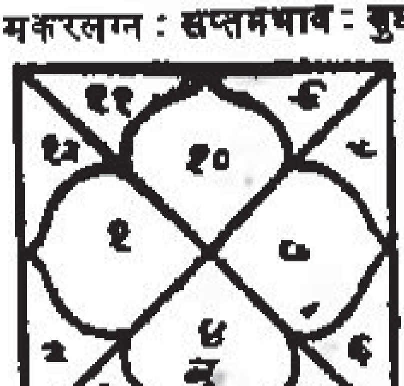

११२३९

सातवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक स्वविवेक द्वारा भाग्य की अत्यधिक उन्नति करता है तथा व्यवसाय में सफलता प्राप्त करता है। स्त्री-पक्ष से अशान्ति मिलती है। व्यवसाय-पक्ष में कुछ कठिनाइयोंसाथ विशेष लाभ भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक प्रभाव तथा यश की वृद्धि होती है। कभी-कभी बीमारियाँ तो आ घेरती हैं।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न : अष्टमभाव : बुध

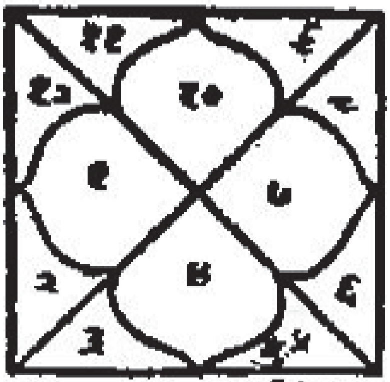

११९५७

आठवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। भाग्योन्नति में बहुत बाधाएँ आती हैं तथा यश में भी कमी रहती है। शत्रु-पक्ष से भी अशान्ति मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ धन तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है तथापि दैनिक जीवन प्रभावपूर्ण बना रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न : नवमभाव : बुध

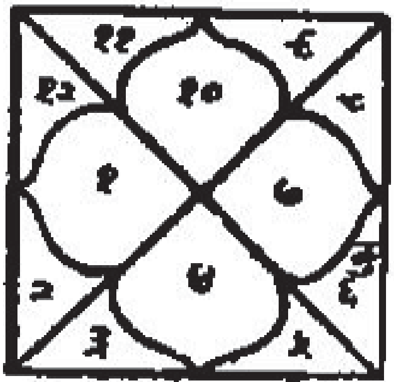

११९५९

नवें भाव में स्वराशि स्थित उच्च के 'बुध' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती है। शत्रु-पक्ष पर सफलता प्राप्त होती है तथा झगड़ों से लाभ होता है।

सातवीं नीचदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण भाइयों से विरोध रहता है तथा भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। पराक्रम भी शिथिल बना रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न : दशमभाव : बुध

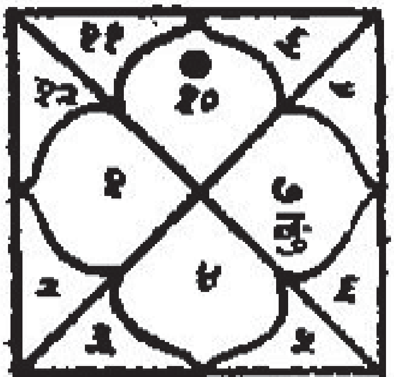

११९६२

दसवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ, प्रतिष्ठा, सहयोग तथा यश की प्राप्ति होती है। शत्रु-पक्ष पर विजय तथा धनोपार्जन में सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है, परन्तु उन्नति के मार्ग में रुकावटें भी आती रहती हैं।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न : एकादशभाव : बुध

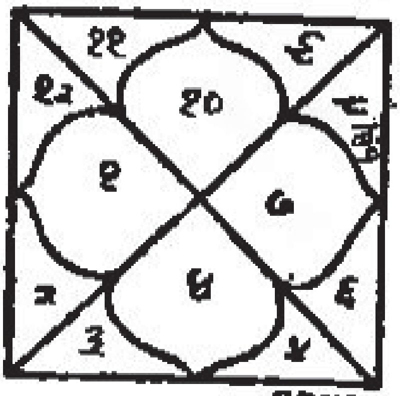

१२७३

ग्यारहवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है तथा शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है। विवेक तथा परिश्रम द्वारा भाग्य की विशेष उन्नति होती है। स्वार्थयुक्त धर्म का पालन भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान-पक्ष में कुछ परेशानियों के साथ सफलता मिलती है, परन्तु विद्या-बुद्धि की विशेष उन्नति होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न : द्वादशभाव : बुध

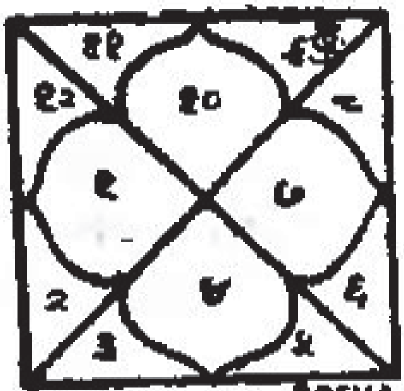

१२७४

बारहवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु उसकी पूर्ति बिना किसी कठिनाई के होती रहती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं तथा यश की कमी रहती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष से कुछ कठिनाई होती है, परन्तु भाग्य-बल से वह उन पर विजय भी पा लेता है।

'मकर' लग्न में 'गुरु'

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मकरलग्न : प्रथमभाव : बुध

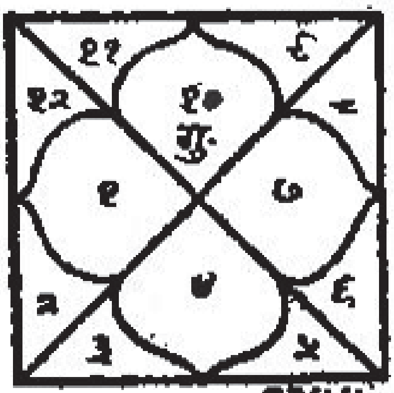

१२७५

पहले भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित नीच के 'बुध' के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल रहता है। भाई-बहिन के सुख में कमी आती है एवं पराक्रम भी अल्प रहता है। खर्च चलाने में कठिनाई होती है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी असंतोषजनक रहता है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है तथा सन्तान-पक्ष से सुख-दुःख दोनों ही मिलते हैं।

सातवीं उच्च-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। नवीं मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति में न्यूनाधिकता होती रहती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मकरलग्न : द्वितीयभाव : गुरु

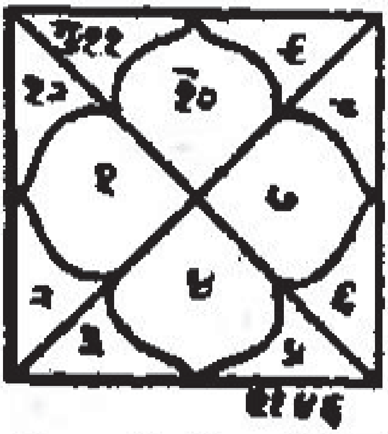

दूसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक के धन-संग्रह में कमी आती है तथा कुटुम्ब से भी परेशानी रहती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में बुद्धिमानी से काम निकलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का कुछ लाभ मिलता है। नवीं शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलताएँ मिलती हैं।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मकरलग्न : तृतीयभाव : गुरु

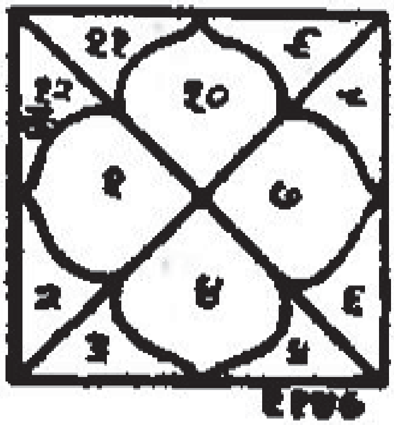

तीसरे भाव में स्वराशि-स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है, परन्तु पुरुषार्थ में कमी आती है। खर्च ठीक से चलता है। बाहरी स्थानों से लाभ होता है। पाँचवीं उच्च तथा मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से सुन्दर स्त्री मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय में सफलता प्राप्त होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में उतार-चढ़ाव आते हैं।

नवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी श्रेष्ठ रहती है। ऐसा व्यक्ति सुखी जीवन बिताता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मकरलग्न : चतुर्थभाव : गुरु

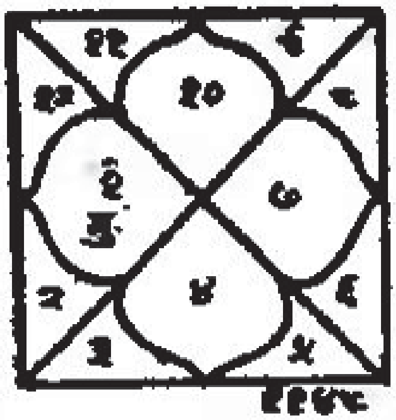

चौथे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन में सुख में तथा भाई-बहिन के सुख में भी कुछ कमी रहती है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है।

नवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से घर-बैठे ही लाभ प्राप्त होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मकरलग्न : पंचमभाव : गुरु

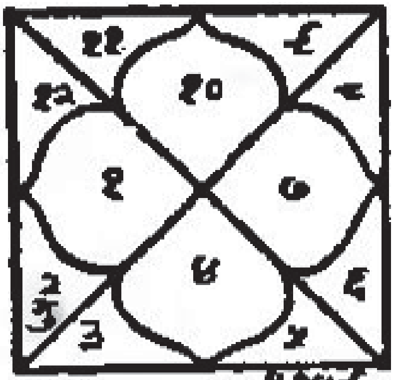

११४८

पाँचवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से न्यूनाधिक लाभ होता है तथा विद्या-बुद्धि के पक्ष में भी कुछ कमी रहती है। बुद्धि-बल से खर्च चलता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। भाई-बहिनों से सामान्य सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है।

पाँचवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य एवं धर्म की सामान्य वृद्धि होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है। नवीं नीच-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मकरलग्न : षष्ठभाव : गुरु

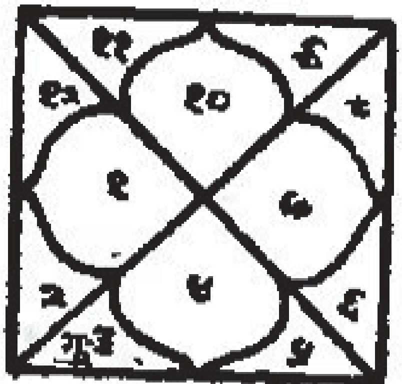

११५०

छठे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से खर्च की शक्ति से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। भाई-बहिनों से सामान्य विरोध रहता है तथा पराक्रम में कमी आती है।

पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ रहती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

नवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख की वृद्धि के लिए अत्यधिक परिश्रम करने पर भी कष्ट ही मिलता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मकरलग्न : सप्तमभाव : बुध

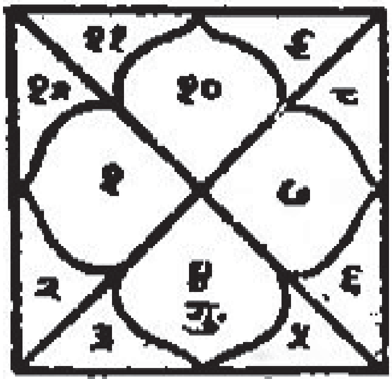

११५१

सातवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित उच्च के 'गुरु' के प्रभाव से जातक को सुन्दर पत्नी मिलती है तथा स्त्री और व्यवसाय से सुख प्राप्त होता है। बाहरी सम्बन्धों से लाभ मिलता है तथा खर्च अधिक रहता है।

पाँचवीं मित्र-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है। सातवीं नीच तथा शत्रु-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी आती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मकरलग्न : अष्टमभाव : गुरु

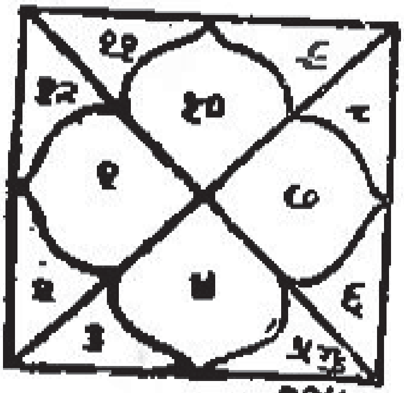

११५७

आठवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'गुरु' से प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व की कुछ हानि होती है। पाँचवी दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ रहता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख में कुछ कमी रहती है। नवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न : नवमभाव : बुध

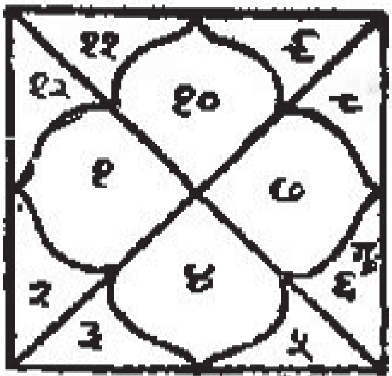

११५८

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'बुध' में प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म के पक्ष में कमजोरी रहती है। बाहरी सम्बन्धों से कुछ लाभ होता है जिससे खर्च चलता रहता है। पाँचवीं नीच-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है। धन भी अशान्त रहता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने से, भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में सामान्य वृद्धि होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में स्व-विवेक-बुद्धि से सफलता मिलती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न : दशमभाव : गुरु

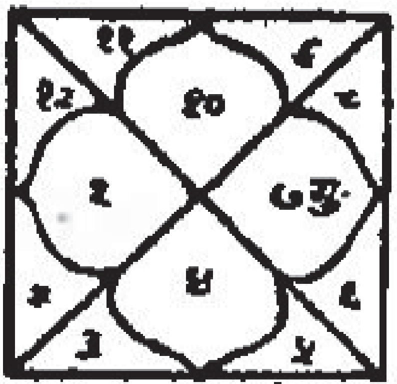

११५९

दसवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कमी रहती है। भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है, जिसके कारण खर्च अच्छी तरह चलता है। बाहरी स्थानों से लाभ होता रहता है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख में कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता के सुख में कमी रहती है, परन्तु भूमि तथा भवन का सुख खर्च के बल पर मिलता है। नवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर बुद्धिमानी से प्रभाव स्थापित होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मकरलग्न : एकादशभाव : बुध

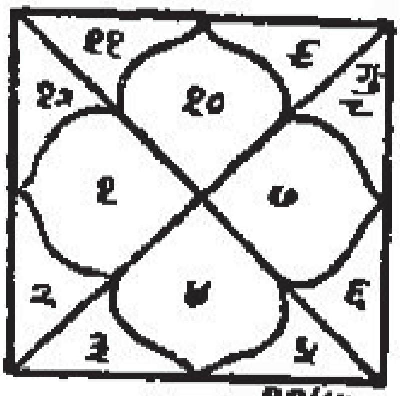

११४५

ग्यारहवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है। बाहरी सम्बन्धों से भी लाभ होता है, अतः खर्च आराम से चलता है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान-पक्ष में असन्तोष रहता है, परन्तु विद्या-बुद्धि की वृद्धि होती है। नवीं उच्च-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री का सुख मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मकरलग्न : द्वादशभाव : बुध

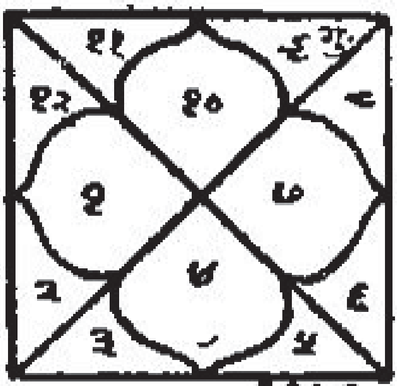

११४६

बारहवें भाव में स्वराशि-स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से लाभ मिलता रहता है। भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में कमी रहती है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सामान्य सुख मिलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर युक्तिपूर्वक प्रभाव स्थापित होता है। नवीं मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ कुछ कमी के साथ होता है। परन्तु ऐसा व्यक्ति शानदार खर्च करता तथा समाज में प्रभावशाली बना रहता है।

'मकर' लग्न में 'शुक्र'

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकरलग्न : प्रथमभाव : शुक्र

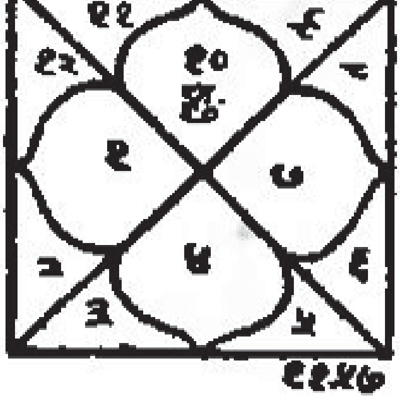

११४७

पहले भाव में मित्र शनि की राशि-पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्रों में भी सफलता मिलती है। समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। सन्तान से सुख मिलता है तथा विद्या-बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से पत्नी सुन्दर तथा योग्य मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी लाभ होता रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकरलग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

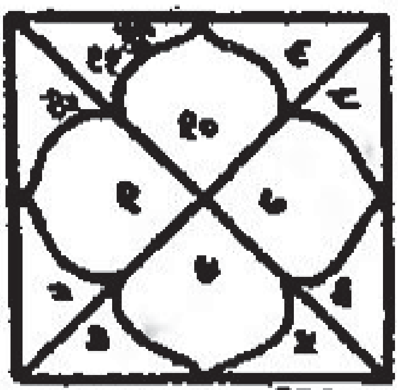

६५८

दूसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का पर्याप्त सुख मिलता है। पिता, व्यवसाय तथा राज्य के क्षेत्रों से भी लाभ होता है, परन्तु सन्तान-पक्ष में कुछ कठिनाई रहती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व में कुछ कमी आती है।

ऐसा व्यक्ति धनी और यशस्वी होता है परन्तु चिन्तित रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकरलग्न : तृतीयभाव : शुक्र

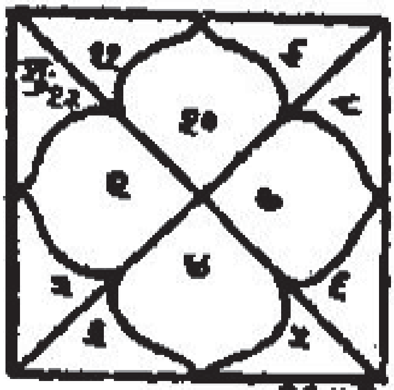

६५९

तीसरे भाव में सामान्य मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित उच्च के 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। विद्या एवं संतान का लाभ होता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं नीच-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्योन्नति तथा धर्म-पालन में कुछ कमी रहती है तथा यश भी कम मिल पाता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली से 'चतुर्थभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकरलग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

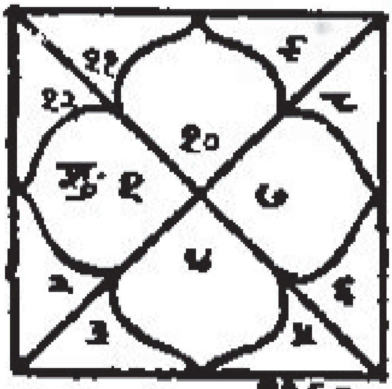

६६०

चौथे भाव में सामान्य मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। बुद्धि योग से आमदनी भी अच्छी रहती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में दशम भाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, सफलता, यश, लाभ तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

ऐसा व्यक्ति नीतिज्ञ, शीलवान, विचारशील तथा सुख-शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकरलग्न : पंचमभाव : शुक्र

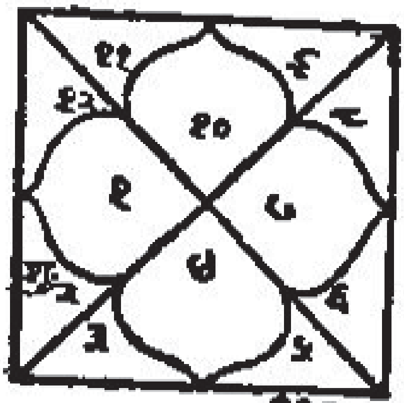

११९१

पाँचवें भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की सन्तान तथा विद्या-बुद्धि का यथेष्ट लाभ होता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्रों में भी सफलताएँ मिलती हैं। ऐसा व्यक्ति प्रायः हुकूमत-पसन्द तथा कायदे-कानून माता होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने से जातक की आमदनी यथेष्ट रहती है और वह निरन्तर उन्नति करता चला जाता।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकरलग्न : षष्ठभाव : शुक्र

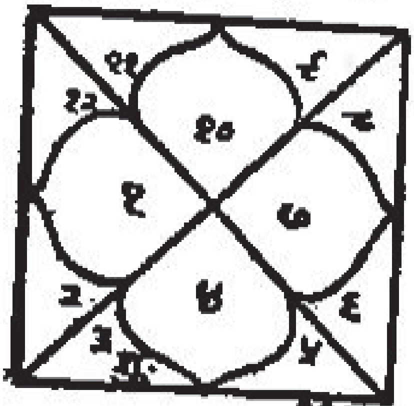

११९२

छठे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रखता है। पिता से कुछ मतभेद के साथ शक्ति प्राप्त होती है तथा राज्य से सम्मान मिलता है किंतु सन्तान तथा विद्या-पक्ष दुर्बल रहता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से लाभ मिलता रहता है। ऐसा व्यक्ति दिमागी रूप से भी चिन्तित बना रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकरलग्न : सप्तमभाव : शुक्र

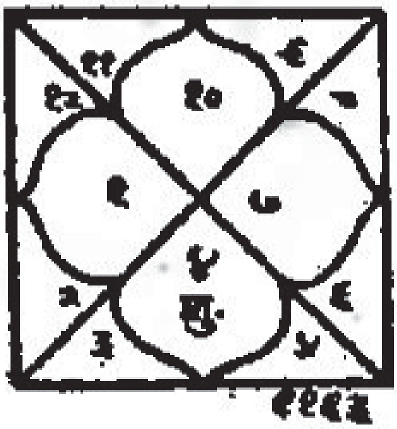

११९३

सातवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को सुन्दर तथा सुयोग्य स्त्री मिलती है। पिता, राज्य, व्यवसाय, सन्तान तथा विद्या पक्ष से भी सुख मिलता है। घरेलू जीवन आनन्दपूर्ण रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। राजकीय तथा सामाजिक क्षेत्र में प्रतिष्ठा भी मिलती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकर लग्न : अष्टमभाव : शुक्र

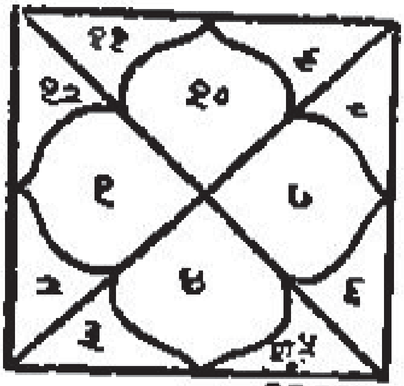

११९७

आठवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को पुरातत्त्व एवं आयु की शक्ति का लाभ होता है। पिता तथा सन्तान-पक्ष से कष्ट होता है एवं राज्य तथा विद्या का क्षेत्र त्रुटिपूर्ण रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपने परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर उन्नति करता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकर लग्न : नवमभाव : शुक्र

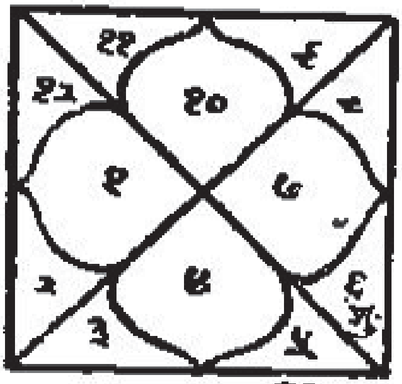

११९८

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित नीच के 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को भाग्योन्नति तथा धर्म-पालन में बाधाएँ आती हैं। पिता, राज्य, व्यवसाय, सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं उच्च तथा शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति अपने पुरुषार्थ से तरक्की करता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकर लग्न : दशमभाव : शुक्र

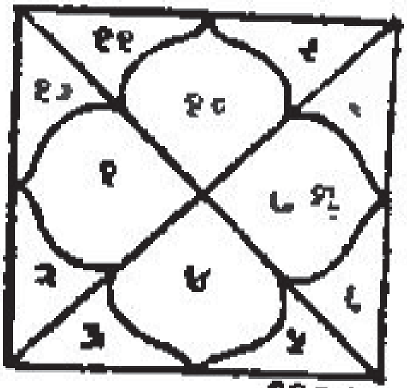

११९९

दसवें भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक सहयोग, सम्मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है। सन्तान तथा विद्या-पक्ष भी प्रबल रहता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख भी प्राप्त होता है तथा घरेलू जीवन उल्लासमय बना रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकर लग्न : एकादशभाव : शुक्र

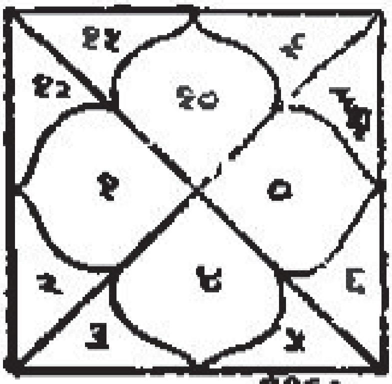

११३६७

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में स्थित पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि का भी श्रेष्ठ लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी योग्यता के बल पर तरक्की करता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकर लग्न : द्वादशभाव : शुक्र

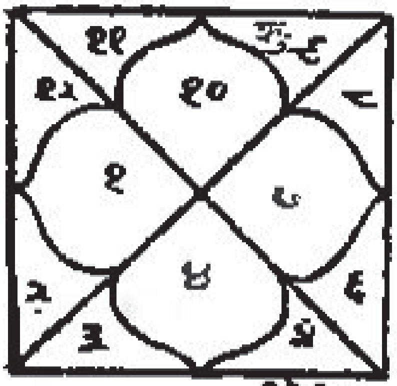

११३६८

बारहवें भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ प्राप्त होता रहता है। पिता पक्ष से हानि, सन्तान-पक्ष से कष्ट तथा विद्या-पक्ष में कमी रहती है। मानसिक चिन्ताएँ बनी रहती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में चतुराई से काम निकलता है। ऐसे व्यक्ति को उन्नति करने में कुछ विलम्ब लगता है।

'मकर' लग्न में 'शनि'

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : प्रथमभाव : शनि

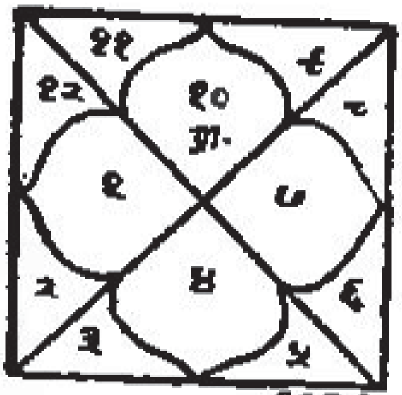

११३६९

पहले भाव में स्वराशि-स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती है। वह स्वाभिमानी तथा यशस्वी भी होता है। तीसरी शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से असन्तोष रहता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री से असन्तोष रहता है तथा व्यवसाय की वृद्धि के लिए प्रयत्न करता है। दसवीं उच्चदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, सहयोग, यश तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : द्वितीयभाव : शनि

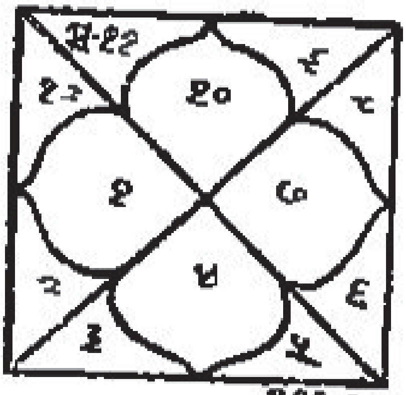

११८०

दूसरे भाव में स्वराशि-स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को धन-संचय एवं कौटुम्बिक सुख का यथेष्ट लाभ होता है। तीसरी नीच-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी रहती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की कुछ हानि होती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ आमदनी में वृद्धि होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : तृतीयभाव : शनि

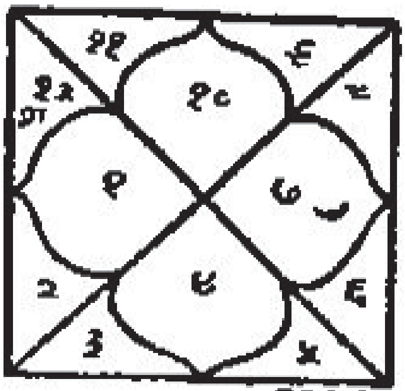

११८१

तीसरे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाई के साथ भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। पुरुषार्थ के बल पर धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। तीसरी मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से कुछ कठिनाई के साथ लाभ मिलता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : चतुर्थभाव : शनि

११८२

चौथे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित नीच के 'शनि' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। शारीरिक सौन्दर्य एवं धन-कुटुम्ब का सुख भी कम ही मिलता है। तीसरी मित्रदृष्टि के षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा झगड़ों से लाभ होता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथमभाव को देखने से शरीर सुन्दर होता है तथा आत्मबल की अधिकता पाई जाती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : पंचमभाव : शनि

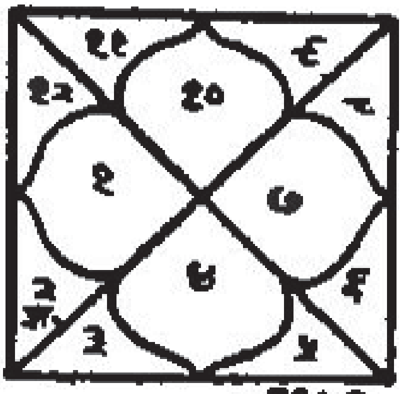

११८३

पाँचवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की सन्तान, विद्या तथा बुद्धि का विशेष लाभ होता है। शारीरिक सौन्दर्य, वाणी तथा योग्यता की भी प्राप्ति होती है। तीसरी शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री से कुछ असंतोष रहते हुए भी उसमें अधिक अनुरक्ति होती है तथा व्यवसाय-पक्ष में भी कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख में वृद्धि होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : षष्ठभाव : शनि

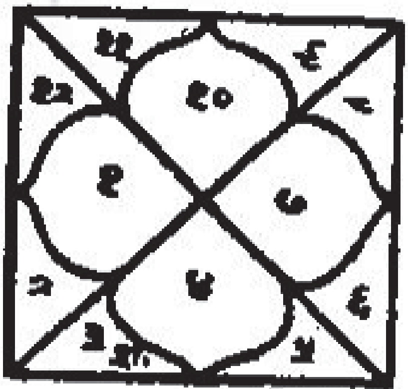

११८४

छठे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बढ़ता है। कुटुम्ब से सामान्य विरोध रहता है तथा धन-संग्रह में कमी आती है।

तीसरी शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का अधिक लाभ नहीं होता। सातवीं शत्रुदृष्टिसे द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध बनता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : सप्तमभाव : शनि

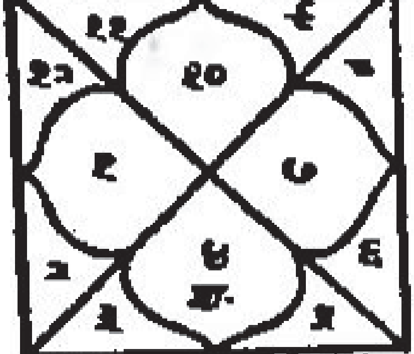

११८५

सातवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से शक्ति एवं आत्मीयता मिलती है तथा परिश्रम के द्वारा व्यवसाय में उन्नति होती है। धन तथा सन्तान का सुख भी मिलता है। तीसरी मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से जातक के भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में वृद्धि होती है तथा स्वाभिमान एवं प्रभाव का लाभ होता है। दसवी नीच तथा शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखनेसे माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : अष्टमभाव : शनि

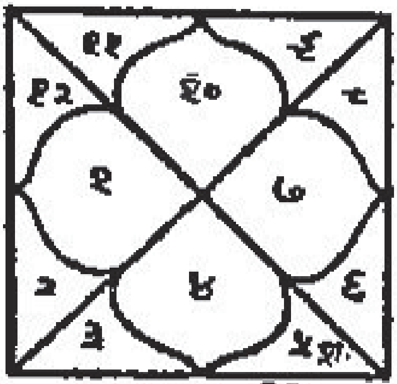

११७९

आठवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है तथा धन-कुटुम्ब की हानि पहुँचती है। तीसरी उच्चदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीय भाव को देखने से धन-कुटुम्ब का अल्प सुख मिलता है। दसवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष की वृद्धि होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : नवमभाव : शनि

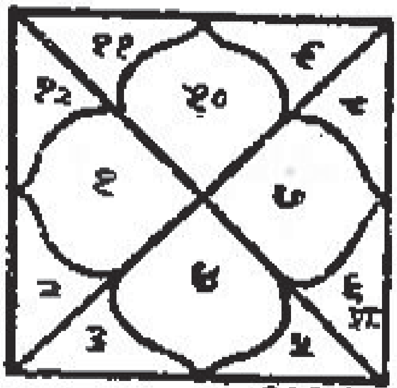

११८०

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की पर्याप्त उन्नति होती है। शारीरिक प्रभाव, सम्मान तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। तीसरी शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के मार्ग में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख में कमी आती है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है।

दसवीं मित्रदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से धन एवं शारीरिक शक्ति के बल से शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा झगड़े के मामलों से लाभ होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : दशमभाव : शनि

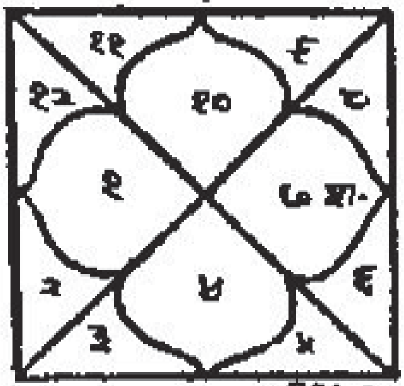

११८१

दसवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित उच्च के 'शनि' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक सुख, सहयोग, सम्मान एवं सफलता की प्राप्ति होती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी यथेष्ट मिलता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से असन्तोष रहता है।

सातवीं नीचदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री-सुख में कुछ कमी तथा व्यवसाय-पक्ष में कुछ परेशानियाँ आती हैं।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकरलग्न : एकादशभाव : शनि

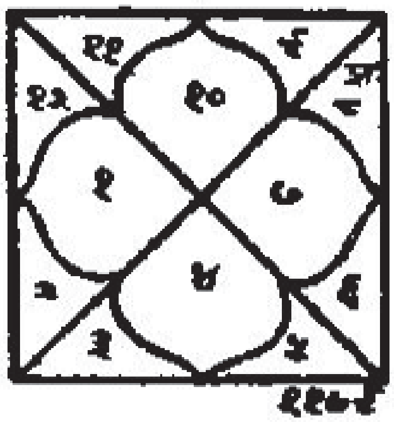

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, यश, प्रतिष्ठा, आत्मबल तथा प्रभाव की प्राप्ति होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी यथेष्ट सफलता मिलती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु के विषय में चिन्ता रहती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकरलग्न : द्वादशभाव : शनि

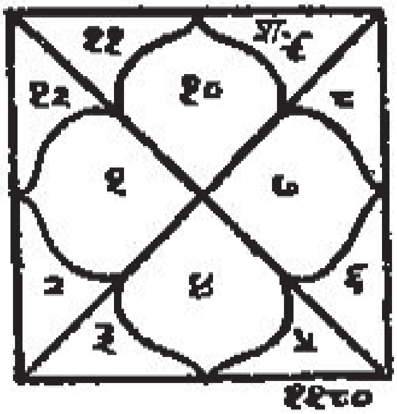

बारहवें भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता है। धन, कुटुम्ब तथा शारीरिक स्वास्थ्य के सुख में कमी आती है।

तीसरी दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने से धन-प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रयत्न करना पड़ता है। सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है तथा झगड़े के मामलों में विजय मिलती है।

दसवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। ऐसा व्यक्ति धनी तथा भाग्यवान् होता है।

'मकर' लग्न में 'राहु'

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकरलग्न : प्रथमभाव : राहु

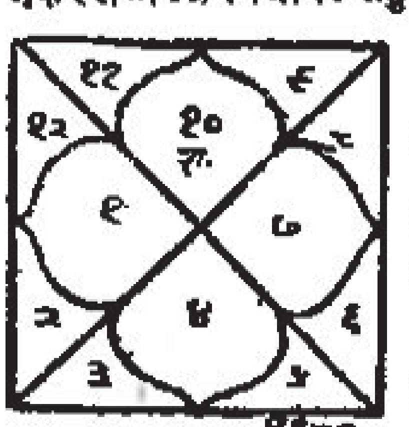

पहले भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है। कभी शरीर में चोट भी लगती है। कभी कोई विशेष रोग भी होता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, चतुर, सतर्क तथा युक्ति-बल से अपने प्रभाव की वृद्धि करने वाला होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकर लग्न : द्वितीयभाव : राहु

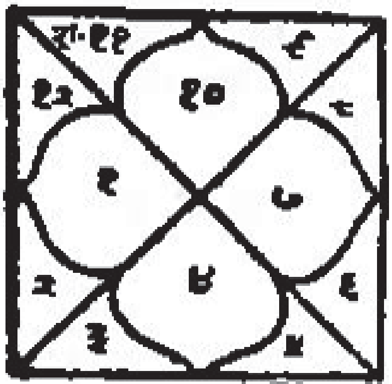

६६२

दूसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक धन तथा कुटुम्ब के कारण चिन्तित रहता है तथा कष्ट भोगता है। कभी-कभी ऋण भी लेना पड़ता है। प्रकट रूप से वह धनी समझा जाता है, परन्तु यथार्थ में धन की कमी रहती है। बाद में गुप्त युक्तियों के बल पर वह अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ भी बना लेता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकर लग्न : तृतीयभाव : राहु

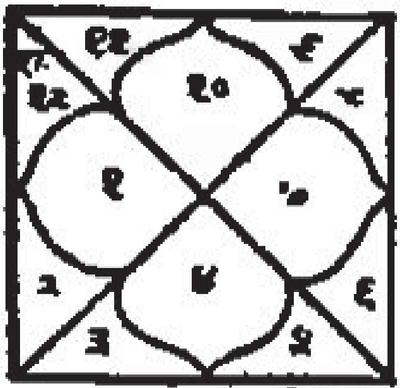

६६३

तीसरे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों की ओर से कष्ट मिलता है, परन्तु पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है। भीतर से दुर्बलता अनुभव करने पर भी वह प्रकट रूप में बड़ा हिम्मती होता है तथा कठिनाइयों पर विजय पाता रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकर लग्न : चतुर्थभाव : राहु

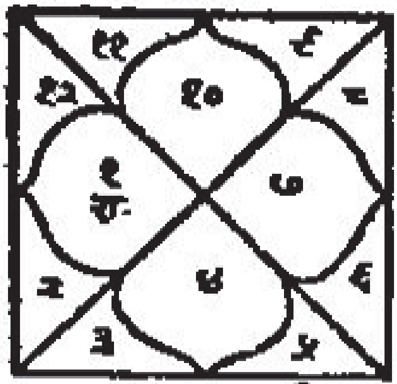

६६४

चौथे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। कभी मातृभूमि का त्याग भी करना पड़ता है। अन्त में वह गुप्त युक्तियों के बल पर सुख तथा प्रभाव की वृद्धि करता है। ऐसा व्यक्ति हिम्मती तथा धैर्यवान् होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकर लग्न : पंचमभाव : राहु

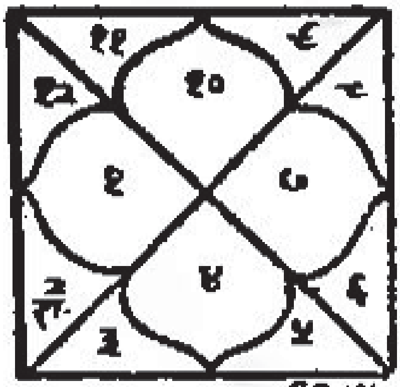

६६५

पाँचवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कष्ट होता है तथा विद्या ग्रहण करने में भी कठिनाई आती है। परन्तु उसकी बुद्धि बड़ी तीव्र होती है।

वह होशियार तथा गुप्त युक्तियों में प्रवीण होता है। अन्त में, सन्तान तथा विद्या दोनों ही क्षेत्रों में सफलता भी पा लेता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकरलग्न : षष्ठभाव : राहु

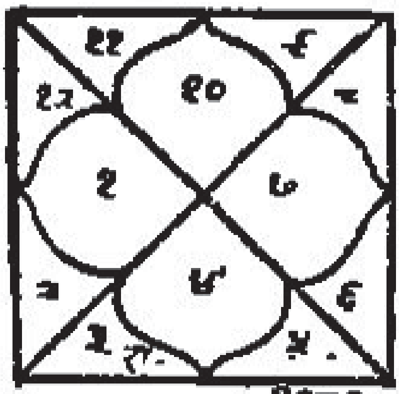

१९८६

छठे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अपना विशेष प्रभाव रखता है तथा झगड़ों के मामलों में सफलता प्राप्त करता है।

वह कूटनीतिज्ञ, विवेकी, तीव्र-बुद्धि तथा गुप्त युक्तियों का जानकार होता है। ऐसा व्यक्ति प्रायः कभी बीमार नहीं होता।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकर-लग्न : सप्तमभाव : राहु

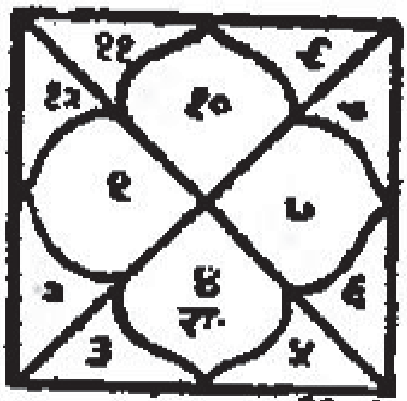

१९८७

सातवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से महान् कष्ट होता है। व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती रहती हैं। उसकी मूत्रेन्द्रिय में रोग भी होता है। वह अपनी गुप्त युक्तियों के बल से कठिनाइयों पर कुछ विजय भी पा लेता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकरलग्न : अष्टमभाव : राहु

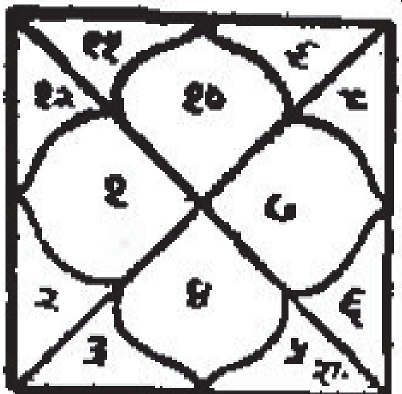

११८८

आठवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के जीवन पर बड़े संकट आते हैं तथा कभी-कभी मृत्यु-तुल्य कष्ट भी भोगना पड़ता है। पुरातत्त्व की हानि भी होती है। उदर अथवा गुदा-सम्बन्धी रोगों का शिकार बनना पड़ता है। वह अपनी गुप्त युक्तियों के बल पर जैसे-तैसे जीवन-यापन करता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकरलग्न : नवमभाव : राहु

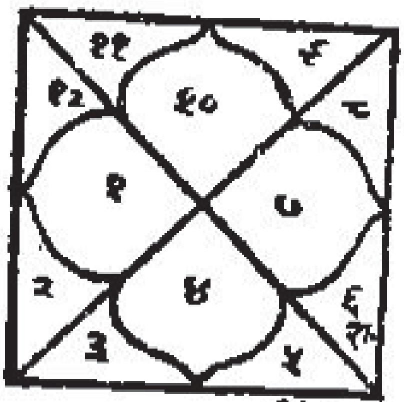

११२८९

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में निरन्तर बाधाएँ आती रहती हैं। कभी-कभी विशेष कठिनाइयों का शिकार भी बनता है। धर्म-पालन में भी कमी रहती है।

कठिन संघर्ष, परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर वह थोड़ी-बहुत उन्नति भी कर लेता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकरलग्न : दशमभाव : राहु

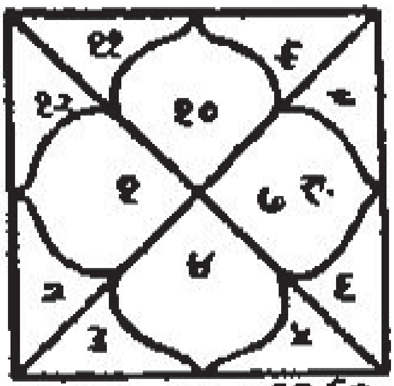

११२९०

दसवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विघ्नों बाधाओं का सामना करना पड़ता है। परन्तु वह अपनी गुप्त युक्तियों के बल पर उन्हें दूर करता हुआ भाग्य की उन्नत बनाता है। यद्यपि उसे अनेक बार संकटों में घिर जाना पड़ता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकरलग्न : एकादशभाव : राहु

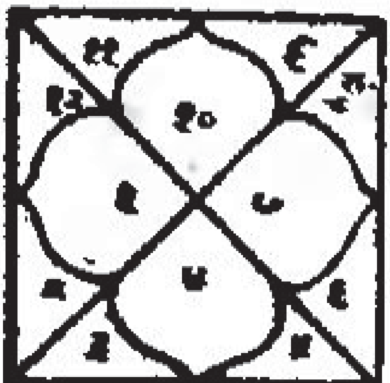

११२९१

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक अपने परिश्रम तथा गुप्त युक्ति-बल द्वारा विशेष लाभ प्राप्त करता है। कभी-कभी उसे बड़ी हानि भी उठानी पड़ती है तो कभी विशेष लाभ भी होता है। उसके जीवन में सुख-दुःख आते-जाते बने रहते हैं।

'मकर' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकरलग्न : द्वादशभाव : राहु

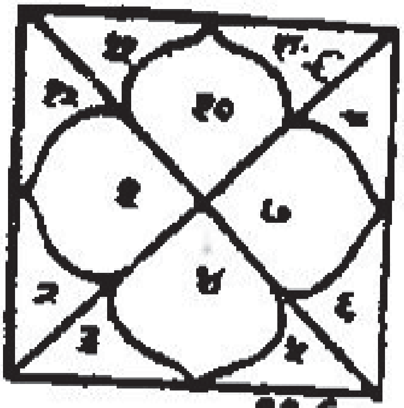

११९८२

बारहवें भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित नीच के 'राहु' के प्रभाव से जातक को अपना खर्च चलाने में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से भी कष्ट उठाने पड़ते हैं।

हिम्मती होने के कारण वह अपनी कठिनाइयों को प्रकट नहीं होने देता तथा उन्हें दूर करने की विशेष परिश्रम करता रहता है।

'मकर' लग्न में 'केतु'

'मकर' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मकरलग्न : प्रथमभाव : केतु

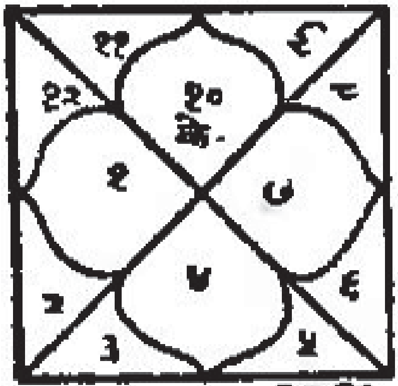

११९८३

पहले भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा कभी कोई बड़ी चोट लगने की संभावना भी रहती है।

ऐसा व्यक्ति उग्र तथा जिद्दी स्वभाव का होता है तथा अपने प्रभाव को बढ़ाने के लिए गुप्त युक्तियों का आश्रय भी लेता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मकरलग्न : द्वितीयभाव : केतु

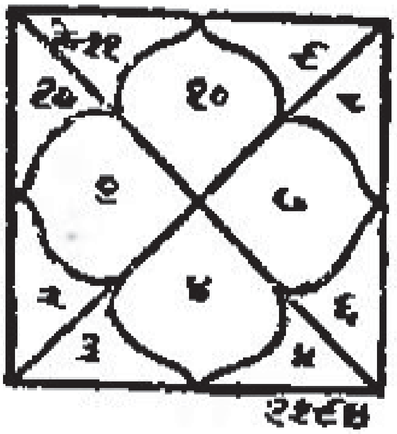

११९८४

दूसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के विषय में बड़े संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु वह हिम्मत तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर धन-सम्बन्धी कमी को पूरा करने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मकरलग्न : तृतीयभाव : केतु

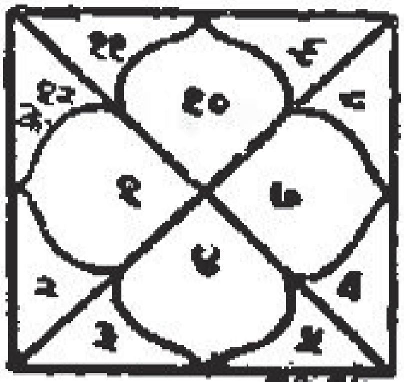

१२८५

तीसरे भाव में शत्रु 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों के पक्ष में परेशानी तथा संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है।

वह साहस, धैर्य, पुरुषार्थ तथा गुप्त युक्तियों के बल पर जीवन को प्रभावशाली बनाये रखने का प्रयत्न करता रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मकरलग्न : चतुर्थभाव : केतु

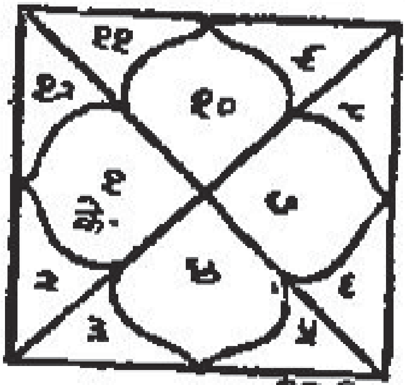

१२८६

चौथे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की माता के सुख में कमी तथा माता के कारण ही कष्ट भी प्राप्त होता है। घरेलू जीवन कलहपूर्ण रहता है। मातृ-भूमि का त्याग भी करना पड़ता है। अन्त में, कठिन परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर उसे सुख के साधन प्राप्त करने में थोड़ी-बहुत सफलता मिल जाती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मकरलग्न : पंचमभाव : केतु

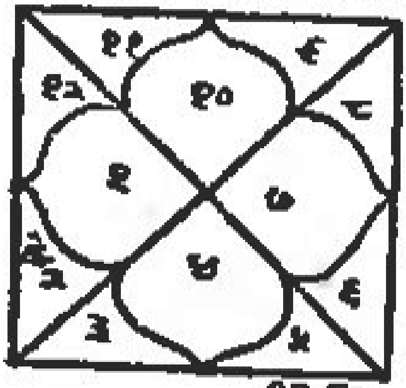

१२८७

पाँचवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में कमी का शिकार होना पड़ता है। मस्तिष्क में गुप्त चिन्ताओं का निवास रहता है। परन्तु उसकी बुद्धि तीव्र होती है, अतः वह चतुराई से काम लेकर अपनी कठिनाइयों के निवारण का प्रयत्न करता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मकरलग्न : षष्ठभाव : केतु

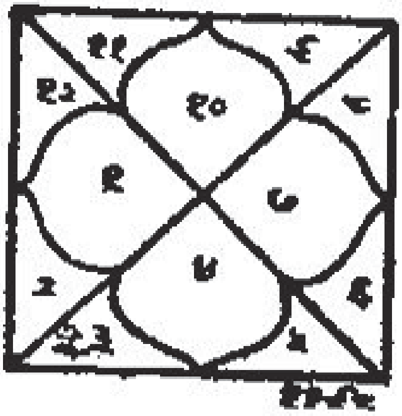

१२८८

छठे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को शत्रुओं के कारण कठिनाइयों में फँसना पड़ता है, परन्तु अपनी गुप्त युक्तियों के बल पर वह उन पर विजय भी पा लेता है। झगड़े-झंझट के मामलों में उसे सफलता मिलती है। ननसाल-पक्ष की हानि पहुँचती है। घोर संकट आने पर भी वह अपना धैर्य नहीं छोड़ता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मकरलग्न : सप्तमभाव : केतु

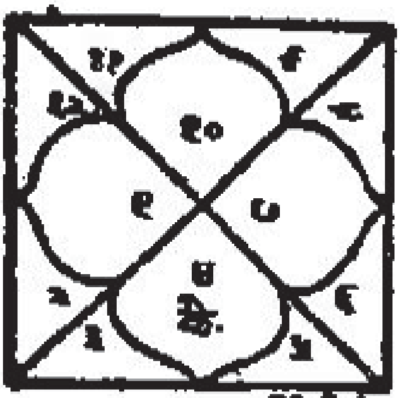

११९९

सातवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से अनेक प्रकार के कष्ट प्राप्त होते हैं। गृहस्थ-जीवन में परेशानियाँ आती हैं। अनेक प्रकार के व्यवसाय करने पर भी कठिनाइयाँ आती रहती हैं। अन्त, में वह अपनी गुप्त युक्तियों तथा कठोर परिश्रम के द्वारा उन पर यथोचित सफलता भी पा लेता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मकरलग्न : अष्टमभाव : केतु

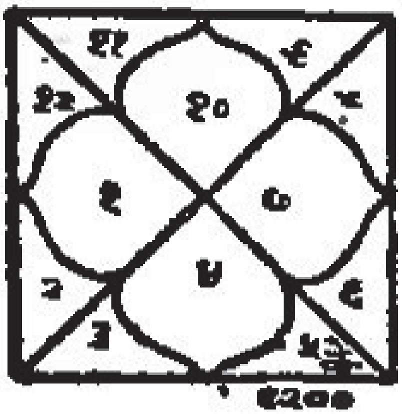

१२००

आठवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के जीवन पर अनेक बार संकट आते हैं और वह मृत्यु-तुल्य कष्ट पाता है। पेट में विकार रहता है।

अजीविका-उपार्जन के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है। भीतर से चिन्तित रहते हुए भी प्रकट में वह प्रभाव प्रदर्शित करता है। प्रायः उसका जीवन संघर्षपूर्ण रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मकरलग्न : नवमभाव : केतु

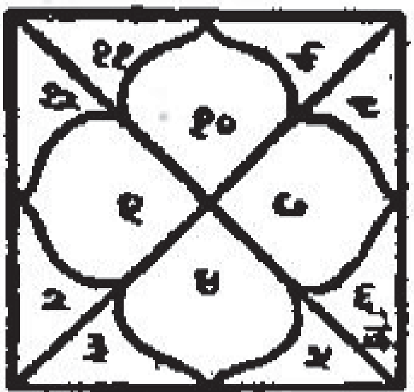

१२०१

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु वह अपनी हिम्मत, परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के द्वारा उन पर विजय पाकर भाग्य की उन्नति तथा धर्म का पालन करता है। कभी-कभी उसे भाग्य-क्षेत्र में घोर संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु अन्त में उनका निराकरण करने में सफल हो जाता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मकरलग्न : दशमभाव : केतु

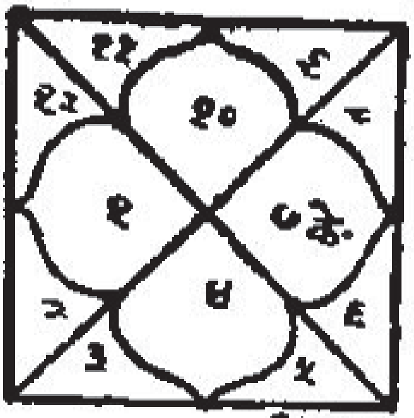

१२०२

दसवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को पिता से कष्ट, राज्य से कठिनाइयाँ तथा व्यवसाय-क्षेत्र में संकटों का शिकार बनना पड़ता है, परन्तु अपनी गुप्त युक्तियों के बल पर वह उन पर विजय पा लेता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन संघर्षपूर्ण तथा परिवर्तनशील होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मकरलग्न : एकादशभाव : केतु

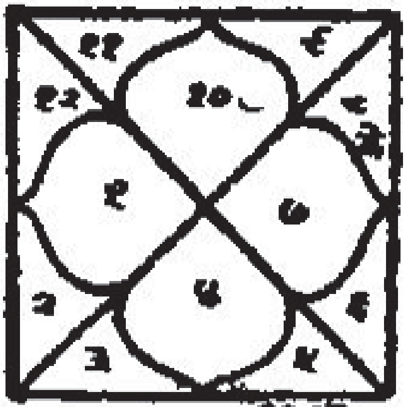

१२०३

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। वह अपनी गुप्त युक्तियों, साहस एवं कठिन परिश्रम के बल पर आमदनी को निरन्तर बढ़ाता रहता है। आने वाली कठिनाइयों पर उसे विजय मिलती है। ऐसा व्यक्ति गुप्त रूप में चिन्तित भी बना रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मकरलग्न : द्वादशभाव : केतु

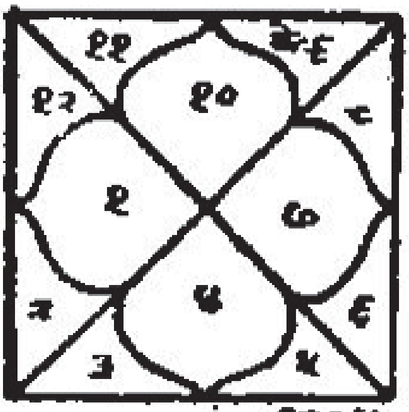

१२०४

बारहवें भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक का खर्च अत्यधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों से उसे लाभ मिलता है।

ऐसा व्यक्ति कठिनाइयों का साहस के साथ सामना करता है तथा अन्त में उन पर विजय भी पा लेता है। वह बड़ा परिश्रमी, धैर्यवान्, गुप्त युक्तियों से काम लेने वाला तथा साहसी होता है।

'कुम्भ' लग्न

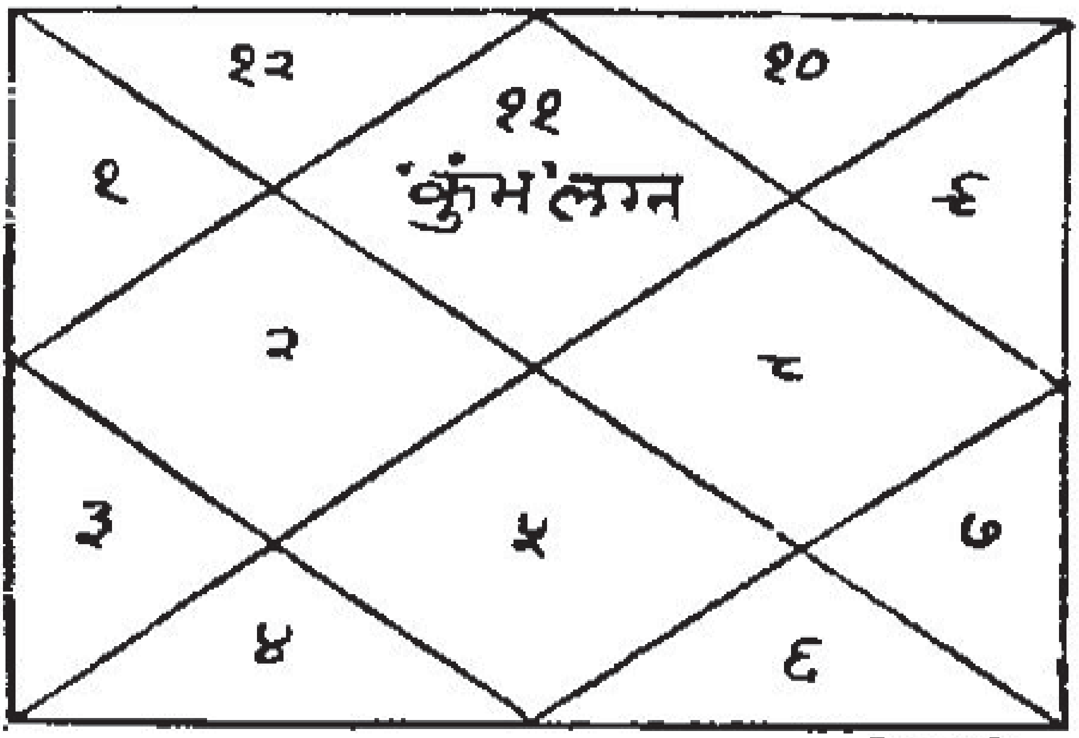

१२०५

['कुम्भ' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न ग्रहों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'कुम्भ' लग्न का फलादेश

'कुम्भ' लग्न में जन्म लेने वाला व्यक्ति लम्बे शरीर वाला, मोटी गरदन वाला, गंजे सिर वाला, तेजस्वी, वात-प्रकृति वाला तथा चंचल स्वभाव का होता है।

ऐसा व्यक्ति पानी अधिक पीता है। वह बातूनी, दम्भी, अहंकारी, ईर्ष्यालु, द्वेषी, सुस्थिर तथा भ्रातृ-द्रोही होने के साथ ही श्रेष्ठ मनुष्यों से संयुक्त, सर्वप्रिय, सुन्दर पानी वाला तथा पर-स्त्रियों में आसक्त भी होता है।

'कुम्भ' लग्न का जातक अपनी प्रारम्भिक अवस्था में दुःखी रहता है, मध्यमावस्था में सुखी रहता है तथा अन्तिम अवस्था में धन, भूमि, भवन, पुत्रादि के सुख का उपभोग करता है।

'कुम्भ' लग्न के जातक का भाग्योदय २४-२५ वर्ष की आयु में होता है।

'कुम्भ' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या १२०६ से १३१३ के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

●

'कुम्भ' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१—'कुम्भ' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२०६ से १२१७ के बीच देखना चाहिए।

२—'कुम्भ' लग्न वालों को अपनी गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'सूर्य'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १२०६
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १२०७
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १२०८
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १२०९
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १२१०
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १२११
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १२१२
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १२१३
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १२१४
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १२१५
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १२१६
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १२१७

'कुम्भ' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१—'कुम्भ' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२१८ से १२२९ के बीच देखना चाहिए।

२—'कन्या' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दिन 'चन्द्रमा'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १२१८
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १२१९
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १२२०
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १२२१
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १२२२
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १२२३
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १२२४
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १२२५
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १२२६
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १२२७
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १२२८
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १२२९

'कुम्भ' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१—'कुम्भ' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२३० से १२४१ के बीच देखना चाहिए।

२—'कुम्भ' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मंगल'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १२३०
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १२३१
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १२३२
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १२३३
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १२३४
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १२३५
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १२३६
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १२३७
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १२३८
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १२३९
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १२४०
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १२४१

'कुम्भ' लग्न में 'बुध' का फलादेश

१—'कुम्भ' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२४२ से १२५३ के बीच देखना चाहिए।

२—'कुम्भ' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'बुध'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १२४२
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १२४३
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १२४४
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १२४५
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १२४६
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १२४७
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १२४८
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १२४९
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १२५०
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १२५१
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १२५२
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १२५३

'कुम्भ' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१—'कुम्भ' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२५४ से १२६५ के बीच देखना चाहिए।

२—'कुम्भ' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'गुरु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १२५४
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १२५५
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १२५६
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १२५७

(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १२५८
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १२५६
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १२६०
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १२६१
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १२६२
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १२६३
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १२६४
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १२६५

'कुम्भ' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१—'कुम्भ' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२६६ से १२७७ के बीच देखना चाहिए।

२—'कुम्भ' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १२६६
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १२६७
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १२६८
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १२६९
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १२७०
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १२७१
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १२७२
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १२७३
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १२७४
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १२७५
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १२७६
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १२७७

'कुम्भ' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१—'कुम्भ' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२७८ से १२८९ के बीच देखना चाहिए।

२—'कुम्भ' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि'

का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'शनि'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १२७८
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १२७९
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १२८०
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १२८१
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १२८२
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १२८३
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १२८४
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १२८५
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १२८६
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १२८७
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १२८८
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १२८९

'कुम्भ' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१—'कुम्भ' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२९० से १३०१ के बीच देखना चाहिए।

२—'कुम्भ' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १२९०
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १२९१
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १२९२
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १२९३
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १२९४
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १२९५
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १२९६
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १२९७
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १२९८
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १२९९
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १३००
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १३०१

'कुम्भ' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१—'कुम्भ' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३०२ से १३१३ के बीच देखना चाहिए।

२—'कुम्भ' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'केतु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १३०२
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १३०३
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १३०४
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १३०५
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १३०६
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १३०७
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १३०८
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १३०९
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १३१०
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १३११
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १३१२
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १३१३

●

'कुम्भ' लग्न में 'सूर्य'

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कुम्भलग्न : प्रथमभाव : सूर्य

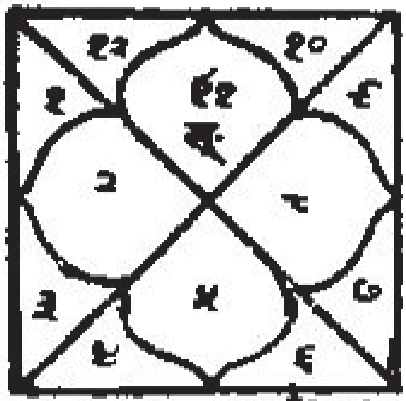

१३०६

पहले भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कुछ कमी आती है, परन्तु प्रभाव एवं शक्ति की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति तेज स्वभाव का तथा बहुत दौड़-धूप करने वाला है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री-पक्ष द्वारा विशेष सुख मिलता है तथा पुरुषार्थ द्वारा दैनिक आमदनी के क्षेत्र में भी सफलता मिलती रहती है। गार्हस्थ जीवन आनन्दमय बना रहता है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कुम्भ लग्न : द्वितीयभाव : सूर्य

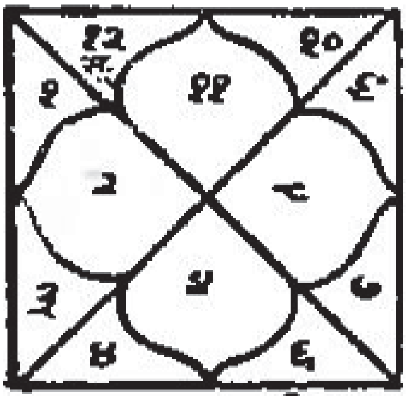

१२०७

दूसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब-सुख की वृद्धि होती है, परन्तु स्त्री-पक्ष से किसी विशेष कमी का अनुभव होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है तथा दैनिक जीवन भी प्रभावशाली बना रहता है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कुम्भ लग्न : तृतीयभाव : सूर्य

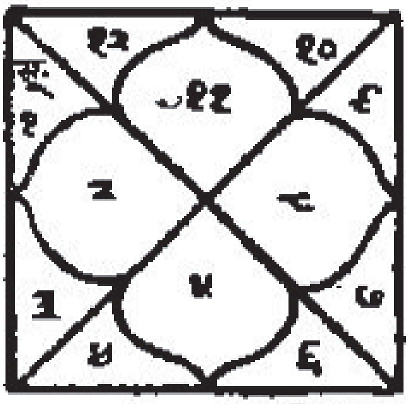

१२०८

तीसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित उच्च के 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का पर्याप्त सुख मिलता है तथा पराक्रम में भी अत्यधिक वृद्धि होती है। व्यवसाय द्वारा अन्य क्षेत्रों में भी सफलता मिलती है।

सातवीं नीच तथा शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्योन्नति तथा धर्म-पालन में कमी आती है तथा सम्मान भी अधिक नहीं मिलता।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कुम्भ लग्न : चतुर्थभाव : सूर्य

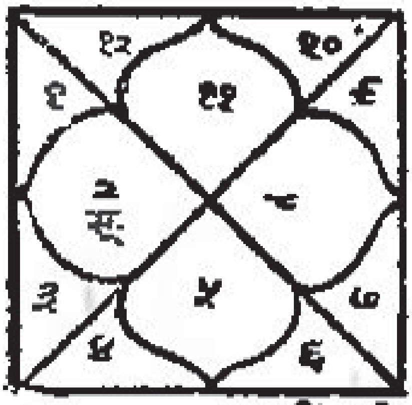

१२०९

चौथे भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कठिनाई के साथ मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी परेशानियाँ आती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय द्वारा सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होती है तथा प्रतिष्ठा की बढ़ती है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कुम्भ लग्न : पंचमभाव : सूर्य

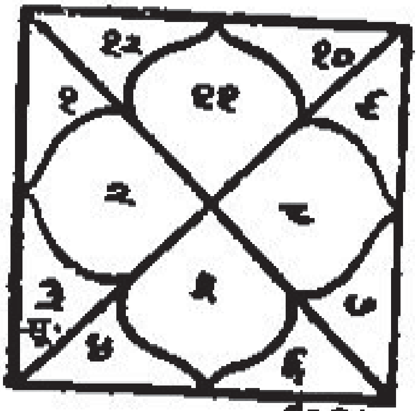

६२१०

पाँचवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। स्त्री तथा व्यवसाय से भी सुख मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से बुद्धियोग द्वारा आमदनी अच्छी रहती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी तथा प्रभावशाली होता है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कुम्भ लग्न : षष्ठभाव : सूर्य

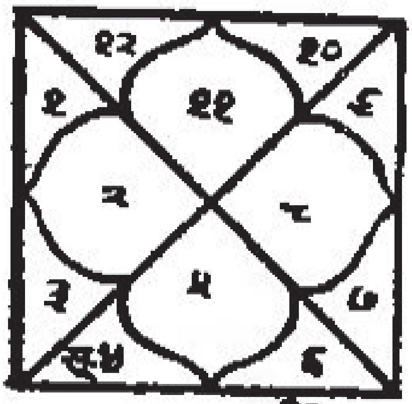

६२११

छठे भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर विजय पाता है तथा झगड़ों के मामलों से लाभ उठाता है। व्यवसाय में कुछ कठिनाई के साथ सफलता मिलती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कुम्भ लग्न : सप्तमभाव : सूर्य

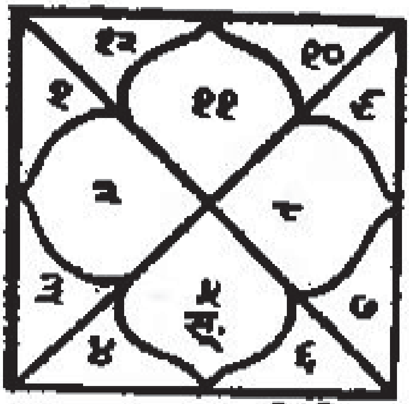

६२१२

सातवें भाव में स्वराशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को स्त्री का पर्याप्त सुख मिलता हैं तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती हैं। ससुराल से लाभ होता है तथा गृहस्थ जीवन सुखमय बना रहता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कुम्भ लग्न : अष्टमभाव : सूर्य

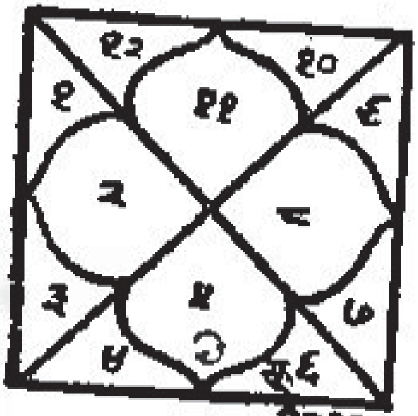

१२८३

आठवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व-शक्ति में वृद्धि होती है। स्त्री-पक्ष से परेशानी तथा व्यवसाय में कठिनाइयाँ भी रहती हैं। बाहरी सम्बन्धों से कुछ लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से कठिन परिश्रम द्वारा धन का संचय होता है तथा कौटुम्बिक सुख भी प्राप्त होता है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कुम्भ लग्न : नवमभाव : सूर्य

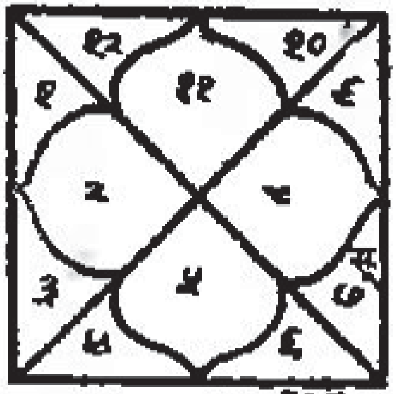

१२८४

नवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित नीच के 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म में कुछ कमी आती है। स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष में भी कठिनाइयाँ रहती हैं। वह स्वार्थ-सिद्धि के लिए उचित-अनुचित का विचार भी नहीं करता।

सातवीं मित्र तथा उच्च-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी, पराक्रमी तथा धैर्यवान् होता है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कुम्भ लग्न : दशमभाव : सूर्य

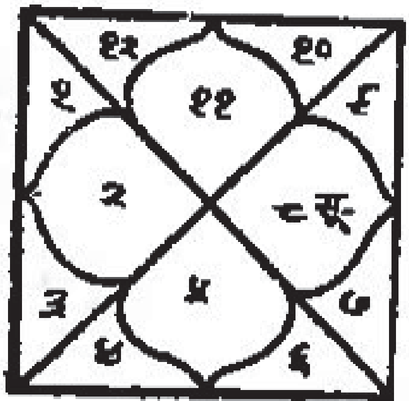

१२८५

दसवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय-पक्ष से लाभ होता है। स्त्री-पक्ष से भी श्रेष्ठ शक्ति मिलती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी रहती है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कुम्भ लग्न : एकादशभाव : सूर्य

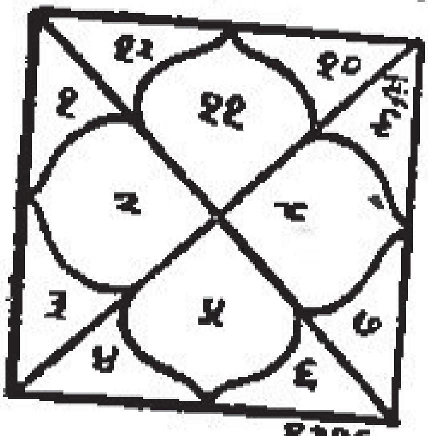

१२१६

ग्यारहवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को व्यवसाय द्वारा अच्छी आमदनी होती है तथा स्त्री-पक्ष से विशेष लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में भी विशेष उन्नति होती है तथा सुख मिलता है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कुम्भ लग्न : द्वादशभाव : सूर्य

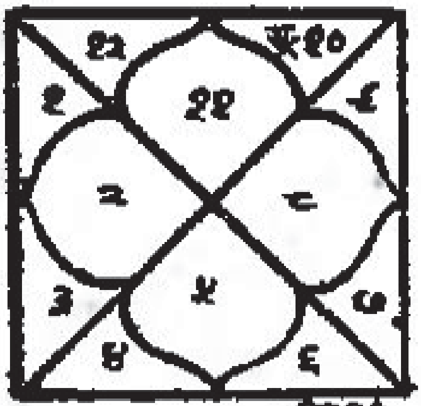

१२१७

बारहवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को खर्च अधिक रहने के कारण कठिनाई उठानी पड़ती है। बाहरी संबंधों से लाभ तथा स्थानीय व्यवसाय से हानि की प्राप्ति होती है। स्त्री-सुख में भी बहुत कमी आती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा झगड़े के मामलों से लाभ होता है

'कुम्भ' लग्न में 'चन्द्रमा'

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कुम्भ लग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

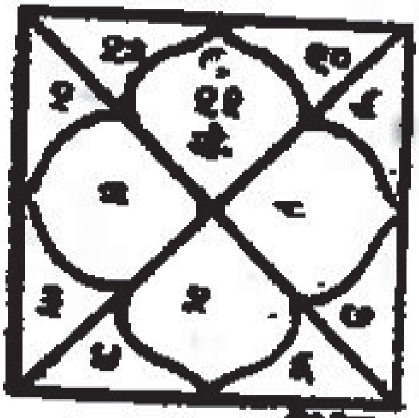

१२१८

पहले भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक का शरीर अस्वस्थ तथा मन चिन्तित रहता है, परन्तु वह शत्रुओं पर प्रभाव डालने तथा झगड़ों में विजय पाने में सफल रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री से कुछ मतभेद रहता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी चिन्ताएं तथा कठिनाइयां बनी रहती हैं।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कुम्भ लग्न : द्वितीयभाव : चन्द्र

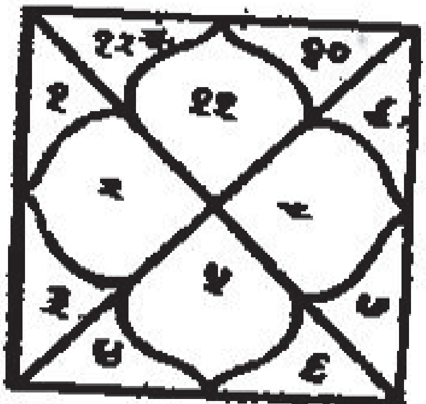

६२१९

दूसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक परिश्रमपूर्वक धन का संचय करता है तथा कौटुम्बिक सुख की वृद्धि भी होती है। शत्रु-पक्ष से परेशानी रहने पर भी झगड़े के मामलों से लाभ उठाता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कुछ परेशानी रहती है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कुम्भ लग्न : तृतीयभाव : चन्द्र

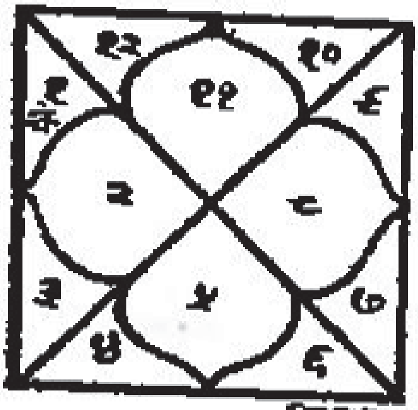

६२२०

तीसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के मनोबल तथा पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से कुछ मतभेद भी रहता है।

सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्योन्नति तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के बाद वृद्धि होती है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कुम्भ लग्न : चतुर्थभाव : चन्द्र

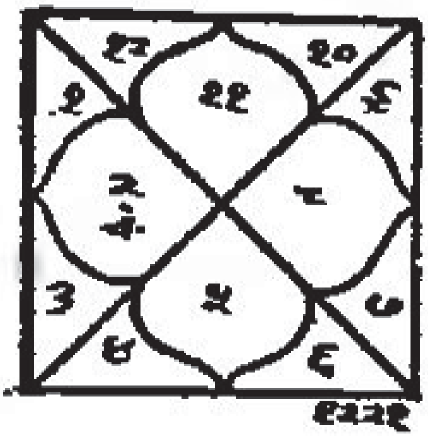

६२२१

चौथे भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा झगड़े के मामलों से लाभ भी उठाता है।

सातवीं मित्र तथा नीचदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कुम्भ लग्न : पंचमभाव : चन्द्र

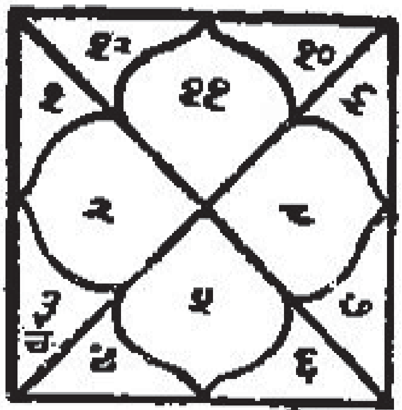

१२२२

पाँचवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है तथा शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ आमदनी की वृद्धि होती है तथा गुप्त युक्तियों के बल पर लाभ उठाता है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कुम्भ लग्न : षष्ठभाव : चन्द्र

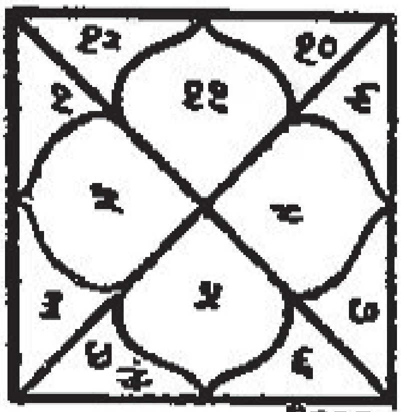

१२२३

छठे भाव में स्वराशि-स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अत्यधिक प्रभाव रखता है तथा झगड़े के मामलों में सफलता भी प्राप्त करता है, परन्तु धन में चिन्ताएँ भी रहती हैं।

सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च में कठिनाई रहती है तथा बाहरी सम्बन्धों से भी परेशानी मिलती है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कुम्भ लग्न : सप्तमभाव : चन्द्र

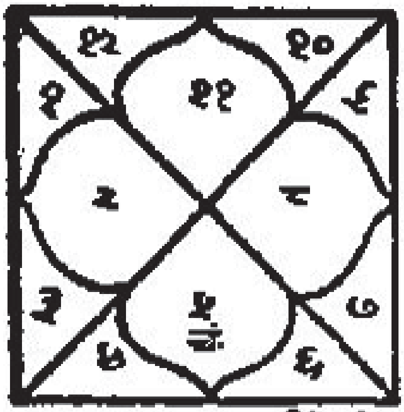

१२२४

सातवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष में रोग आदि की परेशानी रहती है। व्यवसाय-क्षेत्र में कठिनाइयों के बाद ही सफलता मिलती है। शत्रु-पक्ष पर भी प्रभाव रहता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शरीर रोगों एवं चिन्ताओं का शिकार रहता है। फिर भी मनोबल में वृद्धि होती है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कुम्भलग्न : अष्टमभाव : चन्द्र

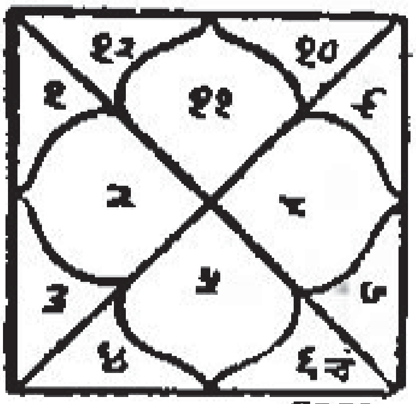

१२२७

आठवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व पक्ष में कठिनाई आती है। शत्रु-पक्ष पर भी बड़ी कठिनाइयों के बाद प्रभाव स्थापित होता है। हर समय चिन्ताएँ लगी रहती हैं। ननसाल-पक्ष कमजोर होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि के लिए जातक को विशेष परिश्रम करना पड़ता है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कुम्भलग्न : नवमभाव : चन्द्र

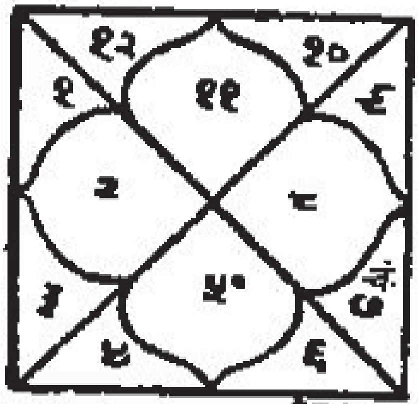

१२२८

नवें भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से भाग्य एवं धर्म की उन्नति में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा यश में भी लगी रहती है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा झगड़ों से लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कुम्भलग्न : दशमभाव : चन्द्र

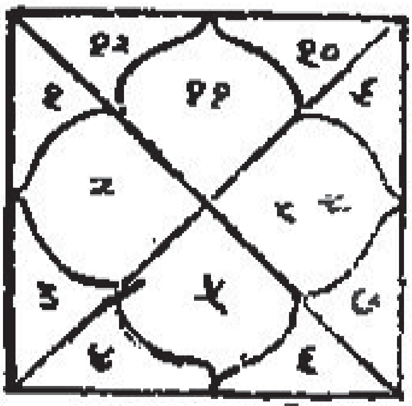

दसवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित नीच के 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं। शत्रु-पक्ष से भी बहुत परेशानी रहती है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सामान्य जातक को सुख प्राप्त होता है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कुम्भलग्न : एकादशभाव : चन्द्र

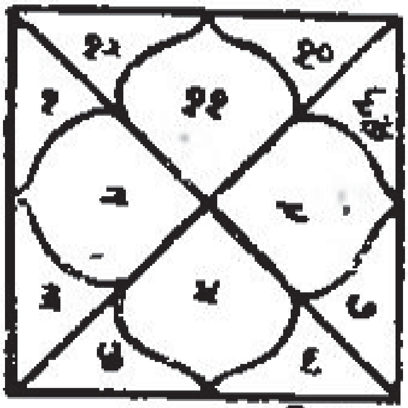

१२२८

ग्यारहवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक अपने मनोबल एवं शारीरिक परिश्रम द्वारा आमदनी को बढ़ाता है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रखता है तथा झगड़ों से लाभ उठाता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या-बुद्धि का यथेष्ट लाभ होता है एवं परन्तु सन्तान-पक्ष से कुछ चिन्ता बनी रहती है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कुम्भलग्न : द्वादशभाव : चन्द्र

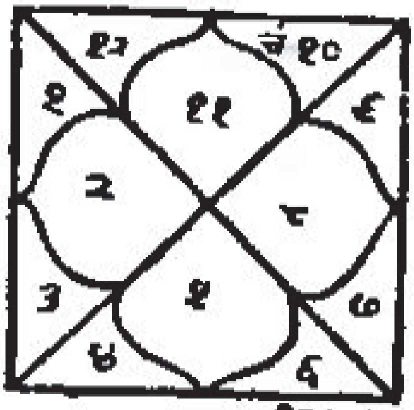

१२२९

बारहवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को अपना खर्च चलाने में कठिनाई रहती है। बाहरी सम्बन्धों से भी परेशानी होती है। शत्रु-पक्ष से मानसिक चिन्ताएँ रहती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर विनम्र तरीके से प्रभाव स्थापित करता है तथा सफलता पाता है।

'कुम्भ' लग्न में 'मंगल'

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कुम्भलग्न : प्रथमभाव : मंगल

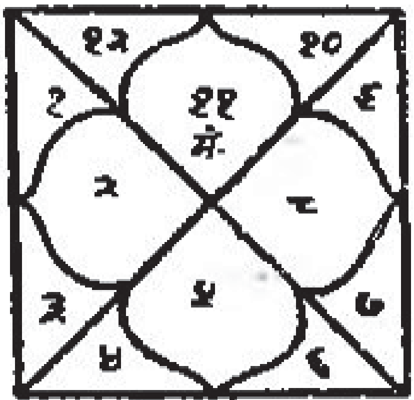

१२३०

पहले भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व की प्राप्ति होती है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि भी होती है। चौथी सामान्य मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख मिलता है।

आठवीं मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष से सुख मिलता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कुम्भलग्न : द्वितीयभाव : मंगल

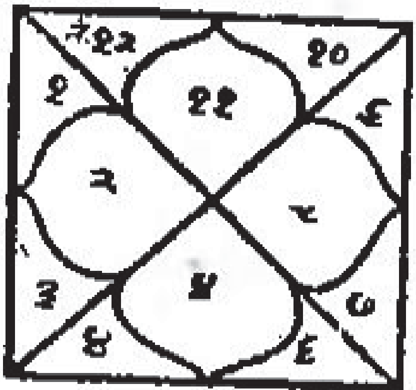

१२३१

दूसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के के साथ धन तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है। भाई-बहिन एवं पिता के सुख में भी कुछ कमी रहती है। चौथी मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष से सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। आठवीं सामान्य मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य एवं धर्म की विशेष उन्नति होती है तथा यश का लाभ भी होता है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कुम्भलग्न : तृतीयभाव : मंगल

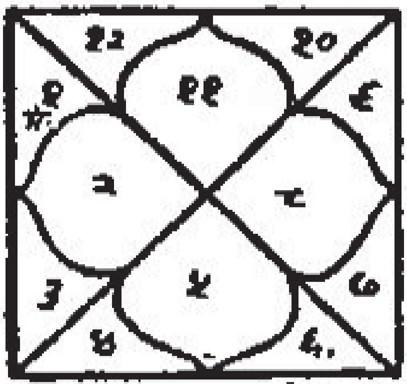

१२३२

तीसरे भाव में स्वराशि में स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है। चौथी नीच-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष से कष्ट रहता है तथा ननसाल-पक्ष को हानि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कुम्भलग्न : चतुर्थभाव : मंगल

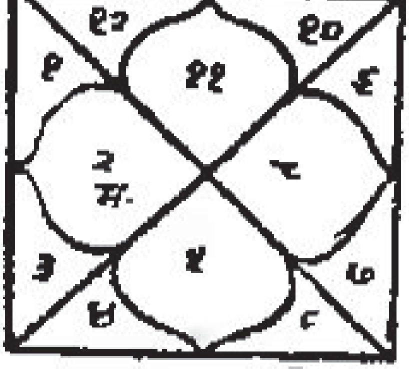

१२३३

चौथे भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को कुछ लगी के साथ माता, भूमि एवं भवन का सुख मिलता है। चौथी मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परिश्रम द्वारा सफलता मिलती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति होती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से एकादश-भाव को देखने से आमदनी बहुत अच्छी रहती है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कुम्भ लग्न : पंचमभाव : मंगल

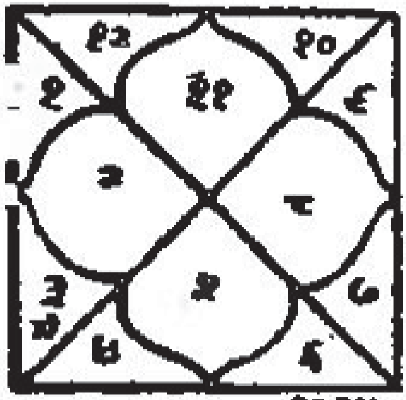

१२३४

पाँचवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा सन्तान का श्रेष्ठ सुख मिलता है। भाई-बहिन तथा पिता से भी सुख प्राप्त होता है। राज्य तथा व्यवसाय-क्षेत्र से लाभ होता है। चौथी मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी खूब रहती है। आठवीं उच्चदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी अच्छा मिलता है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कुम्भ लग्न : षष्ठभाव : मंगल

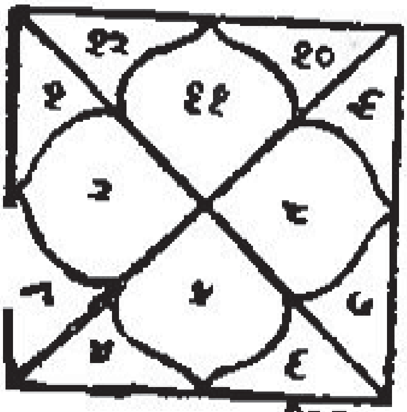

१२३५

छठे भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक कुछ कठिनाइयों के साथ शत्रु-पक्ष पर सफलता प्राप्त करता है। भाई-बहिन तथा पिता से कुछ मनमुटाव रहता है। राज्य-क्षेत्र में भी कम प्रभाव रहता है। चौथी शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने से कठिन परिश्रम द्वारा भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता है। आठवीं शत्रुदृष्टि के प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है, परन्तु प्रभाव में वृद्धि होती है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कुम्भ लग्न : सप्तमभाव : मंगल

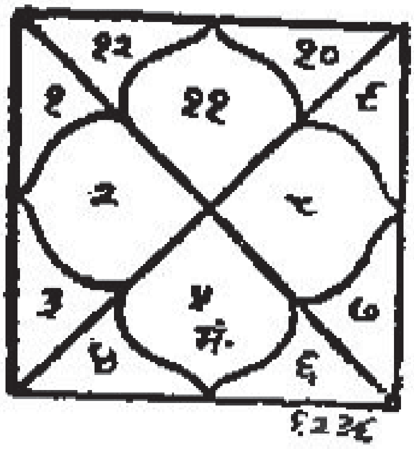

१२३६

सातवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। भाई-बहिन की शक्ति भी प्राप्त होती है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के द्वारा लाभ होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है, परन्तु प्रभाव एवं सम्मान की वृद्धि होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कुम्भ लग्न : अष्टमभाव : मंगल

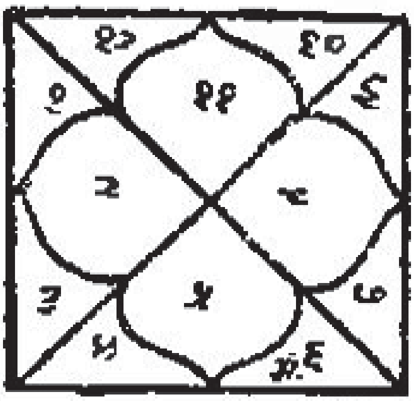

१२३७

आठवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में भी कमी आती है। चौथी मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कुम्भ लग्न : नवमभाव : मंगल

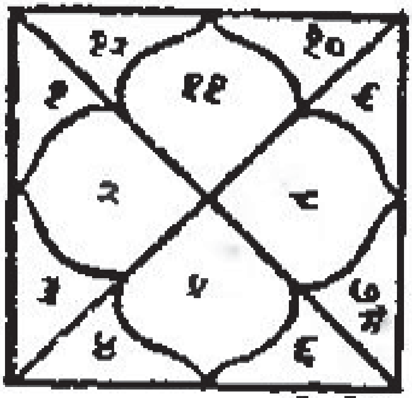

१२३८

नवें भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती है और उसे पिता, राज्य तथा व्यवसाय से भी सुख प्राप्त होता है। चौथी उच्चदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ मिलता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख मिलता है। आठवीं सामान्य मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कुम्भ लग्न : दशमभाव : मंगल

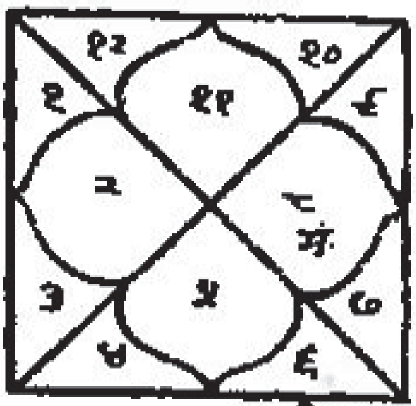

१२३९

दसवें भाव में स्वराशि-स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, सम्मान तथा सफलता प्राप्त होती है। पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। चौथी शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है, परन्तु मान-प्रतिष्ठा एवं प्रभाव में वृद्धि होती है।

सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता के सुख में सामान्य कमी रहती है तथा भूमि, भवन का सुख प्राप्त होता है। आठवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या-बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष की वृद्धि होती है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कुम्भ लग्न : एकादशभाव : मंगल

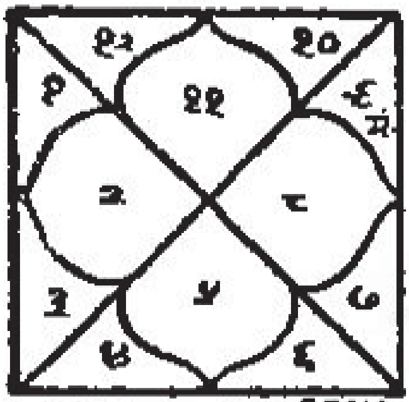

१२४०

ग्यारहवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की आमदनी बहुत अच्छी रहती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। धन खूब कमाता है, भाई-बहनों का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। चौथी मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन का संचय अच्छा होता है तथा कुटुम्ब के सुख की वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है। आठवीं नीचदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष से परेशानी रहती है तथा ननसाल-पक्ष भी कमजोर रहता है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कुम्भ लग्न : द्वादशभाव : मंगल

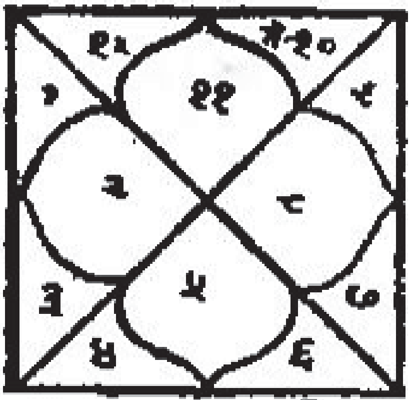

१२४१

बारहवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित उच्च के 'मंगल' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से यथेष्ट लाभ होता है। राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है। वह परदेश में रहकर उन्नति करता है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र तथा नीचदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में कमजोरी रहती है तथा ननसाल-पक्ष भी कमजोर रहता है। आठवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री से सुख मिलता है तथा व्यवसाय में भी सफलता मिलती है।

'कुम्भ' लग्न में 'बुध'

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कुम्भ लग्न : प्रथमभाव : बुध

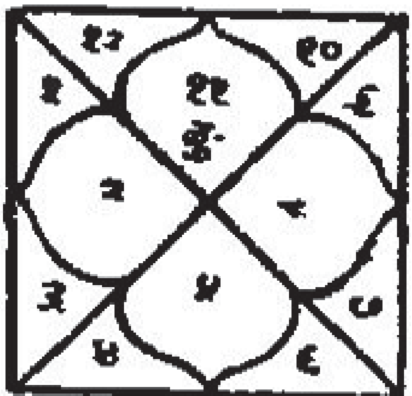

१२४२

पहले भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है, परन्तु आयु, पुरातत्त्व एवं सन्तान-पक्ष का लाभ होता है। प्रभाव तथा सम्मान में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ स्त्री-पक्ष से सुख तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ मिलता है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कुम्भ लग्न : द्वितीयभाव : बुध

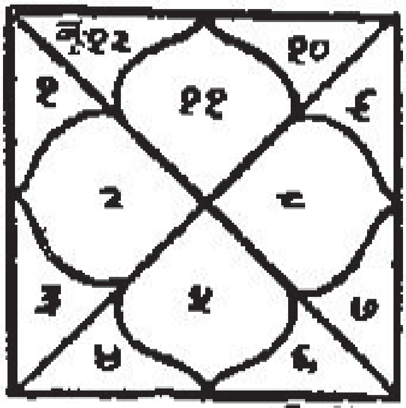

१२४३

दूसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित नीच से 'बुध' के प्रभाव से जातक धन-संचय नहीं कर पाता तथा कुटुम्ब से भी विरोध रहता है। विद्या तथा सन्तान-पक्ष कमजोर रहता है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से स्वराशि में अष्टम भाव में देखने से आयु की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु पुरातत्त्व का लाभ अधूरा रहता है। ऐसा व्यक्ति अपने विवेक तथा विद्या-बुद्धि के बल से लाभ एवं सम्मान प्राप्त करता रहता है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कुम्भ लग्न : तृतीयभाव : बुध

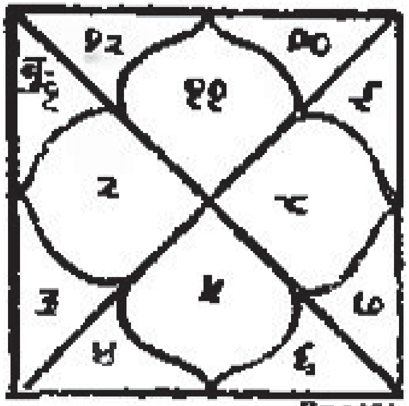

१२४४

तीसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों से कष्ट मिलता है तथा सन्तान से परेशानी रहती है। पराक्रम, विद्या तथा बुद्धि का कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। ऐसे व्यक्ति को सफलता पाने के लिए हर-क्षेत्र में संघर्ष करना पड़ता है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कुम्भलग्न : चतुर्थभाव : बुध

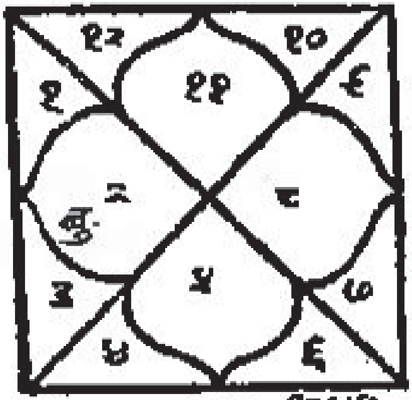

१२४५

चौथे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ भूमि, भवन का सुख प्राप्त होता है तथा माता के सुख में कमी रहती है। सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या, आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता से कारण कुछ परेशानी होती है, परन्तु राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त होती है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कुम्भलग्न : पंचमभाव : बुध

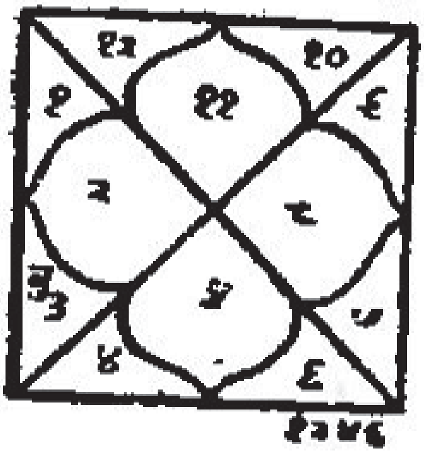

पाँचवें भाव में स्वराशि-स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में श्रेष्ठ लाभ होता है। वह बुद्धिमान्, विवेकी तथा वाणी का धनी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से विवेक-बुद्धि द्वारा आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलताएँ मिलती हैं।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कुम्भलग्न : षष्ठभाव : बुध

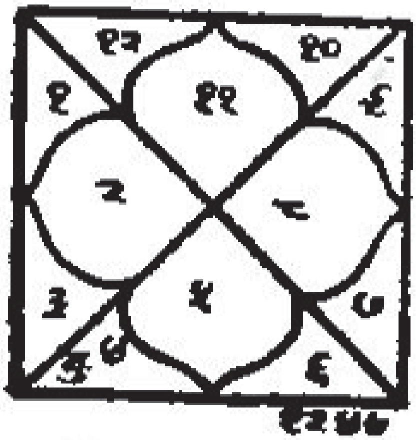

छठे भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष से अशान्ति मिलती है तथा विवेक-बुद्धि द्वारा झगड़े के मामलों में सफलता प्राप्त हो पाती है। विद्या, सन्तान, आयु तथा पुरातत्त्व के पक्ष की कमजोर पहले हैं। परेशानियाँ भी उठानी पड़ती हैं।

सातवी मित्र-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कुम्भलग्न : सप्तमभाव : बुध

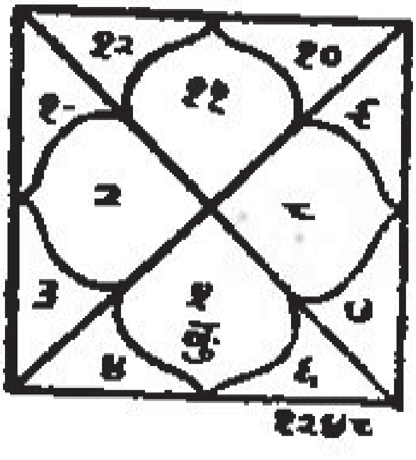

सातवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों से बाद स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष में सफलता मिलती है। विद्या-बुद्धि, आयु तथा पुरातत्त्व शक्ति का भी लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से कुछ शारीरिक परेशानियाँ तो रहती हैं, परन्तु प्रभाव एवं सम्मान की वृद्धि होती है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कुम्भलग्न : अष्टमभाव : बुध

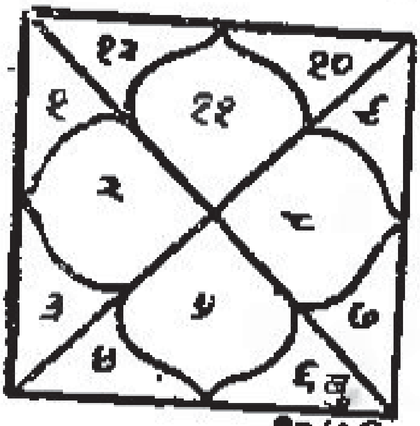

१२५९

आठवें भाव में स्वराशि-स्थित उच्च के 'बुध' के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का विशेष लाभ होता है। दैनिक जीवन प्रभावशाली रहता है। विवेक तथा वाणी की प्रचुर शक्ति मिलती है, परन्तु विद्या एवं सन्तान-पक्ष में कुछ कमी रहती है।

सातवीं नीचदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख में कठिनाइयाँ आती हैं।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कुम्भलग्न : नवमभाव : बुध

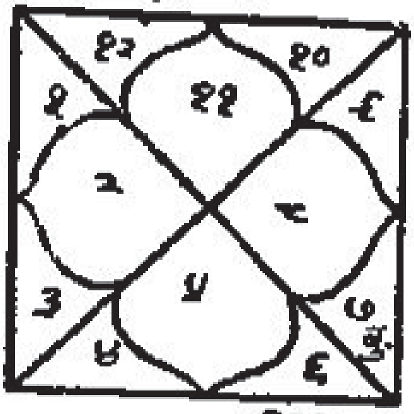

१२६०

नवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती है। सन्तान, विद्या, आयु तथा पुरातत्त्व का भी अच्छा लाभ होता है।

सातवीं मित्र दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम का कुछ त्रुटिपूर्ण लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति धनी तथा सुखी रहता है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कुम्भलग्न : दशमभाव : बुध

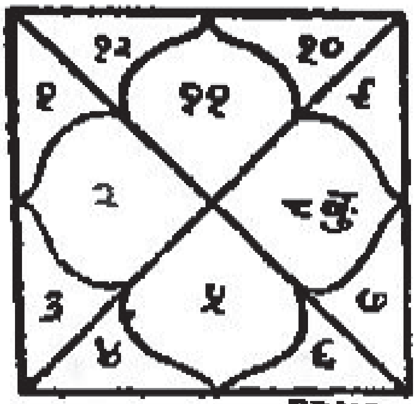

१२६१

दसवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु सन्तान, विद्या-बुद्धि, आयु तथा पुरातत्त्व का पर्याप्त लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है एवं यश तथा विवेक की वृद्धि होती है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कुम्भ लग्न : एकादशभाव : बुध

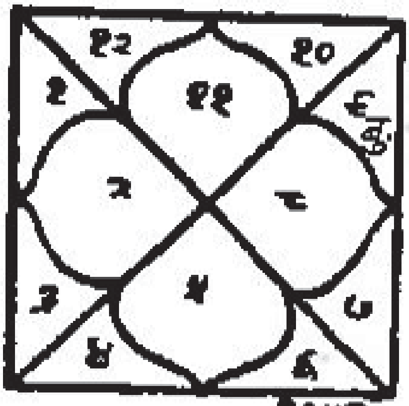

१२५२

ग्यारहवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की आमदनी खूब होती है। आयु तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। दैनिक जीवन सुख एवं आनन्दपूर्ण रहता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचम भाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कुम्भ लग्न : द्वादशभाव : बुध

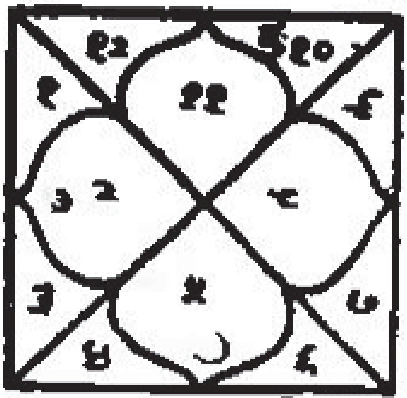

१२५३

बारहवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से कुछ लाभ भी मिलता है। आयु तथा पुरातत्त्व शक्ति को हानि होती है। सन्तान तथा विद्या-पक्ष में भी कुछ कमी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में नम्रता से काम निकालता है तथा विवेक-बुद्धि से सफलता प्राप्त करता है।

'कुम्भ' लग्न में 'गुरु'

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कुम्भ लग्न : प्रथमभाव : बुध

१२५४

पहले भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को शारीरिक शक्ति, सम्मान तथा प्रभाव की प्राप्ति होती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है।

पाँचवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष की उन्नति होती है। नवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति भी होती है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कुम्भ लग्न : द्वितीयभाव : गुरु

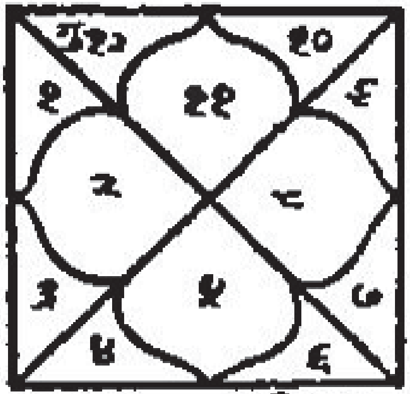

दूसरे भाव में स्वराशि-स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का पर्याप्त सुख मिलता है। पाँचवीं मित्र तथा उच्च-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। झगड़े के मामलों से लाभ मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। नवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से राज्य, पिता, व्यवसाय के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिलती है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कुम्भ लग्न : तृतीयभाव : गुरु

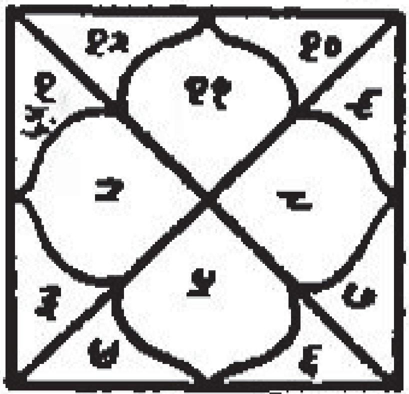

तीसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा धन एवं कौटुम्बिक सुख का पर्याप्त लाभ होता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री सुन्दर मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय में लाभ होता रहता है। ससुराल से भी लाभ होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने से कुछ रुकावटों के साथ भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में एकादश भाव को देखने से आमदनी बहुत अच्छी रहती है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कुम्भ लग्न : चतुर्थभाव : गुरु

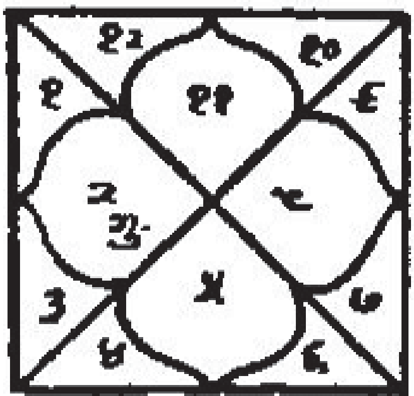

चौथे भाव में सामान्य शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' से प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी रहती है, परन्तु माता से लाभ भी होता है। भूमि तथा भवन का अच्छा सुख मिलता है। धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। नवीं नीचदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से उसका खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से भी परेशानी होती है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कुम्भ लग्न : पञ्चमभाव : गुरु

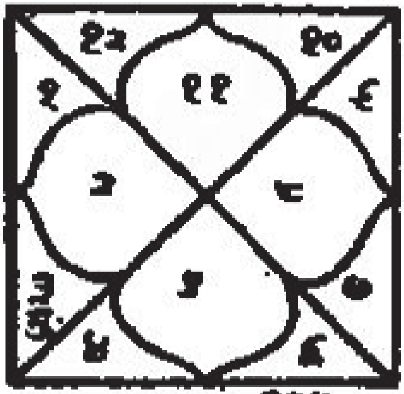

१२४८

पाँचवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का यथेष्ट लाभ होता है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी पर्याप्त मिलता है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में एकादशभाव को देखने से धन की आमदनी अच्छी रहती है। नवीं शत्रु-दृष्टि में प्रथम भाव को देखने से शारीरिक प्रभाव में वृद्धि होती है तथा यश, मान एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कुम्भ लग्न : षष्ठभाव : गुरु

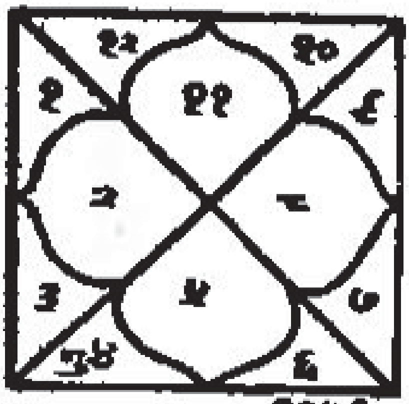

१२४९

छठे भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर बहुत प्रभाव रखता है तथा झगड़ों से लाभ उठाता है। ननसाल-पक्ष उन्नत होता है। कुटुम्ब से कुछ संकट रहता है तथा धन-संचय में भी कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। पाँचवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय से पर्याप्त लाभ होता है।

सातवीं नीचदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से परेशानी रहती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीयभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कुम्भ लग्न : सप्तमभाव : बुध

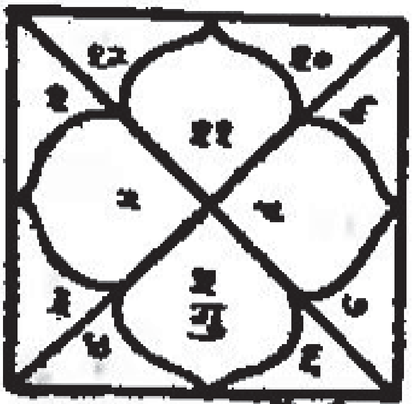

१२५०

सातवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है तथा स्त्री-पक्ष से धन एवं सुख की प्राप्ति होती है। व्यवसाय से खूब लाभ होता है। धन तथा कुटुम्ब का सुख बना रहता है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में एकादश भाव को देखने से आमदनी खूब रहती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है, परन्तु सम्मान एवं प्रभाव की वृद्धि होती है। नवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम बढ़ता है तथा भाई-बहिन के सुख में भी वृद्धि होती है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कुम्भलग्न : अष्टमभाव : गुरु

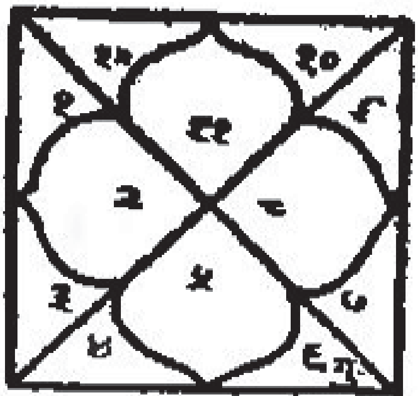

२२६१

आठवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। संचित धन की हानि तथा कौटुम्बिक सुख में कमी का योग भी बनता है। पाँचवीं नीच तथा शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से परेशानी रहती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने से विशेष परिश्रम द्वारा धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है। नवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता के सुख में कमी आती है तथा भूमि एवं भवन का भी सामान्य सुख ही मिलता है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कुम्भलग्न : नवमभाव : गुरु

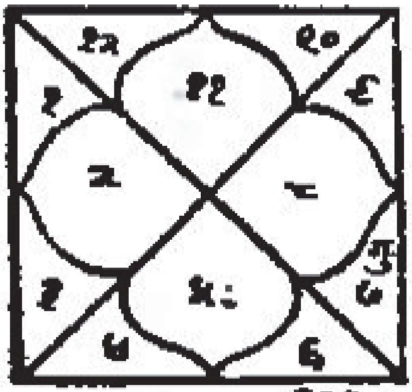

२२६२

नवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के भाग्य की विशेष वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। कुटुम्ब तथा धन का सुख भी पर्याप्त मिलता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक प्रभाव की वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। नवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि एवं सन्तान का श्रेष्ठ लाभ होता है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कुम्भलग्न : दशमभाव : गुरु

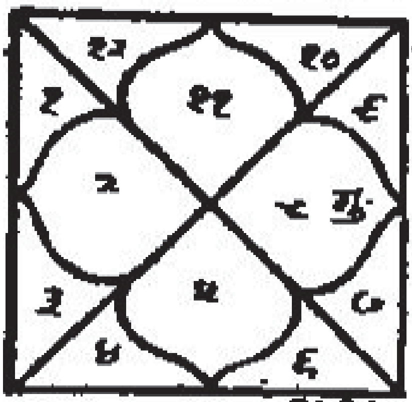

२२६३

दसवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में यथेष्ट सफलताएँ मिलती हैं। वह ठाठ का जीवन बिताता है तथा भाग्यशाली माना जाता है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का यथेष्ट सुख मिलता है। नवीं उच्चदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर अत्यन्त प्रभाव रहता है तथा झगड़े के मामलों से लाभ होता है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कुम्भ लग्न : एकादशभाव : गुरु

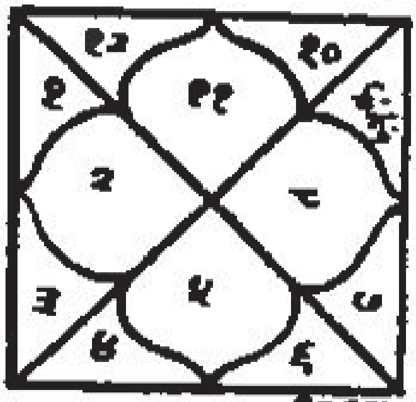

१२६४

ग्यारहवें भाव में स्वराशि में स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की आमदनी में पर्याप्त वृद्धि होती है। कभी-कभी आकस्मिक लाभ भी होता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान तथा विद्या, बुद्धि के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। नवी मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री का पूर्ण सुख तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता की उपलब्धि होती है।'

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कुम्भ लग्न : द्वादशभाव : गुरु

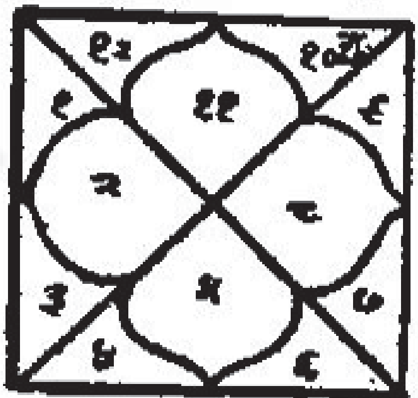

१२६५

बारहवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से परेशानी रहती है। संचित धन नष्ट हो जाता है। कुटुम्ब में भी अशान्ति रहती है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है तथा झगड़ों से लाभ होता है। नवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व शक्ति की वृद्धि होती है।

'कुम्भ' लग्न में 'शुक्र'

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कुम्भ लग्न : प्रथमभाव : शुक्र

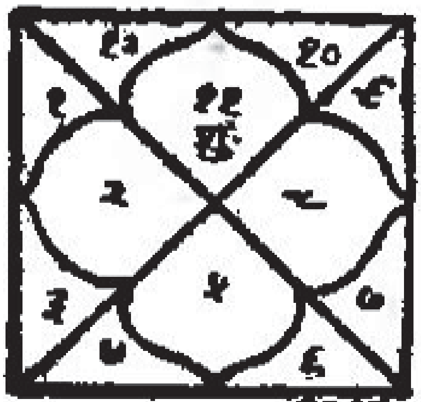

१२६६

पहले भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को शारीरिक सुख, सौन्दर्य तथा प्रभाव की प्राप्ति होती है। माता, भूमि, भवन का सुख मिलता है तथा भाग्य एवं धर्म का पक्ष भी प्रबल बना रहता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री-पक्ष से तो सुख मिलता है परन्तु व्यवसाय-पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कुम्भ लग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

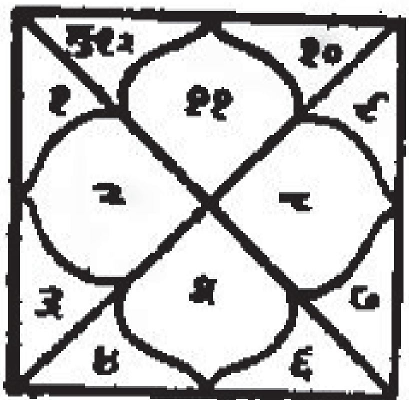

१२५७

दूसरे भाव में सामान्य मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का विशेष सुख मिलता है। माता, भूमि तथा भवन के सुख का भी अत्यधिक लाभ होता है। वह बड़ा धनी, यशस्वी तथा प्रतिष्ठित होता है।

सातवीं मित्र तथा नीचदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्व की शक्ति में कुछ कमी आती है तथा दैनिक जीवन में भी कुछ चिन्ताएँ बनी रहती हैं।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कुम्भ लग्न : तृतीयभाव : शुक्र

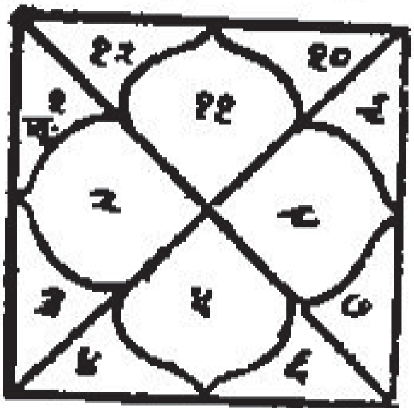

१२५८

तीसरे भाव में सामान्य मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में नवम भाव को देखने से भाग्य की अत्यधिक उन्नति होती है तथा धर्म का भी यथाविधि पालन होता है।

ऐसा व्यक्ति पराक्रमी, धनी, सुखी तथा धर्मात्मा होता है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कुम्भ लग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

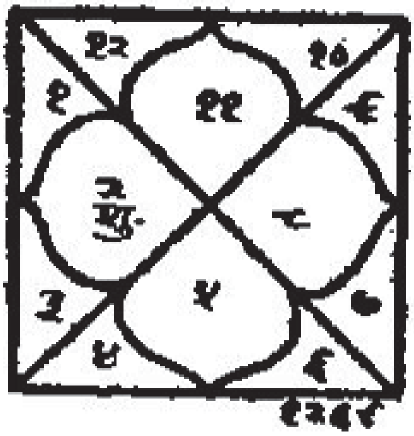

१२५९

चौथे भाव में स्वराशि स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। भाग्य तथा धर्म की उन्नति भी होती रहती है।

सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं। ऐसा व्यक्ति सुखी तथा भाग्यवान् होता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कुम्भलग्न : पंचमभाव : शुक्र

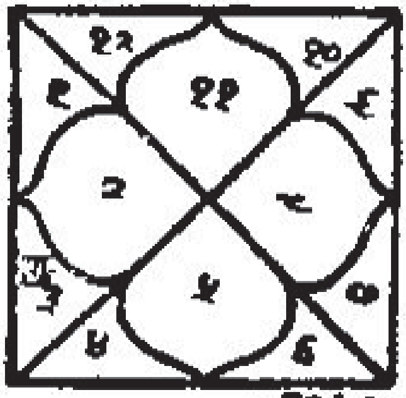

१२७०

पाँचवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। उसे माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है तथा भाग्य की निरन्तर वृद्धि होती रहती है।

सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से चतुराई के बल पर लाभ खूब होता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कुम्भलग्न : षष्ठभाव : शुक्र

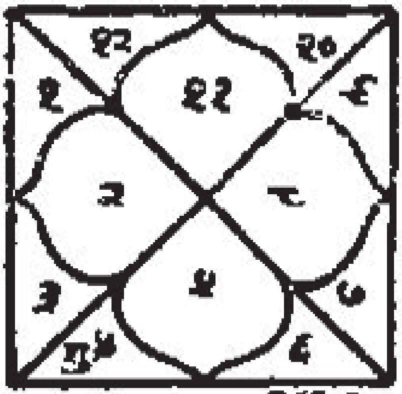

१२७१

छठे भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर सफलता पाता है तथा झगड़ों से लाभ उठाता है। माता के सुख में कमी आती है। मातृभूमि से दूर भी रहना पड़ सकता है। भूमि, भवन, भाग्य तथा धर्म का पक्ष भी दुर्बल रहता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से उसे सफलता मिलती है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कुम्भलग्न : सप्तमभाव : शुक्र

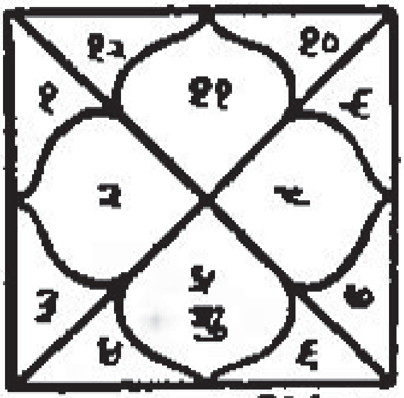

१२७२

सातवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कुछ असंतोष युक्त सुख मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक परिश्रम करने पर सफलता मिलती है। माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख मिलता है। धर्म तथा भाग्य की उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, सुख, सम्मान तथा प्रभाव की वृद्धि होती है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कुम्भलग्न : अष्टमभाव : शुक्र

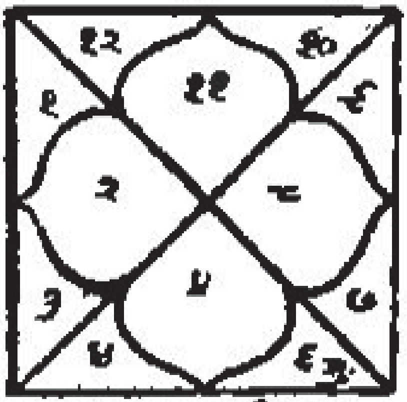

१२७३

आठवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक के जीवन में अशान्ति रहती है। आयु तथा पुरातत्त्व के सुख में कमी आती है। भूमि, भवन तथा माता के सुख में भी बड़ी कमजोरी रहती है।

सातवीं उच्च तथा सामान्य मित्र-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख की परिश्रम द्वारा उन्नति होती है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कुम्भलग्न : नवमभाव : शुक्र

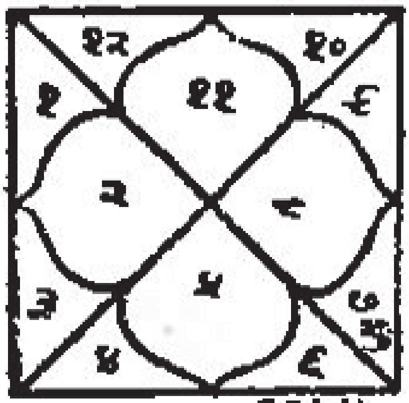

१२७४

नवें भाव में स्वराशि स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के भाग्य की अत्यधिक वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन भी यथाविधि होता है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी पर्याप्त मिलता है।

सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी श्रेष्ठ रहता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कुम्भलग्न : दशमभाव : शुक्र

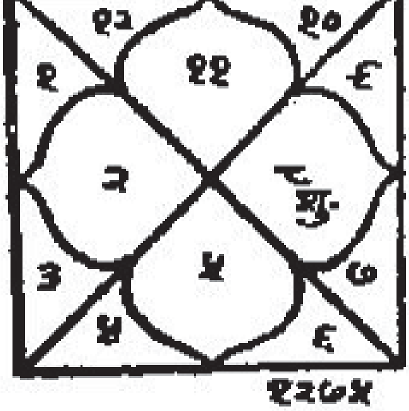

१२७५

दसवें भाव में सामान्य मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में पर्याप्त सफलताएँ मिलती हैं। वह धर्मात्मा, यशस्वी तथा प्रतिष्ठित भी होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कुम्भलग्न : एकादशभाव : शुक्र

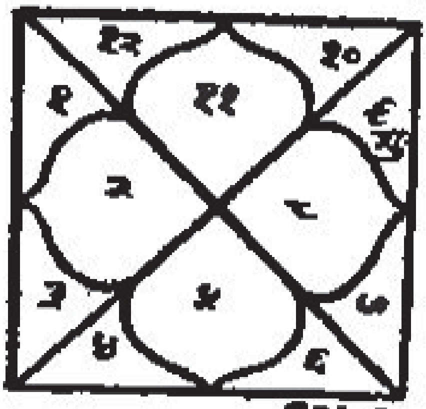

१२७६

ग्यारहवें भाव में सामान्य मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की आमदनी में यथेष्ट वृद्धि होती है। वह धनी, न्यायी, चतुर, धार्मिक तथा यशस्वी भी होता है एवं माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख भी मिलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान-पक्ष से भी सुख मिलता है तथा विद्या-बुद्धि की अच्छी उन्नति होती है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कुम्भलग्न : द्वादशभाव : शुक्र

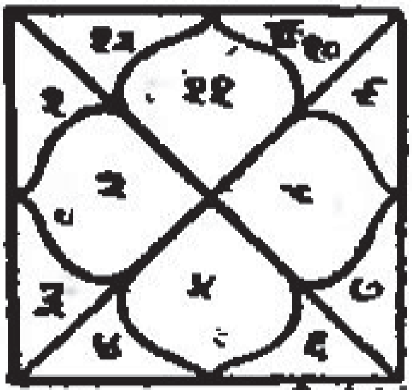

१२७७

बारहवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से लाभ भी मिलता है। धर्म का पालन भी करता है। अल्पायु में ही माता-पिता का वियोग हो जाता है। यश में भी कमी रहती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से अपनी चतुराई के बल से शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा झगड़ों से लाभ होता है।

'कुम्भ' लग्न में 'शनि'

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कुम्भलग्न : प्रथमभाव : शनि

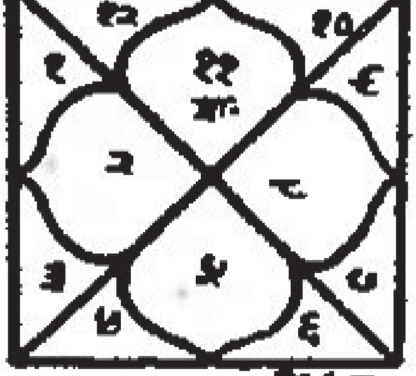

१२७८

पहले भाव में स्वराशि-स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। वह यशस्वी तथा ऐश्वर्यशाली जीवन बिताने वाला होता है। तीसरी नीच-दृष्टि से तृतीय भाव से देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में कमी आती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री-पक्ष से असन्तोष रहता है तथा दैनिक व्यवसाय में परेशानी रहती है।

दसवीं शत्रु-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयां बनी रहती हैं।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कुम्भलग्न : द्वितीयभाव : शनि

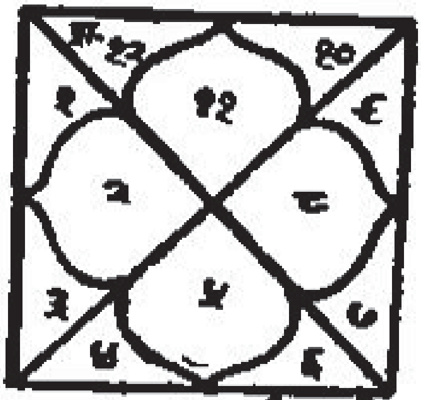

१२७९

दूसरे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को धन-संचय के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है, परन्तु धन तथा कुटुम्ब के सुख में कमी आती है। खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानोंसे प्रतिष्ठा मिलती है। शारीरिक सौन्दर्य में कमी रहती है। तीसरी मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख मिलता है, पर घरेलू सुख में कुछ कमी रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से एकदश भाव को देखने से आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कुम्भलग्न : तृतीयभाव : शनि

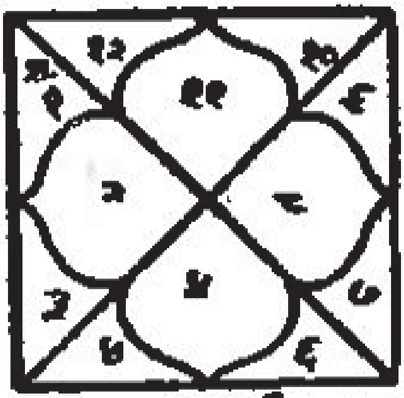

१२८०

तीसरे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में कमी आती है तथा भाई-बहिनों से कष्ट मिलता है। शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में भी कमी रहती है। तीसरी मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के सुख में वृद्धि होती है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव को देखने से खर्च की परेशानी रहती है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ मिलता रहता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कुम्भलग्न : चतुर्थभाव : शनि

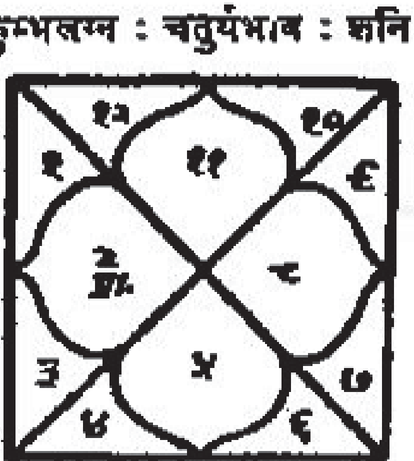

१२८१

चौथे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन का अपूर्व सुख मिलता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से अपनी शारीरिक शक्ति एवं बाहरी सुरक्षा के कारण शत्रु-पक्ष से रक्षा प्राप्त होती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में परेशानी रहती है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कुम्भलग्न : पंचमभाव : शनि

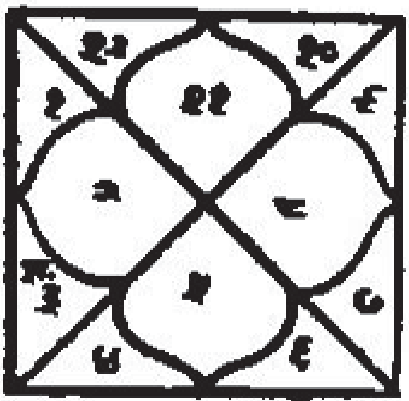

१२८२

पाँचवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति चिन्ता-मुक्त रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ भी उठाता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों का अनुभव होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से एकदश भाव को देखने से आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं। दसवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने धन तथा कुटुम्ब के बारे में चिन्तित रहना पड़ता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कुम्भलग्न : षष्ठभाव : शनि

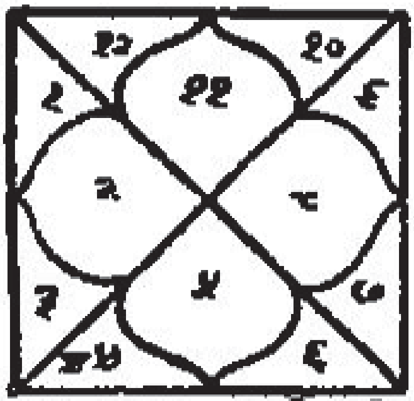

१२८३

छठे भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा अपने प्रभाव की वृद्धि करता है तथा शत्रुओं पर विजय पाता है। शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है। तीसरी मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्व शक्ति की वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। दसवीं नीचदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी आती है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कुंभलग्न : सप्तमभाव : शनि

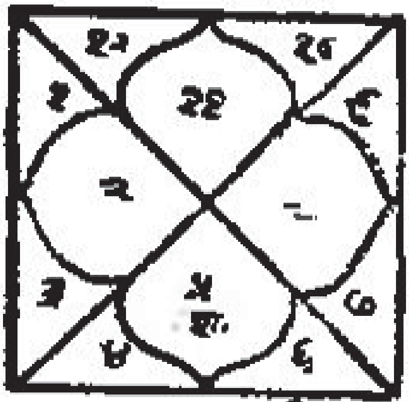

१२८४

सातवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से परेशानी रहती है तथा व्यवसाय में कठिनाइयाँ आती हैं। खर्च अधिक रहता है। तीसरी उच्च तथा मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, यश, सम्मान तथा प्रभाव की वृद्धि होती है। दसवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कुम्भलग्न : अष्टमभाव : शनि

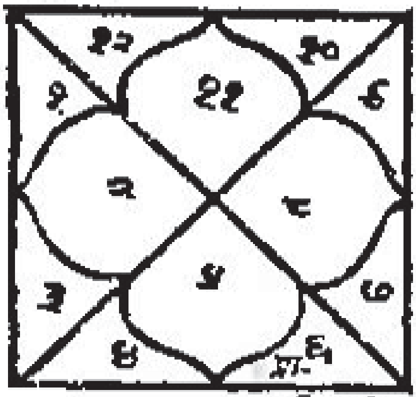

१२८५

आठवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है, परन्तु पुरातत्त्व की कुछ हानि होती है। शरीर तथा खर्च के विषय में कठिनाइयां आती हैं। बाहरी स्थानों से भी लाभ होता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय-क्षेत्र की उन्नति में बाधाएं आती हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख त्रुटि-पूर्ण रहता है। दसवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या-बुद्धि का कुछ कमी के साथ लाभ होता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कुंभलग्न : नवमभाव : शनि

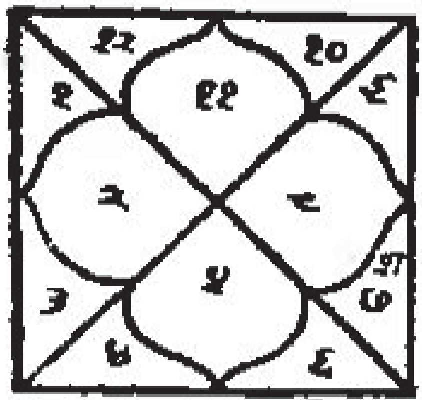

१२८६

नवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित उच्च के शनि के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की यथेष्ट उन्नति होती है। शरीर सुन्दर तथा स्वस्थ रहता है। बाहरी सम्बन्धों से लाभ मिलता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। कभी-कभी आकस्मिक लाभ होता है।

सातवीं नीच दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में कमी आती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित करने के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कुम्भलग्न : दशमभाव : शनि

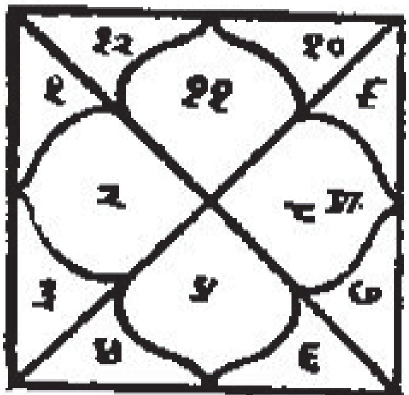

१२८७

दसवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शनि के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख मिलता है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री-पक्ष से असंतोष रहता है तथा दैनिक आमदनी में कठिनाइयां आती हैं।

'कुंभ' लग्न की कुंडली में 'एकादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कुम्भलग्न : एकादशभाव : शनि

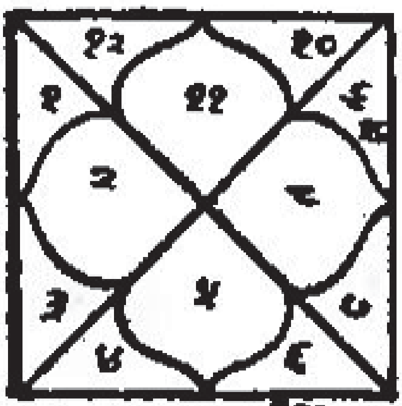

६८८

ग्यारवें भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। खर्च खूब रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ भी मिलता है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव तथा यश की वृद्धि होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि की पर्याप्त वृद्धि होती है तथा सन्तान-पक्ष का कुछ त्रुटिपूर्ण लाभ होता है।

दसवीं मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। ऐसे व्यक्ति का जीवन से खर्च पूर्ण रहता है।

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कुम्भलग्न : द्वादशभाव : शनि

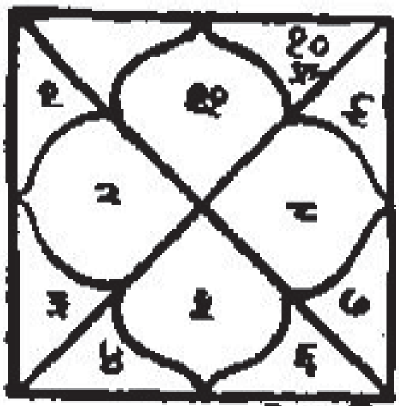

६८९

बारहवें भाव में स्वराशि स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से विशेष लाभ होता है। यात्राएं भी करनी पड़ती हैं। तीसरी शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख की वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष से कुछ परेशानी रहती है, परन्तु बाद में उस पर प्रभाव स्थापित होता है। दसवीं मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने से धर्म का पालन होता है तथा भाग्य की वृद्धि होती रहती है।

'कुम्भ' लग्न में 'राहु'

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कुम्भलग्न : प्रथमभाव : राहु

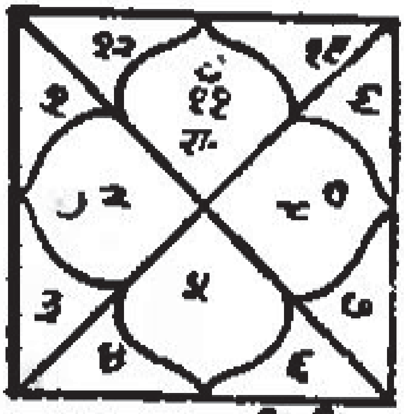

६९०

पहले भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शरीर में कहीं चोट लगती है तथा स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य में कमी रहती है। वह गुप्त चिन्ताओं से ग्रस्त रहता है, परन्तु मस्तिष्क की शक्ति से प्रभाव भी स्थापित करता है।

'कुम्भ' लग्न की कुंडली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कुम्भलग्न : द्वितीयभाव : राहु

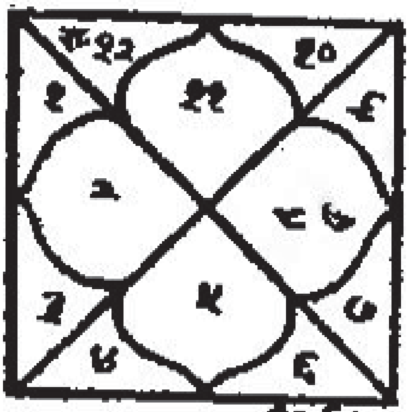

६२६१

दूसरे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक से धन तथा कुटुम्ब के सुख में कमी आती है। कभी-कभी घोर आर्थिक संकटों का शिकार भी बनना पड़ता है। बाद में वह अपनी गुप्त युक्तियों तथा परिश्रम के बल पर धन-संचय करता है तथा धनी एवं भाग्यवान समझा जाता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती होता है।

'कुंभ' लग्न की कुंडली में 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कुम्भलग्न : तृतीयभाव : राहु

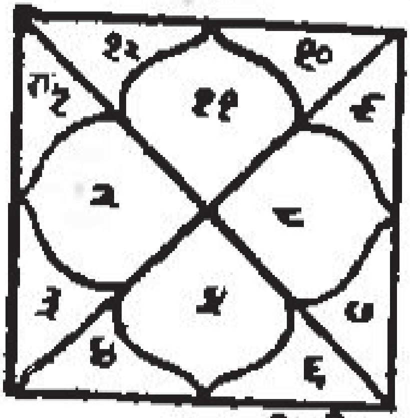

६२६२

तीसरे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से विरोध रहता है।

ऐसा व्यक्ति अपनी चतुराई तथा गुप्त युक्तियों के बल पर सफलता एवं सुख के साधन प्राप्त करता है और समाज में सम्मानपूर्ण स्थान बनाता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कुम्भलग्न : चतुर्थभाव : राहु

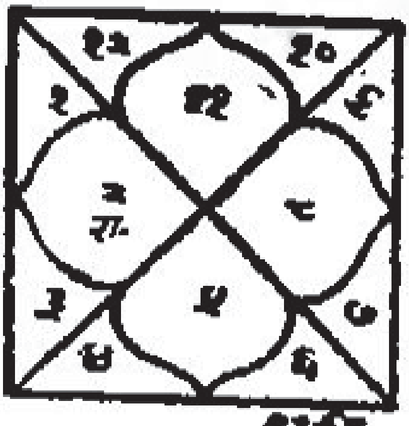

६२६३

चौथेभाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को माता-पक्ष से बहुत कष्ट होता है। घरेलू जीवन अशान्तिपूर्ण रहता है। भूमि तथा भवन के सुख में भी कमी आती है। परन्तु अनेक संघर्षों से जूझने के बाद वह पर्याप्त सफलता भी प्राप्त करता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कुम्भलग्न : पंचमभाव : राहु

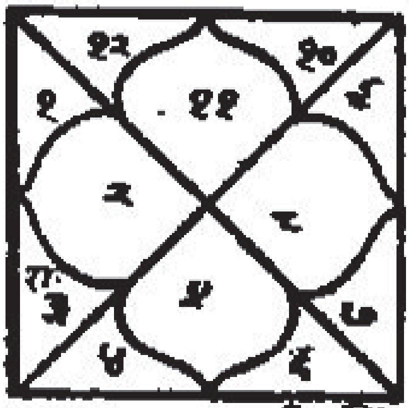

१२६४

पाँचवें भाव के मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक की सन्तान-पक्ष से पहले कुछ कष्ट होता है, बाद में सुख मिलता है। विद्या तथा बुद्धि का विशेष लाभ होता है।

वह अपनी भीतरी कमजोरी छिपाने में चतुर, प्रभावशाली, मधुर-भाषी तथा चतुर होता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कुम्भलग्न : षष्ठभाव : राहु

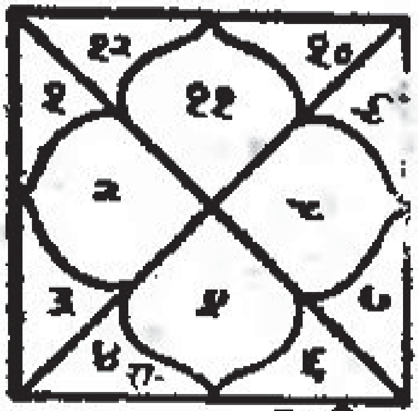

१२६५

छठे भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर भारी प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट आदि के मामलों में बुद्धि-बल से सफलता पाता है।

भीतरी रूप से परेशान रहने पर भी वह धैर्य तथा साहस को नहीं छोड़ता और अन्त में सभी कठिनाइयों पर विजय पा लेता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कुम्भलग्न : सप्तमभाव : राहु

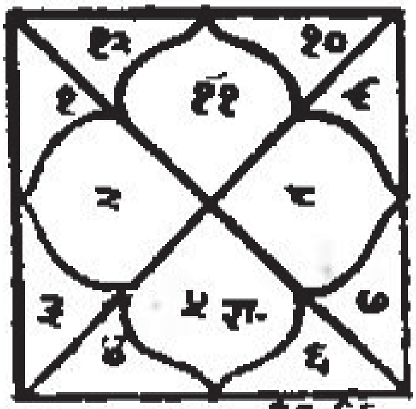

१२६६

सातवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से बहुत कष्ट होता है तथा दैनिक आमदनी के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु अन्त, में वह अपने धैर्य, हिम्मत तथा परिश्रम के बल पर सभी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर लेता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कुम्भ लग्न : अष्टमभाव : राहु

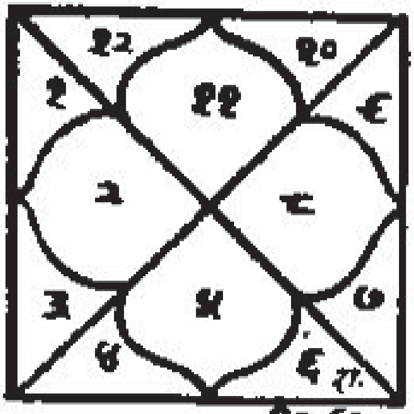

१२६७

आठवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के जीवन पर अनेक संकट आते हैं तथा पुरातत्त्व की हानि भी होती है। पेट के निम्न भाग में विकार रहता है, फिर भी वह लम्बी आयु पाता है तथा स्वविवेक एवं बुद्धि के बल पर जीवन को प्रभावशाली ढंग से व्यतीत करता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कुम्भ लग्न : नवमभाव : राहु

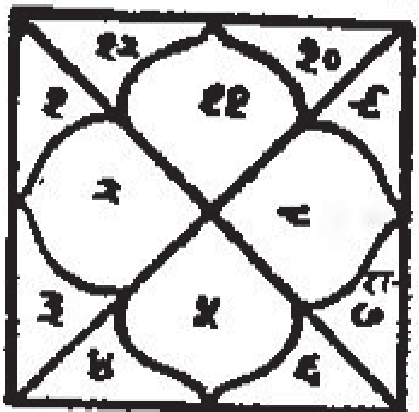

१२६८

नवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में बाधाएँ आती हैं तथा धर्म का पालन भी यथोचित नहीं होता, परन्तु अन्त में अपने बुद्धि-चातुर्य के बल पर वह सभी कठिनाइयों पर विजय पाकर उन्नति करता है तथा अपनी कमजोरियों को प्रकट नहीं होने देता।

'कुंभ' लग्न की कुंडली में 'दशमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कुम्भ लग्न : दशमभाव : राहु

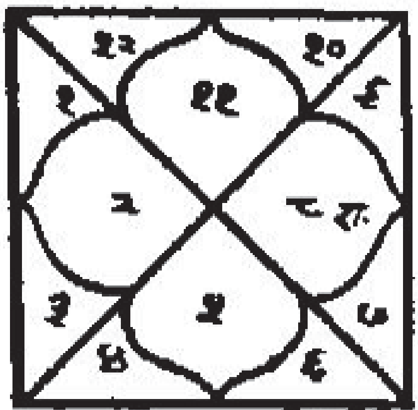

१२६९

दसवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को पिता से कष्ट, राज्य से परेशानी तथा व्यवसाय में हानि का शिकार होना पड़ता है। परन्तु वह अपने परिश्रम तथा युक्ति-बल द्वारा कठिनाइयों से संघर्ष करते हुए अन्त में सफलता भी पा लेता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कुम्भ लग्न : एकादशभाव : राहु

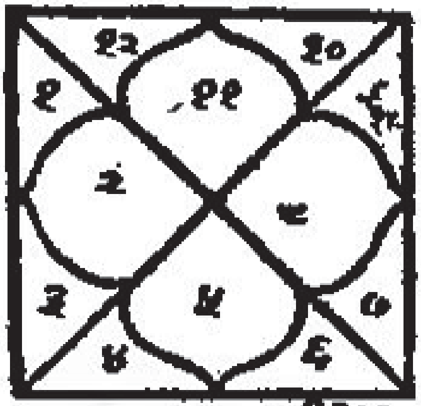

२३००

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित नीच के 'राहु' के प्रभाव से जातक की आमदनी के मार्ग में बड़ी कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु वह अपने युक्ति-बल से उन पर थोड़ी-बहुत विजय पा लेता है और अपनी कठिनाइयों को किसी पर प्रकट भी नहीं होने देता।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कुम्भ लग्न : द्वादशभाव : राहु

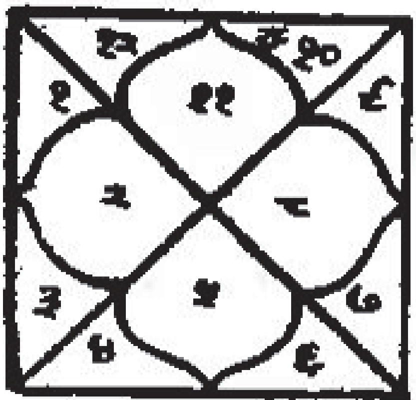

२३०१

बारहवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को खर्च के बारे में बड़ी कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में उसे कुछ लाभ भी होता है। अपना खर्च चलाने के लिए उसे कठोर परिश्रम करना पड़ता है।

'कुम्भ' लग्न में 'केतु'

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कुम्भ लग्न : प्रथमभाव : केतु

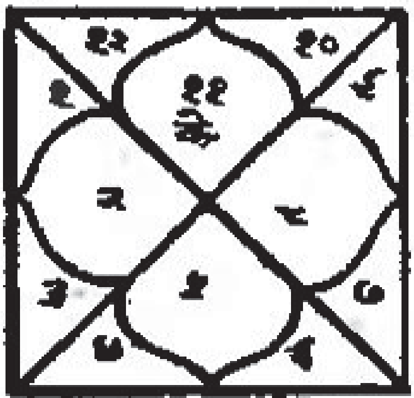

२३०२

पहले भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के शरीर में कहीं चोट या घाव का निशान बनता है तथा शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, धैर्यवान्, गुप्त-युक्ति-सम्पन्न तथा परिश्रमी होता है और इन्हीं गुणों के आधार पर सम्मान भी प्राप्त करता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कुम्भ लग्न : द्वितीयभाव : केतु

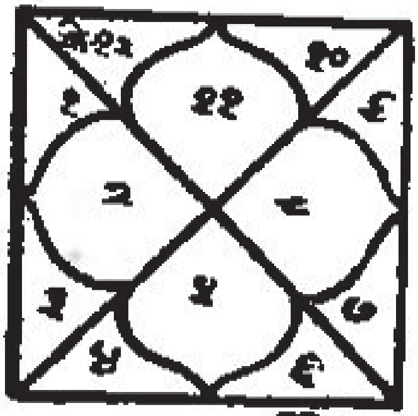

१२०३

दूसरे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के सुख के विषय में कष्ट उठाना पड़ता है। कुटुम्ब में नित-नये उपद्रव होते रहते हैं। वह बड़े धैर्य, परिश्रम तथा न्याय-मार्ग से धन कमाने का प्रयत्न करता है और अन्त में कुछ सफलता भी पा लेता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कुम्भ लग्न : तृतीयभाव : केतु

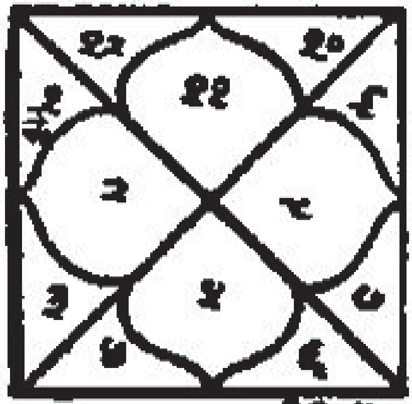

१२०४

तीसरे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों के सुख में कमी आती है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, धैर्यवान्, परिश्रमी, उद्योगी तथा गुप्त युक्तियों वाला होता है तथा इन्हीं गुणों के बल पर अन्त में जीवन को उन्नत भी बनाता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कुम्भ लग्न : चतुर्थभाव : केतु

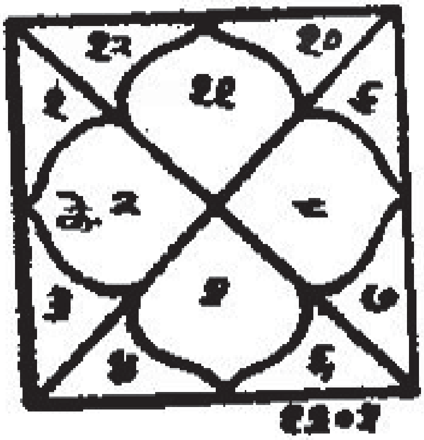

१२०५

चौथे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को माता के सुख में हानि या कमी रहती है। मातृभूमि से वियोग भी होता है। भूमि तथा भवन के सुख में भी कमी आती है। परन्तु बाद में वह अपनी गुप्त युक्तियों के बल पर इन कमियों को दूर करने में थोड़ी-बहुत सफलता पा लेता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कुम्भ लग्न : पंचमभाव : केतु

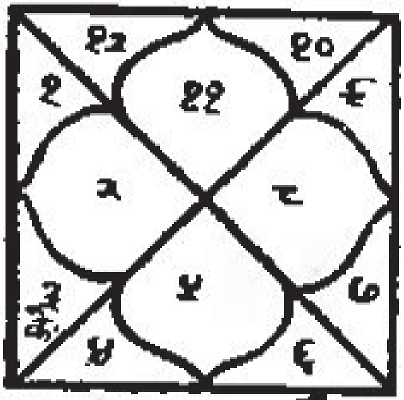

१२०८

पाँचवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को सन्तान का सुख पाने के लिए कष्ट-साध्य प्रयत्नों तथा गुप्त युक्तियों का सहारा लेना पड़ता है, फिर भी अल्प सुख ही प्राप्त होता है।

विद्याध्ययन के क्षेत्र में भी बड़ी कठिनाइयाँ आती हैं। मस्तिष्क में अशान्ति रहती है तथा शील एवं विवेक भी कम होता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कुम्भ लग्न : षष्ठभाव : केतु

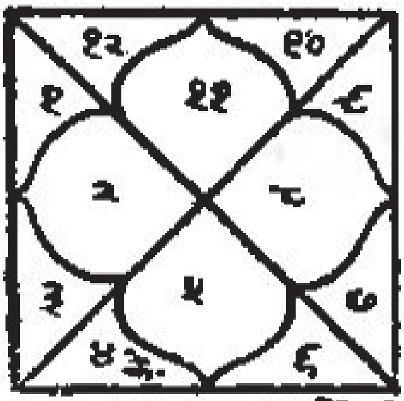

१२०९

छठे भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को शत्रुओं द्वारा अशान्ति मिलती है, परन्तु वह उन पर अपना प्रभाव स्थापित करने तथा विजय पाने में भी सफल हो जाता है।

ऐसा व्यक्ति मन में भयभीत रहने पर भी प्रकट रूप में बड़ा हिम्मती तथा बहादुर होता है। वह धैर्यवान्, कठोर परिश्रमी तथा गुप्त युक्तियों का जानकार होता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कुम्भ लग्न : सप्तमभाव : केतु

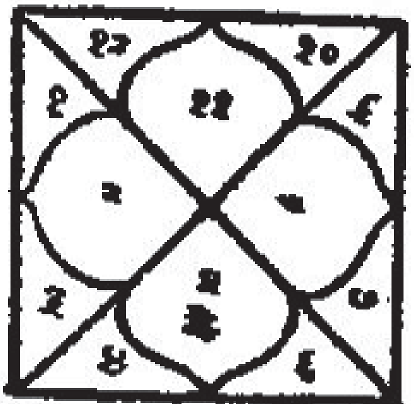

[illegible]

सातवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से विशेष कष्ट मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में संकटों का सामना करना पड़ता है। उसकी जननेन्द्रिय में विकार भी होता है। अन्त में, वह अपने परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर सामान्य सफलताएँ भी पा लेता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कुम्भ लग्न : अष्टमभाव : केतु

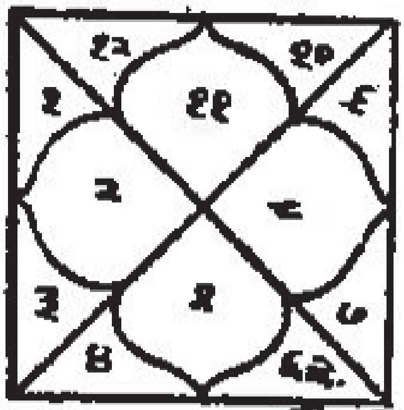

१२०९

आठवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि तो होती है, परन्तु कई बार उसे मृत्यु-तुल्य कष्टों का सामना भी करना पड़ता है। पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है तथा कई बार हानियाँ भी उठानी पड़ती हैं। अन्त में वह अपनी गुप्त युक्तियों के बल पर कठिनाइयों को दूर करने में सफल भी हो जाता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कुम्भ लग्न : नवमभाव : केतु

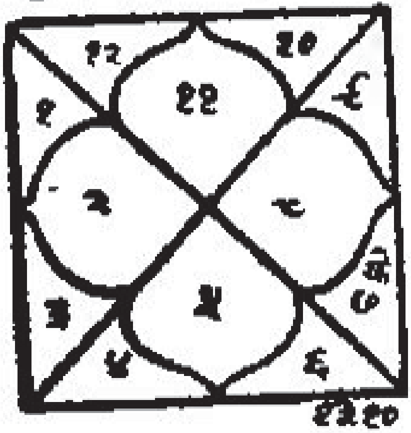

१२१०

नवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में बाधाएँ आती हैं, धर्म की भी विशेष उन्नति नहीं हो पाती। परन्तु वह अपनी गुप्त युक्तियों, धैर्य एवं परिश्रम के बल पर भाग्य की उन्नति करता है और लगातार असफलताएँ मिलने पर भी कभी निराश नहीं होता।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कुम्भ लग्न : दशमभाव : केतु

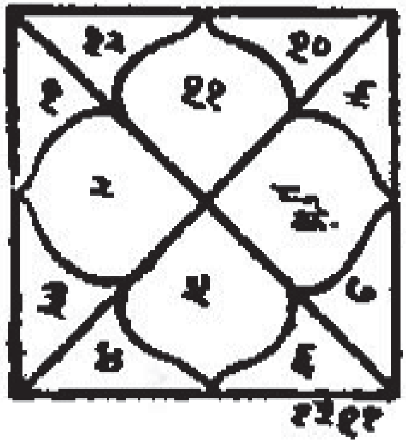

१२११

दसवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को अपने पिता से बहुत कष्ट मिलता है, राज्य से परेशानी तथा व्यवसाय के क्षेत्र में हानि होती है, फिर भी वह अपने धैर्य, साहस तथा युक्ति-बल से असफलताओं पर विजय प्राप्त करके ही रहता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कुम्भलग्न : एकादशभाव : केतु

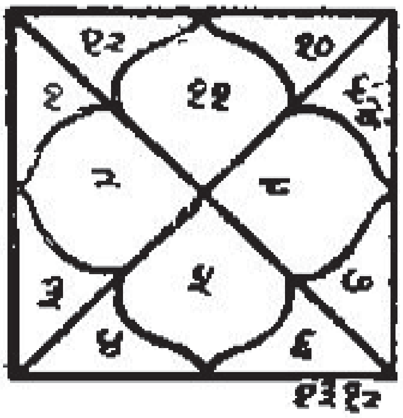

ग्यारहवें भाव में सामान्य मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है तथा कभी-कभी आकस्मिक रूप से भी धन लाभ होता है। कभी कठिनाइयां आने पर भी धैर्य नहीं छोड़ता।

ऐसा व्यक्ति अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहता है तथा न्याय-मार्ग से अत्यधिक धन कमाता और सुखी रहता है।

'कुंभ' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कुम्भलग्न : द्वादशभाव : केतु

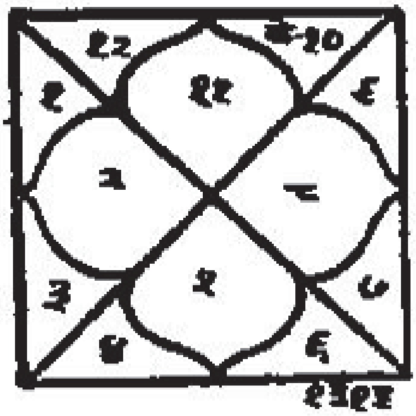

बारहवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण परेशानी का अनुभव होता है, परन्तु वह अपनी गुप्त युक्तियों से उन पर विजय पाता है तथा निराशाओं में डूब जाने पर भी कभी हिम्मत नहीं हारता। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता रहता है।

'मीन' लग्न

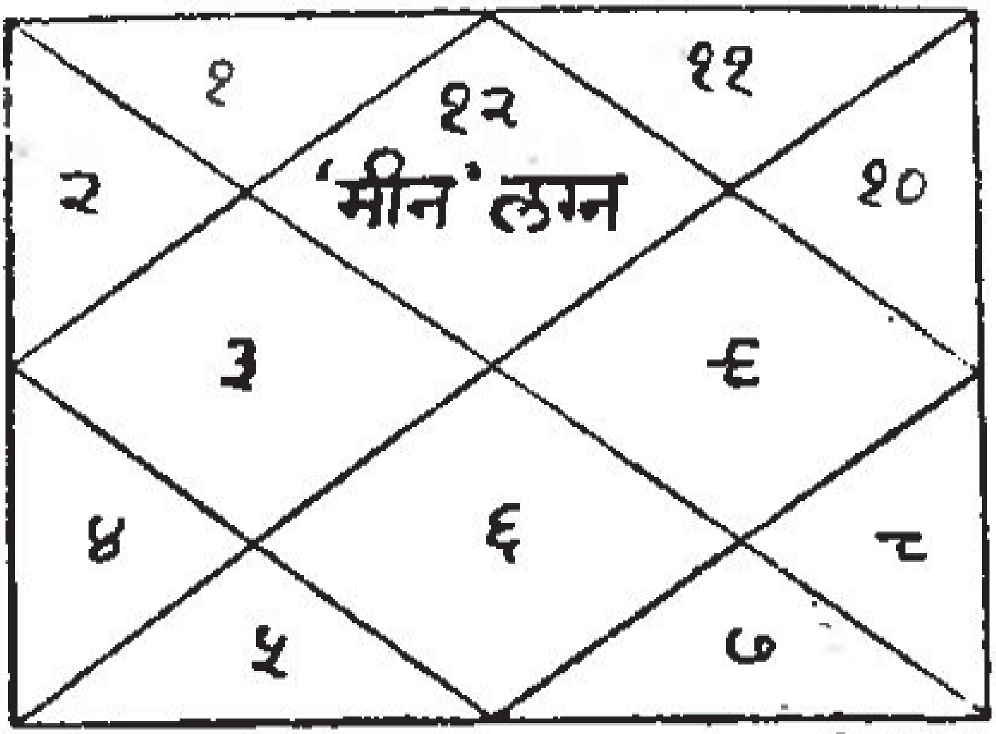

१३१४

['मीन' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'मीन' लग्न का फलादेश

'मीन' लग्न में जन्म लेने वाला जातक सामान्य कद का, बड़ी आँखों वाला तथा बड़े मस्तिष्क वाला होता है। उसकी ठोढ़ी में गड्ढा होता है।

ऐसा व्यक्ति मित्र प्रकृति वाला, सतोगुणी, प्रचण्ड, विनम्र, चतुर, चंचल, धूर्त, आलसी, रोगी, अल्पभोजी, श्रेष्ठ पण्डित, यशस्वी, सुरतिवान्, स्त्री-प्रिय, जल-क्रीड़ा करने में कुशल, बहु-सन्ततिवान् तथा श्रेष्ठ रत्नाभूषणों को धारण करने वाला होता है।

'मीन' लग्न वाले जातक की प्रारम्भिक अवस्था सामान्य ढंग से व्यतीत होती है, मध्यमावस्था में वह दुःखी रहता है तथा अन्तिम अवस्था में सुख भोगता है।

'मीन' लग्न वाले जातक का भाग्योदय २१-२२ वर्ष की आयु में होता है।

'मीन' लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या १३१५ से १४२२ के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

'मीन' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१—'मीन' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३१५ से १३२६ के बीच देखना चाहिए।

२—'मीन' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'सूर्य'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १३१५
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १३१६
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १३१७
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १३१८
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १३१९
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १३२०
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १३२१
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १३२२
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १३२३
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १३२४
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १३२५
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १३२६

'मीन' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१—'मीन' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३२७ से १३३८ के बीच देखना चाहिए।

२—'मीन' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दिन 'चन्द्रमा'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १३२७
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १३२८
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १३२९
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १३३०
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १३३१
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १३३२
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १३३३
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १३३४
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १३३५
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १३३६
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १३३७
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १३३८

'मीन' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१—'मीन' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी फलादेश संख्या उदाहरण-कुण्डली १३३९ से १३५० के बीच देखना चाहिए।

२—'मीन' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मंगल'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १३३९
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १३४०
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १३४१
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १३४२
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १३४३
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १३४४
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १३४५
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १३४६
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १३४७
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १३४८
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १३४९
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १३५०

'मीन' लग्न में 'बुध' का फलादेश

१—'मीन' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३५१ से १३६२ के बीच देखना चाहिए।

२—'मीन' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'बुध'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १३५१
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १३५२
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १३५३
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १३५४
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १३५५
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १३५६
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १३५७
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १३५८
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १३५९
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १३६०
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १३६१
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १३६२

'मीन' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१—'मीन' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३६३ से १३७४ के बीच देखना चाहिए।

२—'मीन' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'गुरु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १३६३
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १३६४
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १३६५
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १३६६
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १३६७

(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १३६८
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १३६९
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १३७०
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १३७१
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १३७२
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १३७३
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १३७४

'मीन' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१—'मीन' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३७५ से १३८६ के बीच देखना चाहिए।

२—'मीन' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १३७५
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १३७६
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १३७७
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १३७८
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १३७९
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १३८०
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १३८१
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १३८२
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १३८३
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १३८४
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १३८५
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १३८६

'मीन' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१. 'मीन' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३८७ से १३९८ के बीच देखना चाहिए।

२. 'मीन' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि'

का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए।

जिस वर्ष में 'शनि'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १३८७
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १३८८
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १३८९
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १३९०
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १३९१
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १३९२
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १३९३
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १३९४
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १३९५
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १३९६
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १३९७
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १३९८

'मीन' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१. 'मीन' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १३९९ से १४१० के बीच देखना चाहिए।

२. 'मीन' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १३९९
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १४००
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १४०१
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १४०२
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १४०३
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १४०४
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १४०५
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १४०६
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १४०७
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १४०८
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १४०९
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १४१०

'मीन' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१. 'मीन' लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४११ से १४१२ के बीच देखना चाहिए।

२. 'मीन' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'केतु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १४११
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १४१२
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १४१३
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १४१४
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १४१५
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १४१६
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १४१७
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १४१८
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १४१९
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १४२०
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १४२१
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १४२२

●

'मीन' लग्न में 'सूर्य'

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न : प्रथमभाव : सूर्य

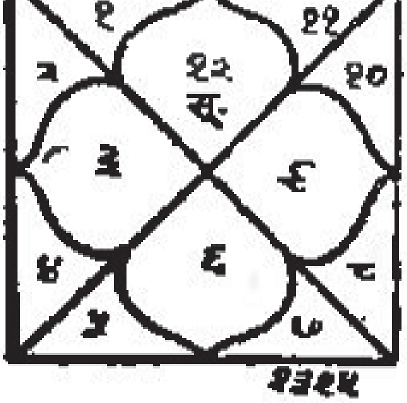

१४२५

पहले भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति एवं प्रभाव में वृद्धि होती है, परन्तु रक्त-विकार तथा अन्य रोग होने की सम्भावना भी रहती है। शत्रु-पक्ष पर विजय पाने तथा अपना सम्मान बढ़ाने के लिए उसे विशेष दौड़धूप करनी पड़ती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के बाद स्त्री का सुख मिलता है तथा दैनिक आमदनी के लिए भी अधिक परिश्रम करना पड़ता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न : द्वितीयभाव : सूर्य

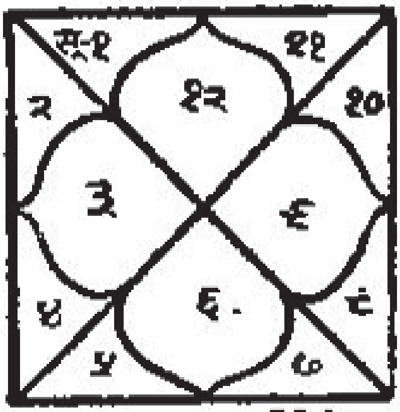

१३१६

दूसरे भाव में 'मंगल' की राशि पर स्थित उच्च के 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के प्रभाव एवं धन में वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है।

सातवीं नीच तथा शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के पक्ष में कुछ कमी आती है तथा दैनिक जीवन में भी परेशानियाँ रहती हैं।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न : तृतीयभाव : सूर्य

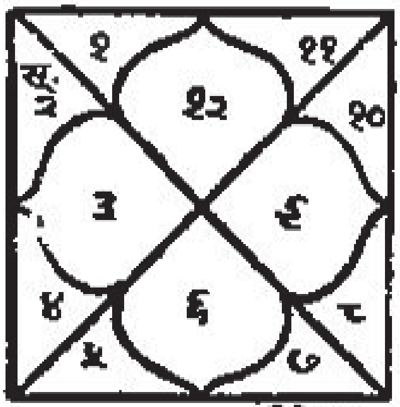

१३१७

तीसरे भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य रहता रहता है। शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से शारीरिक श्रम द्वारा भाग्य की उन्नति तो होती है, परन्तु धर्म की उन्नति नहीं हो पाती। जीवन सामान्य ढंग से बीतता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न : चतुर्थभाव : सूर्य

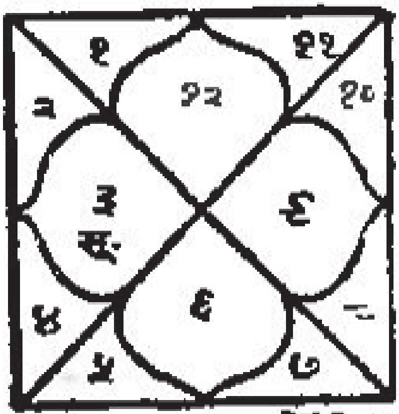

१३१८

चौथे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के सुख तथा प्रभाव में वृद्धि होती है, परन्तु माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी और परेशानियाँ भी रहती हैं।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, यश प्रतिष्ठा एवं सम्मान की वृद्धि होती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न : पंचमभाव : सूर्य

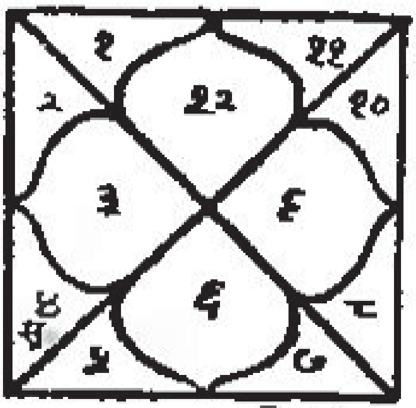

२३२६

पाँचवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कुछ कष्ट होता है, परन्तु कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या-बुद्धि एवं वाणी की शक्ति में वृद्धि होती है। मस्तिष्क में चिन्ता एवं क्रोध का निवास भी रहता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से लाभ के मार्ग में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु परिश्रम द्वारा सफलता भी मिलती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न : षष्ठभाव : सूर्य

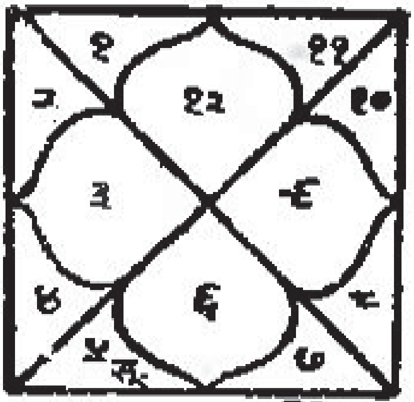

२३२७

छठे भाव में स्वराशि-स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक शत्रुओं पर विजय पाता है तथा झगड़े-झंझटों से लाभ उठाता है। उसे रोग आदि भी नहीं होते। वह बड़ा हिम्मती, धैर्यवान् तथा परिश्रमी होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च की परेशानी रहती है तथा बाहरी सम्बन्धों से भी कुछ कष्ट होता है। खर्च की अधिकता से मन अशान्त रहता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न : सप्तमभाव : सूर्य

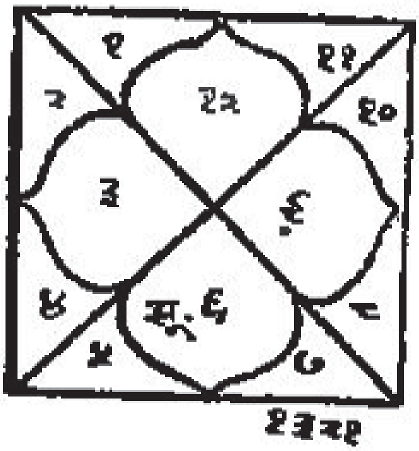

२३२८

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक का स्त्री-पक्ष से कुछ वैमनस्य रहता है तथा दैनिक व्यवसाय में अधिक दौड़-धूप करने से ही सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से प्रभाव तथा सम्मान की वृद्धि होती है, परन्तु शारीरिक परेशानियाँ भी रहती हैं।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न : अष्टमभाव : सूर्य

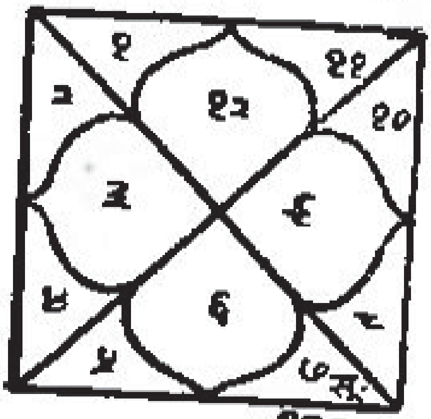

९३२२

आठवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित नीच के 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की आयु पर घोर संकट आते हैं तथा पुरातत्त्व-शक्ति की भी हानि होती है। शत्रु-पक्ष से भी कष्ट मिलता है। ननसाल-पक्ष दुर्बल रहता है। पेट के निम्न भाग में विकार भी होता है।

सातवीं मित्र तथा उच्च-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कौटुम्बिक सुख की वृद्धि के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ता है।

'मीन' जन्म की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न : नवमभाव : सूर्य

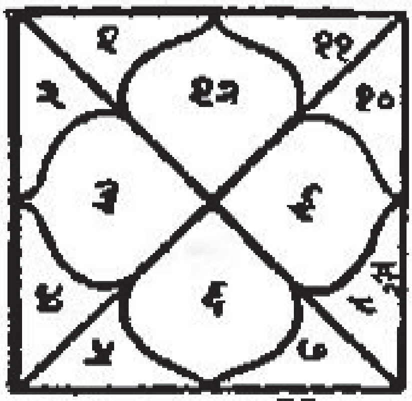

९३२३

नवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा प्रभाव बढ़ता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों से कुछ विरोध रहता है तथा कुछ कठिनाइयों के साथ पराक्रम, प्रभाव तथा पुरुषार्थ की वृद्धि होती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न : नवमभाव : सूर्य

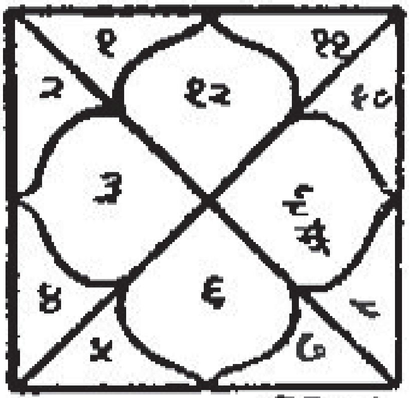

९३२४

दसवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक का अपने पिता से कुछ वैमनस्य रहता है राज्य के क्षेत्र में प्रभाव तथा सम्मान की वृद्धि होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ माता, भूमि एवं भवन का सुख मिलता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न : एकादशभाव : सूर्य

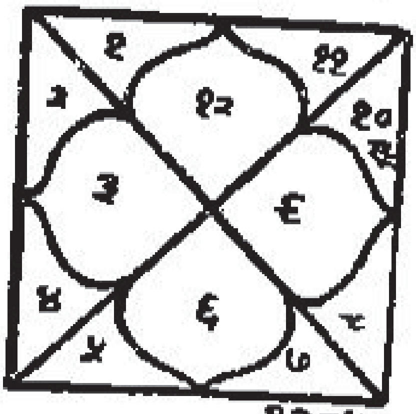

१३२५

ग्यारहवें भाव में स्वराशि-स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम द्वारा अपनी आमदनी को खूब बढ़ाता है। शत्रु-पक्ष पर भी विजय मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या-बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मीनलग्न : द्वादशभाव : सूर्य

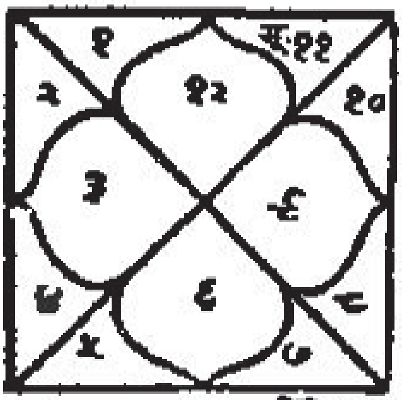

१३२६

बारहवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को खर्च चलाने में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा बाहरी सम्बन्धों से भी परेशानी रहती है। शत्रु-पक्ष भी कठिनाइयाँ उत्पन्न करता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने से खर्च के बल पर शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति अहंकारी तथा क्रोधी भी होता है।

'मीन' लग्न में 'चन्द्रमा'

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

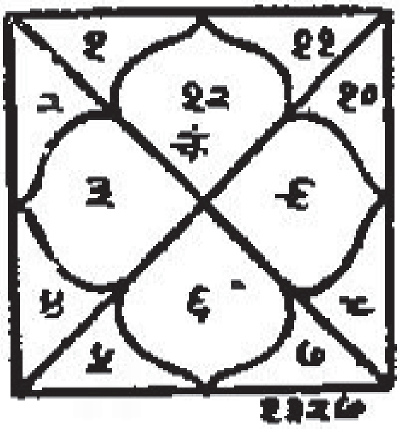

१३२७

पहले भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य, सम्मान तथा यश की वृद्धि होती है। वह मधुरभाषी, सर्वप्रिय तथा प्रभावशाली होता है। उसे सन्तान तथा विद्या-बुद्धि का भी श्रेष्ठ लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से सुन्दर स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में बुद्धि-बल से अच्छा लाभ होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : द्वितीयभाव : चन्द्र

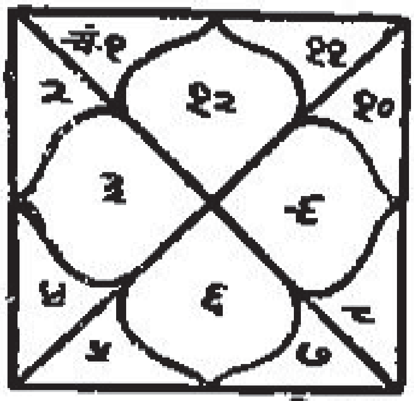

२३२८

दूसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब की श्रेष्ठ शक्ति मिलती है। सन्तान-पक्ष से कुछ परेशानी होती है, फिर भी सन्तान तथा विद्या-बुद्धि का अच्छा लाभ होता है।

सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है तथा दैनिक जीवन आनन्दमय बना रहता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : तृतीयभाव : चन्द्र

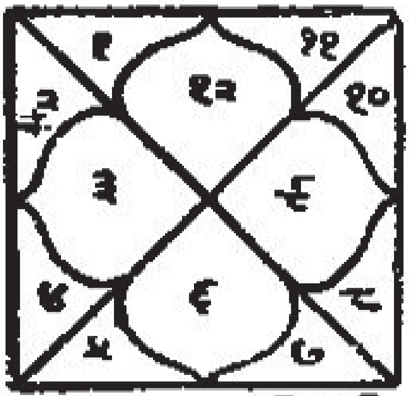

२३२९

तीसरे भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित उच्च के 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है तथा विद्या एवं सन्तान-पक्ष का भी पूर्ण सहयोग मिलता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति में रुकावटें आती हैं। ऐसा व्यक्ति असहिष्णु होता है, अतः उसे यश भी कम मिलता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : चतुर्थभाव : चन्द्र

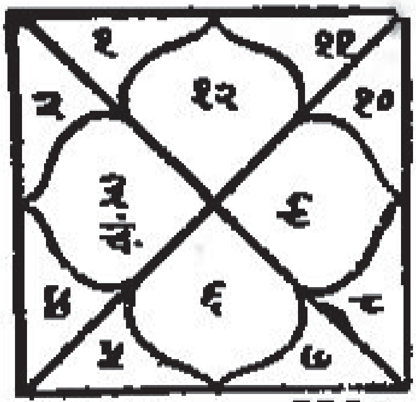

२३३०

चौथे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। विद्या तथा संतान पक्ष में भी उन्नति होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से बुद्धि-बल से व्यवसाय में उन्नति होती है तथा राज्य-पक्ष से सम्मान तथा विद्या के सहयोग प्राप्त होता है। उसकी अनेक प्रकार से उन्नति होती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : पंचमभाव : चन्द्र

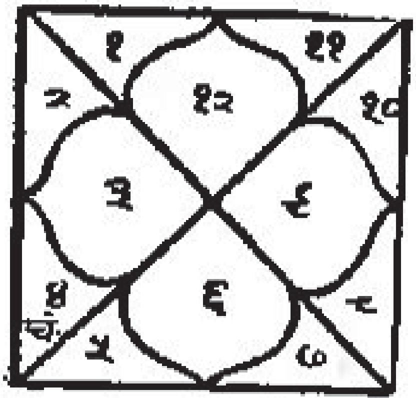

२३२९

पाँचवें भाव में स्वराशि में स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का यथेष्ट लाभ होता है। वह वाक्पटु तथा मीठे स्वभाव का, गंभीर, दूरदर्शी तथा स्थिर विचारों का व्यक्ति होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से बुद्धि-बल द्वारा उसकी आमदनी की वृद्धि होती है, यद्यपि उसे कुछ असन्तोष भी रहता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : षष्ठभाव : चन्द्र

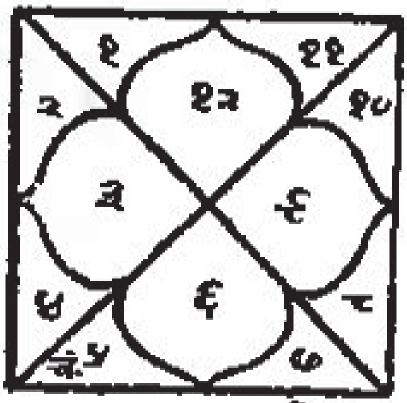

२३३०

छठे भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष से अशान्ति रहती है, तथा बुद्धि-बल से उन पर प्रभाव स्थापित हो पाता है। सन्तान-पक्ष से कष्ट होता है तथा विद्याध्ययन में कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहने के कारण कष्ट होता है तथा बाहरी स्थानों से भी असन्तोषजनक लाभ होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : सप्तमभाव : चन्द्र

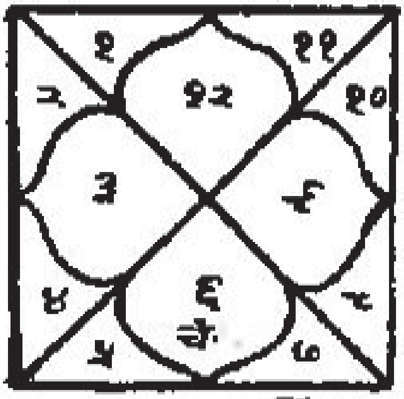

२३३१

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को सुन्दर तथा बुद्धिमती स्त्री मिलती है। व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। सन्तान-पक्ष, घरेलू सुख तथा विद्या-बुद्धि की भी उन्नति होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव, सम्मान एवं योग्यता की वृद्धि होती है।

'मीन' लग्न की कुंडली में 'अष्टमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : अष्टमभाव : चन्द्र

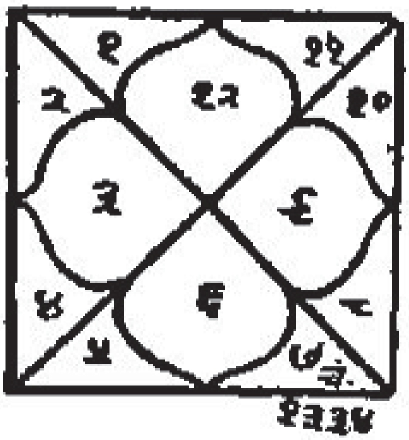

आठवें भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्व का लाभ होता है। विद्या एवं सन्तान-पक्ष में कमी रहती है। धन तथा मस्तिष्क अशान्त रहता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीय भाव के देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सामान्य जीवन बिताता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : नवमभाव : चन्द्र

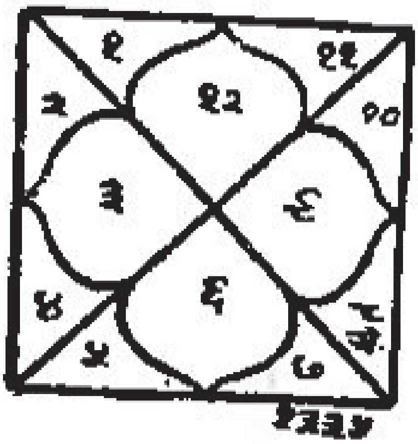

नवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित नीच के 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति तथा धर्म पालन में रुकावटें आती हैं। सन्तान तथा विद्या का पक्ष भी कमजोर रहता है। मन-मस्तिष्क में परेशानियाँ रहती हैं।

सातवीं उच्च-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में पर्याप्त वृद्धि होती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : दशमभाव : चन्द्र

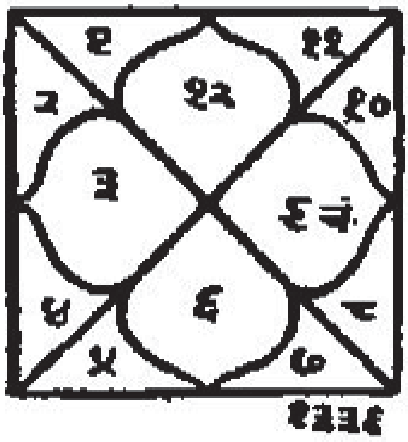

दसवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में वांछित सफलताएँ प्राप्त होती हैं। वह विद्वान्, नियमों का पालक, बुद्धिमान् तथा संतति-वान भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति धर्मी तथा भाग्यशाली होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : एकादशभाव : चन्द्र

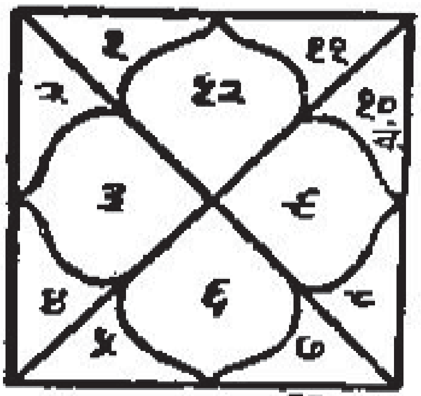

२११०

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक अपने बुद्धि-बल द्वारा आमदनी में पर्याप्त वृद्धि करता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखने से सन्तान एवं विद्या-बुद्धि-पक्ष की उन्नति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है। वह स्वार्थी तथा अपनी ही उन्नति की कामना करने वाला होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : द्वादशभाव : चन्द्र

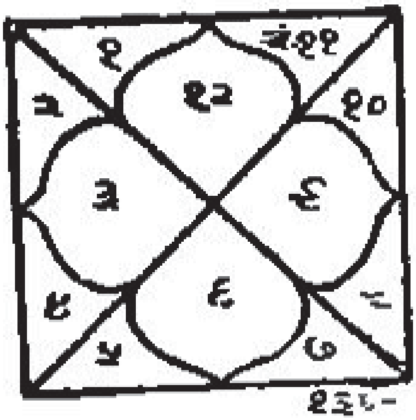

२१२८-

बारहवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों से लाभ भी मिलता है। सन्तान-पक्ष से कष्ट तथा विद्या के क्षेत्र में कमी का सामना करना पड़ता है। मन-मस्तिष्क में परेशानी भी रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से बुद्धि-बल से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है।

'मीन' लग्न में मंगल

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मीनलग्न : प्रथमभाव : मंगल

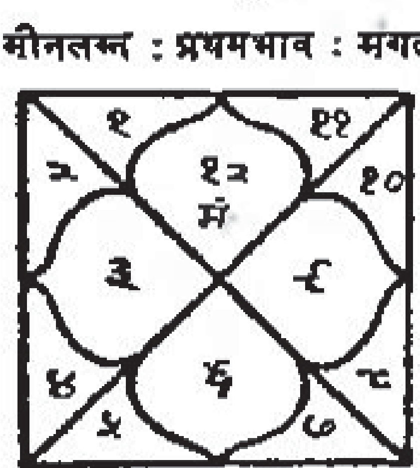

२३३६

पहले भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। धन, कुटुम्ब तथा भाग्य की भी समृद्धि होती है। चौथी मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का पर्याप्त सुख मिलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से व्यवसाय तथा घरेलू सुख की वृद्धि होती है तथा स्त्री का पक्ष उत्तम रहता है। आठवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मीनलग्न : द्वितीयभाव : मंगल

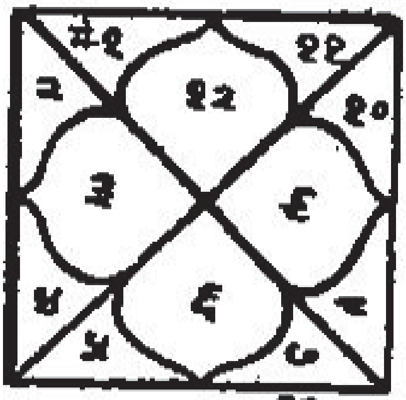

१३४०

दूसरे भाव में स्वराशि-स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है। चौथी नीच-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या एवं सन्तान के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है।

सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है।

आठवीं दृष्टि से स्वराशि में नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती है। ऐसे व्यक्ति का रहन-सहन ठाठ-बाट का होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मीनलग्न : तृतीयभाव : मंगल

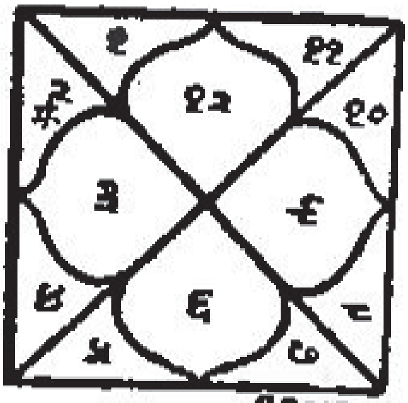

१३४१

तीसरे भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक के पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है तथा धन-कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। चौथी मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर भी प्रभाव स्थापित होता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती है।

आठवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में सफलताएँ मिलती हैं। ऐसा व्यक्ति धनी, यशस्वी, सुखी, धर्मात्मा तथा शत्रुजयी होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मीनलग्न : चतुर्थभाव : मंगल

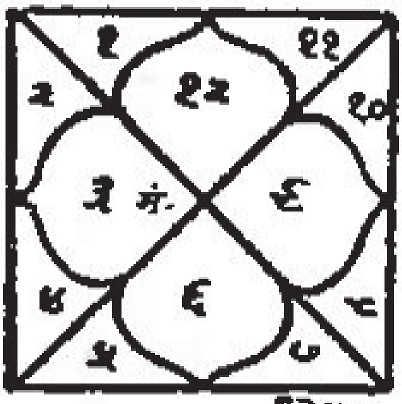

१३४२

चौथे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। चौथी मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री भाग्यशाली मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय एवं घरेलू-सुख की वृद्धि होती होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। आठवीं शत्रु तथा उच्च-दृष्टि से एका-दश भाव को देखने से घर बैठे ही लाभ होता रहता है। ऐसा व्यक्ति बहुत ही धनी होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मीन लग्न : पंचमभाव : मंगल

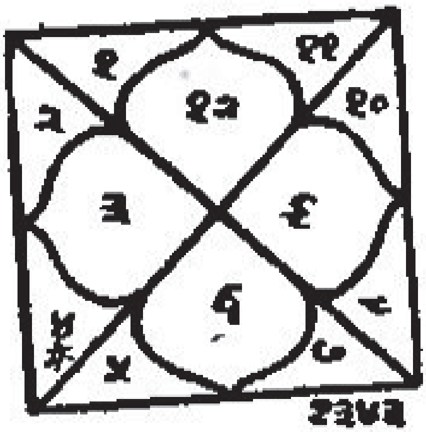

२३५३

पाँचवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित नीच के 'मंगल' के प्रभाव से जातक का सन्तान तथा विद्या का पक्ष दुर्बल रहता है। धन तथा कुटुम्ब के सुख तथा भाग्य एवं धर्म के पक्ष में भी कमी रहती है। चौथी सामान्य मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति में कुछ वृद्धि होती है।

सातवीं उच्चदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी में वृद्धि होती है। बारहवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से असंतोषपूर्ण लाभ होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मीन लग्न : षष्ठभाव : मंगल

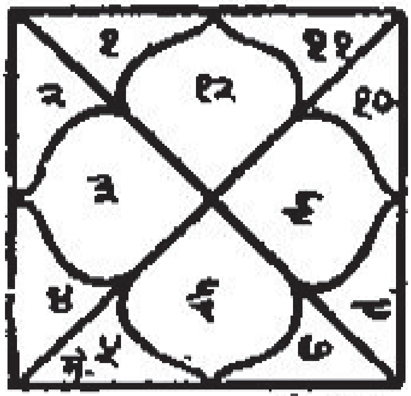

२३५४

छठे भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर बहुत प्रभाव रखता है। धन की कुछ कमी रहते हुए भी ठाठ से खर्च चलाता है। कुटुम्ब से थोड़ा सुख मिलता है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में नवम भाव को देखने भाग्य की उन्नति तथा धर्म का पालन होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्ध भी असंतोषजनक रहते हैं। आठवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक शक्ति, प्रभाव एवं सम्मान की वृद्धि होती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मीन लग्न : सप्तमभाव : मंगल

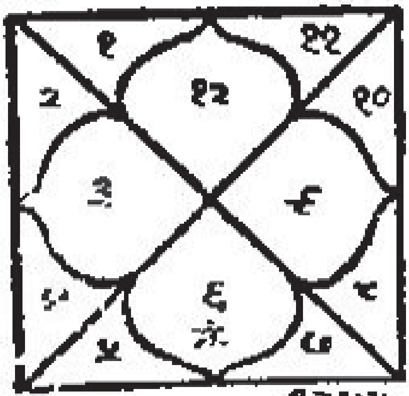

२३५५

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को भाग्यशालिनी स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय में भी लाभ होता है। वह धर्मात्मा तथा भाग्यवान् भी रहता है। चौथी मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। आमदनी खूब बढ़ती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, यश, प्रतिष्ठा तथा स्वाभिमान की वृद्धि होती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का पर्याप्त सुख मिलता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मीन लग्न : अष्टमभाव : मंगल

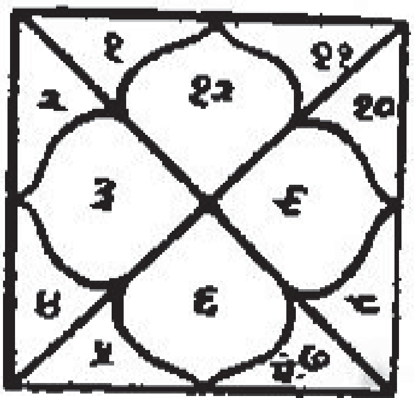

२३४८

आठवें भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, किन्तु भाग्य, धर्म तथा यश में कमी आती है। चौथी शत्रु तथा उच्चदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है तथा अधिक मुनाफा उठाने की प्रवृत्ति बनती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीय भाव को देखने से परिश्रम द्वारा धन का संचय होता है तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी रहती है, परन्तु पराक्रम बढ़ता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मीन लग्न : नवमभाव : मंगल

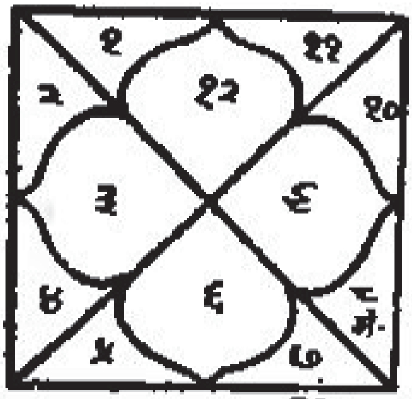

२३४९

नवें भाव में स्वराशि-स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। वह भाग्यशाली, धनी तथा यशस्वी होता है। चौथी शत्रु-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च की कठिनाई रहती है तथा बाहरी संबंधों से भी असन्तोष रहता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से कुछ कमी के साथ भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है।

आठवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख पर्याप्त मिलता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मीन लग्न : दशमभाव : मंगल

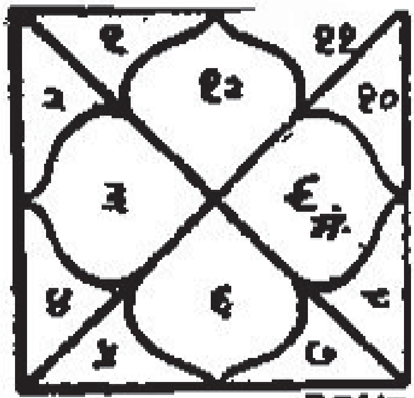

२३४८

दसवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छी सफलताएँ मिलती हैं। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। चौथी मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक शक्ति, प्रभाव, यश, स्वाभिमान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख मिलता है। पाँचवीं नीचदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-पक्ष में कुछ कमी रहती है तथा वाणी में रूखापन झलकता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मीन लग्न : एकादशभाव : मंगल

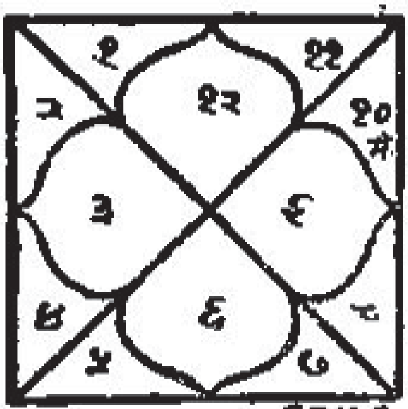

१३४६

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। यह बड़ा भाग्यशाली तथा धर्मात्मा भी होता है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख की वृद्धि होती है।

सातवीं नीच तथा मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या तथा सन्तान के पक्ष में कुछ कमी रहती है। आठवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा झगड़ों से लाभ होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' में स्थित 'मंगल' का फलादेश

मीन लग्न : द्वादशभाव : मंगल

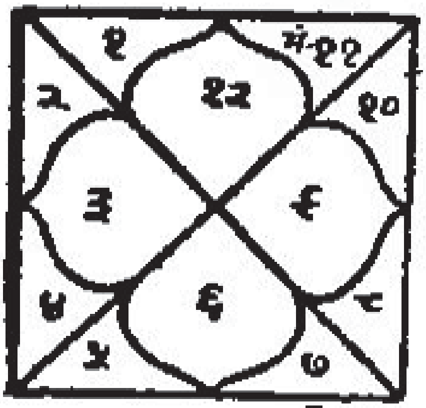

१३५०

बारहवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ होता है। धन तथा कुटुम्ब के सुख में भी कमी रहती है। भाग्य तथा धर्म की उन्नति में कठिनाइयां आती हैं। चौथी शत्रु-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी रहती है, परन्तु पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। आठवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय से सुख एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

'मीन' लग्न में 'बुध'

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीन लग्न : प्रथमभाव : बुध

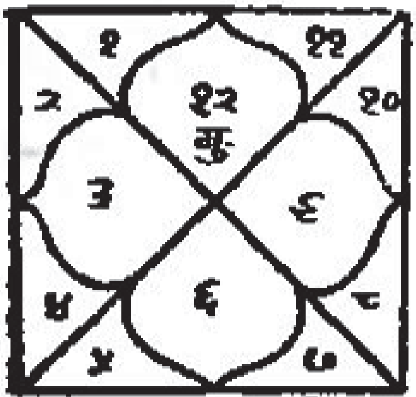

१३५१

पहले भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी थोड़ा ही मिलता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से स्वराशि में सप्तम भाव को देखने से स्त्री-पक्ष से सुख मिलता है तथा व्यवसाय में भी सफलता प्राप्त होती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीन लग्न : द्वितीयभाव : बुध

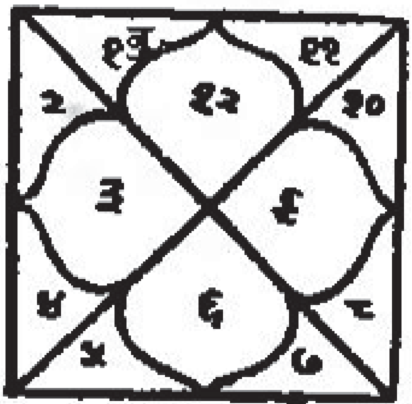

१३४२

दूसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। माता तथा स्त्री के सुख में कुछ कमी रहती है, परन्तु भूमि एवं भवन का लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। दैनिक जीवन भी उल्लासपूर्ण बना रहता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीन लग्न : तृतीयभाव : बुध

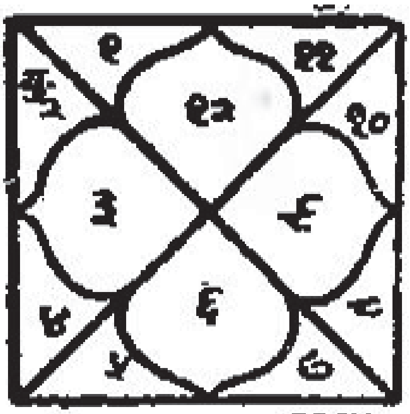

१३४३

तीसरे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का अच्छा सुख मिलता है। माता, भूमि, भवन, स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सुख-सफलता की प्राप्ति होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। ऐसा व्यक्ति यश को प्राप्त करता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीन लग्न : चतुर्थभाव : बुध

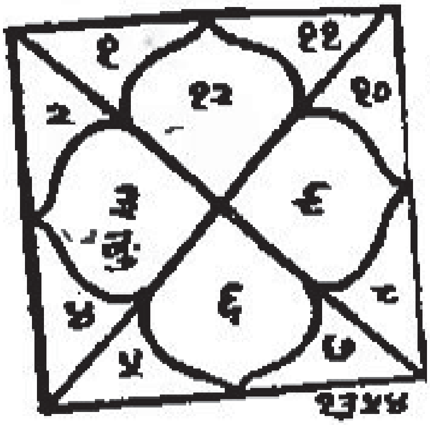

१३४४

चौथे भाव में स्वराशि स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का विशेष सुख मिलता है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के पक्ष में भी सफलता मिलती है। घरेलू जीवन उल्लासपूर्ण रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा भाग्यशाली होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीन लग्न : पंचमभाव : बुध

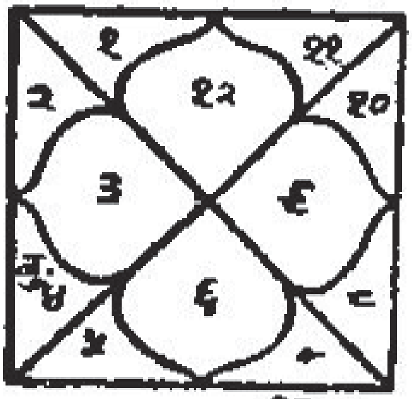

१३५५

पाँचवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में विशेष उन्नति प्राप्त होती है। वह मीठी वाणी बोलने वाला तथा कार्य-कुशल होता है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी, विवेकी तथा यशस्वी होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीन लग्न : षष्ठभाव : बुध

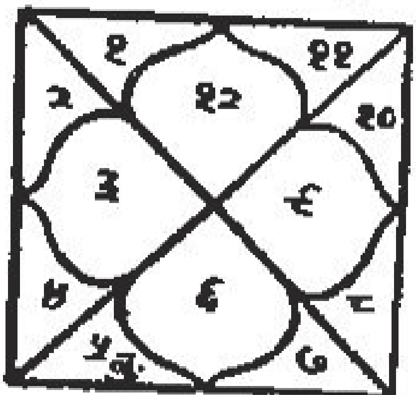

१३५६

छठे भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में शान्ति से काम निकालता है। माता तथा स्त्री से कुछ विरोध रहता है। भूमि तथा भवन का सुख भी कम ही मिलता है। व्यवसाय-क्षेत्र में बुद्धि-बल से सफलता मिलती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीन लग्न : सप्तमभाव : बुध

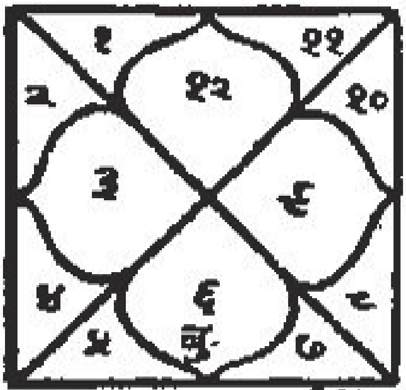

१३५७

सातवें भाव में स्वराशि स्थित उच्च के 'बुध' के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है, तथा दैनिक व्यवसाय में सफलता मिलती है घरेलू जीवन अच्छा रहता है। माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख भी मिलता है।

सातवीं नीच तथा मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है तथा गृहस्थी को चलाने में परिश्रम अधिक करना पड़ता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीन लग्न : अष्टमभाव : बुध

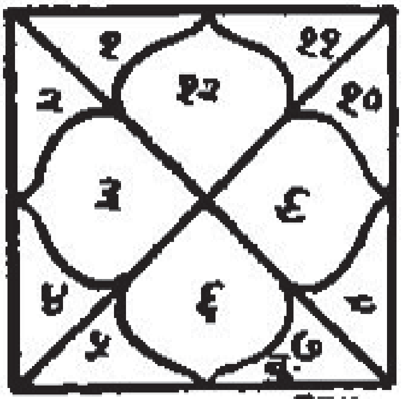

२३५८

सातवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व शक्ति में वृद्धि होती है। दैनिक जीवन प्रभावपूर्ण रहता है। स्त्री के सुख में अधिक तथा माता के सुख में सामान्य कमी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति सामान्यतः सुखी जीवन बिताता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीन लग्न : नवमभाव : बुध

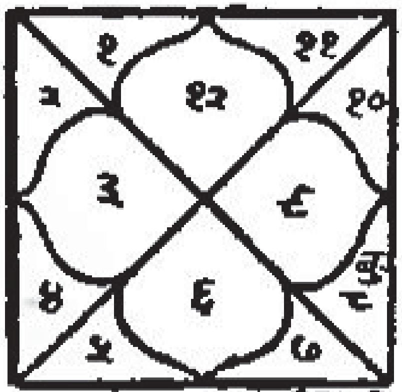

२३५९

नवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। माता, भूमि, भवन, स्त्री तथा व्यवसाय का भी श्रेष्ठ सुख मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी, पराक्रमी तथा यशस्वी होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीन लग्न : दशमभाव : बुध

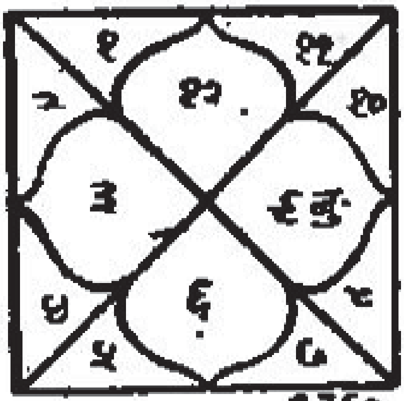

२३६०

दसवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, प्रतिष्ठा तथा लाभ की प्राप्ति होती है। स्त्री-पक्ष से भी सुख मिलता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि, भवन तथा घरेलू सुख की भी यथेष्ट प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, यशस्वी तथा सुखी होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीनलग्न : एकादशभाव : बुध

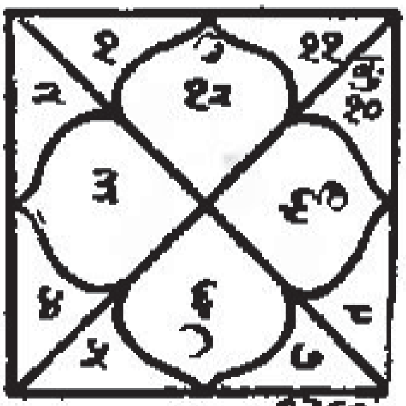

१३६१

ग्यारहवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। माता, भूमि, भवन, स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या-बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष की विशेष उन्नति होती है। ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान्, मधुर-भाषी, धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीनलग्न : द्वादशभाव : बुध

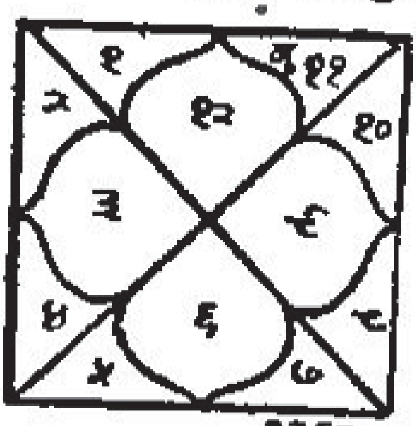

१३६२

बारहवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। माता, भूमि, भवन, घरेलू सुख, स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति धैर्यवान् तथा हिम्मत वाला होता है।

'मीन' लग्न में 'गुरु'

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मीनलग्न : प्रथमभाव : गुरु

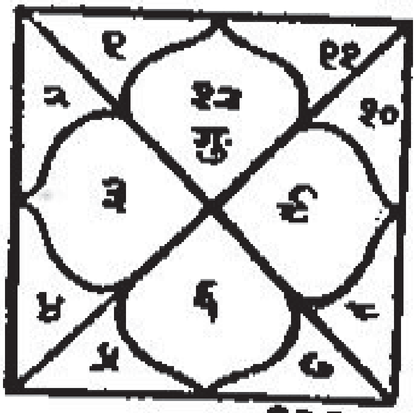

१३६३

पहले भाव में स्वराशि स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती है। उसे पिता, राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष में भी सफलताएँ मिलती हैं। वह बड़ा धनी तथा व्यवसायी होता है। पाँचवीं उच्च दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या-बुद्धि तथा सन्तान का यथेष्ट लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री सुन्दर मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय की वृद्धि होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मीनलग्न : द्वितीयभाव : गुरु

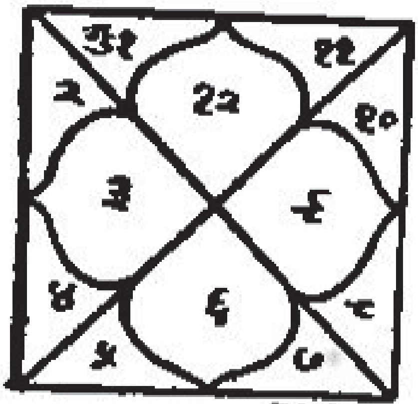

२३६४

दूसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के धन तथा कौटुम्बिक सुख की पर्याप्त वृद्धि होती है, परन्तु शारीरिक स्वास्थ्य में कुछ कमी आती है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से धन की शक्ति से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है तथा झगड़े के मामलों में धैर्य से काम लेकर सफलता पाता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्व की शक्ति में वृद्धि होती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में यथेष्ट सफलताएँ मिलती हैं। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मीनलग्न : तृतीयभाव : गुरु

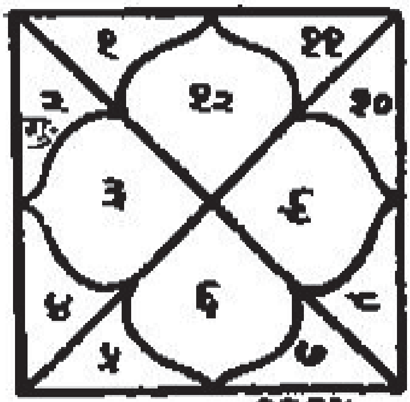

२३६५

तीसरे भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख कुछ मतभेद के साथ प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। पिता से भी सामान्य मतभेद रहता है, परन्तु राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति होती है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री-पक्ष से सुख मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय में सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टिसे नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। नवीं नीच-दृष्टि से शत्रु राशि में एकादश भाव को देखने से आमदनी के मार्ग में रुकावटें आती हैं।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मीनलग्न : चतुर्थभाव : गुरु

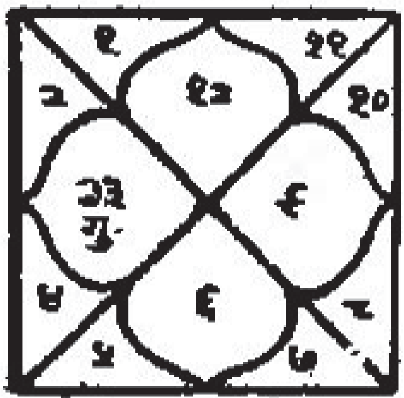

२३६६

चौथे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है। शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव, यश तथा घरेलू सुख की वृद्धि होती है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्व की वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च के कारण परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों से भी असन्तोषजनक सम्बन्ध रहते हैं।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मीनलग्न : पंचमभाव : गुरु

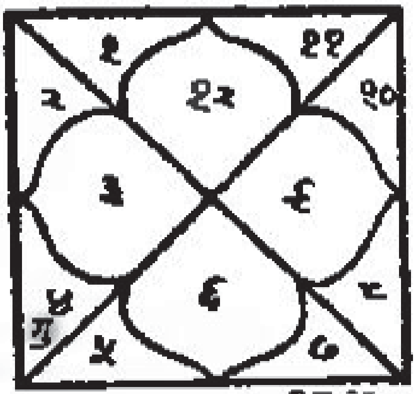

१३६७

पाँचवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित उच्च के 'गुरु' के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या-बुद्धि तथा वाणी का श्रेष्ठ लाभ होता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय-पक्ष में भी सफलताएँ मिलती हैं। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ आती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव, स्वाभिमान, प्रतिष्ठा तथा स्वास्थ्य की वृद्धि होती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मीनलग्न : षष्ठभाव : गुरु

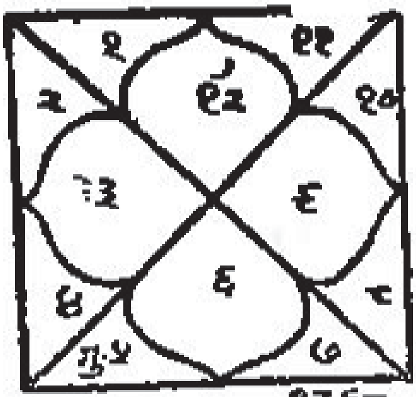

१३६८

छठे भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर प्रभावशाली रहता है, परन्तु शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में नवम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। वह अपने शारीरिक परिश्रम के बल पर उन्नति करता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादश भाव से देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से असंतोष होता है। नवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख की वृद्धि होती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मीनलग्न : सप्तमभाव : गुरु

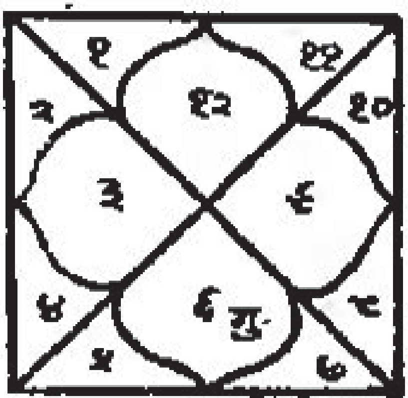

१३६९

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है तथा स्त्री एवं दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सुख सफलता की प्राप्ति होती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्रों की उन्नति होती है। पाँचवीं नीच-तथा शत्रु-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी कम रहती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य, यश, प्रतिष्ठा तथा प्रभाव की वृद्धि होती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है तथा कुछ असन्तोष के साथ भाई-बहिनों का सुख मिलता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मीनलग्न : अष्टमभाव : गुरु

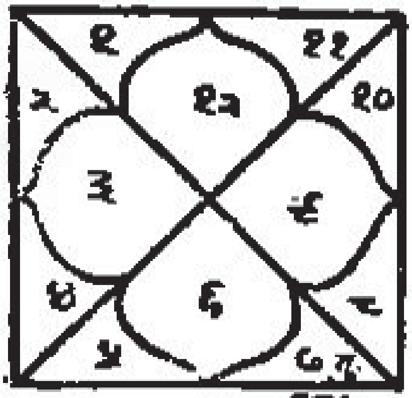

१३७०

आठवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व-शक्ति में वृद्धि होती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में भी कमी रहती है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-कुटुम्ब की वृद्धि होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख भी प्राप्त होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मीनलग्न : नवमभाव : गुरु

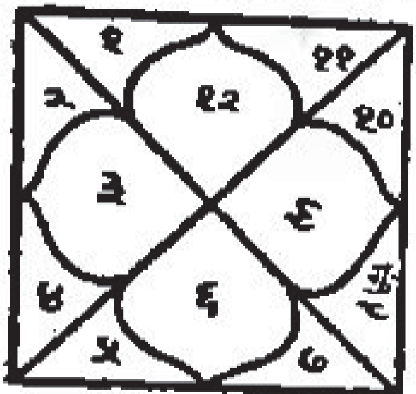

१३७१

नवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती है। राज्य, पिता एवं व्यवसाय-पक्ष से भी लाभ होता है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव, यश तथा स्वाभिमान की वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख मिलता है। नवीं उच्च तथा मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि तथा सन्तान-पक्ष से यथेष्ट सुख का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति वाणी का धनी तथा कलात्मक रुचि वाला होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मीनलग्न : दशमभाव : गुरु

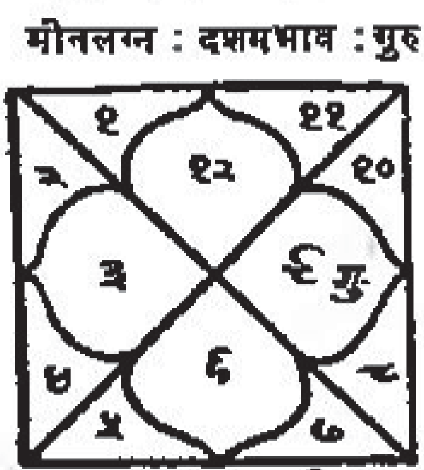

१३७२

दसवें भाव में स्वराशि-स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में यथेष्ट सफलताओं तथा लाभ की प्राप्ति होती है। पाँचवीं मित्र दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख की वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है। नवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर अत्यधिक प्रभाव रहता है तथा झगड़ों में विजय मिलती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी पराक्रमी शूरवीर, हुकूमत करने वाला तथा यशस्वी होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मीनलग्न : एकादशभाव : गुरु

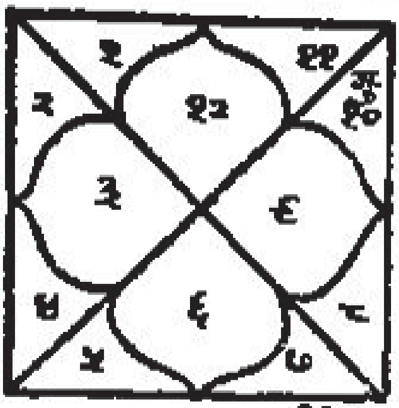

२३७८

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की आमदनी में बहुत कमी आती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी हानि होती है। भाग्योन्नति में रुकावटें आती हैं। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम की अल्प वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों के सुख में कमी आती है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के सुख में उन्नति होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री सुन्दर मिलती है तथा उससे सुख-सहयोग मिलता है। दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मीनलग्न : द्वादशभाव : गुरु

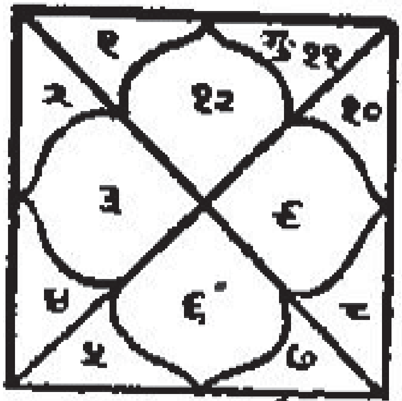

२३७९

बारहवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से भी असन्तोष होता है। शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य, पिता, राज्य तथा व्यवसाय के सुख तथा लाभ में भी कमी रहती है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु पक्ष में सफलता मिलती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टम-भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है परन्तु दैनिक जीवन प्रभावपूर्ण बना रहता है।

'मीन' लग्न में 'शुक्र'

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मीनलग्न : प्रथमभाव : शुक्र

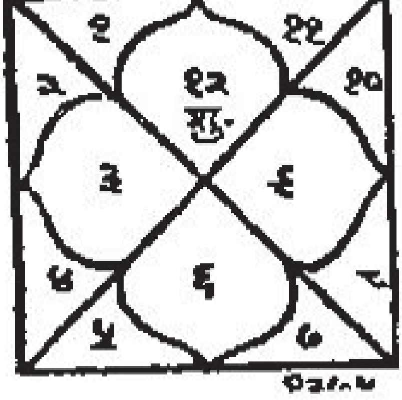

२३८०

पहले भाव में सामान्य मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित उच्च के 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती है। आयु भी लम्बी होती है। भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ होता है। दैनिक जीवन आनन्दमय बना रहता है।

सातवीं मित्र तथा नीच-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री के सुख में कमी आती है, गृहस्थ जीवन असन्तोषपूर्ण रहता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मीनलग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

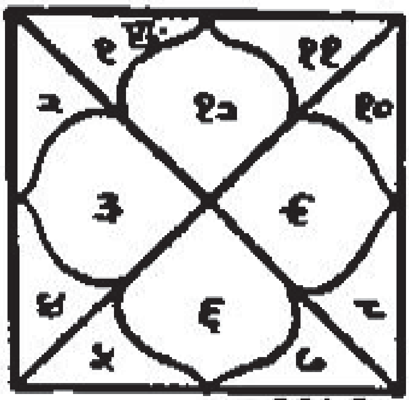

१३७६

दूसरे भाव में सामान्य मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक पुरुषार्थ द्वारा धन-वृद्धि का प्रयत्न करता है, परन्तु पूर्ण सफलता नहीं मिलती। कुटुम्ब के सुख में भी कुछ कमी रहती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टम भाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व-शक्ति का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी समझदारी से रईसी ढंग का जीवन बिताता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मीनलग्न : तृतीयभाव : शुक्र

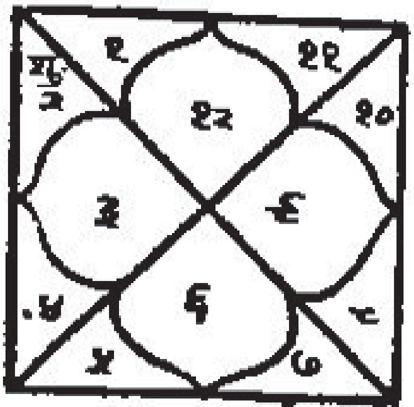

१३७७

तीसरे भाव में स्वराशि में स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों की शक्ति तो मिलती है, परन्तु उनसे कुछ परेशानी भी रहती है। पराक्रम की वृद्धि होती है। जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति में कुछ रुकावटें आती हैं, परन्तु वह अपने परिश्रम के बल पर पर्याप्त सुखी तथा समृद्ध जीवन बिताता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मीनलग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

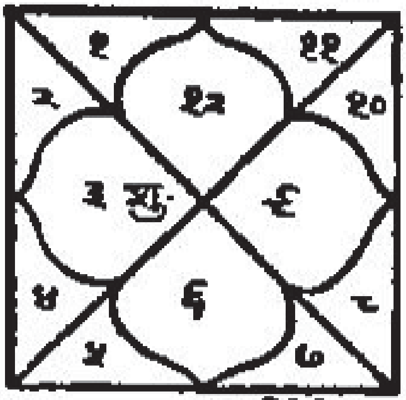

१३७८

चौथे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। पराक्रम बढ़ता है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है।

सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के द्वारा सुख, सहयोग सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है, परन्तु लाभ में कुछ कमी रहती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मीनलग्न : पंचमभाव : शुक्र

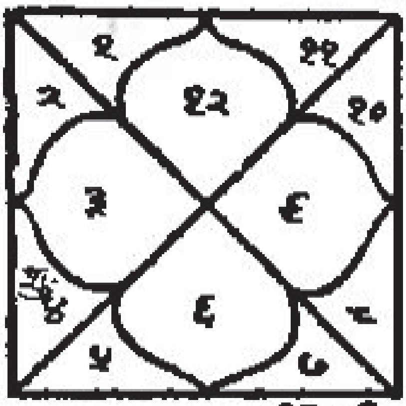

२३७९

पाँचवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा सन्तान-पक्ष का यथेष्ट सुख मिलता है। भाई-बहिनों की शक्ति भी मिलती है। आयु तथा पराक्रम की वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती रहती है। वह धन के श्रम पर अपना प्रत्येक कार्य पूरा करता रहता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मीनलग्न : षष्ठभाव : शुक्र

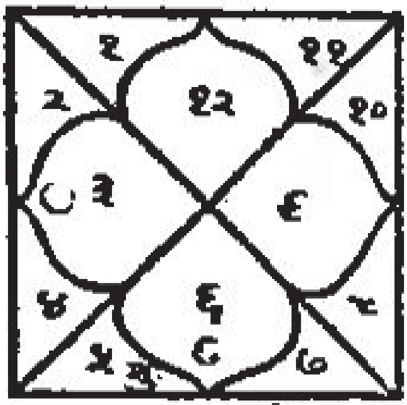

२३८०

छठे भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष से कठिनाइयाँ मिलती हैं, परन्तु अपनी चतुराई द्वारा वह उन पर विजय पा लेता है। भाई-बहिनों से कष्ट होता है तथा पराक्रम, पुरातत्त्व एवं आयु में कमी आती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती रहती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मीनलग्न : सप्तमभाव : शुक्र

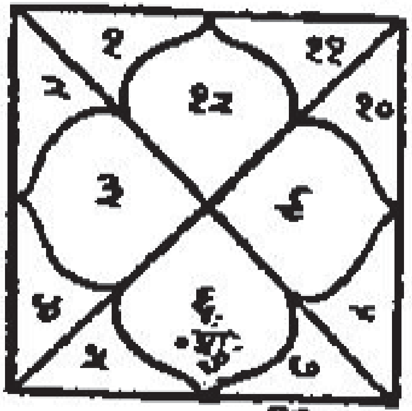

२३८१

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित नीच के 'शुक्र' के प्रभाव से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियाँ आती हैं तथा भाई-बहिनों का सुख एवं पराक्रम भी कमजोर रहता है। आयु एवं पुरातत्त्व में भी कमी आती है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य, शक्ति, स्वाभिमान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मीनलग्न : अष्टमभाव : शुक्र

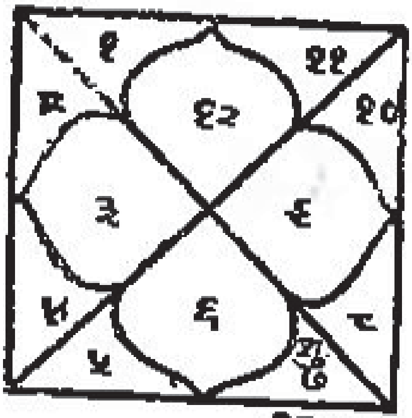

१३८२

आठवें भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। दैनिक जीवन प्रभावपूर्ण रहता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी आती है। ऐसा व्यक्ति लापरवाह किस्म का होता है।

सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन की वृद्धि होती है, परन्तु कुटुम्ब से परेशानी रहती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मीनलग्न : नवमभाव : शुक्र

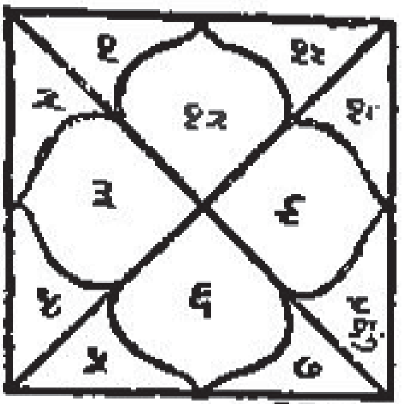

१३८३

नवें भाव में सामान्य मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित अष्टमेश 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की वृद्धि में रुकावटें आती हैं, परन्तु जीवन आनन्दमय बना रहता है। आयु तथा पुरातत्त्व का श्रेष्ठ लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है, परन्तु पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मीनलग्न : दशमभाव : शुक्र

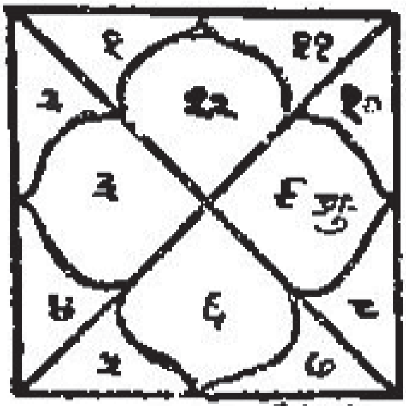

१३८४

दसवें भाव में सामान्य मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित अष्टमेश 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को पिता के सुख में कुछ कमी रहती है तथा राज्य एवं व्यवसाय पक्ष में भी त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है। आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी चतुराई के बल पर उन्नति करता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मीनलग्न : एकादशभाव : शुक्र

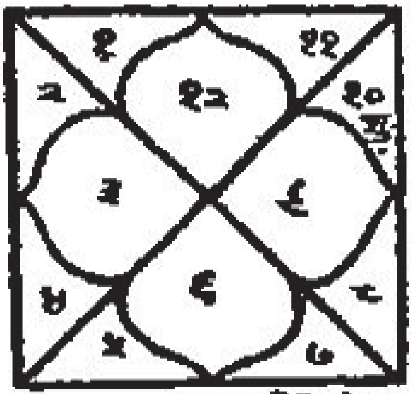

१२८५

ग्यारहवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक कुछ कठिनाइयों के साथ अपनी आमदनी में अत्यधिक वृद्धि करता है। आयु, पुरातत्त्व शक्ति तथा पराक्रम की भी विशेष वृद्धि होती है। भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी रहती है। स्वार्थ-साधन में चतुर होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या-बुद्धि का तो लाभ होता है, परन्तु सन्तान पक्ष में प्रयत्नों से ही सफलता मिलती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मीनलग्न : द्वादशभाव : शुक्र

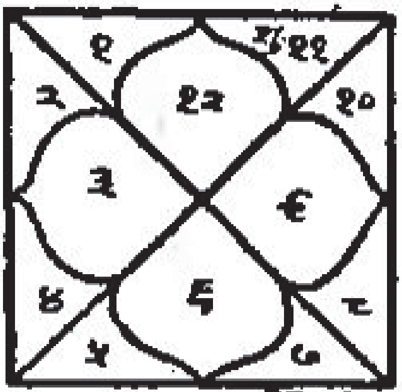

१२८६

बारहवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से उसे लाभ होता है। आयु तथा पुरातत्त्व की कुछ हानि होती है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में भी कमी आती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से चतुराई के बल पर शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति झगड़ों से बचे रहने का प्रयत्न करता है।

'मीन' लग्न में 'शनि'

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मीनलग्न : प्रथमभाव : शनि

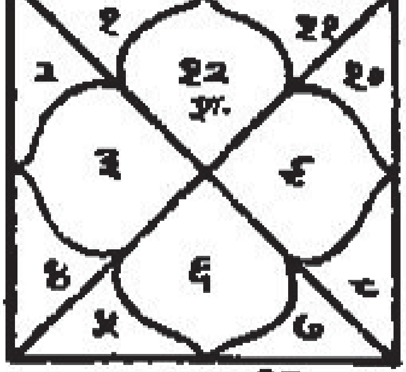

१२८७

पहले भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित व्ययेश शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है। तीसरी मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में न्यूनाधिकता बनी रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री-पक्ष से सुख-दुःख तथा व्यवसाय में हानि-लाभ की प्राप्ति होती रहती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण पिता से वैमनस्य रहता है, राज्य से परेशानी होती है तथा व्यवसाय में संघर्षों का सामना करना पड़ता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मीनलग्न : द्वितीयभाव : शनि

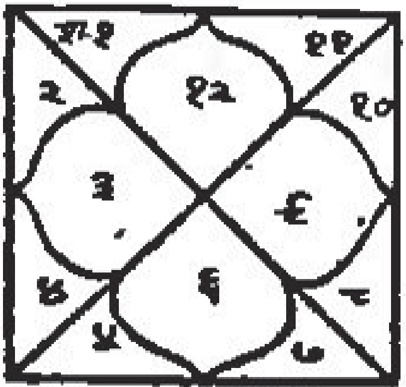

९३-८८

दूसरे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित नीच के प्रभाव से जातक को धन-संचय में कठिनाई आती है तथा हानि भी होती है। कुटुम्ब का अल्प सुख मिलता है। बाहरी सम्बन्ध हानिकारक सिद्ध होते हैं। तीसरी मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में न्यूनाधिकता बनी रहती है।

सातवीं उच्च तथा मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की यथेष्ट शक्ति प्राप्त होती है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में एकादश भाव को देखने से आमदनी खूब रहती है, परन्तु धन का संचय नहीं हो पाता।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मीनलग्न : तृतीयभाव : शनि

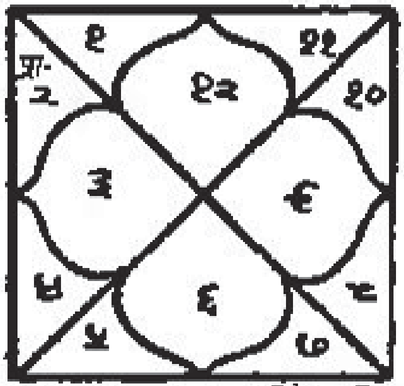

९३-८९

तीसरे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से भाई-बहिनों द्वारा सुख:-दुःख दोनों ही प्राप्त होते हैं तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान-पक्ष से कठिनाई रहती है तथा विद्या-बुद्धि की कमी रहती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति में कुछ कमी रहती है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मीनलग्न : चतुर्थभाव : शनि

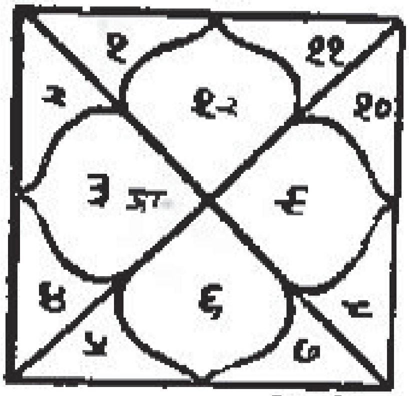

९३-९०

चौथे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष से परेशानी रहती है तथा झगड़े के मामलों में लाभ-हानि दोनों ही होते हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती रहती हैं। दसवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मीनलग्न : पंचमभाव : शनि

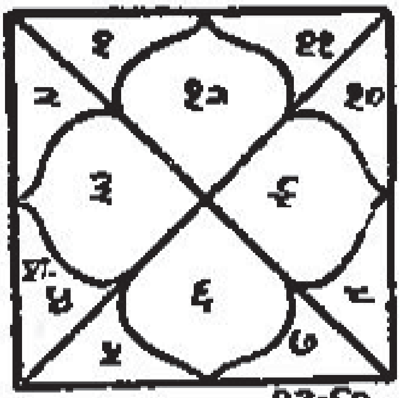

२३९१

पाँचवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को सन्तानपक्ष से हानि-लाभ दोनों की प्राप्ति होती है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के भाव उन्नति होती है। बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। तीसरी मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री-पक्ष से सुख-दुःख तथा व्यवसाय-पक्ष से हानि-लाभ दोनों होते हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में एकादश भाव को देखने से बाहरी सम्बन्धों से आमदनी में वृद्धि होती रहती है। दसवीं नीच-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से धन-संचय की शक्ति में वृद्धि होती है, परन्तु कुटुम्ब से कलेश मिलता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मीनलग्न : षष्ठभाव : शनि

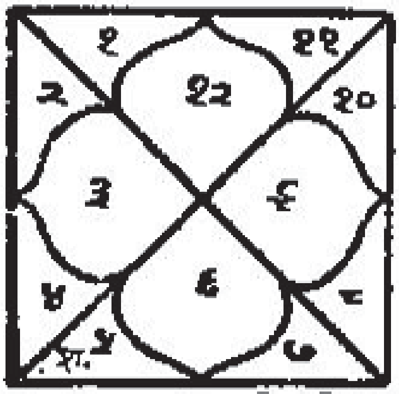

२३९२

छठे भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अधिक प्रभाव रखता है तथा झगड़े के मामलों में खर्च करके लाभ उठाता है। बीमारी में भी काफी खर्च होता है।

तीसरी उच्च-दृष्टि से मित्र राशि में अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। दसवीं मित्र दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मीनलग्न : सप्तमभाव : शनि

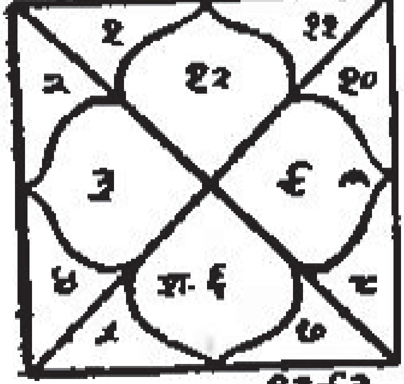

२३९३

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय में सुख-दुःख तथा हानि-लाभ दोनों प्राप्त होते हैं। खर्च की परेशानी रहती है, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति में उतार-चढ़ाव आते हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शरीर में कुछ कमजोरी रहती है। दसवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता के सुख में हानि-लाभ दोनों के योग रहते हैं तथा भूमि-भवन के सुख में कमी आती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मीनलग्न : अष्टमभाव : शनि

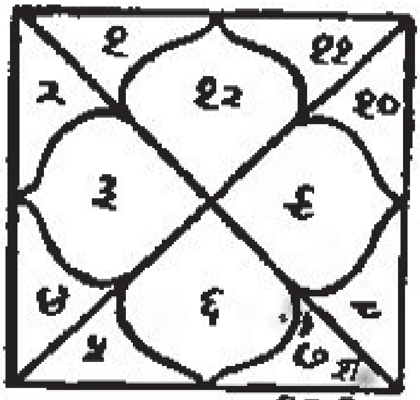

१३९४

आठवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व में वृद्धि होती है तथा बाहरी स्थानों से विशेष लाभ होता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता से असन्तोष तथा राज्य एवं व्यवसाय-पक्ष से सामान्य लाभ होता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से शत्रु-राशि में द्वितीय भाव को देखने से धन का संचय नहीं हो पाता तथा कुटुम्ब से परेशानी रहती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कमी रहती है और मस्तिष्क में चिन्ताओं का निवास रहता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मीनलग्न : नवमभाव : शनि

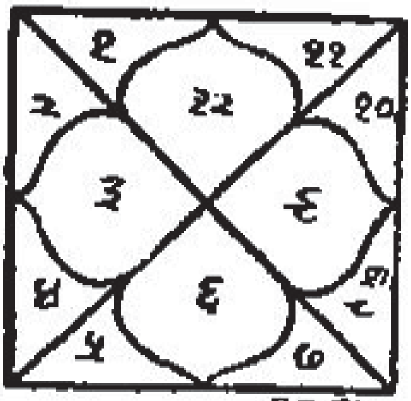

१३९५

नवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक के भाग्य उन्नति की कुछ कठिनाइयों के साथ बाहरी सम्बन्धों के कारण होती है। धर्म-पालन में भी कमी रहती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में एकादश भाव को देखने से आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी आती है। दसवीं शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा झगड़े-टंटों से लाभ भी होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मीनलग्न : दशमभाव : शनि

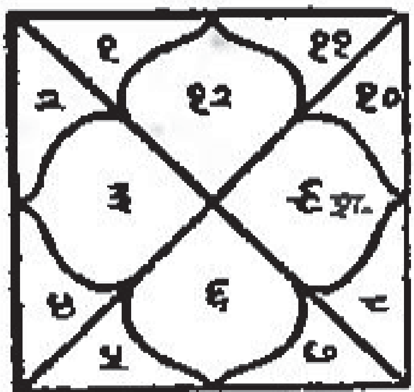

१३९६

दसवें भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में हानि और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु आमदनी अच्छी रहती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव को देखने से खर्च खूब रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से कुछ कमी के साथ माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। दसवीं मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री-पक्ष से कुछ परेशानी रहती है तथा व्यवसाय में हानि-लाभ दोनों पहलू हैं।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मीनलग्न : एकादशभाव : शनि

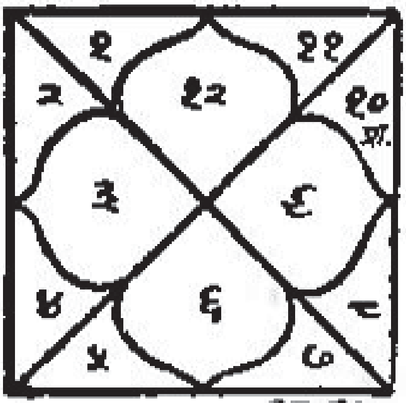

१३९७

ग्यारहवें भाव में स्वराशि में स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है तथा बाहरी स्थानों से पर्याप्त लाभ होता है। खर्च भी खूब रहता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी आती है तथा धन की प्राप्ति के लिए बहुत दौड़-धूप करनी पड़ती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-पक्ष में कुछ कमी आती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थी तथा रूखी बोली बोलने वाला होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मीनलग्न : द्वादशभाव : शनि

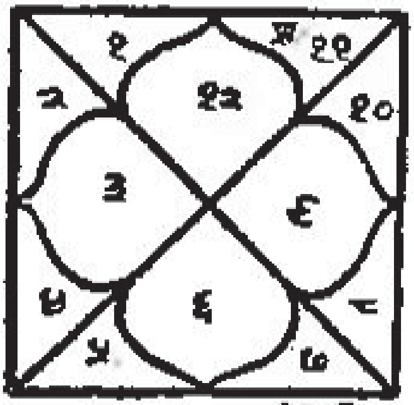

१३९८

बारहवें भाव में स्वराशि-स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। तीसरी नीच-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब की ओर से चिन्ता रहती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखनेसे शत्रु-पक्ष पर कुछ कठिनाइयों के बाद ही सफलता मिलती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं तथा यश एवं धर्म की थोड़ी ही उन्नति हो पाती है।

'मीन' लग्न में 'राहु'

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मीनलग्न : प्रथमभाव : राहु

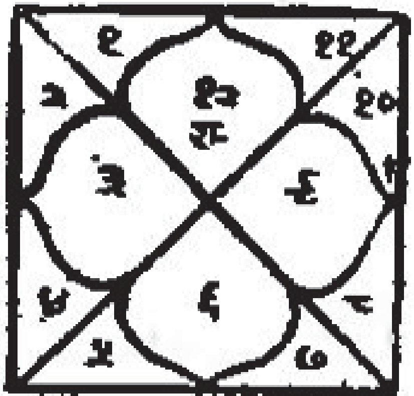

१३९९

पहले भावमें शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है, परन्तु वह युक्ति-बल से अपने प्रभाव तथा सम्मान की वृद्धि करता है तथा सभी कठिनाइयों पर विजय भी पा लेता है। वह अपने परिश्रम से तरक्की प्राप्त करता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मीनलग्न : द्वितीयभाव : राहु

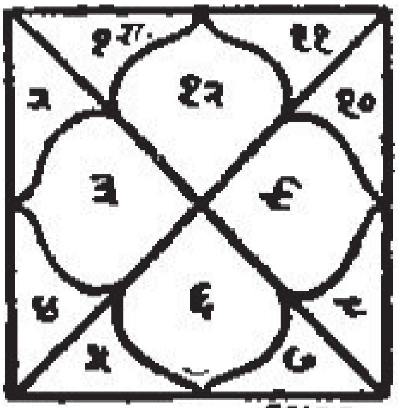

१५००

दूसरे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त नहीं होता। वह गुप्त युक्तियों के बल पर अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहता है तथा थोड़ी-बहुत सफलता भी पा लेता है, परन्तु कभी-कभी आर्थिक कष्ट उसे बहुत परेशान भी करते हैं।

'मीन लग्न' की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मीनलग्न: तृतीयभाव : राहु

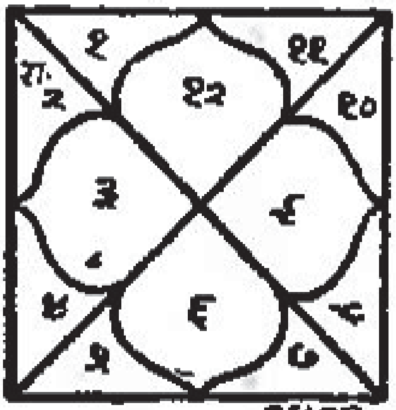

१५०१

तीसरे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कमी तथा कष्ट का अनुभव होता है। वह बुद्धि एवं पुरुषार्थ द्वारा सफलता-प्राप्ति के प्रयत्न करता है तथा बहादुर और हिम्मती होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मीनलग्न: चतुर्थभाव : राहु

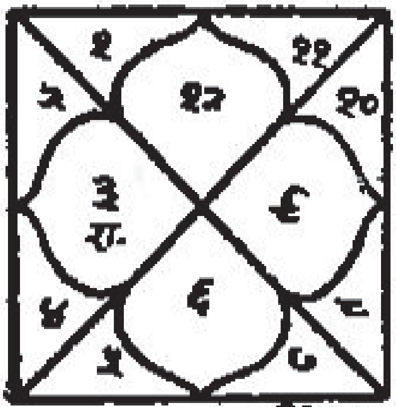

१५०२

चौथे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित उच्च के 'राहु' के प्रभाव से जातक को माता का विशेष सुख मिलता है तथा गुप्त युक्तियों एवं परिश्रम के बल पर भूमि तथा भवन का सुख भी प्राप्त हो जाता है। कभी-कभी आकस्मिक रूप में भी सुख के साधन मिलते रहते हैं।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मीन लग्न : पंचमभाव : राहु

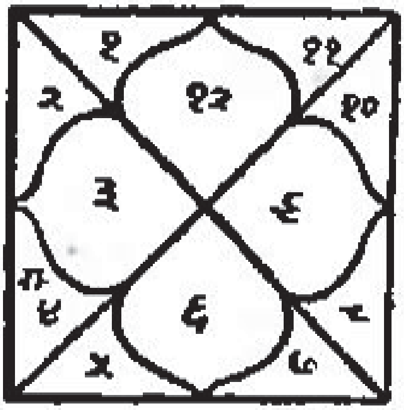

१५०३

पाँचवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन में कठिनाइयाँ आती हैं तथा सन्तान-पक्ष से भी उसे कष्ट का अनुभव होता है।

ऐसे व्यक्ति की वाणी में रूखापन होता है तथा मस्तिष्क में चिन्ताएं घिरी रहती हैं। वह स्वार्थ-सिद्धि के लिए उचित-अनुचित एवं सत्यासत्य का विचार भी नहीं रखता।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मीन लग्न : षष्ठभाव : राहु

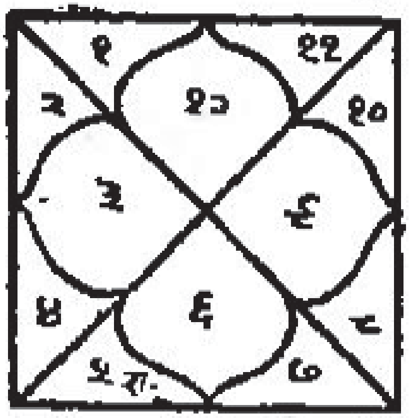

१५०४

छठे भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर भारी प्रभाव रखता है तथा युक्ति-बल से शत्रुओं को परास्त करता है। फिर भी, शत्रु-पक्ष उसे बार-बार परेशान करता रहता है।

ननसाल-पक्ष से भी कुछ हानि होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, बहादुर, चतुर, धैर्यवान् तथा सावधान होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मीन लग्न : सप्तमभाव : राहु

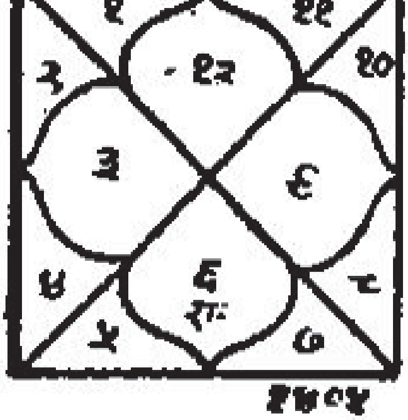

१५०५

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कुछ कष्ट मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय में भी कुछ कठिनाइयों का अनुभव होता, परन्तु वह अपने युक्ति-बल एवं चातुर्य से उन पर विजय प्राप्त करता रहता है। गृहस्थ-जीवन में बार-बार आनेवाले संकटों को भी दूर करता रहता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मीन लग्न : अष्टमभाव : राहु

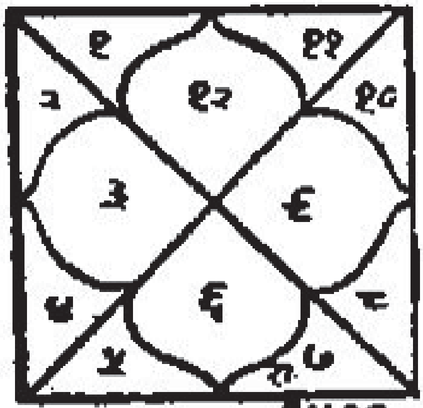

१५०६

आठवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के जीवन पर अनेक बार कष्ट आते हैं, परन्तु आयु की वृद्धि में कमी नहीं आती।

पुरातत्त्व के विषय में भी कठिनाई के योग उपस्थित होते हैं। परन्तु वह अपनी चतुराई से उन सबका निराकरण करके लाभ उठाता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मीन लग्न : नवमभाव : राहु

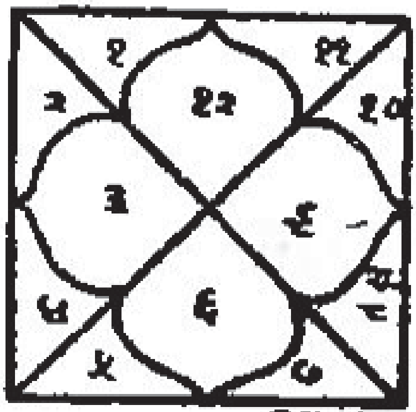

१५०७

नवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की उन्नति में बाधाएँ आती रहती हैं तथा यश की प्राप्ति भी नहीं होती। परन्तु वह कठिन परिश्रम, गुप्त युक्ति तथा हिम्मत के साथ भाग्योन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है। कभी-कभी उसे आकस्मिक लाभ भी होता है और कभी-कभी अत्यधिक कष्ट भी उठाने पड़ते हैं। लम्बे संघर्ष के बाद ही भाग्योन्नति हो पाती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मीन लग्न : दशमभाव : राहु

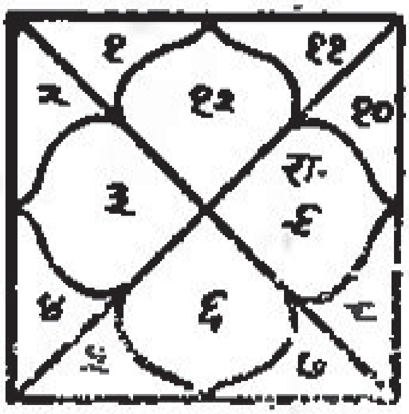

दसवें भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित मीन के 'राहु' के प्रभाव से जातक को पिता के पक्ष में महान् कष्ट, राज्य से परेशानी तथा व्यवसाय में बार-बार हानि का सामना करना पड़ता है। मान-प्रतिष्ठा में भी कमी रहती है। परन्तु वह अपने युक्ति-बल तथा परिश्रम से कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न करता रहता है और कुछ सफलता भी पा लेता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मीन लग्न : एकादशभाव : राहु

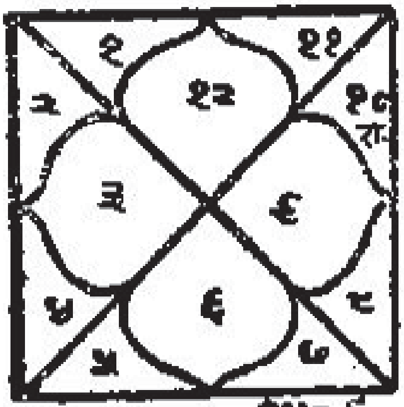

१५०९

ग्यारहवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की आमदनी में विशेष वृद्धि होती है। वह अधिक मुनाफा कमाता है। कई बार धनोपार्जन के क्षेत्र में कठिनाइयाँ भी आती हैं, परन्तु वह हिम्मत नहीं हारता तथा परिश्रम एवं धैर्य के साथ उन पर सफलता प्राप्त करता है। कभी-कभी आकस्मिक लाभ के अवसर भी मिलते हैं।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मीन लग्न : द्वादशभाव : राहु

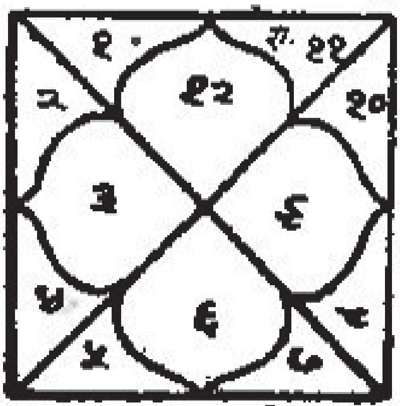

१५१०

बारहवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को अपना खर्च-चलाने में बड़ी कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु वह अपनी हिम्मत, धैर्य, परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के द्वारा उन सब पर विजय पाने का प्रयत्न करता है। उसे बाहरी स्थानों के संबंधों से भी कठिनाइयों का अनुभव होता है।

'मीन' लग्न में 'केतु'

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मीन लग्न : प्रथमभाव : केतु

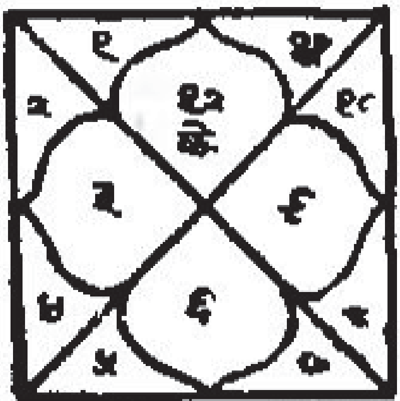

१५११

पहले भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के शरीर में सांघातिक चोट लगती है तथा कभी मृत्यु-तुल्य कष्ट का सामना भी करना पड़ता है। शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में भी कमी रहती है किन्तु वह गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के बल पर अपने व्यक्तित्व का विकास करता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मीन लग्न : पंचमभाव : केतु

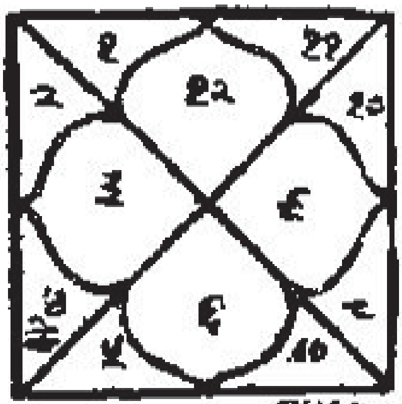

पाँचवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की सन्तान-पक्ष में बड़े कष्ट तथा कमी का सामना करना पड़ता है। मस्तिष्क में चिन्ताएँ घिरी रहती हैं। विद्याध्ययन में भी अनेक कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु वह अपनी गुप्त युक्तियों, धैर्य तथा परिश्रम के बल पर सब कमियों को दूर करने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मीन लग्न : षष्ठभाव : केतु

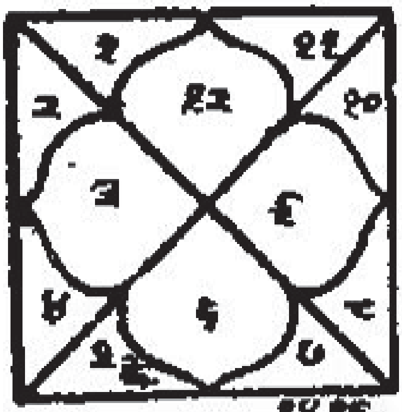

छठे भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर निरन्तर विजय प्राप्त करता है तथा झगड़ों के मामलों में सफलता पाता है।

शत्रु-पक्ष से परेशानी होने पर भी वह अपने हौसले को बनाए रखता है तथा बहादुरी से काम लेकर उस पर अपना प्रभाव स्थापित करता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मीन लग्न : सप्तमभाव : केतु

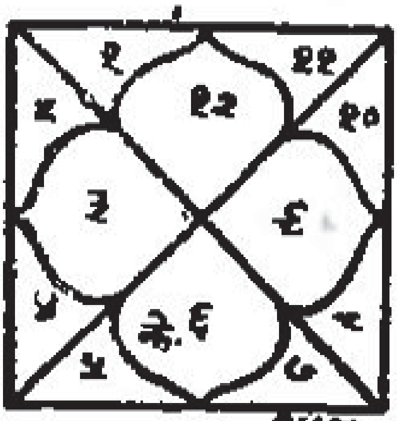

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ अशान्ति एवं कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। कभी-कभी स्त्री-पक्ष से घोर कष्ट मिलता है तो कभी सुख भी मिलता है। ऐसा व्यक्ति साहसपूर्वक अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मीन लग्न : अष्टमभाव : केतु

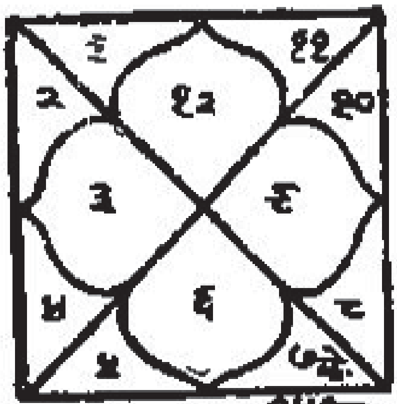

१५१८

आठवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की आयु पर अनेक बार मृत्यु-तुल्य संकट आते हैं, परन्तु जीवन की रक्षा भी होती रहती है। पुरातत्त्व की हानि के योग भी उपस्थित होते हैं, परन्तु वह अपनी गुप्त युक्तियों, चातुर्य तथा परिश्रम के बल पर लाभ उठा लेता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी तथा धैर्यवान् होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मीन लग्न : नवमभाव : केतु

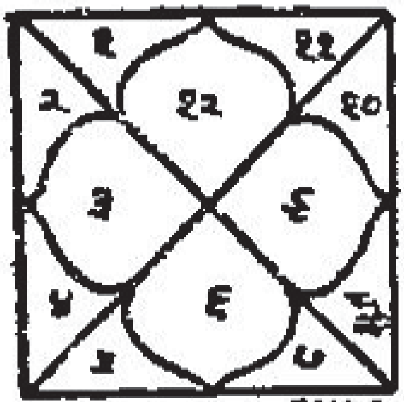

१५१९

नवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म के पक्ष में कठिनाइयाँ आती रहती हैं, परन्तु वह साहस, धैर्य, चातुर्य, गुप्त युक्ति तथा परिश्रम के बल पर उन पर विजय पाता है तथा उन्नति करता है। ऐसा व्यक्ति घोर संकटों के अवसर पर भी विचलित नहीं होता। अन्ततः उसके भाग्य तथा धर्म की कुछ उन्नति होती है, परन्तु यश में कमी बनी रहती है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मीन लग्न : दशमभाव : केतु

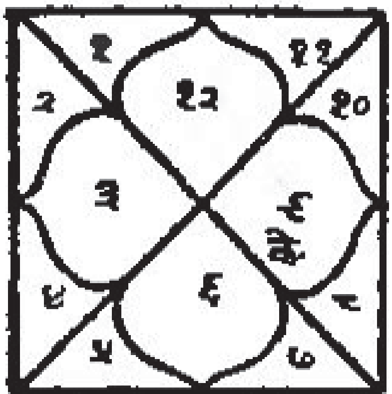

१५२०

दसवें भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित उच्च के 'केतु' के प्रभाव से जातक को पिता से सुख, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति अपनी उन्नति के लिए कठोर परिश्रम करता है तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मीन लग्न : एकादशभाव : केतु

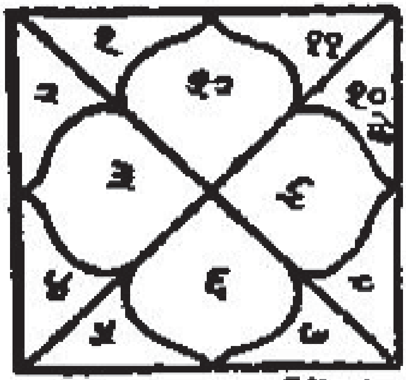

१५२१

ग्यारहवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। कभी-कभी कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु वह साहस एवं धैर्य के साथ उन पर विजय पा लेता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा बहादुर, धैर्यवान्, हिम्मती तथा स्वार्थी होता है।

'मीन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मीन लग्न : द्वादशभाव : केतु

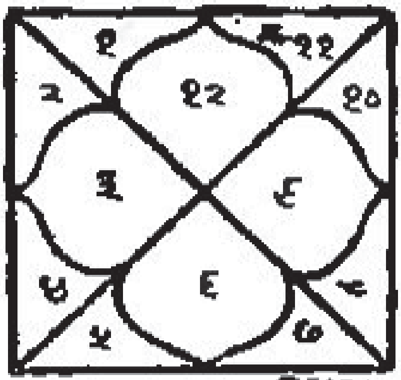

१५२२

बारहवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को खर्च के कारण कष्टों का अनुभव होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से भी असन्तोष मिलता है। परन्तु वह अपनी गुप्त युक्तियों, धैर्य तथा परिश्रम के बल पर कठिनाइयों का साहस के साथ मुकाबला करता है तथा उन पर विजय पाकर उन्नति लाभ करता है।

हस्तलिखित, असली, प्राचीन

भृगुसंहिता फलित–प्रकाश

●

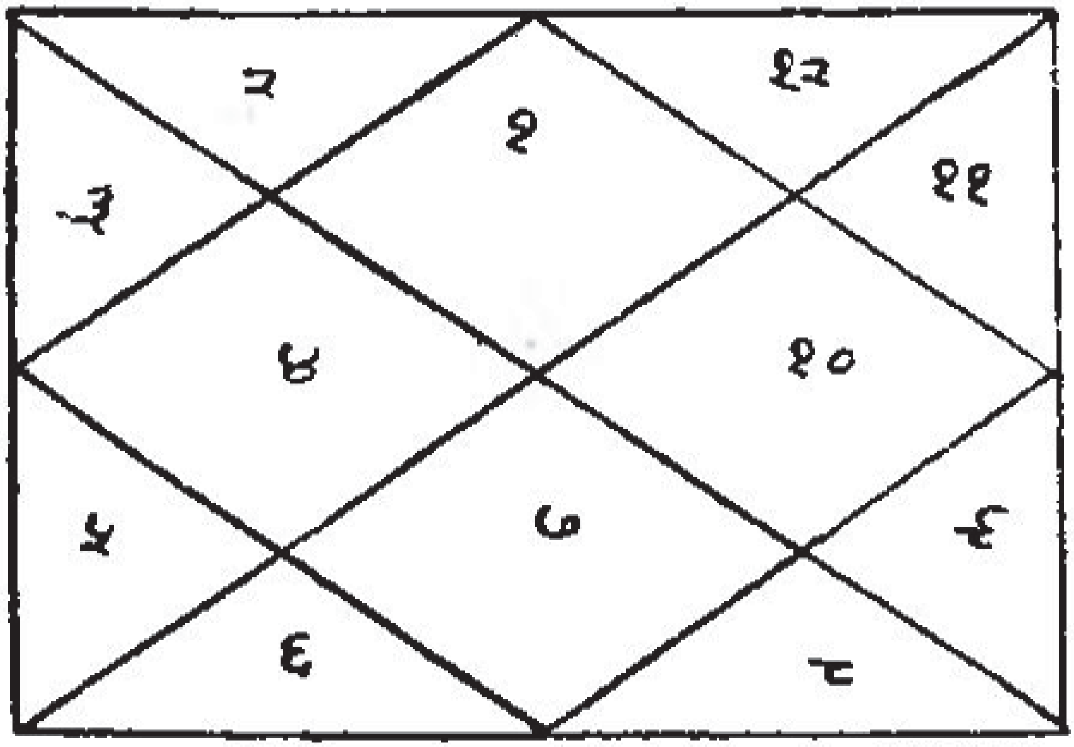

१४२३

3

तृतीय खण्ड

[ग्रहों की युति, स्त्री-जातक तथा विशिष्ट योग आदि का वर्णन]

ग्रहों की युति

जन्मकुण्डली के किसी एक ही भाव में यदि एक से अधिक—दो, तीन, चार, पाँच, छः या सात—ग्रह बैठे हों तो उसे ग्रहों की युति कहा जाता है। विभिन्न भावों में अलग-अलग बैठे हुए ग्रह के सामान्य-फलादेश की अपेक्षा ग्रहों की युति के फलादेश में बहुत अन्तर आ जाता है, अतः ग्रहों की युति के फलादेश की अलग से जानकारी प्राप्त होना अत्यावश्यक है।

प्रस्तुत प्रकरण में सर्वप्रथम 'ग्रहों की युति' के फलादेश का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है। आगे दी गई सभी उदाहरण-कुण्डलियाँ मेष-लग्न की हैं, जिनमें विभिन्न ग्रहों की युति को प्रदर्शित किया गया है, साथ ही उनके फलादेश का उल्लेख भी किया गया है। परन्तु विभिन्न व्यक्तियों की कुण्डलियाँ विभिन्न लग्नों की होती हैं तथा ग्रहों की युति भी विभिन्न भावों में पाई जाती है, अतः इन उदाहरण-कुण्डलियों को केवल आधार के रूप में ही ग्रहण करना चाहिए तथा ग्रहों की युति के सही फलादेश का निर्णय करते समय उनकी उच्च-नीच, मित्र-शत्रु एवं स्वराशिगत स्थिति, उन पर पड़ने वाली अन्य ग्रहों की दृष्टि आदि सभी बातों पर विचार करने के बाद ही निष्कर्ष-स्वरूप उचित फलादेश का निर्णय करना चाहिए।

ग्रहों की युति के फलादेश में राहु-केतु को स्थान न देकर, केवल मुख्य सात ग्रहों की युति का ही उल्लेख किया गया है। राहु-केतु मित्र भाव में मित्र-ग्रह के घर में बैठे होते हैं, उनके प्रभाव को बढ़ाते हैं और शत्रु-ग्रह के रूप में बैठे होते हैं तो उनके प्रभाव को घटाते हैं—यह सामान्य सिद्धान्त है। राहु-केतु स्वयं सभी एक साथ नहीं बैठते—ये छाया-ग्रह होने के कारण सदैव एक-दूसरे से सातवें स्थान पर ही रहते हैं।

विशेष-ज्ञातव्य

ग्रहों की युति के फलादेश के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातों को भी विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए—

(१) यदि जन्म के समय तीन शुभ ग्रहों की युति हो तो जातक का जीवन सुखी रहता है, परन्तु यदि तीन पाप-ग्रहों की युति हो तो जातक जीवन-भर दुःखी तथा सर्वत्र निन्दित रहता है।

(२) पाँच अथवा छः ग्रहों की युति के फलस्वरूप जातक प्रायः दरिद्र तथा मूर्ख होता है।

(३) तीन ग्रहों की युति वाली कुण्डली में यदि चन्द्रमा किसी पाप-ग्रह के साथ हो तो जातक की माता की मृत्यु होने की आशंका रहती है। यदि सूर्य पाप ग्रह

के भाव हो तो पिता की मृत्यु की संभावना रहती है। चन्द्रमा शुभ ग्रहों के साथ बैठा हो तो शुभ फल देता है, पाप ग्रह के साथ अशुभ फल देता है। शुभ ग्रह तथा पाप ग्रह—दोनों के साथ बैठा हो तो मिश्रित फल देता है। यही नियम सूर्य पर भी लागू होता है।

(४) जन्मकुण्डली के किसी भाव पर यदि दो-तीन अथवा अधिक ग्रहों की एक साथ दृष्टि पड़ रही हो तो उसका प्रभाव भी उन ग्रहों की युति जैसा ही समझना चाहिए।

अगले पृष्ठों पर विभिन्न ग्रहों की युति वाली उदाहरण-कुण्डलियों को अलग-अलग फलादेश के साथ प्रदर्शित किया जा रहा है। इनके आधार पर लग्न, भाव तथा अन्य सब बातों पर गंभीरतापूर्वक विचार करने के उपरान्त ही यथार्थ फलादेश का निर्णय करना चाहिए।

दो ग्रहों की युति का फलादेश

सूर्य और चन्द्र

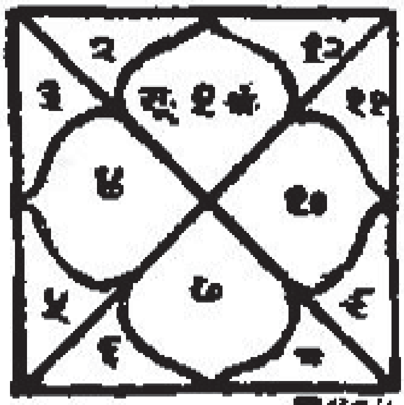

(१) सूर्य और चन्द्रमा की युति हो तो जातक दुष्ट, कपटी, चतुर, अभिमानी, अविनयी, क्षुद्र-हृदय, कार्य-कुशल, पराक्रमी, विषयासक्त, स्त्री के वशीभूत तथा पत्थरों का व्यवसाय करने वाला होता है।

सूर्य और मंगल

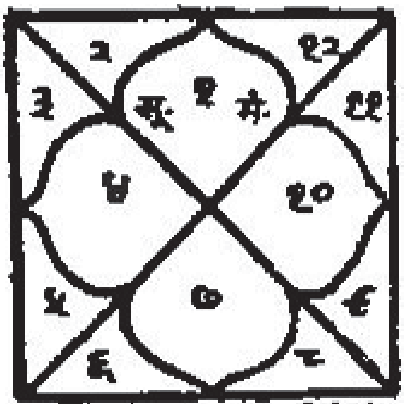

(२) सूर्य और मंगल की युति हो तो जातक तेजस्वी, क्रोधी, मिथ्यावादी, मूर्ख, बलवान्, कलह-प्रिय तथा धर्म-कर्म एवं धन से रहित होता है। वह अपने बन्धु-बान्धवों से प्रेम रखता है।

सूर्य और बुध

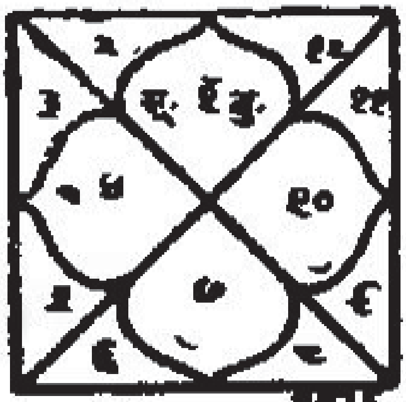

१५२६

(३) सूर्य और बुध की युति हो तो जातक यशस्वी, प्रियवादी, श्रेष्ठ बुद्धिमान्, विद्वान्, मंत्री, राजा का सेवक, वेदज्ञ, गीत-वाद्य में कुशल, कवि, सेवा-कर्म करने में पटु, स्थिर धनी, यशस्वी तथा राज्य द्वारा सम्मानित होता है।

सूर्य और गुरु

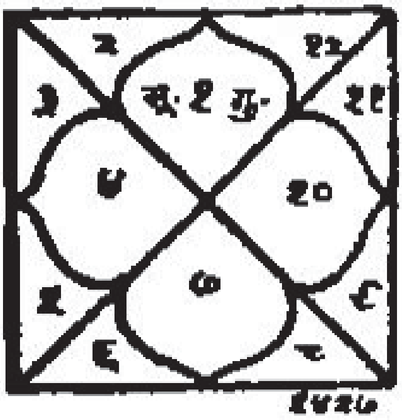

१५२७

(४) सूर्य और गुरु की युति हो तो जातक शास्त्रज्ञ, धर्मात्मा, धनवान्, चतुर, परोपकारी, पौरोहित्य कर्म करने में कुशल, प्रसिद्ध, मित्रवान्, राज-मान्य तथा लोक-प्रसिद्ध होता है।

सूर्य और शुक्र

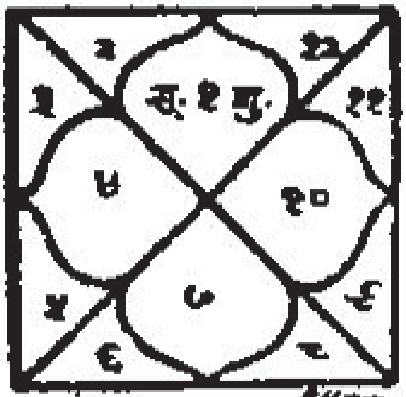

१५२८

(५) सूर्य और शुक्र की युति हो तो जातक संगीत, वाद्य एवं शस्त्र-विद्या में कुशल, बुद्धिमान्, नाट्यकार, श्रेष्ठ, कार्यक्षम, मित्रवान्, बलवान्, क्षीण-दृष्टि तथा स्त्री द्वारा धन प्राप्त करने वाला होता है।

सूर्य और शनि

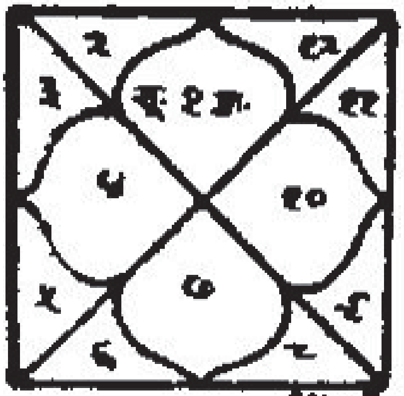

१५२९

(६) सूर्य और शनि की युति हो तो जातक विद्वान्, पुण्यवान्, श्रेष्ठ बुद्धि वाला, धर्मात्मा, धातु का काम करने में कुशल तथा वृद्धों के समान आचरण करने वाला होता है।

कुछ विद्वानों के मत में ऐसा व्यक्ति स्त्री-पुत्र के सुख से रहित—और कुछ के मत में सुत-युक्त—होता है।

चन्द्र और मंगल

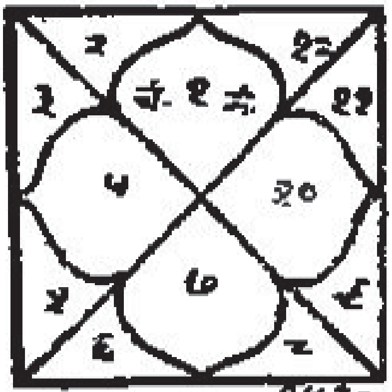

१४३०

(७) चन्द्रमा और मंगल की युति हो तो जातक युद्ध-कुशल, प्रतापी, आचारहीन, कलह-प्रेमी, धातु-शिल्प में कुशल, माता का शत्रु, रक्त-विकार का रोगी तथा व्यवसाय द्वारा जीविका उपार्जन करने वाला होता है।

चन्द्र और बुध

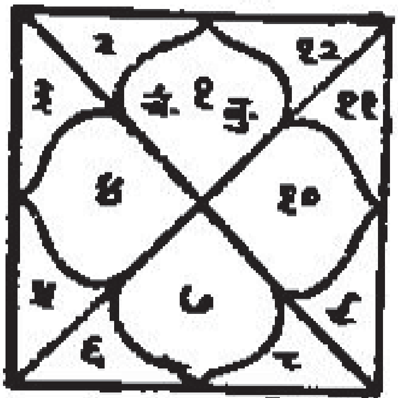

१४३१

(८) चन्द्रमा और बुध की युति हो तो जातक कवि, सुन्दर, गुणी, प्रियवादी, दयालु, हँसमुख, अधिक बोलने वाला, विषयासक्त, कुल-धर्म का पालक तथा दुर्बल शरीर वाला होता है।

चन्द्र और गुरु

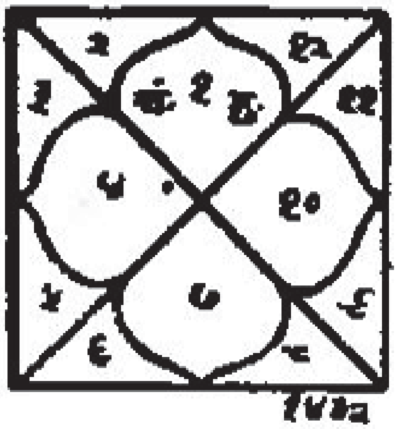

१४३२

(९) चन्द्रमा और गुरु की युति हो तो जातक सुशील, विनम्र, धर्मात्मा, परोपकारी, सच्चा मित्र, देव-ब्राह्मण-भक्त, भाई-बहिनों से स्नेह रखने वाला, धनी तथा गुप्त मन्त्र वाला होता है।

चन्द्र और शुक्र

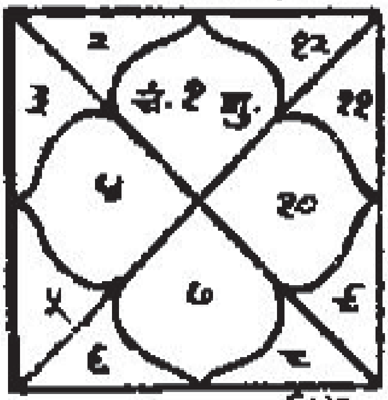

१४३३

(१०) चन्द्रमा और शुक्र की युति हो तो जातक झगड़ालू, व्यसनी, सुगन्ध-प्रिय, विक्रय-कार्य में कुशल, अनेक कार्यों का ज्ञाता तथा अल्प वस्त्राभूषणों वाला होता है।

चन्द्र और शनि

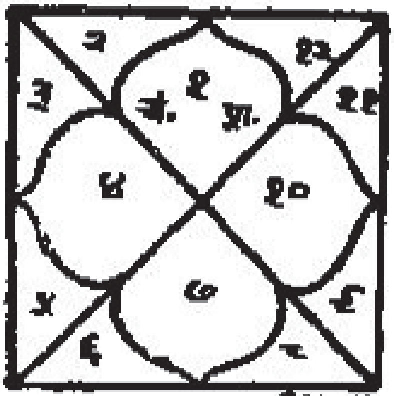

१४३७

(११) चन्द्रमा और शनि की युति हो तो जातक आचारहीन, पुरुषार्थहीन, अल्प सन्ततिवान्, परस्त्रीगामी, वृद्धा स्त्री में आसक्त, हाथी-घोड़े रखने वाला, व्यवसायी तथा वेश्या द्वारा धन प्राप्त करने वाला होता है।

मंगल और बुध

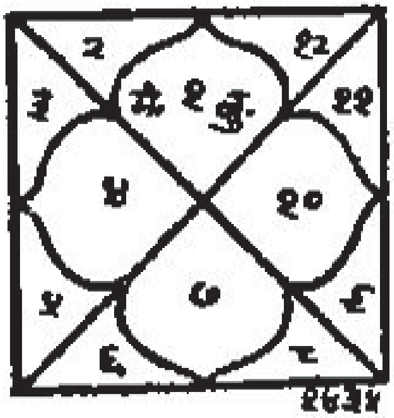

१८३५

(१२) मंगल और बुध की युति हो तो जातक कुरूप, कृपण, धन-हीन, मल्ल-विद्या में कुशल, लोहे अथवा सोने का व्यवसाय करने वाला, बहुस्त्री-गामी विधवा से विवाह करने वाला तथा अनेक प्रकार की औषधियों का सेवन करने वाला होता है।

मंगल और गुरु

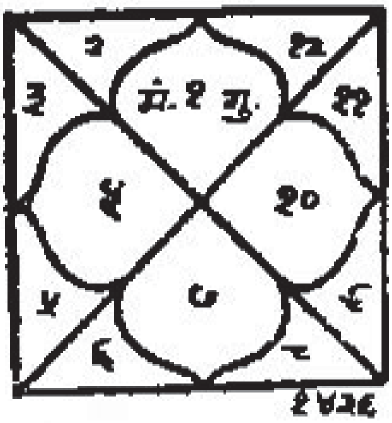

१५३६

(१३) मंगल और गुरु की युति हो तो जातक मेधावी, शास्त्रज्ञ, शस्त्रज्ञ, मन्त्रज्ञ, वाक्पटु, शिल्प-निपुण, शीलवान्, चतुर, घोड़ों का प्रेमी, सेना का अधिकारी, प्रधान अथवा उच्च पद पाने वाला होता है।

मंगल और शुक्र

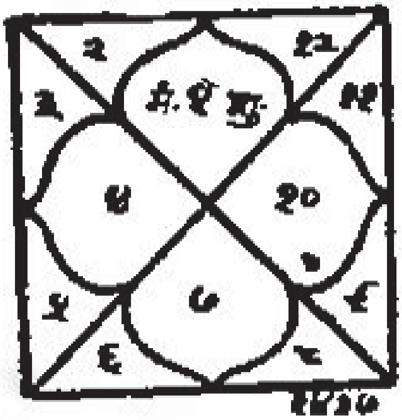

१५३७

(१४) मंगल और शुक्र की युति हो तो जातक गुणी, गणितज्ञ, प्रपंची, मिथ्यावादी, परस्त्रीगामी, अहंकारी, पापी, शठ, सबसे शत्रुता रखने वाला, परन्तु समाज में सम्मान पाने वाला होता है।

मंगल और शनि

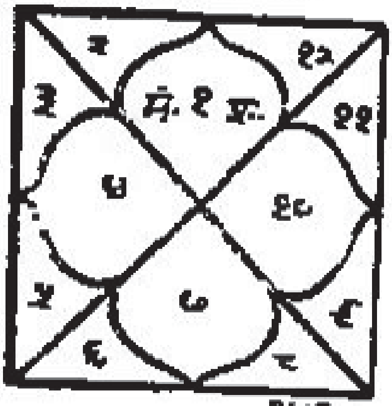

१४३८

(१५) मंगल और शनि की युति हो तो जातक जादूगर, ऐन्द्रजालिक, कलह-प्रिय, चोर, मिथ्यावादी, शस्त्रज्ञ, शास्त्रज्ञ, मित्र-हीन, सुख-हीन, अपयशी, स्वधर्म को त्याग कर पर-धर्म ग्रहण करने वाला, उचित बात कहने वाला तथा विष अथवा मदिरा का निर्माता एवं विक्रेता होता है।

बुध और गुरु

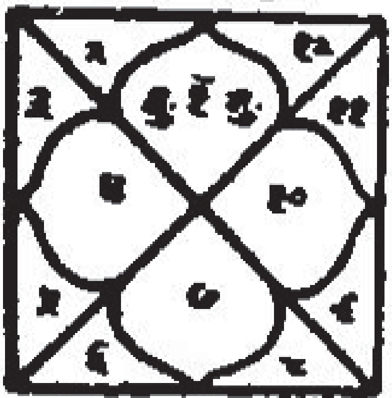

१४३९

(१६) बुध और गुरु की युति हो तो जातक धैर्यवान्, पण्डित, नीतिज्ञ, विनयी, उदार, गुणी, सुगन्ध-प्रिय तथा नृत्य-वाद्य में कुशल होता है।

बुध और शुक्र

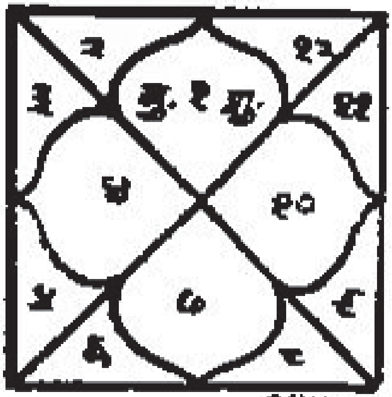

१४४०

(१७) बुध और शुक्र की युति हो तो जातक वेदज्ञ, नीतिज्ञ, शास्त्रज्ञ, प्रतापी, सुखी, शिल्पज्ञ, चतुर, सुन्दर, आनन्दी, धनी तथा अनेक लोगों पर हुकूमत करने वाला होता है।

बुध और शनि

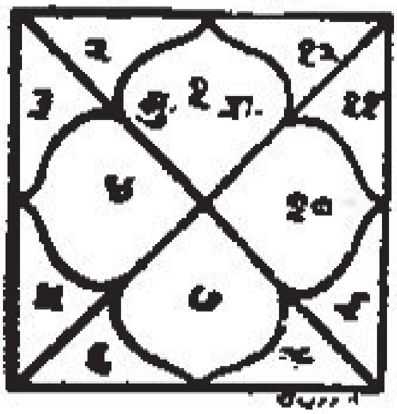

(१८) बुध और शनि की युति हो तो जातक चंचल-चित्त, कलह-प्रिय, उद्योगहीन, उचित बोलने वाला, भ्रमण-शील, संगीत-काव्य आदि में कुशल तथा दुर्बल शरीर वाला होता है।

गुरु और शुक्र

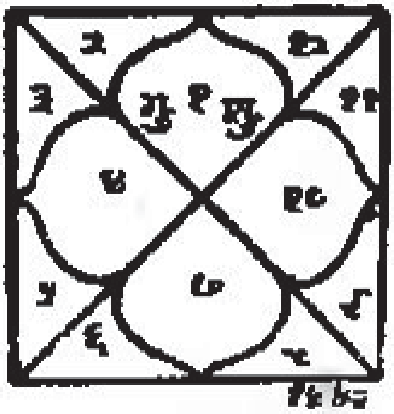

१५४२

(१९) गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक विद्वान्, बुद्धिमान्, गुणवान्, धर्मात्मा, शास्त्रज्ञ, शास्त्रार्थ करने वाला, अत्यन्त सुखी, यशस्वी, धनी तथा सुन्दरी स्त्री, पुत्र-मित्र आदि के सुख से युक्त होता है।

गुरु और शनि

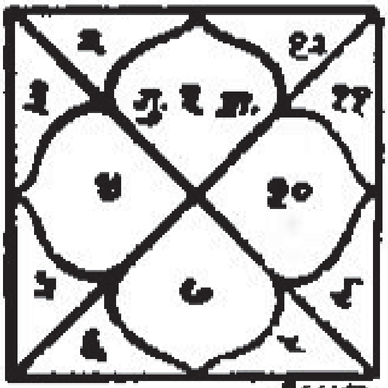

१५४३

(२०) गुरु और शनि की युति हो तो जातक शूर-वीर, यशस्वी, धनी, प्रधान सेनापति, कला-कुशल तथा स्त्री द्वारा इच्छित सुख प्राप्त करने वाला होता है।

शुक्र और शनि

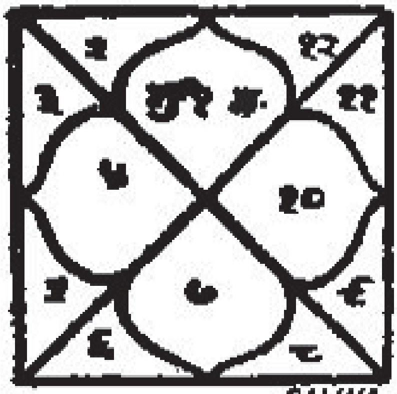

१५४४

(२१) शुक्र और शनि की युति हो तो जातक चपल-बुद्धि, आनन्दी, लवण तथा अम्लरस का प्रेमी, उन्मत्त-प्रकृति, शिल्प-आलेखन में प्रवीण तथा दारुण संग्राम करने वाला होता है।

तीन ग्रहों की युति का फलादेश

सूर्य : चन्द्र : मंगल

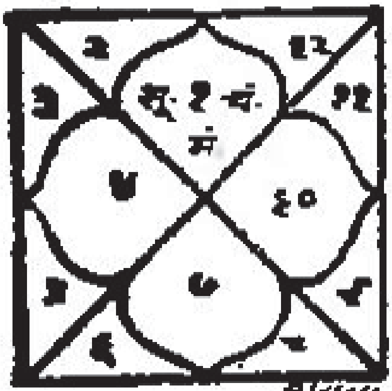

१५४५

(१) सूर्य, चन्द्र और मंगल की युति हो तो जातक शूरवीर, मंत्रविद्या में कुशल, रक्त-विकार से ग्रस्त, स्त्री-हीन, दया-हीन तथा यन्त्रादि के निर्माण में कुशल होता है।

सूर्य : चन्द्र : बुध

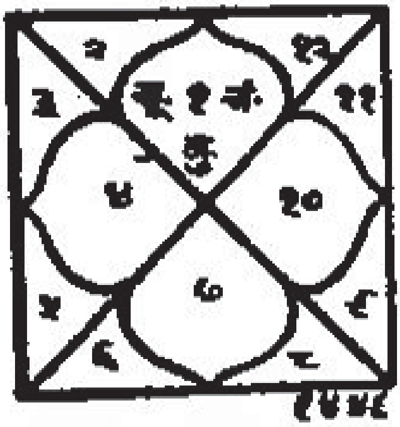

१६५६

(२) सूर्य, चन्द्र और बुध की युति हो तो जातक विद्वान्, धनवान्, प्रियवादी, प्रतापी, श्रेष्ठ कवि अथवा कथाकार, वाक्पटु, शास्त्रज्ञ, कलाकार, सभा-प्रिय तथा राजा का सेवक होता है।

सूर्य : चन्द्र : गुरु

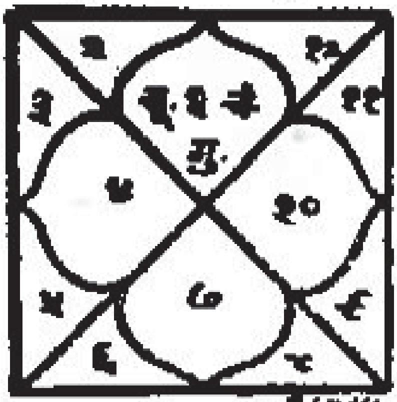

१६५७

(३) सूर्य, चन्द्र और गुरु की युति हो तो जातक धर्मात्मा, स्थिर-बुद्धि, चंचल, चतुर, धूर्त, पर्यटन-प्रेमी, विद्वान्, सेवा-कुशल, देव-ब्राह्मण का पूजक तथा राजा का मंत्री होता है।

सूर्य : चन्द्र : शुक्र

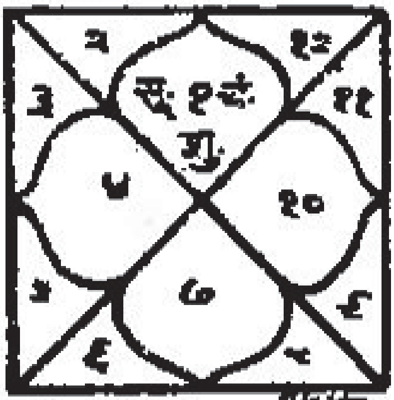

१६५८

(४) सूर्य, चन्द्र और शुक्र की युति हो तो जातक सुन्दर, परम तेजस्वी, अत्यन्त प्रतापी, भाग्यवान्, व्यसनी, शत्रु-संहर्ता, दांतों के विकार से युक्त, परधनापहारी तथा धर्म में प्रीति न रखने वाला होता है।

सूर्य : चन्द्र : शनि

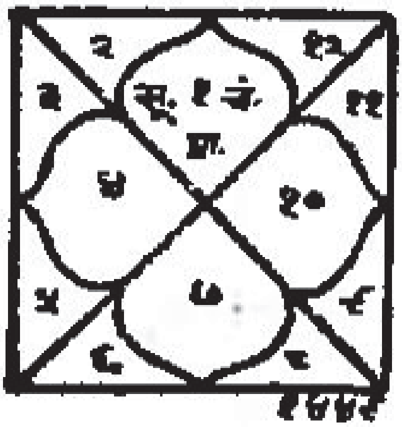

१६५९

(५) सूर्य, चन्द्र और शनि की युति हो तो जातक अत्यन्त धूर्त, धर्म का पालन करने वाला, शील-रहित, सत्कर्म करने वाला, वैश्या-प्रेमी, ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, व्यर्थ परिश्रम करने वाला, हाथी-घोड़ा पालने वाला तथा धातु-कर्म में कुशल होता है।

सूर्य : मंगल : बुध

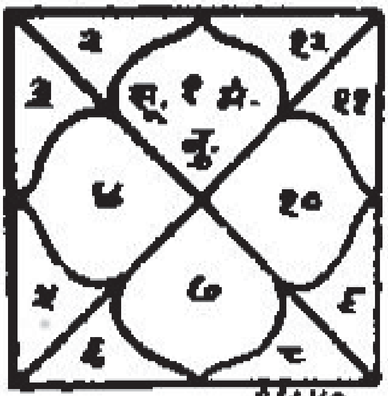

१४५०

(६) सूर्य, मंगल और बुध की युति हो तो जातक साहसी, प्रबल पराक्रमी, निर्लज्ज, कठोर-प्रकृति, सलाह देने में चतुर तथा धन, स्त्री, पुत्र, मित्र आदि से सुख से युक्त होता है।

सूर्य : मंगल : गुरु

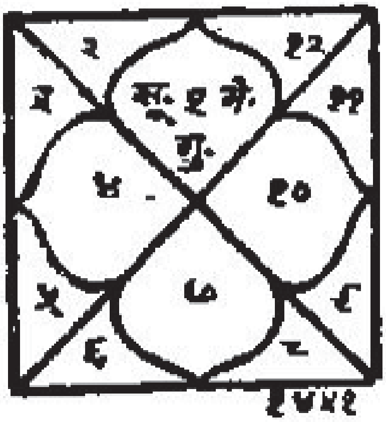

१४५१

(७) सूर्य, मंगल और गुरु की युति हो तो जातक उदार-हृदय, प्रियवादी, सत्यवादी, उग्र-प्रकृति, सेनापति, नीतिज्ञ, श्रेष्ठ वक्ता, धनी, राजा का मंत्री तथा सब कार्यों के करने में कुशल होता है।

सूर्य : मंगल : शुक्र

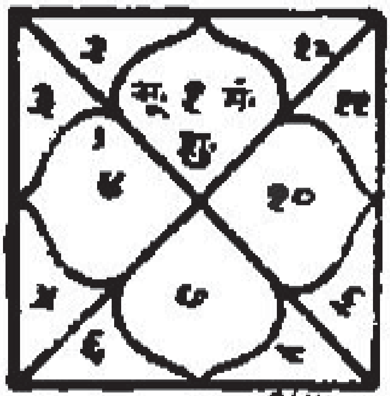

१४५२

(८) सूर्य, मंगल और शुक्र की युति हो तो जातक सुन्दर, अत्यन्त चतुर, दयालु, गुणी, धनी, विनम्र, बहुत बोलने वाला, सुशील अथवा कुशील, कार्य-कुशल, नेत्र-रोगी, विषयासक्त तथा अपने कुल में श्रेष्ठ होता है।

सूर्य : मंगल : शनि

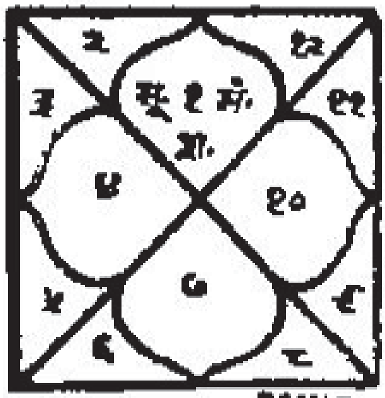

१४५३

(९) सूर्य, मंगल शनि की युति हो तो जातक मूर्ख, निर्धन, स्वजनों से तिरस्कृत, विकल, बन्धु-विहीन, कलह से व्याकुल, सघन रोमों वाला, रोगी तथा धन एवं पशुओं से रहित होता है।

सूर्य : बुध : गुरु

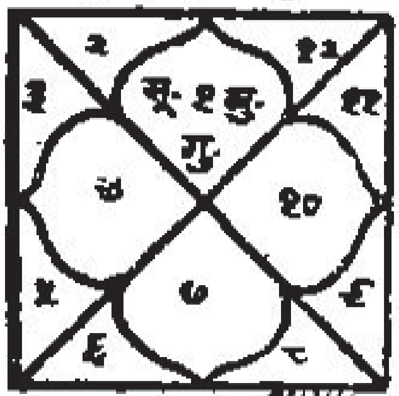

१५५४

(१०) सूर्य, बुध और गुरु की युति हो तो जातक शास्त्रज्ञ, शस्त्रज्ञ, लेखक, संग्रही, चतुर, अत्यन्त धनी तथा नेत्र-रोगी होता है।

सूर्य : गुरु : शुक्र

१५५५

(११) सूर्य, बुध और शुक्र की युति हो तो जातक माता, पिता तथा गुरुजनों से तिरस्कृत, स्त्री के कारण दुःखी, आचार-विहीन, सबसे शत्रुता रखने वाला, दुर्बुद्धि तथा परदेशवासी होता है।

सूर्य : बुध : शनि

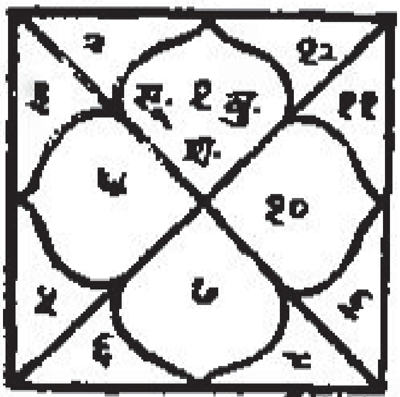

१५५६

(१२) सूर्य, बुध और शनि की युति हो तो जातक दुराचारी, परम दुष्ट, नपुंसक-जैसे स्वभाव वाला, बन्धु-बान्धवों से परित्यक्त, शत्रु द्वारा पराजित तथा नीच मनुष्यों का संगी होता है।

सूर्य : गुरु : शुक्र

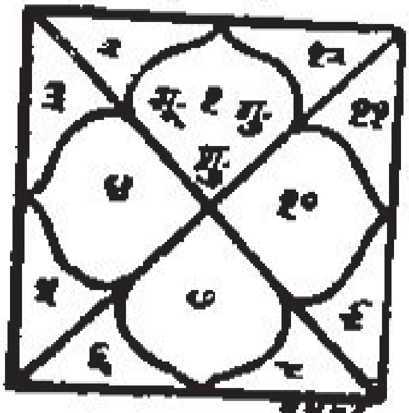

१५५७

(१३) सूर्य, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक पण्डित, शूरवीर, परोपकारी, अल्पभाषी, धन-हीन, नेत्र-रोगी, दुष्ट स्वभाव वाला, पराये कामों में अधिक रुचि रखने वाला तथा राजा का आश्रित होता है।

सूर्य : गुरु : शनि

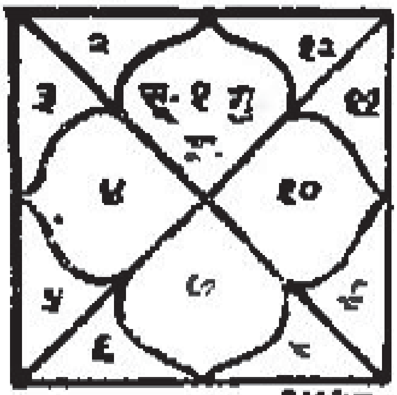

१९५८

(१४) सूर्य, गुरु और शनि की युति हो तो जातक सुन्दर, निर्भय, प्रगल्भ, विचारक, बन्धु-हितैषी, बहु मित्र-वान्, मितव्ययी तथा राजा का प्रिय—कुछ विद्वानों के मतानुसार, राजा से द्वेष रखनेवाला—होता है।

सूर्य : शुक्र : शनि

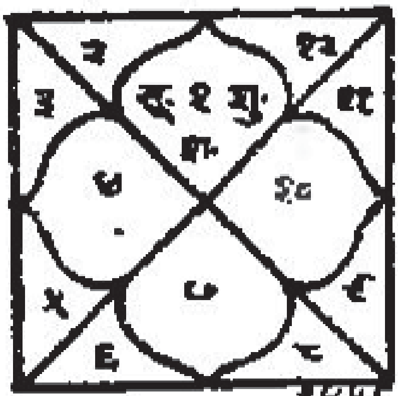

१९५९

(१५) सूर्य, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक दुराचारी, बन्धु-रहित, कुष्ठ-रोगी, कला-विहीन, सम्मान-हीन, शत्रुओं से भयभीत तथा कुकर्मी होता है।

चन्द्र : मंगल : बुध

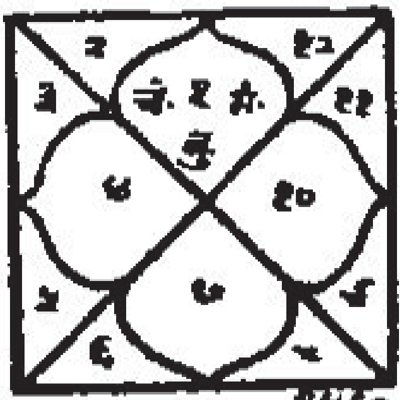

१९६०

(१६) चन्द्र, मंगल और बुध की युति हो तो जातक पापी, दुराचारी, अपमानित, अत्यन्त दीन, नीचों का साथी, आजीविका-हीन तथा बन्धु-बान्धवों से हीन होता है।

चन्द्र : मंगल : गुरु

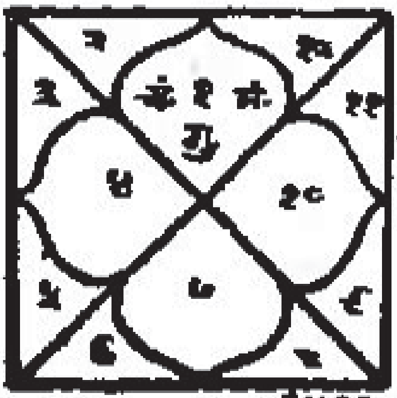

१९६१

(१७) चन्द्र, मंगल और गुरु की युति हो तो जातक सुन्दर, बलवान्, क्रोधी, स्त्री-आसक्त, अपहरणकर्ता, पर-स्त्री-गामी, स्त्रियों का प्रिय, सदैव प्रसन्न रहने वाला तथा फोड़ा-फुंसी आदि के विकारों से ग्रस्त होता है।

चन्द्र : मंगल : शुक्र

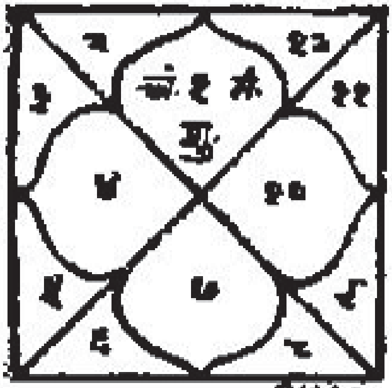

१५६२

(१८) चन्द्र, मंगल और शुक्र की युति हो तो जातक चंचल स्वभाव वाला, निरन्तर भ्रमणशील, कुशील तथा मौत से डरने वाला होता है। उसकी माता तथा पत्नी दुष्ट स्वभाव वाली होती हैं तथा पुत्र शीलवान् होता है।

चन्द्र, मंगल, शनि

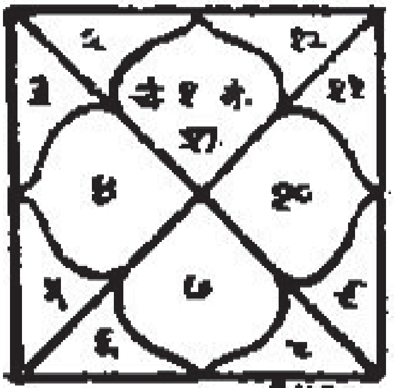

१५६३

(१९) चन्द्र, मंगल और शनि की युति हो तो जातक कुटिल, लोक-द्वेषी, कलह-प्रिय, क्षुद्र स्वभाव वाला तथा सदैव दुःखी रहने वाला होता है। माता का उसकी बाल्यावस्था में ही देहावसान हो जाता है।

चन्द्र : बुध : गुरु

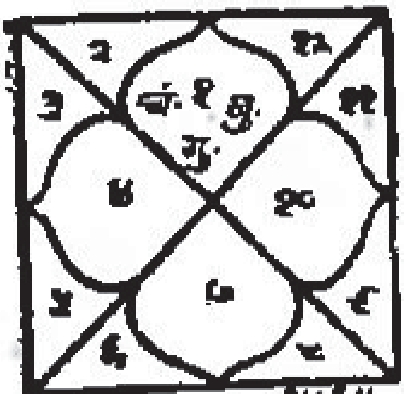

१५६४

(२०) चन्द्र, बुध और गुरु की युति हो तो जातक बुद्धिमान्, भाग्यवान्, धनवान्, यशस्वी, तेजस्वी, अत्यन्त प्रसिद्ध, कुशल वक्ता, श्रेष्ठ मनोवृत्ति वाला तथा स्त्री, पुत्र-मित्र आदि के सुख से युक्त होता है।

चन्द्र : बुध : शुक्र

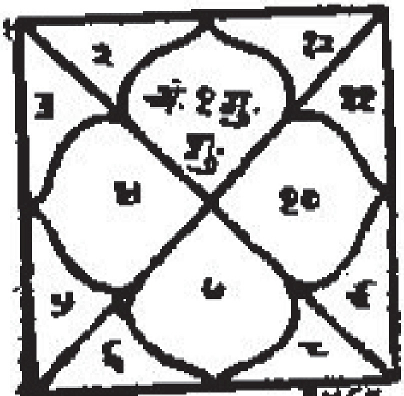

१५६५

(२१) चन्द्र, बुध और शुक्र की युति हो तो जातक बड़ा विद्वान्, ईर्ष्यालु, दुराग्रही, धन का लोभी, नीच कर्म द्वारा आजीविका उपार्जित करने वाला तथा श्राद्ध के विषय में अधिक श्रद्धालु होता है।

चन्द्र : बुध : शनि

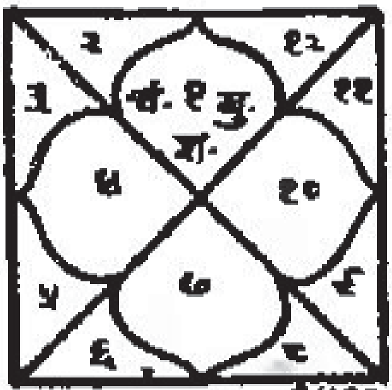

१५६६

(२२) चन्द्र, बुध और शनि की युति हो तो जातक श्रेष्ठ बुद्धि वाला, कला-कुशल, महाविद्वान्, पण्डित, प्रिय-वादी, विनम्र, विश्व-प्रसिद्ध, लम्बे शरीरवाला, ग्राम का अधिपति तथा राजाओं को प्रिय होता है।

चन्द्र : गुरु : शुक

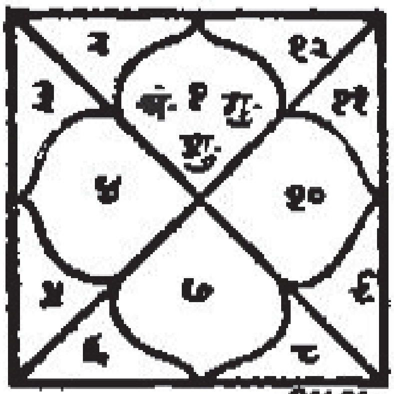

१५६७

(२३) चन्द्र, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक विद्वान्, मंत्रज्ञ, चतुर, कला-कुशल, राजाओं को प्रिय तथा सुन्दर शरीर वाला होता है। उसकी माता अत्यन्त सुशील होती है।

चन्द्र : गुरु : शनि

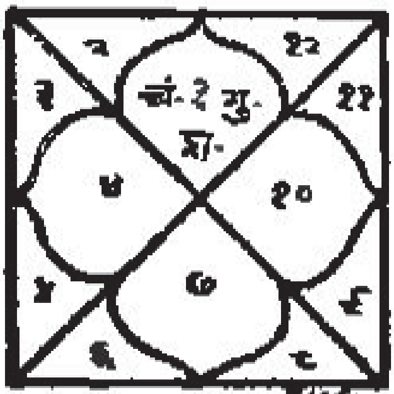

१५६८

(२४) चन्द्र, गुरु और शनि की युति हो तो जातक अत्यन्त चतुर, व्यवहार-कुशल, स्त्रियों को प्रिय, शास्त्रज्ञ, राजा द्वारा सम्मानित, उच्च अधिकारी तथा स्वस्थ शरीर वाला होता है।

चन्द्र : शुक्र : शनि

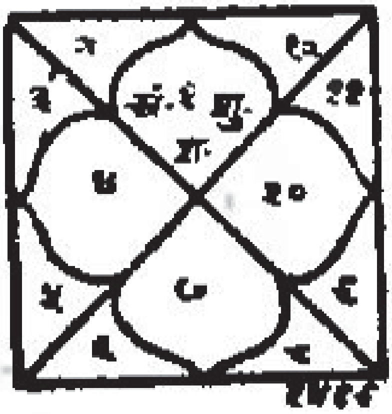

१५६९

(२५) चन्द्र, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक वेदज्ञ, धर्मात्मा, श्रेष्ठ पुरोहित, चित्रकार, लेखक तथा सुन्दर शरीर वाला होता है।

मंगल : बुध : गुरु

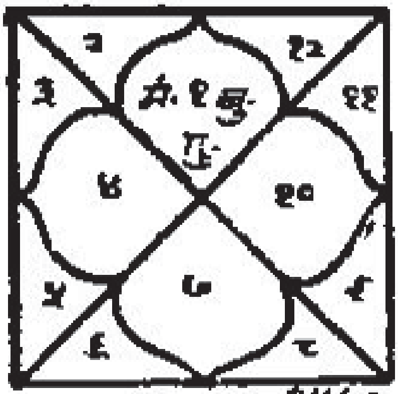

१५७०

(२६) मंगल, बुध और गुरु को युति हो तो जातक प्रतापी, परोपकारी, संगीतज्ञ, श्रेष्ठ कवि, स्त्रियों को प्रिय, परहित-साधक तथा अपने कुल में श्रेष्ठ होता है।

मंगल : बुध : शुक्र

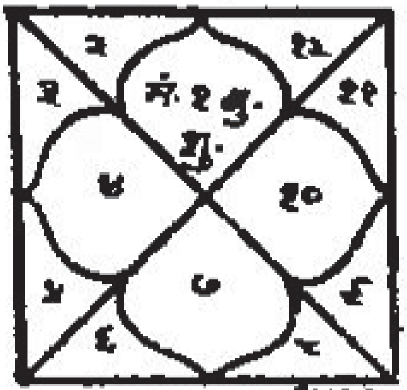

१५७१

(२७) मंगल, बुध और शुक्र को युति हो तो जातक दुर्बल शरीर वाला, बहुत बोलने वाला, हीन कुल में उत्पन्न, अंगहीन, अत्यन्त उत्साही, ढीठ, धनी, चंचल तथा संतुष्ट स्वभाव का होता है।

मंगल : बुध : शनि

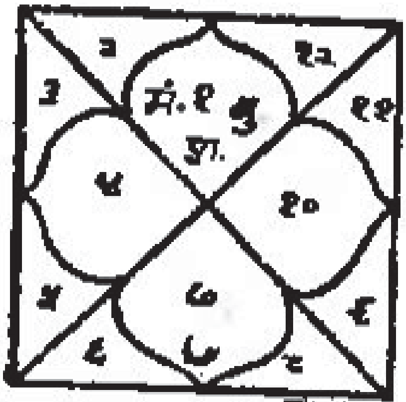

१५७२

(२८) मंगल, बुध और शनि को युति हो तो जातक दुर्बल शरीर वाला, बुरे नेत्रों वाला, नेत्र-रोगी, मुख-रोगी, अत्यधिक कष्ट भोगने वाला, डरपोक, सहिष्णु, हास्य प्रिय, वन में रहने की इच्छा रखनेवाला, परदेश में रहने वाला तथा दूत-कर्म करने वाला होता है।

मंगल : गुरु : शुक्र,

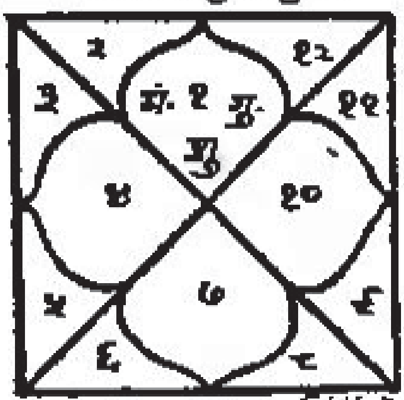

१५७३

(२९) मंगल, गुरु और शुक्र की युति तो जातक सुखी, सब को प्रसन्नता देने वाला, राजा का प्रिय, श्रेष्ठ लोगों द्वारा सम्मानित तथा उत्तम स्त्री-पुत्रों वाला होता है।

मंगल : गुरु : शनि

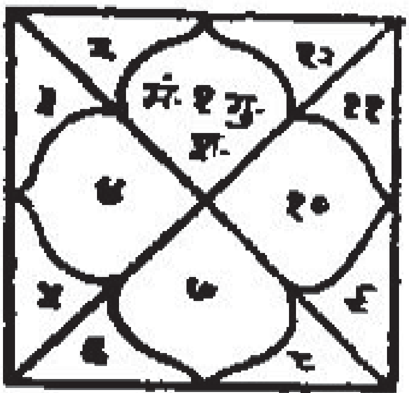

१८७४

(३०) मंगल, गुरु और शनि की युति हो तो जातक दुराचारी, कृश-शरीर निर्धन, कुकर्मी, मित्रों द्वारा निन्दित परन्तु राजा का कृपापात्र होता है।

मंगल : शुक्र : शनि,

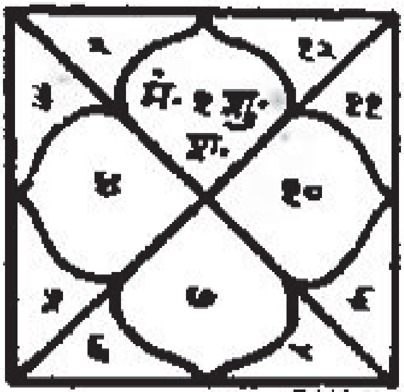

१८७५

(३१) मंगल, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक अच्छे स्वभाव वाला, परदेश में रहने वाला, सदैव दुःख भोगने वाला तथा स्त्री के सुख से रहित होता है।

बुध : गुरु : शुक्र

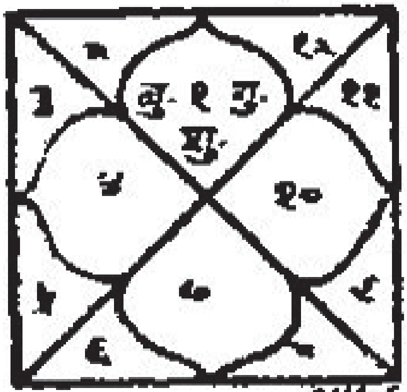

१८७६

(३२) बुध, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक सत्यवादी, परम यशस्वी, सदैव प्रसन्न रहने वाला, शत्रु-हन्ता, सुन्दर तथा राजा द्वारा सम्मानित होता है।

बुध : गुरु : शनि

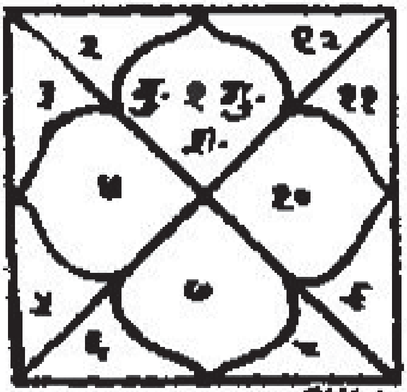

१८७७

(३३) बुध गुरु और शनि की युति हो तो जातक अत्यन्त धनी, शीलवान्, भाग्यवान्, धैर्यवान्, पण्डित, सुखी, श्रेष्ठ वस्त्राभूषणों वाला तथा श्रेष्ठ स्त्री का पति होता है।

बुध : शुक्र : शनि

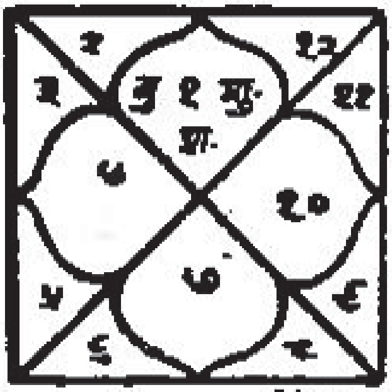

१५७८

(३४) बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक चुगलखोर, पर-स्त्रीगामी, धूर्त, मिथ्यावादी, दुराचारी, धैर्यवान्, स्वदेश-प्रेमी, नीच लोगों के साथ रहने वाला, दूर देशों की यात्रा करने वाला तथा कलाओं का ज्ञाता होता है।

गुरु : शुक्र : शनि

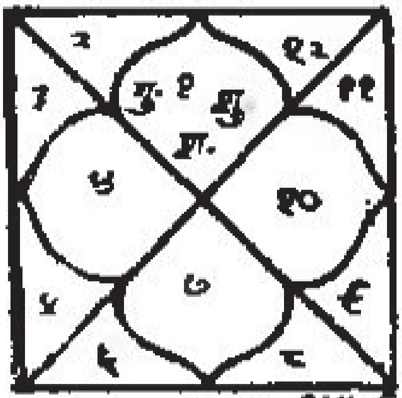

१५७९

(३५) गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक नीच कुल में जन्म लेने पर भी धनी, यशस्वी, सुशील कीर्तिवान्, भूस्वामी, राजा-जैसा प्रतापी तथा निर्मल हृदय वाला होता है। वह अत्यन्त यश भी प्राप्त करता है।

चार ग्रहों की युति का फलादेश

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध

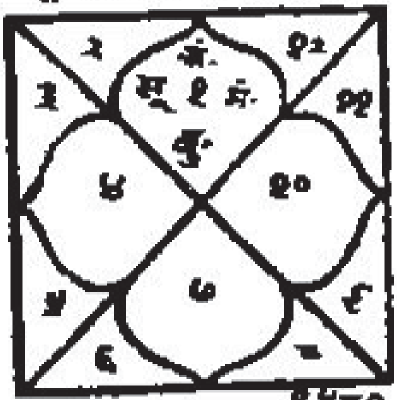

१५८०

(१) सूर्य, चन्द्र, मंगल और बुध की युति हो तो जातक मायावी, चुगलखोर बकवादी, लेखक, चित्रकार, चोर, भाषा पर अधिकार रखनेवाला, सब काम करने में कुशल तथा मुख-रोगी होता है।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु

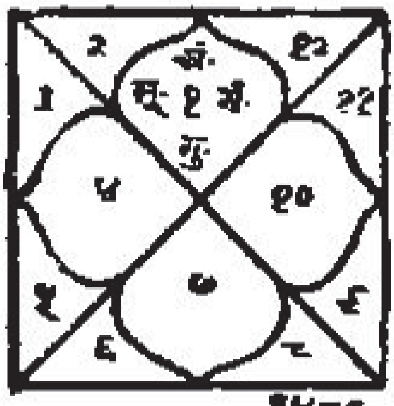

१५८१

(२) सूर्य, चन्द्र, मंगल और गुरु की युति हो तो जातक शिल्पज्ञ, बलवान्, कार्य-कुशल, धनवान्, नीतिज्ञ, तेजस्वी, शोक-रहित, बड़ी आँखों वाला तथा स्वर्ण-जैसे कान्तिमान् शरीर वाला होता है।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, शुक्र

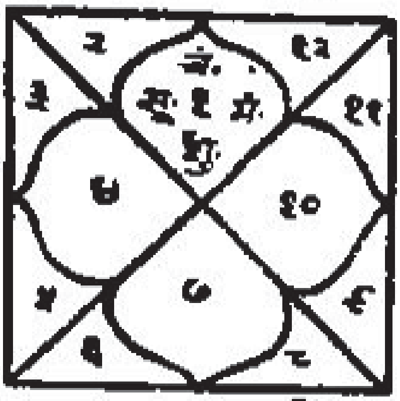

१४८२

(३) सूर्य, चन्द्र, मंगल और शुक्र की युति हो तो जातक विद्वान्, धनवान् वाक्पटु, शास्त्रज्ञ, नीतिज्ञ, स्त्री-पुत्र के सुख से सम्पन्न तथा वाणी से सम्बन्धित कार्यों (वकालत आदि) से जीविका अर्जित करने वाला होता है। परन्तु कुछ विद्वानों के मतानुसार ऐसा व्यक्ति निर्लज्ज, परस्त्री-गामी, छोटे स्वभाव का, चोर तथा धनहीन होता है।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, शनि

१४८३

(४) सूर्य, चन्द्र, मंगल और शनि की युति हो तो जातक धनहीन, मूर्ख, दरिद्र, दुर्बल शरीर वाला, बौना अथवा विषम कद का तथा भिक्षा द्वारा आजीविका उपार्जित करने वाला होता है।

सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु

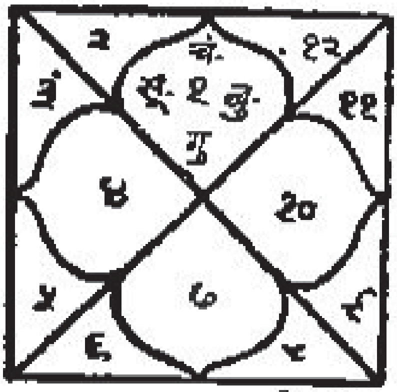

१४८४

(५) सूर्य, चन्द्र, बुध और गुरु की युति हो तो जातक तेजस्वी, नीतिज्ञ, शिल्पज्ञ, शोक-रहित, अत्यन्त धनी, रोग-रहित, गौर-वर्ण तथा सुन्दर नेत्रों वाला होता है।

सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र

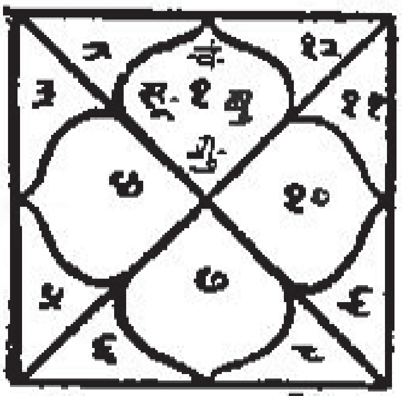

१४८५

(६) सूर्य, चन्द्र, बुध और शुक्र की युति हो तो जातक सुन्दर, कान्तिमान्, सुवक्ता, राज्य द्वारा सम्मान-प्राप्त, छोटे कद वाला परन्तु मन में व्याकुल रहने वाला होता है।

सूर्य, चन्द्र, बुध, शनि

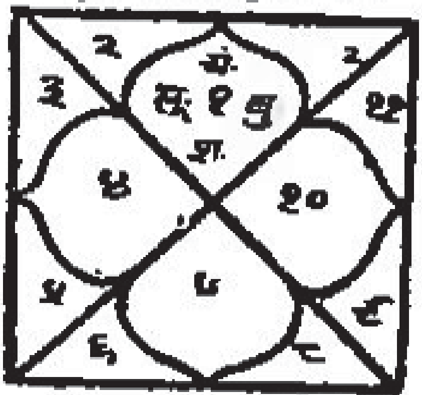

१५८६

(७) सूर्य, चन्द्र, बुध और शनि को युति हो तो जातक निर्धन, दरिद्र, कुटुम्ब-हीन, विकलांग, नेत्र-रोगी, माता-पिता से हीन तथा भिक्षुक होता है।

सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र

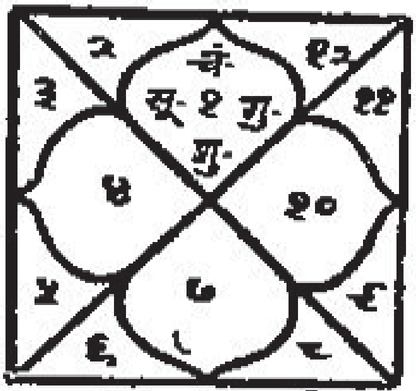

१५८७

(८) सूर्य, चन्द्र, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक सुखी, गुणी, राजाओं द्वारा सम्मानित तथा जल, गुरु एवं वन में प्रीति रखने वाला होता है।

सूर्य, चन्द्र, गुरु, शनि

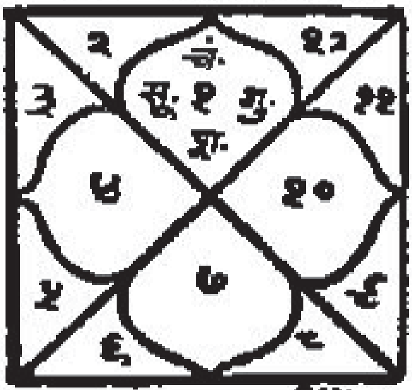

१५८८

(९) सूर्य, चन्द्र, बुध और शनि को युति हो तो जातक यशस्वी, धनी, प्रतापी, सर्वत्र सम्मानित, सुन्दर नेत्रों वाला, पतले शरीर वाला, स्त्रियों का प्रिय तथा बहुत पुत्रों वाला होता है।

सूर्य, चन्द्र, शुक्र, शनि

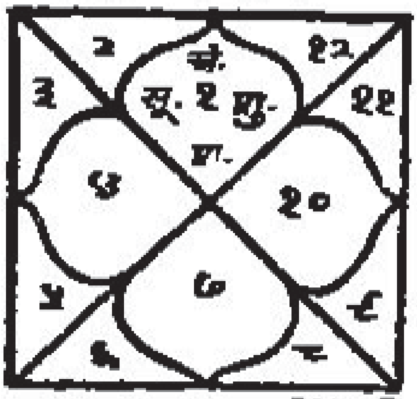

१५८९

(१०) सूर्य, चन्द्र, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक डरपोक, अत्यन्त दुर्बल शरीर वाला, स्त्रियों-जैसा आचरण करने वाला, परन्तु अन्य लोगों का अगुआ (नेता) होता है।

सूर्य, मंगल, बुध, बुध

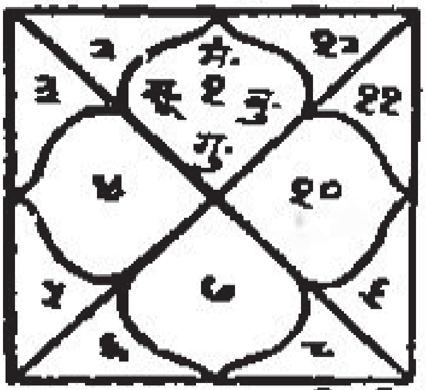

१४६०

(११) सूर्य, मंगल, बुध और गुरु की युति हो तो जातक विजयी, शूरवीर, चक्रधारी, देवता-ब्राह्मणों का सेवक, पर-स्त्रीगामी तथा कुशल बुध-निर्माता या गुरु का व्यवसायी होता है।

सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र

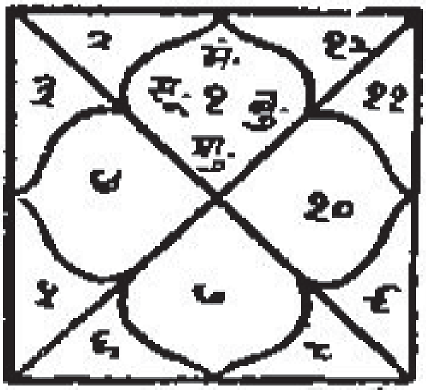

१४६१

(१२) सूर्य, मंगल, बुध और शुक्र की युति हो तो जातक चोर, दुर्जन, निर्लज्ज, पर-स्त्रीगामी, विषम अंगों वाला परन्तु देवता और ब्राह्मणों का पूजक तथा सदैव विजय पाने वाला होता है।

सूर्य, मंगल, बुध, शनि

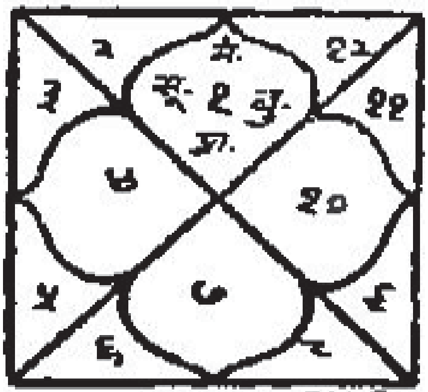

१४६२

(१३) सूर्य, मंगल, बुध और शनि की युति हो तो जातक प्रतापी, धनि, योद्धा, मन्त्री अथवा राजा, अस्त्र-शस्त्रों का ज्ञाता, नीच पुरुषों की संगति में रहने वाला तथा नीच आचरण करने वाला होता है।

सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र

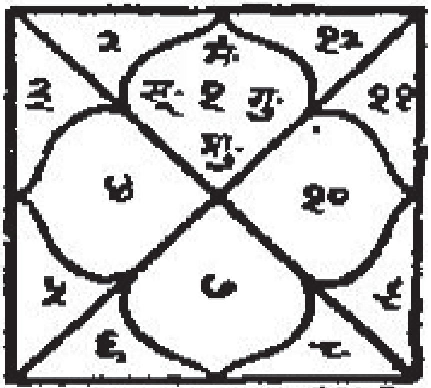

१४६३

(१४) सूर्य, मंगल, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक अत्यन्त धनी, यशस्वी, नीतिज्ञ, मनुष्यों का पालक, सुन्दर शरीर वाला तथा राजा द्वारा सम्मानित होता है।

सूर्य, मंगल, गुरु, शनि

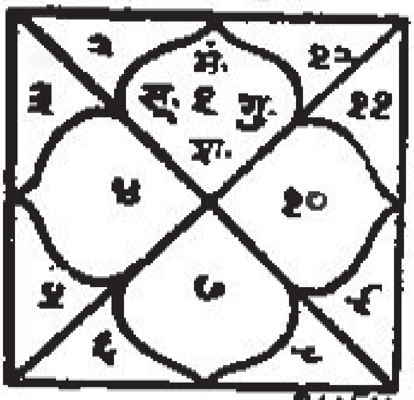

१५८४

(१५) सूर्य, मंगल, बुध और शनि की युति हो तो जातक दयालु, धनी, मनुष्यों में श्रेष्ठ, सुप्रसिद्ध सेनापति, मन्त्री, अन्न का संचय करने वाला, राजा द्वारा पूजित तथा सब कामों में सफलता पाने वाला होता है।

सूर्य, मंगल, शुक्र, शनि

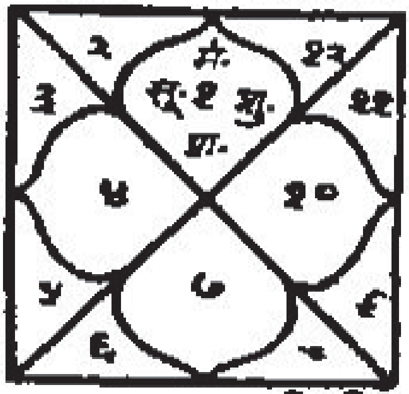

१५८५

(१६) सूर्य, मंगल, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक दुराचारी, मूर्ख, कटुभाषी, नीच कर्म करनेवाला, जन-द्रोही, मांसाहारी तथा नीच जाति के मनुष्यों को साथ रखने वाला होता है।

सूर्य, बुध, बुध, शुक्र

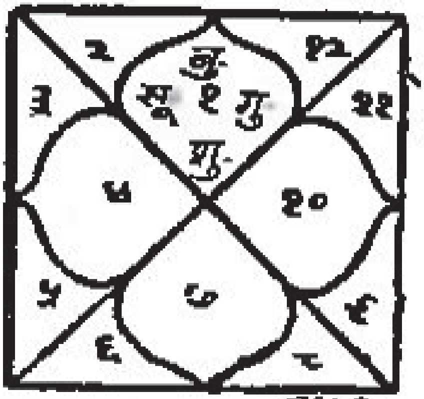

१५८६

(१७) सूर्य, बुध, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक बुद्धिमान्, धनवान्, सुखी, प्रसन्न, विनयी, मानी, स्त्री-पुत्रादि के सुख से युक्त तथा सब कामों में सफलता पाने वाला होता है।

सूर्य, बुध, गुरु, शनि

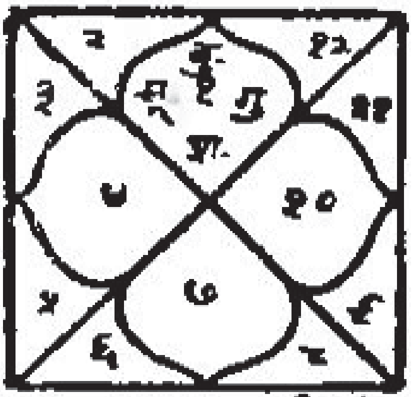

१५८७

(१८) सूर्य, बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक झगड़ालू, उद्योगहीन, निन्दित कर्म करने वाला, नपुंसक-जैसा तथा बहुत-से भाइयों वाला होता है।

सूर्य, बुध, शुक्र, शनि

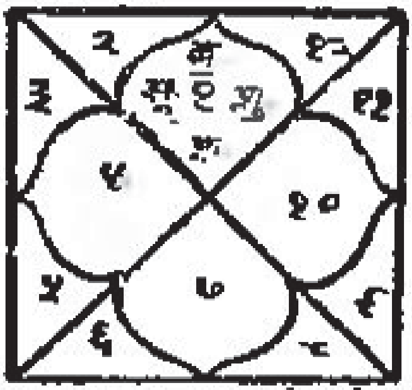

१५६८

(१९) सूर्य, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक पवित्र हृदय वाला, सुन्दर, विद्वान्, पण्डित, सुवक्ता, उच्च विचारों वाला, भाग्यशाली, सुखी, भाइयों द्वारा सम्मानित, मित्रों वाला तथा स्त्री-पुत्रादि के सुख से युक्त होता है।

सूर्य, गुरु, शुक्र, शनि

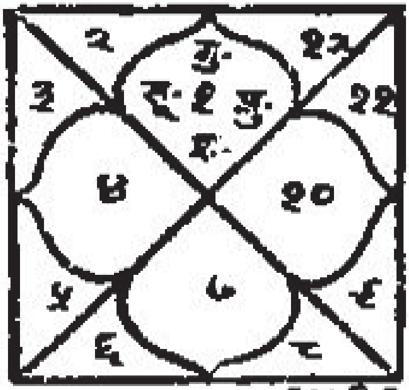

१५६९

(२०) सूर्य, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक सुखी, कवि, शिल्पज्ञ, करुणा से पूरित हृदय वाला, राजा का प्रिय, परन्तु लोभी और परम कृपण होता है।

चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु

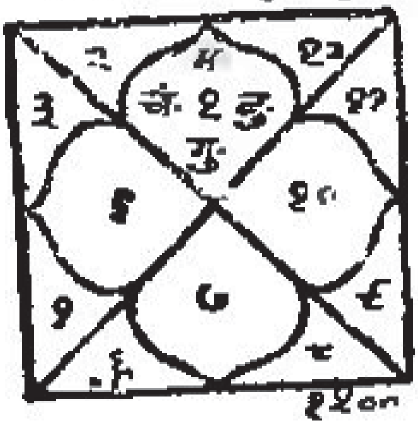

१५७०

(२१) चन्द्र, मंगल, गुरु और गुरु की युति हो तो जातक परम विद्वान्, बुद्धिमान्, सत्यवादी, शास्त्रज्ञ, लोक से पूजित, सुखी जीवन व्यतीत करने वाला, मनुष्यों में श्रेष्ठ तथा राजा का कृपापात्र होता है।

चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र

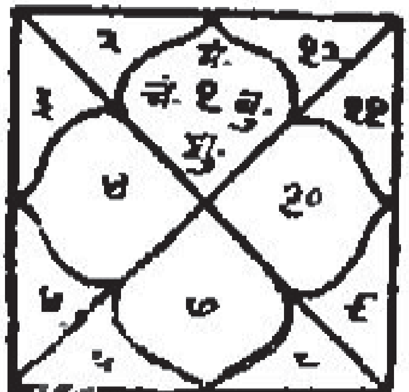

१५७२

(२२) चन्द्र, मंगल, बुध और शुक्र की युति हो तो जातक झगड़ालू, नीच प्रकृति का, बन्धु-विद्वेषी, भ्रातृ द्रोही, वेद-शास्त्र-निन्दक, नींद में समय बिताने वाला तथा नीच मनुष्यों से प्रेम रखने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति की स्त्री कुलटा होती है।

चन्द्र, मंगल, बुध, शनि

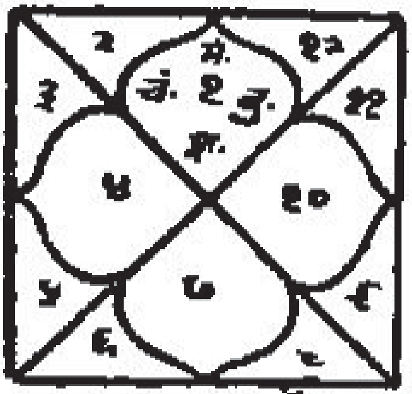

१५०२

(२३) चन्द्र, मंगल, बुध और शनि की युति हो तो जातक सुखी, साहसी, स्त्री, पुत्र तथा मित्रादि से युक्त, की माताओं वाला तथा वीर-वंश में जन्म लेने वाला होता है।

चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र

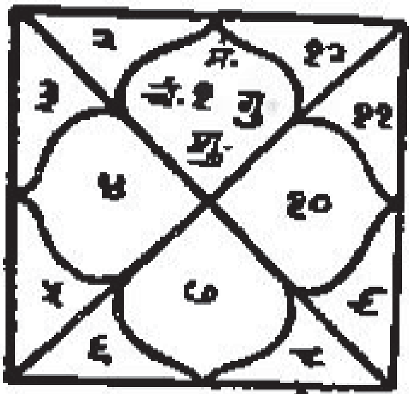

१५०३

(२४) चन्द्र, मंगल, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक धनी, मानी, पण्डित, साहसी, नीतिज्ञ, पुत्रवान्, अंगहीन तथा व्याकुल रहने वाला होता है।

चन्द्र, मंगल, गुरु, शनि

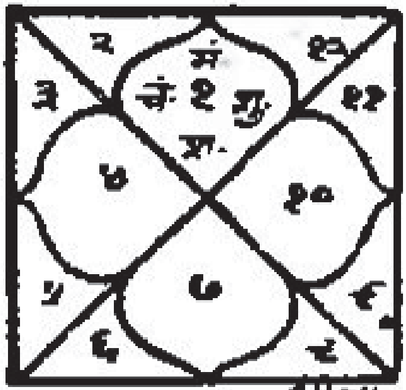

१५०४

(२५) चन्द्र, मंगल, बुध और शनि की युति हो तो जातक धनवान्, शूर-वीर, पण्डित, सत्यवादी, दयालु, उन्मादी, वचन का पालक, राजा द्वारा सम्मानित परन्तु नीच मनुष्यों के साथ रहने वाला होता है।

चन्द्र, मंगल, शुक्र, शनि

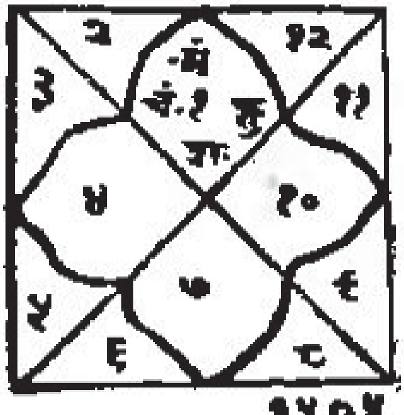

१५०५

(२६) चन्द्र, मंगल, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक कुल-वंचक, महा ढीठ, सब का शत्रु, दरिद्री, चर्मरोगी, जुआरी, मलिन, सर्प-जैसी आँखों वाला, मद्य-मांस आदि का सेवी तथा वीर-वंश में जन्म लेकर भी कायर स्वभाव का होता है। उसकी स्त्री कुलटा होती है।

चन्द्र, गुरु, शुक्र, बुध

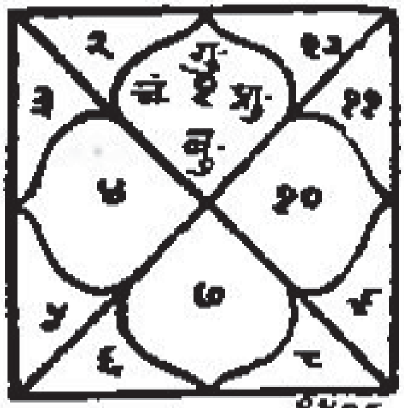

१४०६

(२७) चन्द्र, गुरु, शुक्र और गुरु की युति हो तो जातक सुन्दर शरीर वाला, दयालु, दानी, चतुर, पण्डित, शास्त्रज्ञ, धनी, शत्रु-विहीन तथा माता-पिता से रहित होता है।

चन्द्र, गुरु, शनि, बुध

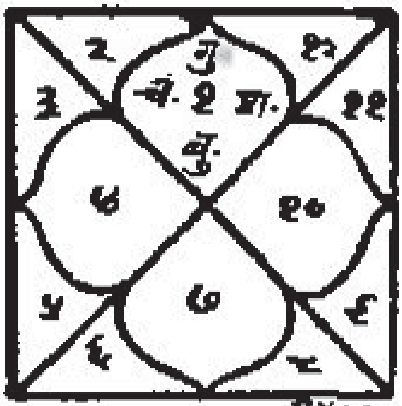

१४०७

(२८) चन्द्र, गुरु, शनि और बुध की युति हो तो जातक कवि, ज्ञानी, यशस्वी, धर्मात्मा, इन्द्रियजित्, बन्धु-प्रिय, तेजस्वी राज्य-मन्त्री तथा सर्वप्रिय होता है।

चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि

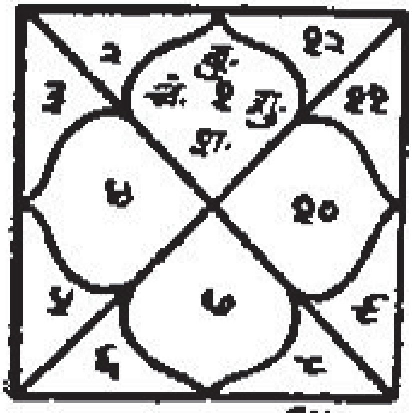

१४०८

(२९) चन्द्र, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक धनी, गाँव का स्वामी, राजा द्वारा सम्मानित, अनेक पत्नियों वाला तथा नेत्र-रोगी होता है।

चन्द्र, गुरु, शुक्र, शनि

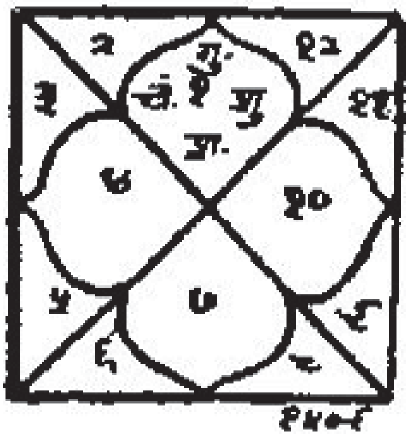

१४०९

(३०) चन्द्र, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक पण्डित, परोपकारी, पुरुष-श्रेष्ठ, पर-स्त्रीगामी तथा धनहीन होता है। उसकी दानी मोटे शरीर वाली होती है। कुछ विद्वानों के मतानुसार ऐसा व्यक्ति स्थूल शरीरवाला, धर्मात्मा तथा चतुर होता है।

मंगल, बुध, गुरु, शुक्र

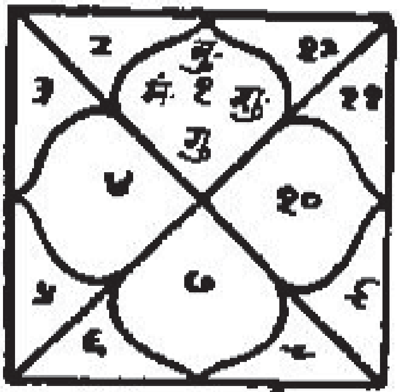

१५१०

(३१) मंगल, बुध, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक सुशील, धनी, दयालु, राज-मान्य, स्वस्थ, लोकप्रिय, परन्तु अपनी स्त्री से कलह करने वाला होता है।

मंगल, बुध, गुरु, शनि

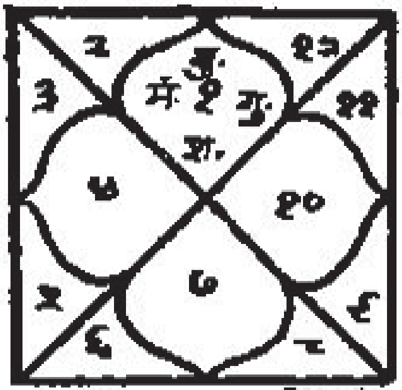

१५११

(३२) मंगल, बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक सत्यवादी, पवित्र-हृदय, विनम्र, धैर्यवान्, विद्वान् सुवक्ता, शूर-वीर परन्तु धनहीन होता है।

मंगल, बुध, शुक्र, शनि

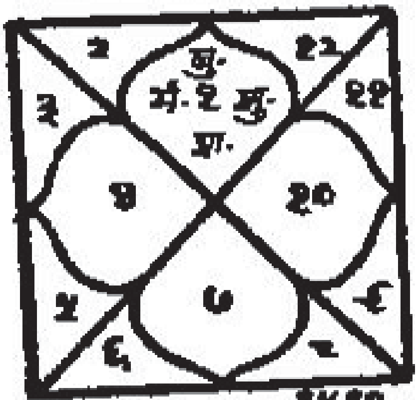

१५१२

(३३) मंगल, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक मधुरभाषी, मल्ल-विद्या में निपुण, लोक-प्रसिद्ध, पुष्ट शरीर वाला तथा कुत्तों को पालने वाला होता है।

मंगल, गुरु, शुक्र, शनि

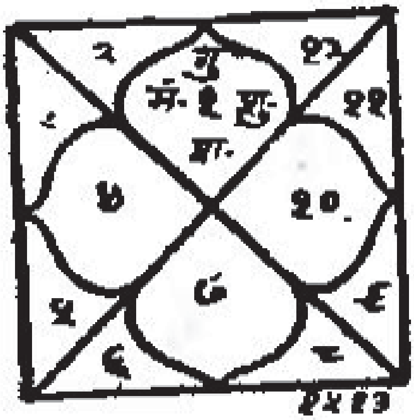

१५१३

(३४) मंगल, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक धूर्त, विषयी, मानी, विनम्र, साहसी विद्वान्, धनी, पर-स्त्रीगामी तथा श्रेष्ठ मनुष्यों को प्रिय होता है।

बुध, गुरु, शुक्र, शनि

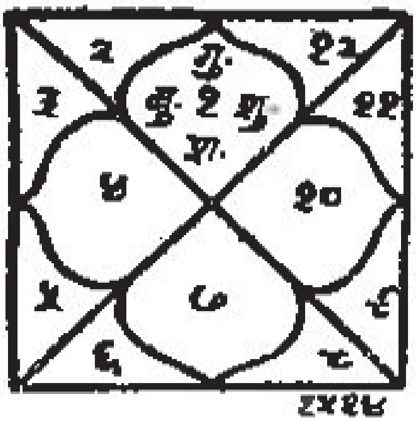

१५१४

(३५) बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक मेधावी, वेद-वेदांग का ज्ञाता, शस्त्र-विद्या का प्रेमी परन्तु विषय-वासना में लीन रहने वाला कामी होता है।

पाँच ग्रहों की युति का फलादेश

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बुध

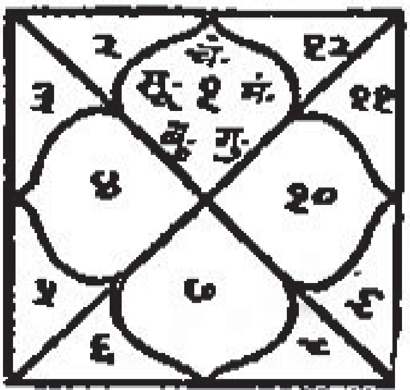

१५१५

(१) सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध और गुरु की युति हो तो जातक दुष्ट, क्रोधी, छली तथा सदैव दुःखी रहने वाला होता है। उसकी पत्नी दुष्ट स्वभाव वाली होती है, जिसके कारण वह सदैव उद्विग्न बना रहता है। ऐसा व्यक्ति स्त्री-हीन भी हो सकता है।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र

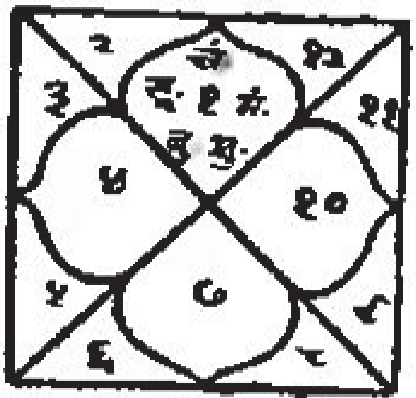

१५१६

(२) सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध और शुक्र की युति हो तो जातक मिथ्यावादी, दयालु स्वभाव का, बुद्धि-हीन, दूसरों का काम करने वाला तथा हिजड़ों-जैसी आकृति का होता है।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शनि

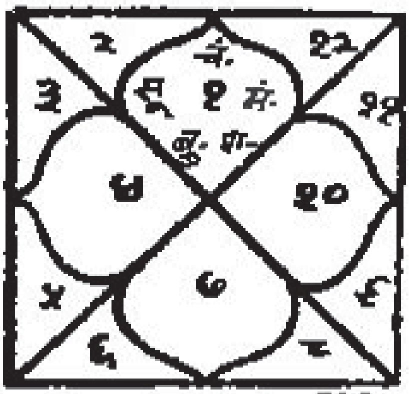

१५१७

(३) सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध और शनि की युति हो तो जातक चोर, सदैव दुःखी, स्त्री-पुत्रादि से रहित, बन्धन (जेल या कैद) प्राप्त करने वाला तथा प्रायः अल्पायु होता है।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र

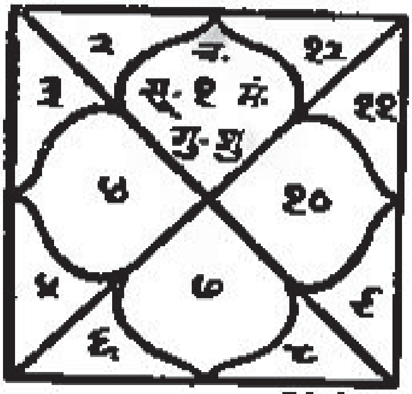

१५१८

(४) सूर्य, चन्द्र, मंगल गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक दुःखी, नेत्र-रोगी अथवा जन्मान्ध, माता-पिता के सुख से रहित, संगीतज्ञ तथा हाथी से प्रेम रखनेवाला होता है।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु, शनि

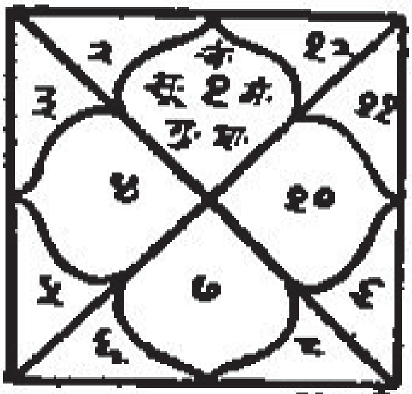

१५१९

(५) सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु और शनि की युति हो तो जातक व्यसनी, दुष्ट, झगड़ालू, डरपोक, दूसरों को दुःख देनेवाला, परद्रव्यापहारी, सज्जनों का शत्रु तथा वृक्ष-जैसी आकृति वाला होता है।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, शुक्र, शनि

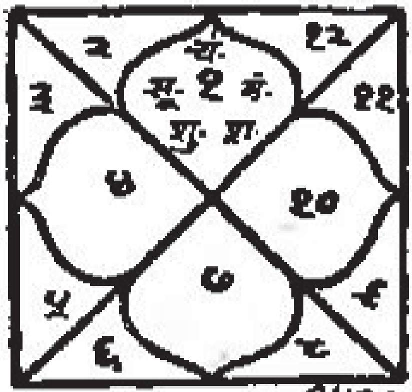

१५२०

(६) सूर्य, चन्द्र, मंगल, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक धनहीन, अधर्मी, सब का द्वेषी, परस्त्रीगामी तथा आचार-विचार से हीन होता है।

सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र

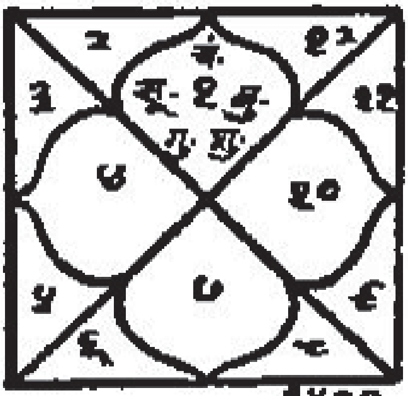

१५२१

(७) सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक धनी, यशस्वी, चतुर, राजा द्वारा सम्मानित, न्यायाधीश, राज्य-मंत्री तथा सर्वत्र प्रशंसित होता है।

सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शनि

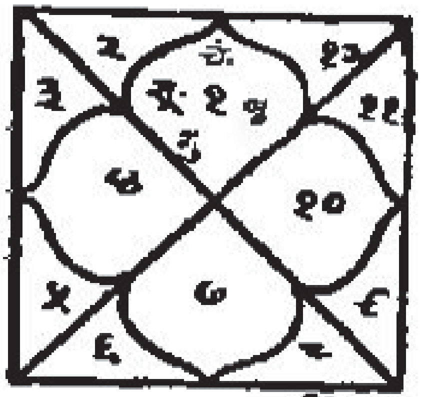

१४२२

(८) सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक ऋणग्रस्त, कायर, उन्मादी, उग्र-स्वभावी, वेश्यागामी, दुष्ट कर्म करने वाला, पराम्न पर निर्वाह करने वाला, धूर्त तथा अपने मित्रों से कारण दुःख पाने वाला होता है।

सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि

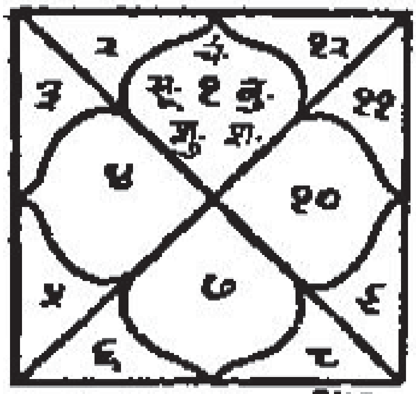

१४२३

(९) सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक उत्साही एवं धन, सन्तान, मित्र एवं सुखों से हीन, रोगी शरीर वाला होता है। उसके शरीर पर रोयें अधिक होते हैं तथा कद लम्बा होता है।

सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र, शनि

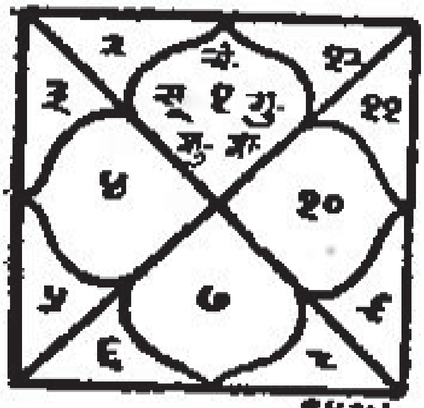

१४२४

(१०) सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक पण्डित, समर्थ, निर्भय, चंचल, ऐन्द्रजालिक, सुवक्ता, पापी, वाक्छल में प्रवीण, स्त्रियों का प्रिय तथा शत्रुओं द्वारा पीड़ित होता है।

सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र

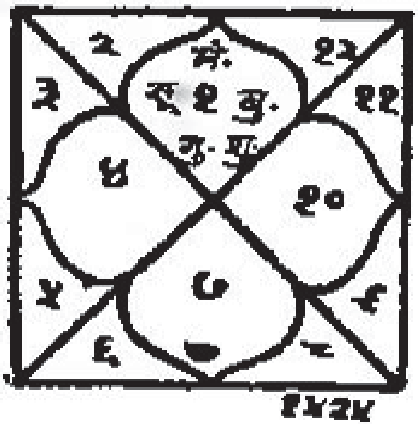

१४२५

(११) सूर्य, मंगल, बुध, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक धीर, समर्थ, सुन्दर, स्वच्छ, यशस्वी, धन-धान्य तथा सेवकों से युक्त, बहुत घोड़े रखने वाला, सेनापति तथा राजा का प्रिय होता है।

सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शनि

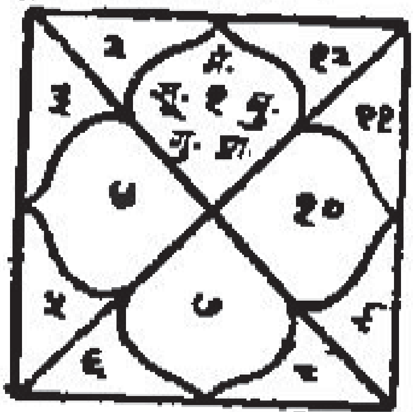

१५२६

(१२) सूर्य, मंगल, बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक भिक्षुक, अल्पधनी, जर्जर, मलिन, रोगी, जड़, पुत्रवान् तथा उद्विग्न चित्त वाला होता है।

सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र, शनि

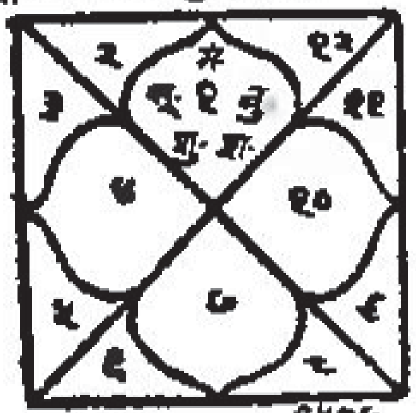

१५२७

(१३) सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक दुःखी, स्थान-भ्रष्ट, बुभुक्षित, दरिद्री, रोगी तथा शत्रुओं से त्रस्त होता है।

सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र, शनि

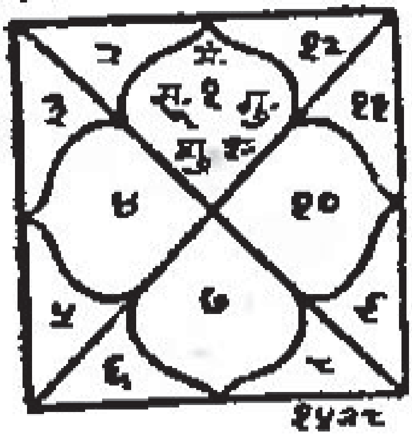

१५२८

(१४) सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक विद्वान्, विचारवान्, तपस्वी, धनी भाई-बन्धुओं से युक्त तथा धातु, यंत्र अथवा रसायन के काम में प्रवीण होता है। वह प्रसिद्धि भी प्राप्त करता है।

सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, शनि

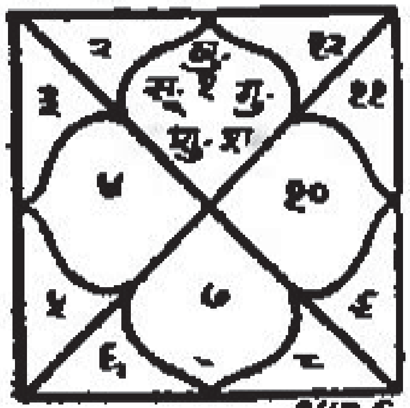

१५२९

(१५) सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक दयालु, धर्मात्मा, धनी, शास्त्रज्ञ, सुवक्ता, सेनापति, मित्रों का प्रिय तथा माता-पिता और गुरु का भक्त होता है।

चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र

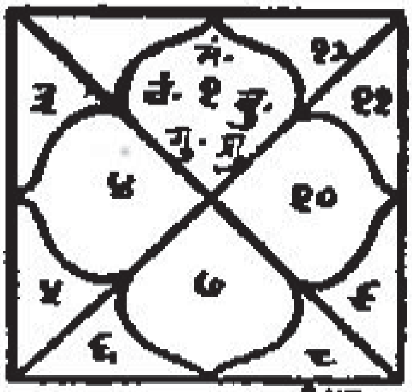

१४३०

(१६) चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु और शुक्र की की युति हो तो जातक विद्वान्, धनवान्, सज्जन, निष्पाप, श्रेष्ठ स्वभाव वाला, बहुत पुत्रों वाला, मित्रवान् तथा सुखी जीवन बिताने वाला होता है।

चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शनि

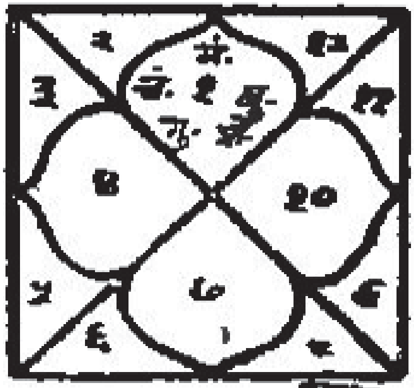

(१७) चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक मलिन, पराई सेवा करने वाला तथा अन्न की याचना करने वाला होता है। उसे रतौंधी रोग भी होता है।

चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र, शनि

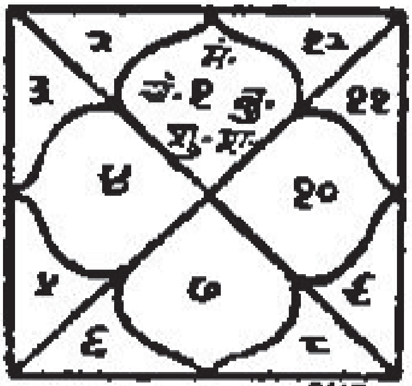

१४३२

(१८) चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक कुरूप, मलिन, निर्धन, मूर्ख, दुष्ट कर्म करने वाला, पर-निन्दक, कठोर-हृदय, नपुंसक तथा अपने मित्रों से ही शत्रुता रखने वाला होता है।

चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र, शनि

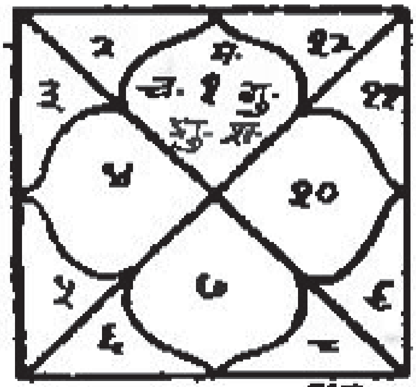

१४३३

(१९) चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक मलिन, पराई सेवा करने वाला, दूसरों को कष्ट देने वाला, दुष्ट स्वभाव वाला, परन्तु विद्वान् होता है। उसके अनेक मित्र तथा अनेक शत्रु होते हैं।

चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि

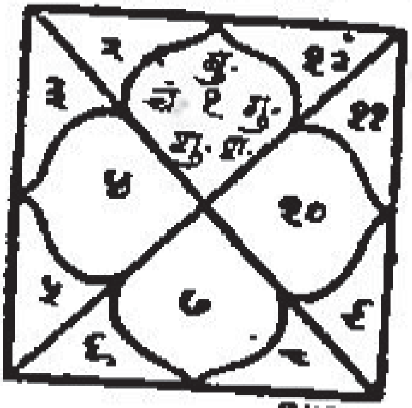

१४३४

(२०) चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक धनी, सुखी, अत्यन्त गुणवान्, विद्वान्, यशस्वी, गणाधीश, लोकपूजित तथा राजा का मंत्री होता है।

मंगल, बुध गुरु, शुक्र, शनि

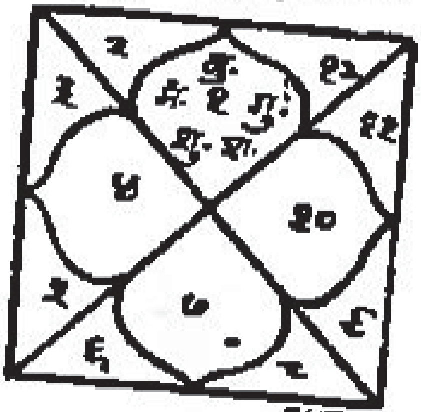

१४३५

(२१) मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक चंचल, आलसी, धनी, सुखी, लोकप्रिय, पवित्र वक्ता, दीर्घायु, अधिक सोने वाला तथा तामसी स्वभाव का होता है।

छः ग्रहों की युति का फलादेश

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र

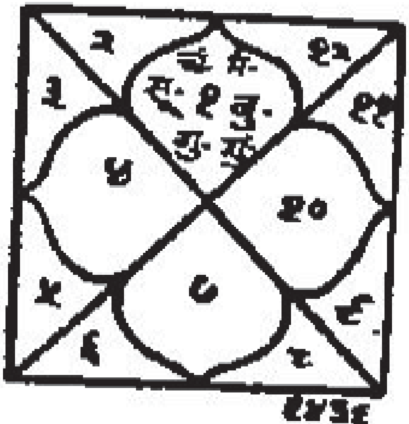

१४३६

(१) सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक यशस्वी, भाग्यवान्, भोगी, धन-धान्य तथा विद्या से युक्त, धर्मात्मा, अल्पभाषी तथा सुखी जीवन बिताने वाला होता है।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शनि

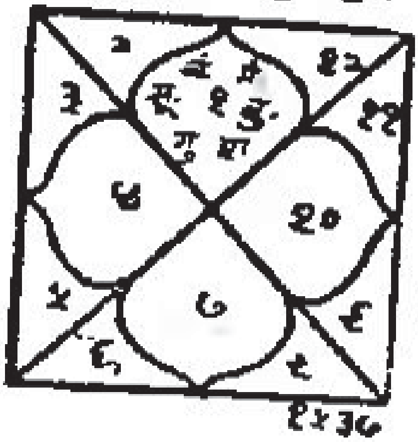

१४३७

(२) सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक दयालु, परोपकारी, मंगल निरत शुद्ध अन्तःकरण वाला, विवाद में विजय पानेवाला तथा वनों में विचरण करनेवाला होता है।

सूर्य, चन्द्र, मंगल बुध, शुक्र, शनि

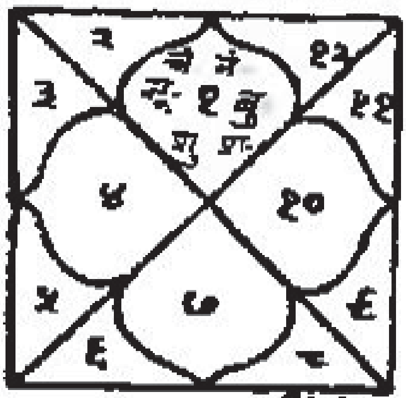

१५३८

(३) सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक चिन्तित, प्रत्येक बात में संशय करने वाला, संग्राम अथवा विवाद में विजय पानेवाला, वन-पर्वतों में विचरण करने वाला तथा आतक स्वभाव का होता है।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र, शनि

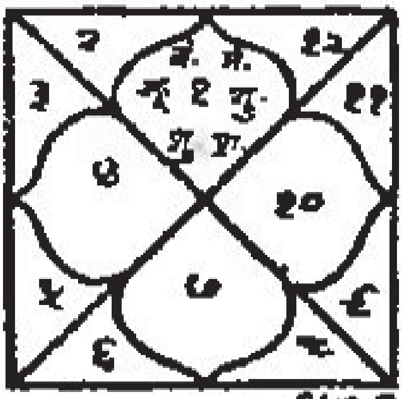

१५३९

(४) सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक क्रोधी, कृपण, धनी, सुखी, लोभी, सुन्दर, स्त्रियों को प्रिय, भ्रान्त-बुद्धि, राजाओं का कृपापात्र तथा युद्ध करने के लिए तैयार रहने वाला होता है।

सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि

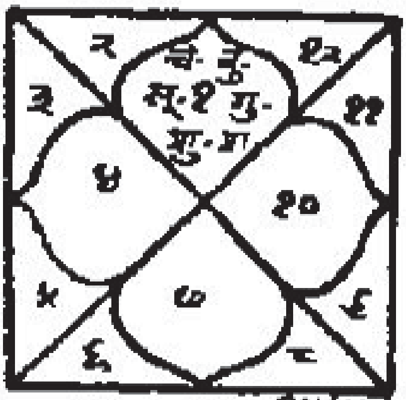

१५४०

(५) सूर्य, चन्द्र बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक धर्मज्ञ, वेदज्ञ, दयालु, क्षमाशील, स्त्री-विहीन, राज-मंत्री, राजा द्वारा सम्मानित तथा लोक में प्रसिद्ध होता है।

सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि

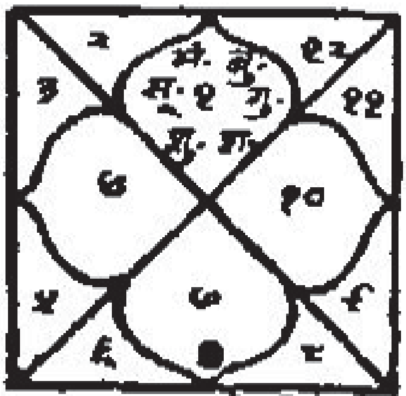

१५४१

(६) सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक क्षमाशील, ब्रह्म-विद्या का वेत्ता, भिक्षुक, वनवासी, तीर्थयात्री तथा धन, स्त्री एवं पुत्र से विहीन होता है।

चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि

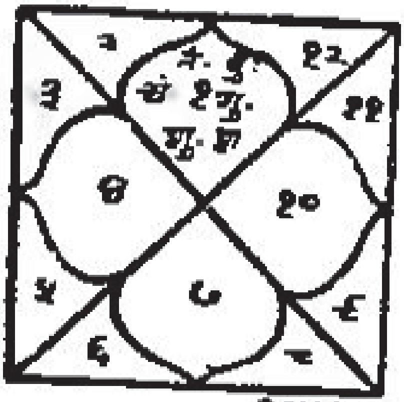

१५४७

(६) चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक धनी, गुणी, यशस्वी, पवित्र हृदय वाला, आलसी, अनेक पत्नियों वाला, गुणवान्, राजमान्य अथवा राजमंत्री होता है।

सात ग्रहों की युति का फलादेश

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि

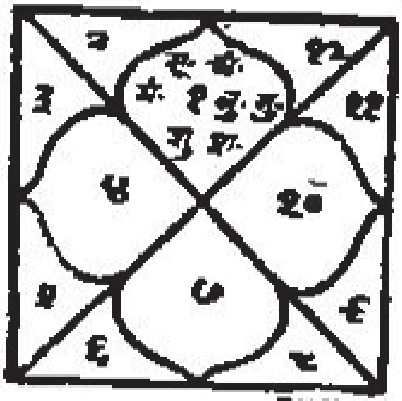

१५४८

यदि सातों ग्रह—सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि एक ही भाव में बैठे हों तो जातक सूर्य के समान तेजस्वी, धनी, दानी, राजाओं द्वारा सम्मानित तथा शिवजी का परम भक्त होता है।

स्त्री-जातक

सामान्यतः पुरुष अथवा स्त्री की जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ग्रहों का फलादेश एक-जैसा ही होता है, परन्तु कुछ ग्रहों की विभिन्न भावों में स्थिति से फलस्वरूप स्त्रियों के सम्बन्ध में उनके फलादेश में अन्तर भी आ जाता है। ऐसे अन्तर वाले फलादेश के विषय में आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

स्त्रियों के सम्बन्ध में विशिष्ट फलादेश की विस्तृत जानकारी के लिए हमारी लिखी पुस्तक 'स्त्री-जातक' का अध्ययन करना चाहिए।

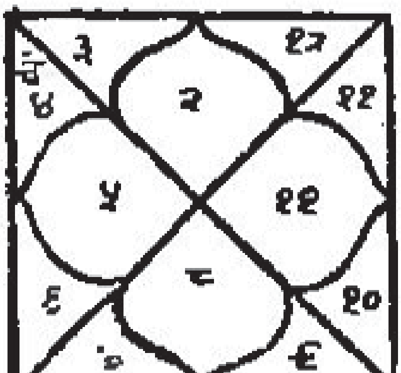

१५४९

(१) जिस स्त्री के जन्म-काल में लग्न तथा चन्द्रमा सम-राशि पर हो (चित्र १५४९), वह स्त्री स्वाभाविक आकार वाली होती है।

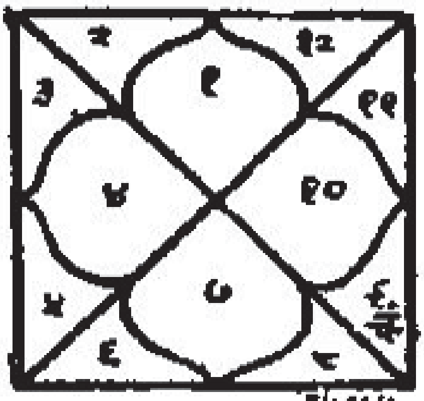

१५४५

(२) जिस स्त्री के जन्म-काल में लग्न तथा चन्द्रमा विषम राशि पर हों (चित्र १५४५), वह पुरुष-जैसे आकार वाली होती है।

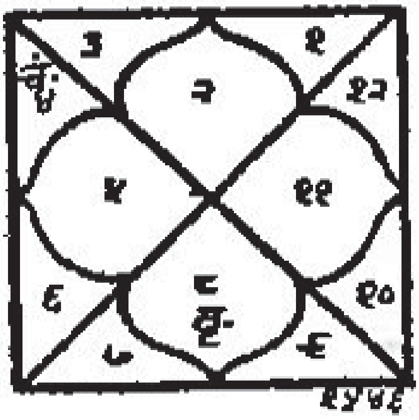

१५४६

(३) जिस स्त्री के लग्न तथा चन्द्रमा सम-राशि पर हों और उन पर शुभ ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो (चित्र १५४६), वह श्रेष्ठ शीलवती तथा सुन्दर वस्त्राभूषणों को धारण करने वाली होती है।

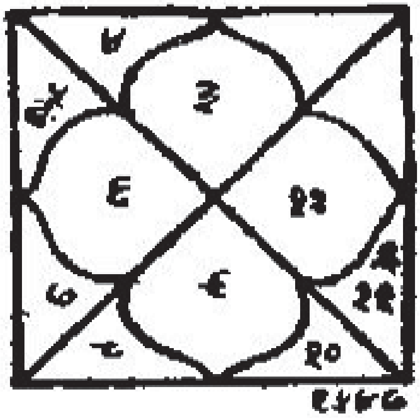

१५४७

(४) जिस स्त्री के लग्न तथा चन्द्रमा विषम-राशि पर हों और उन पर पाप-ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो (चित्र १५४७), वह पापिष्ठ तथा बुरे कर्म करने वाली होती है।

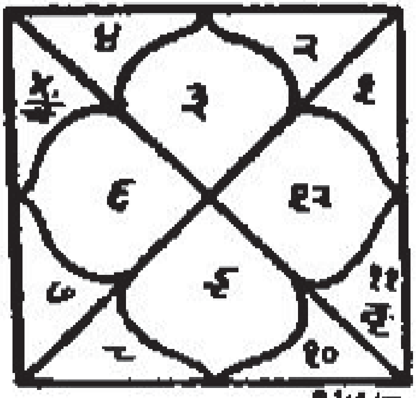

१५४८

(५) जिस स्त्री के लग्न तथा चन्द्रमा विषम-राशि पर हों और उन पर शुभ ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो (चित्र १५४८), तो उसे मध्यम स्वभाव वाली समझना चाहिए।

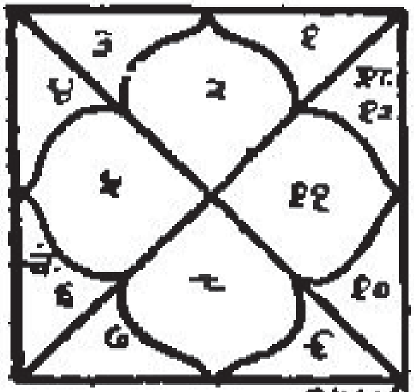

१५४९

(६) जिस स्त्री के लग्न तथा चन्द्रमा सम-राशि पर हों और उस पर पाप-ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो (चित्र १५४९), तो उसे भी मध्यम स्वभाव वाली समझना चाहिए।

टिप्पणी : जो ग्रह अधिक बली हो, उसी के अनुसार स्त्री का स्वभाव समझना चाहिए।

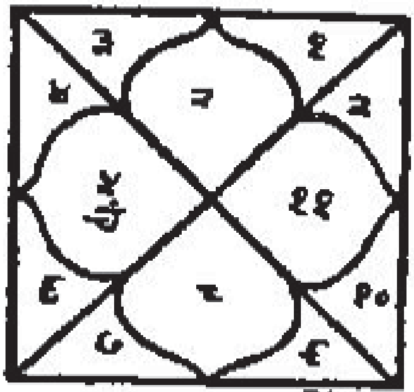

१५५०

(७) जिस स्त्री की कुण्डली में जन्म-लग्न अथवा चन्द्रमा से सातवें घर में कोई भी ग्रह न बैठा हो, अथवा निर्बल ग्रह बैठा हो (चित्र १५५०), उसका पति निरुद्यमी होता है।

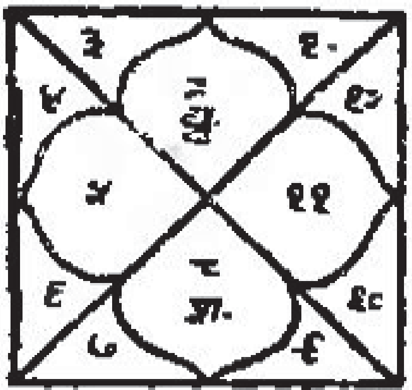

१५५१

(८) जिस स्त्री की कुण्डली में जन्म-लग्न अथवा सातवें घर पर शत्रु-ग्रहों की दृष्टि न हो (चित्र १५५१), उसका पति भी निरुद्यमी होता है।

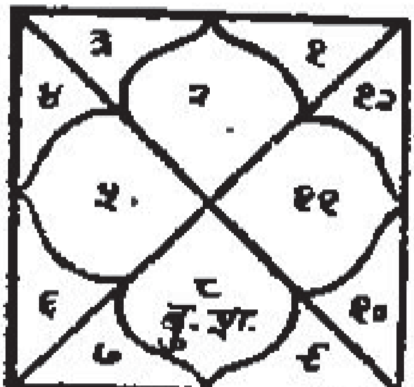

१५५२

(९) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली के सातवें घर में बुध तथा शनि बैठे हों (चित्र १५५२), उसका पति नपुंसक होता है।

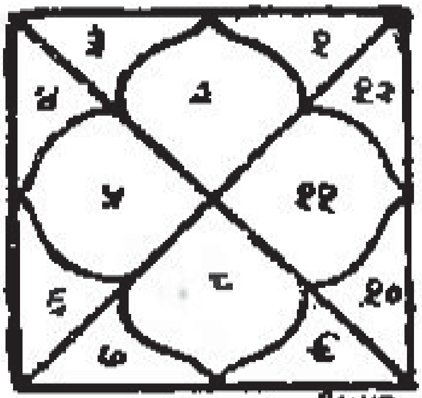

१५५३

(१०) जिस स्त्री के सातवें घर में स्थिर राशि हो (चित्र १५५३), उसका पति सदैव घर में रहता है।

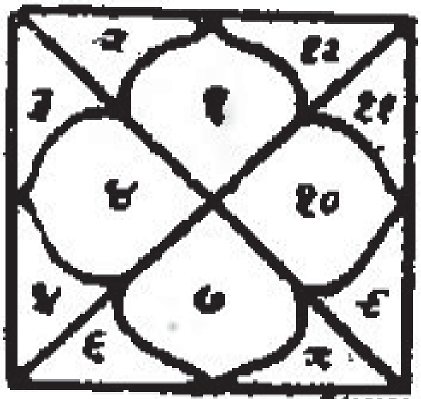

१५५४

(११) जिस स्त्री के सातवें घर में चर राशि हो (चित्र १५५४), उसका पति सदैव परदेश में रहता है।

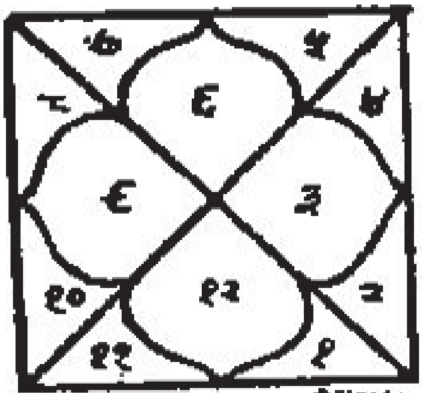

१५५५

(१२) जिस स्त्री के सातवें घर में द्वि-स्वभाव राशि हो (चित्र १५५५), उसका पति घर तथा परदेश में दोनों जगह रहता है।

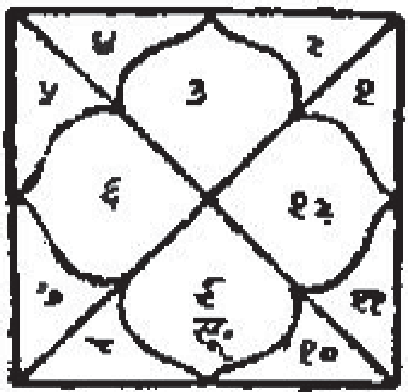

१५५६

(१३) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली के सप्तमभाव में 'सूर्य' की स्थिति हो (चित्र १५५६), वह अपने पति द्वारा त्याग दी जाती है।

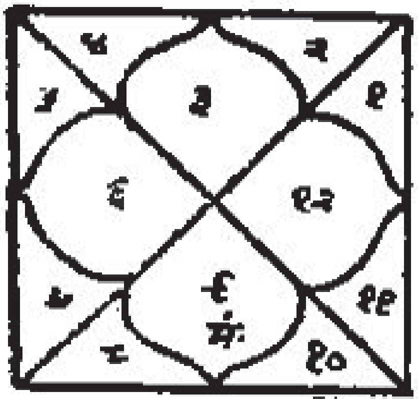

१५५७

(१४) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली के सप्तमभाव में 'मंगल' की स्थिति हो (चित्र १५५७), वह बाल-विधवा होती है।

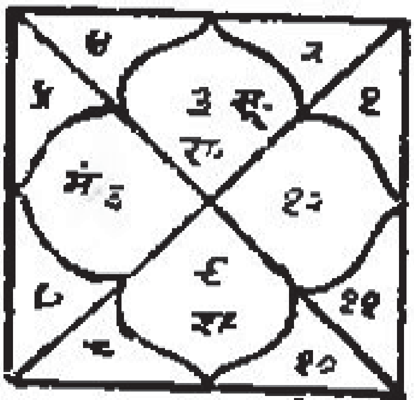

१५५८

(१५) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली के सप्तम भाव में 'शनि' की स्थिति हो तथा सभी पाप-ग्रहों की उस पर दृष्टि हो (चित्र १५५८), वह अनब्याही ही रह जाती है। पति विवाह हो भी तो उसके पति की मृत्यु शीघ्र हो जाती है।

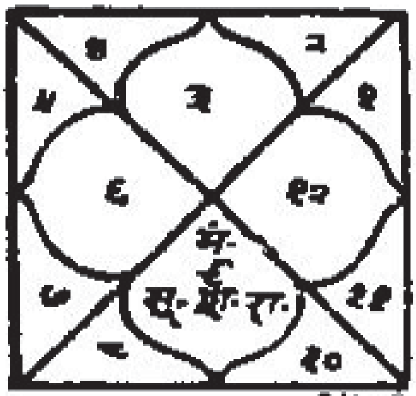

१५५९

(१६) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली के सप्तम भाव में सभी पाप-ग्रह एकत्र हो गए हों (चित्र १५५९), वह अवश्य विधवा होती है।

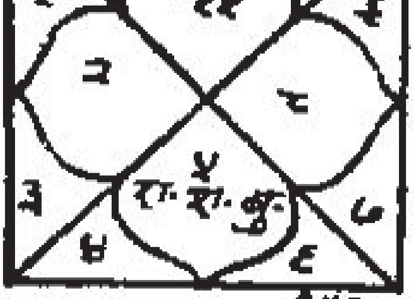

१५६०

(१७) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली के सप्तमभाव में शुभग्रह बलहीन हों तथा पाप-ग्रह भी हों (चित्र १५६०), वह अपने पति को छोड़कर दूसरा पति करती है।

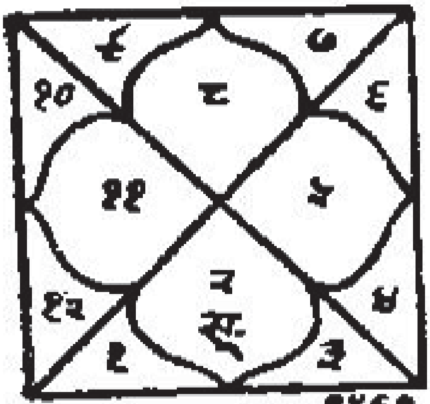

१५६१

(१८) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली के सप्तम भाव में एक पाप-ग्रह बलहीन बैठा हो और उसे कोई शुभ ग्रह देखता न हो (चित्र १५६१), उसे उसका पति त्याग देता है।

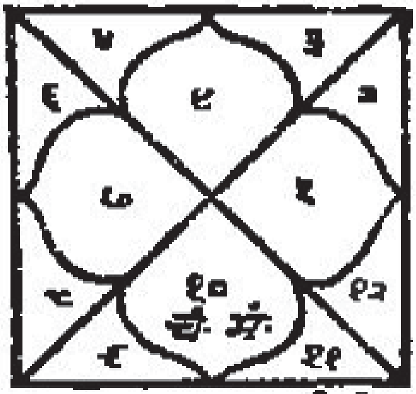

१५६२

(१९) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली के सातवें घर में चन्द्रमा के साथ मंगल की युति हो (चित्र १५६२), वह अपने पति की आज्ञा से पर-पुरुष-गमन करती है।

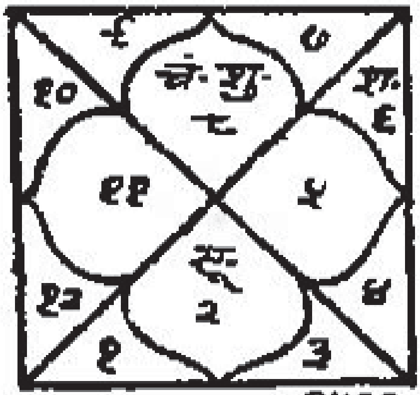

१५६३

(२०) जिस स्त्री की जन्मकुण्डली में मेष, वृश्चिक, मकर अथवा कुम्भ में से कोई लग्न हो और उसमें चन्द्रमा तथा शुक्र दोनों ही बैठे हों तथा उन पर पाप-ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो (चित्र १५६३), तो ऐसी स्त्री अपनी माता के साथ पर-पुरुष-गमन करती है।

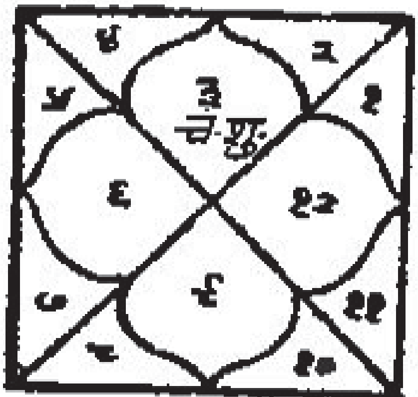

१५६४

(२१) जिस स्त्री के जन्म-लग्न में चन्द्रमा और शुक्र दोनों बैठे हों (चित्र १५६४), वह ईर्ष्यालु स्वभाव वाली, दूसरों को सन्ताप देने वाली तथा स्वयं सदैव सुखी रहने वाली होती है।

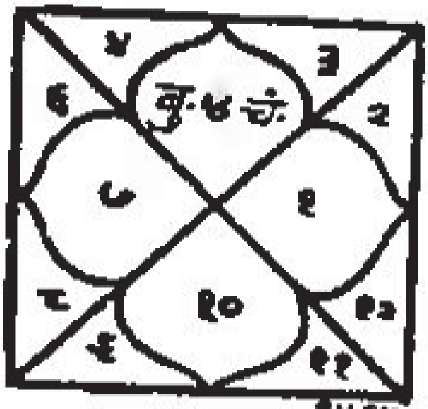

१५६५

(२२) जिस स्त्री के जन्म-लग्न में बुध तथा चन्द्रमा दोनों ग्रह बैठे हों (चित्र १५६५), वह संगीत-कुशल, सुखी, गुणवती, सुन्दरी तथा सब की प्रिय होती है।

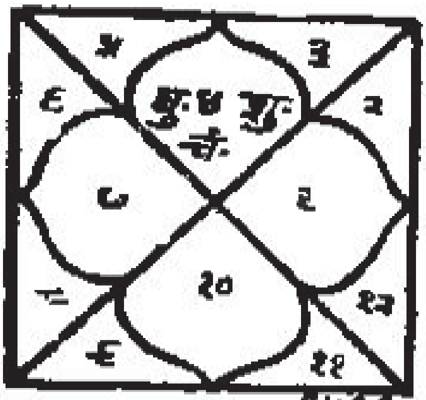

१५६६

(२३) जिस स्त्री के जन्म-लग्न में बुध, शुक्र तथा चन्द्रमा—तीनों ही ग्रह बैठे हुए हों (चित्र १५६६), वह अनेक प्रकार के सुखों से युक्त, धनी तथा गुणवती होती है।

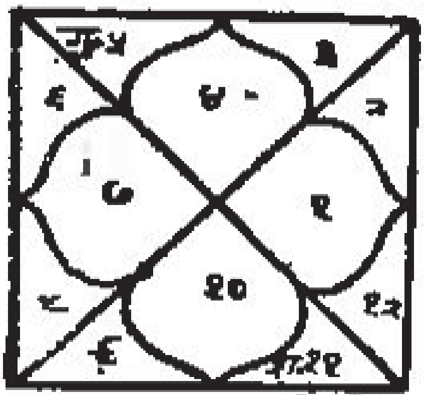

१५६७

(२४) जिस स्त्री की कुण्डली में लग्न से आठवें स्थान पर (अष्टम भाव में) कोई पाप-ग्रह बैठा हो तथा दूसरे स्थान में कोई शुभग्रह बैठा हो, (चित्र १५६७), वह अपने [illegible] मृत्यु को प्राप्त होती है।

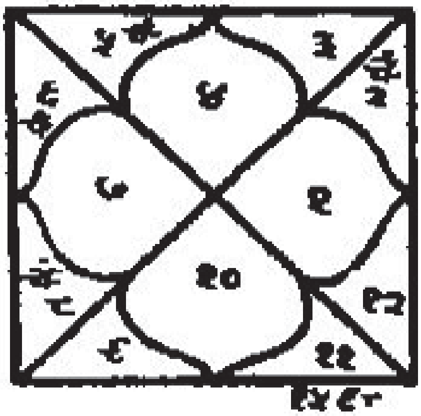

१५६८

(२५) जिस स्त्री की जन्मकुण्डली में वृष, वृश्चिक, सिंह अथवा कन्या—इनमें से किसी भी राशि पर चन्द्रमा स्थित हो (चित्र १५६८), वह अल्प-पुत्रवती होती है।

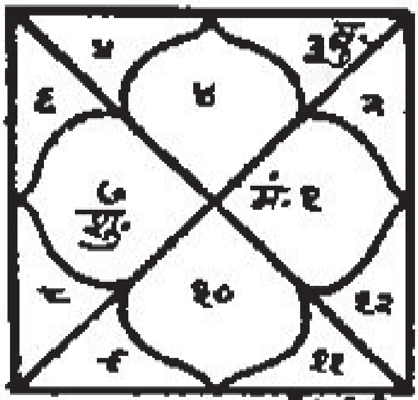

१५६९

(२६) जिस स्त्री की जन्म-कुण्डली में मंगल, शुक्र और बुध बलवान हों तथा लग्न समराशि में हो (चित्र १५६९), वह ब्रह्मविद्या में प्रवीण, अनेक शास्त्रों की जानकार तथा ब्रह्मवादिनी होती है।

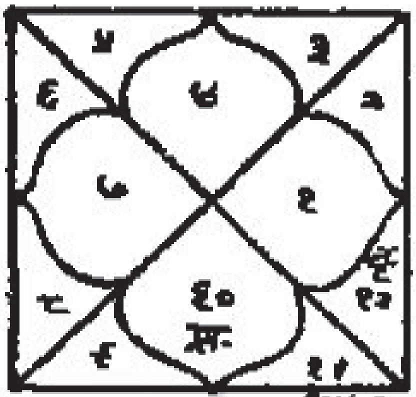

१५७०

(२७) जिस स्त्री की जन्मकुण्डली के सप्तम भाव में पाप-ग्रह बैठा हो तथा नवम भाव में कोई अन्य ग्रह बैठा हो (चित्र १५७०), वह स्त्री संन्यासिनी हो जाती है। नवें घर में जो ग्रह बैठा हो, उसी की प्रव्रज्या समझनी चाहिए। सूर्य से तपस्विनी, चन्द्रमा से कपालिनी, मंगल से रक्त-वस्त्र-धारिणी, शुक्र से चक्रिणी, शनि से नग्ना, बुध से दण्डी तथा गुरु से यति होती है।

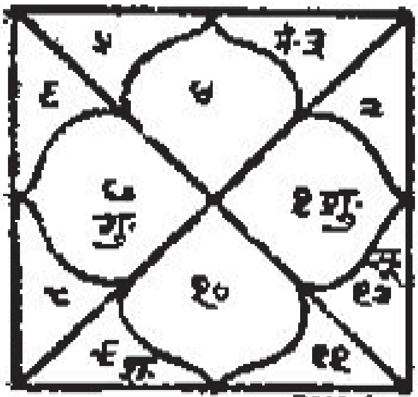

१५७१

(२८) जिस स्त्री की जन्मकुण्डली में केन्द्र में शुभ ग्रह बैठे हों तथा पाप-ग्रह ६, ८ या १२वें घर में हों तथा सप्तम भाव में पुरुष राशि हो (चित्र १५७१), वह शान्त स्वभाव की, ऐश्वर्य-शालिनी, पुत्रवती तथा रानी अथवा रानी-जैसी होती है।

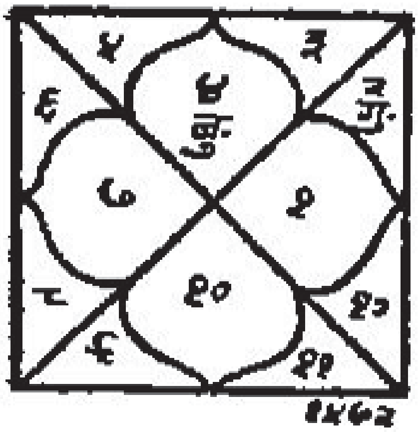

१५७२

(२९) जिस स्त्री की जन्मकुण्डली में बुध लग्न में उच्च का होकर बैठा हो तथा गुरु एकादश भाव में हो (चित्र १५७२), वह ऐश्वर्य-शालिनी, रानी अथवा रानी-जैसी होती है तथा उसकी गणना संसार की प्रसिद्ध स्त्रियों में की जाती है।

विशिष्ट योग

जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों की विशिष्ट स्थिति के कारण विशिष्ट योग भी बनते हैं, जिनका फलादेश सामान्य स्थिति वाले ग्रहों से भिन्न होता है।

अगले पृष्ठों में कुछ ऐसे ही विशिष्ट-फलादेशों का वर्णन किया जा रहा है।

सहस्रों प्रकार के विशिष्ट योगों के फलादेश की विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए हमारी लिखी पुस्तक 'योग-रत्नाकर' का अध्ययन करना चाहिए।

राजयोग

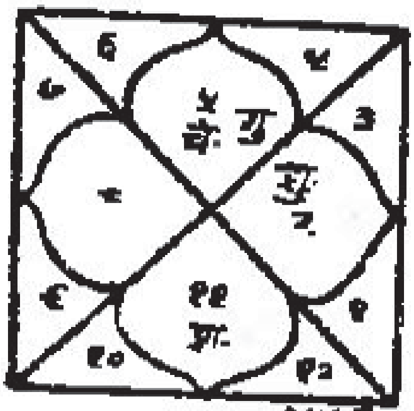

१४७३

(१) लग्न में चन्द्रमा और गुरु, दसवें भाव में शुक्र एवं तुला, मकर अथवा कुम्भ में शनि हो तो जातक राजा के समान अथवा राजमान्य होता है।

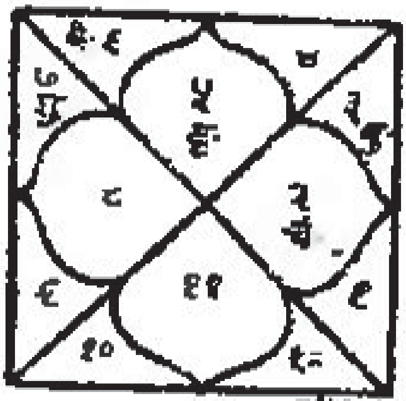

१४७४

(२) दसवें, ग्यारहवें, पहले, दूसरे तथा तीसरे भाव में संपूर्ण शुभ ग्रह बैठे हों तो जातक राजा के समान होता है।

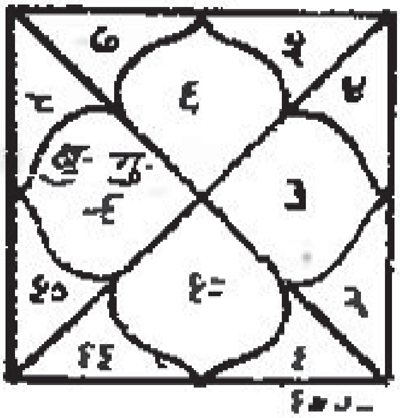

(३) गुरु बुध के साथ बैठा हो अथवा बुध के द्वारा दृष्ट हो तथा गुरु, मीन अथवा धनुराशि का होकर, केन्द्र में बैठा हो तो ऐसे जातक की आज्ञा को राजागण भी अपने मस्तक पर धारण करते हैं।

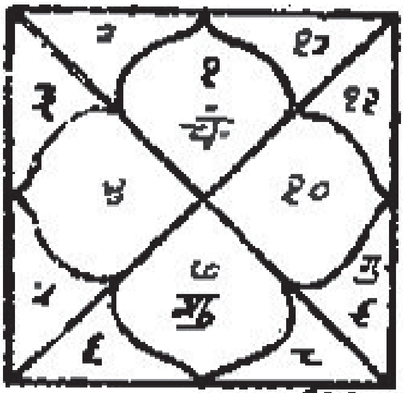

१२७६

(४) चन्द्रमा केन्द्र में हो तथा गुरु लग्न को छोड़ कर, नवम अथवा पंचम दृष्टि से केन्द्र को देख रहा हो, साथ ही बलवान दृष्टि से शुक्र को भी देखता हो तो जातक राजा के समान भाग्यशाली होता है।

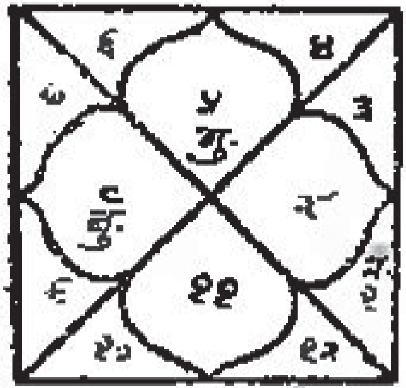

१२७७

(५) गुरु लग्न में तथा बुध केन्द्र में बैठा हो तथा वह नवम भाव के स्वामी द्वारा दृष्ट भी हो तो जातक राजमान्य होता है।

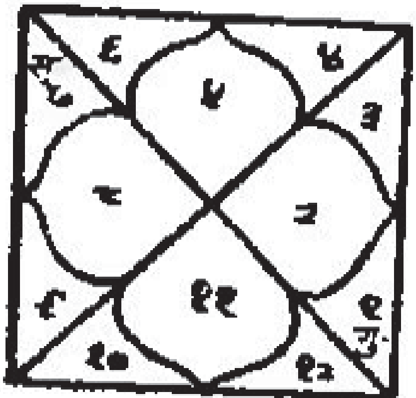

१२७८

(६) गुरु सातवें, नवें अथवा पाँचवें भाव में बैठा हो तथा लग्नेश की उस पर दृष्टि भी हो तो जातक राजमान्य होता है।

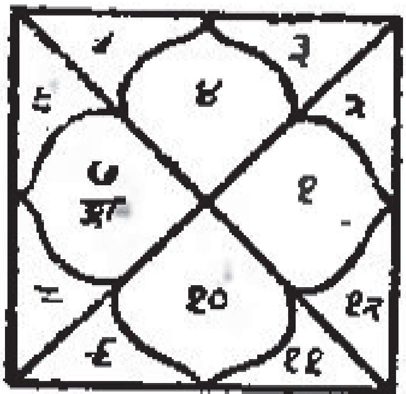

१२७९

(७) शनि केन्द्र, पंचम अथवा नवम भाव में अपनी उच्च राशि अथवा मूल त्रिकोण राशि में हो तथा दशम भाव पर उसकी दृष्टि भी हो तो जातक राजमान्य होता है।

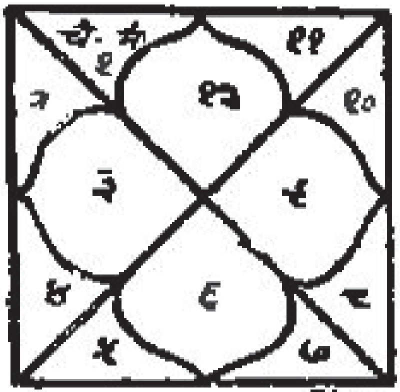

१४८०

(८) नवम भाव का स्वामी चन्द्रमा के साथ द्वितीय भाव में बैठा हो तो जातक राजमान्य होता है।

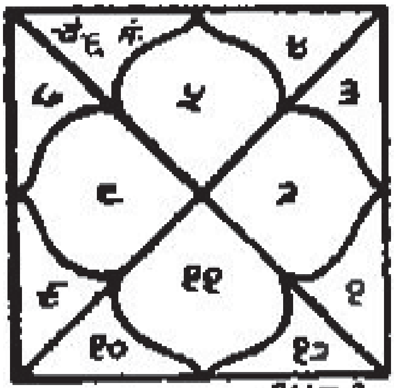

१४८१

(९) चन्द्रमा मंगल के साथ द्वितीय अथवा तृतीय भाव में बैठा हो अथवा राहु के साथ पंचम भाव में बैठा हो तो जातक राजमान्य होता है।

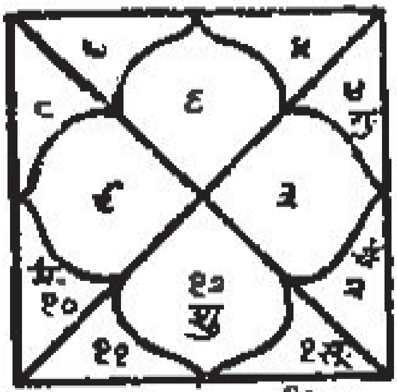

१४८२

(१०) यदि जन्म-काल में पाँच ग्रह उच्च के हों, तो जातक चक्रवर्ती राजा अथवा मंत्री होता है।

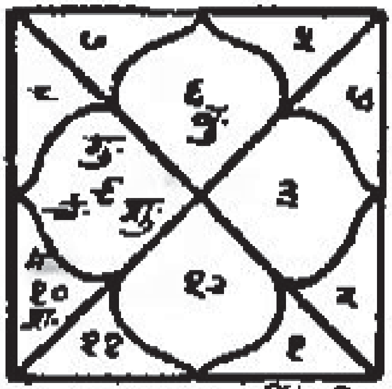

१४८३

(११) यदि जन्म-काल में बुध उच्च राशि का हो, मंगल तथा शनि मकर राशि में हों तथा गुरु, चन्द्रमा तथा शुभ तीनों धनु राशि में बैठे हों तो ऐसा जातक महाराजाधिराज होता है।

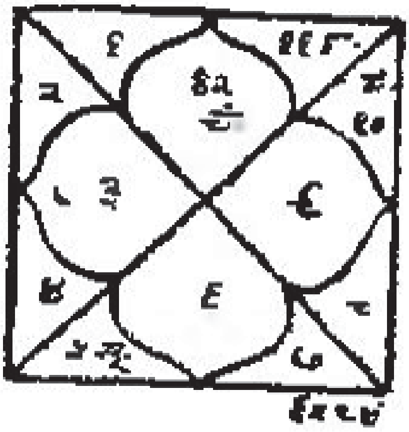

(१२) यदि सूर्य सिंह राशि में, मंगल मकर में, शनि कुम्भ में तथा चन्द्रमा मीन राशि में हो तथा लग्न भी मीन ही हो तो ऐसा जातक महाराजा होता है।

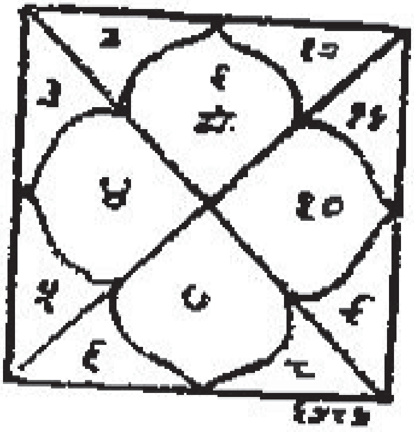

(१३) यदि मंगल मेष राशि का होकर लग्न में बैठा हो तो ऐसा जातक राजा होता है।

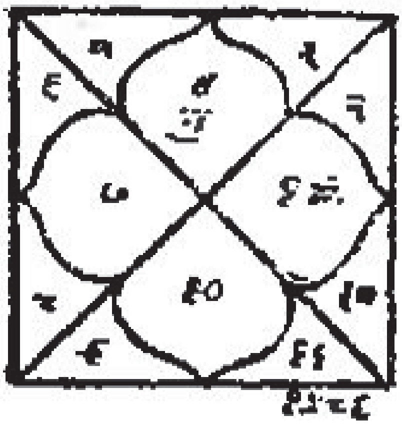

(१४) गुरु कर्क लग्न में हो तथा मंगल मेष राशि का होकर दशमभाव में बैठा हो तो ऐसा जातक राजनीतिज्ञ एवं शत्रु-जयी राजा होता है।

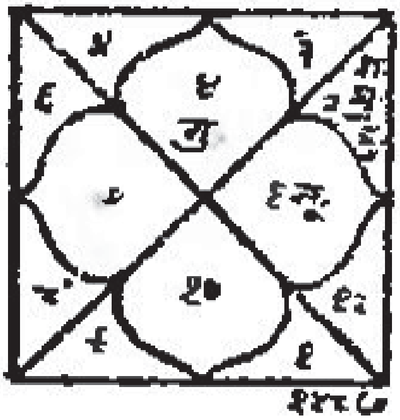

(१५) बृहस्पति उच्च का होकर लग्न में बैठा हो, दशम भाव में मेष का सूर्य हो तथा एकादश भाव में शनि, शुक्र और बुध तीनों बैठे हों, तो ऐसा जातक अत्यन्त पराक्रमी राजा होता है।

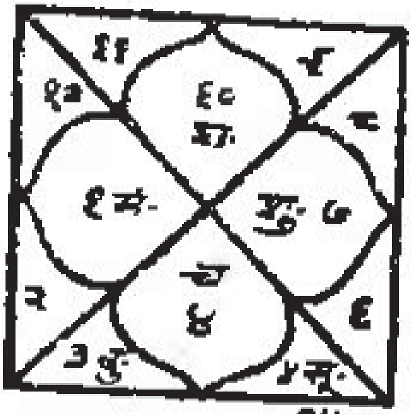

१४८८

(१६) शनि मकर राशि का होकर लग्न में बैठा हो, सूर्य सिंह राशि का, बुध मिथुन का, मंगल मेष का, शुक्र तुला का तथा चन्द्रमा कर्क का हो तो ऐसे योग में उत्पन्न जातक समुद्र-पर्यन्त पृथ्वी का अधिपति (राजा) होता है।

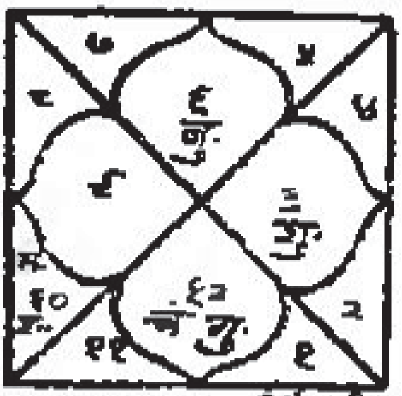

१४८९

(१७) शुक्र मिथुन का हो, बुध कन्या का होकर लग्न में बैठा हो, मंगल तथा शनि-मकर राशि में हों तथा चन्द्रमा और गुरु मीन राशि में हों, तो ऐसे योग में उत्पन्न जातक शत्रुनाशक, परम पराक्रमी तथा ऐश्वर्य-शाली राजा होता है।

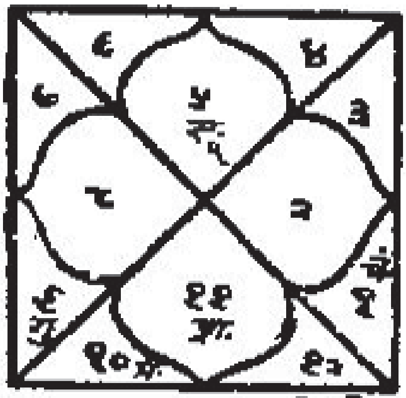

१४९०

(१८) सिंह का सूर्य लग्न में हो एवं चन्द्रमा मेष में, शनि कुम्भ में, गुरु धनु में तथा मंगल मकर में हो तो ऐसे मीन में उत्पन्न व्यक्ति राजाधिराज होता है।

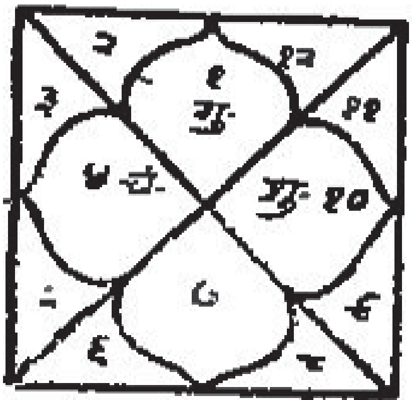

१४९१

(१९) मेष का गुरु लग्न में हो, चन्द्रमा चतुर्थ तथा शुक्र दशम भाव में हो, तो ऐसा व्यक्ति बहुत बड़ा राजा होता है।

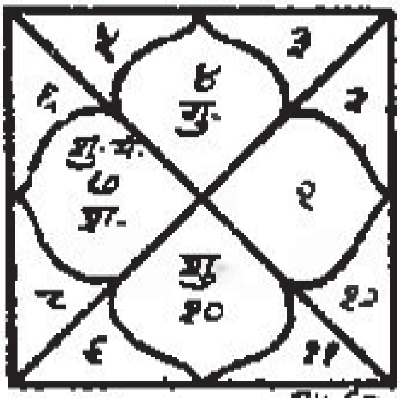

१४८२

(२०) कर्क का गुरु लग्न में हो तथा सप्तम, चतुर्थ अथवा दशम स्थान में शुक्र, शनि और मंगल हों, तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त प्रतापी राजा होता है।

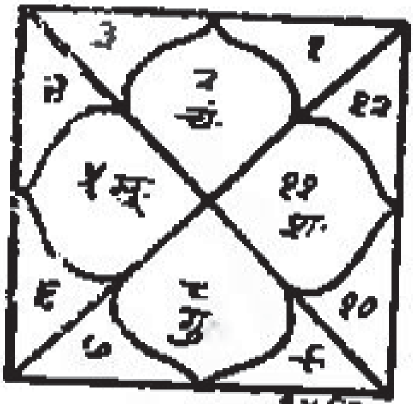

१४८३

(२१) बुध या चन्द्रमा लग्न में हो तथा चतुर्थ सप्तम एवं दशम भाव में सूर्य, गुरु तथा शनि बैठे हो, तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त प्रतापी एवं यशस्वी राजा होता है।

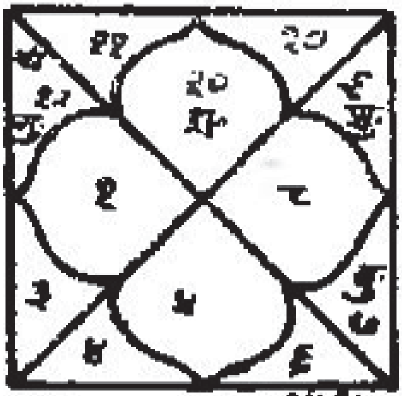

१४८४

(२२) गुरु, चन्द्र, बुध तथा शुक्र, लग्न, तृतीय, नवम एवं एकादश भाव में बैठे हों, तथा मकर का शनि लग्न में बैठा हो तो ऐसा व्यक्ति राजाधिराज होता है।

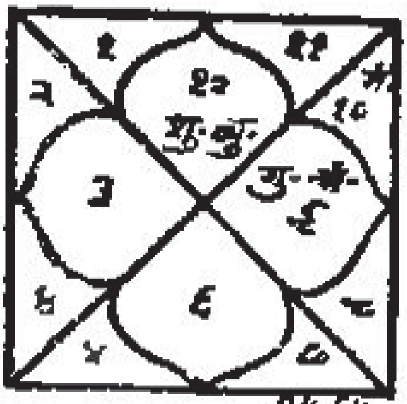

१४८५

(२३) मीन राशि का शुक्र बुध के साथ लग्न में बैठा हो, मकर का मंगल हो तथा गुरु एवं चन्द्रमा धनु राशि के हों, तो ऐसा जातक चक्रवर्ती राजा होता है।

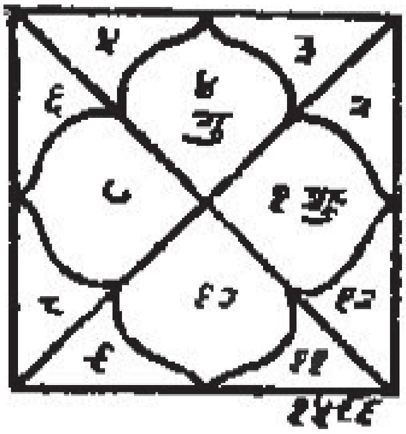

(२४) बुध उच्च का होकर केन्द्र में बैठा हो तथा शुक्र दशम भाव में हो तो ऐसा व्यक्ति परम यशस्वी राजा होता है।

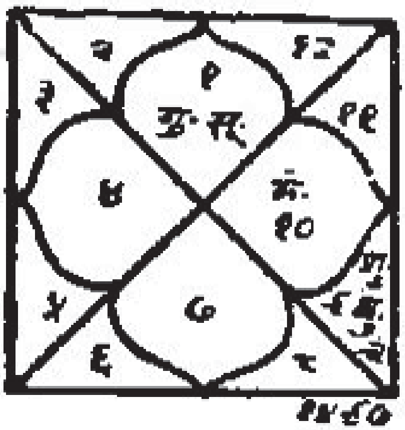

(२५) मेष के बुध तथा सूर्य लग्न में हों, मंगल दशम भाव में तथा शुक्र, बुध एवं चन्द्रमा नवम भाव में हों तो ऐसा जातक दिग्विजयी राजा होता है।

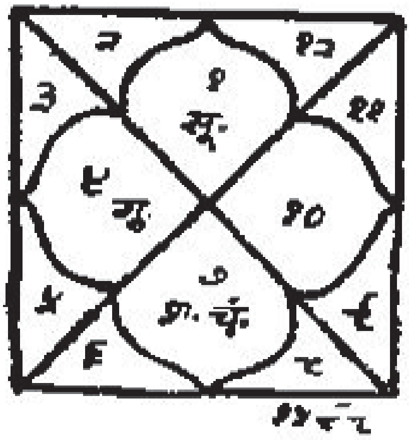

(२६) मेष में सूर्य, कर्क में गुरु और तुला में शनि तथा चन्द्रमा हों तो ऐसा व्यक्ति बहुत बड़ा राजा होता है।

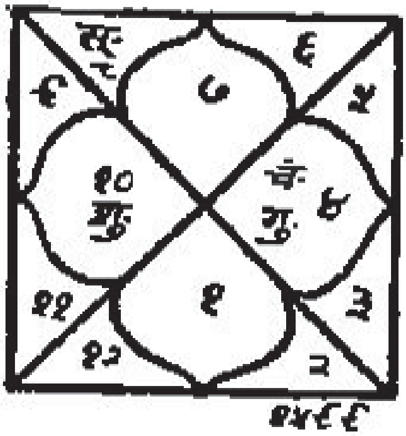

(२७) द्वितीय भाव में सूर्य हो तथा शुक्र, बुध एवं चन्द्रमा केन्द्र में हों परन्तु वे न तो अस्त हों और न शत्रु-ग्रहों द्वारा दृष्ट ही हों, तो ऐसा जातक शत्रुजयी एवं अत्यन्त प्रतापी राजा होता है।

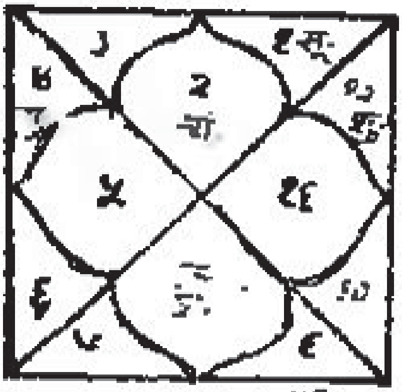

१६००

(२८) कर्क में गुरु, मेष में सूर्य, मीन में शुक्र तथा बुध में चन्द्रमा हो और वह शनि द्वारा दृष्ट भी हो, तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त प्रतापी राजा होता है।

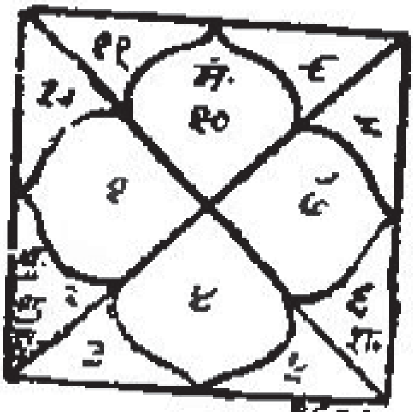

१६०१

(२९) पंचम भाव में बुध, शुक्र तथा गुरु हों, परन्तु वे अस्त न हों, मकर का मंगल तुले से रहित हो तथा नवम भाव में शनि बैठा हो, तो ऐसा जातक राजाधिराज होता है।

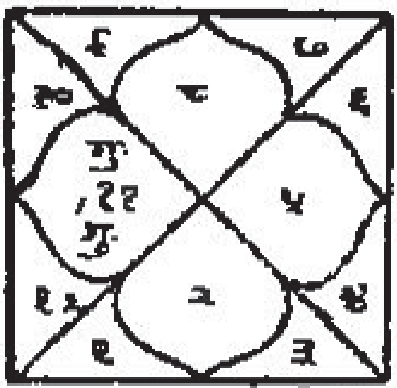

१६०२

(३०) गुरु तथा शुक्र चतुर्थ भाव में हों तो ऐसा जातक धनी, पराक्रमी एवं पृथ्वीपति होता है।

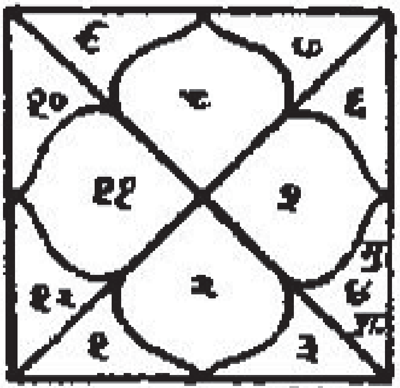

१६०३

(३१) कर्क राशि में गुरु के साथ चन्द्रमा बैठा हो तो ऐसा जातक कश्मीर देश का राजा होता है।

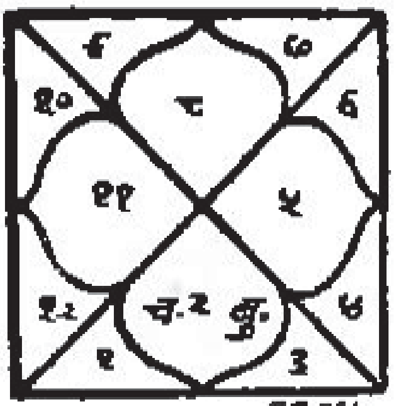

१६०४

(३२) उच्च राशिस्थ चन्द्रमा बुध के साथ बैठा हो तो जातक मगध देश का राजा होता है। यदि चन्द्रमा बलवान् हो तो जातक किसी भी अन्य स्थान का राजा हो सकता है।

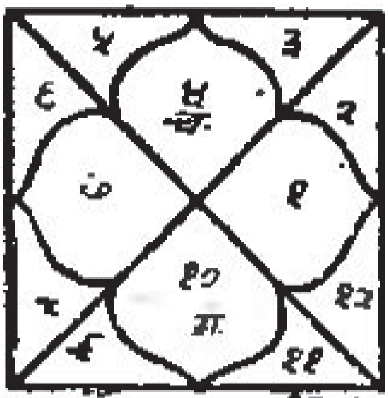

१६०५

(३३) जन्म-राशि का स्वामी लग्न में हो तथा लग्नेश बली होकर केन्द्र में बैठा हो तो नीच कुल में उत्पन्न व्यक्ति तो राजा होता है।

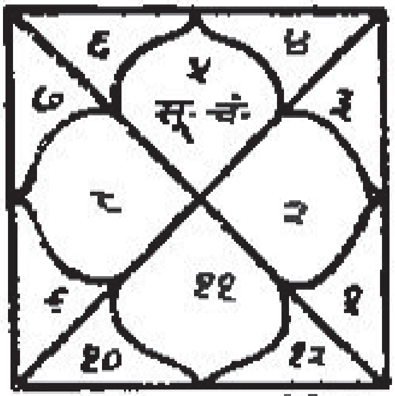

१६०६

(३४) मेष का सूर्य चन्द्रमा के साथ बैठा हो तो ऐसा जातक राजा होता है।

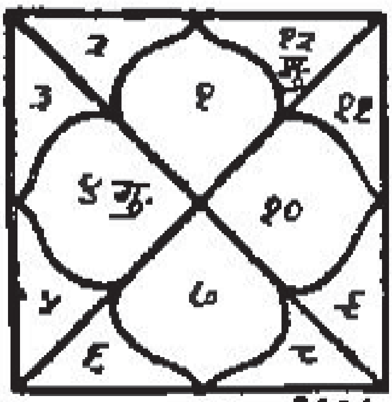

१६०७

(३५) गुरु तथा शुक्र उच्च राशिस्थ होकर केन्द्र अथवा त्रिकोण में बैठे हों, तो ऐसा जातक राजा अथवा राजमंत्री होता है।

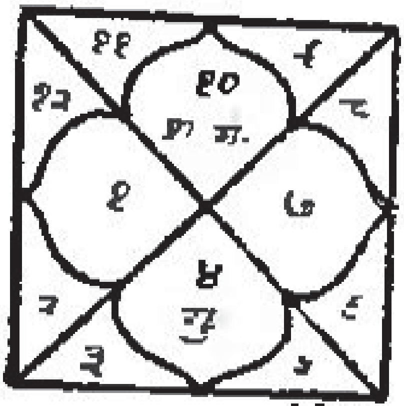

१९०८

(३६) पापग्रह लग्न में हो और उस पर कर्क के गुरु की दृष्टि पड़ रही हो, तो ऐसा व्यक्ति बड़ा धनी तथा यशस्वी राजा अथवा राजा के समान होता है।

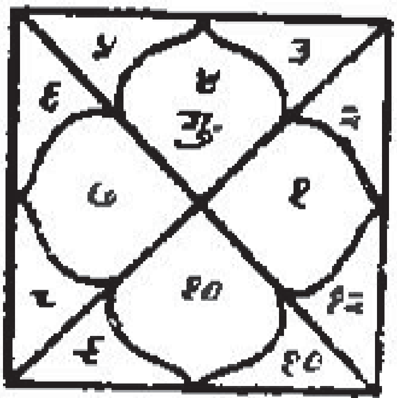

१९०९

(३७) गुरु मकर राशि के अतिरिक्त किसी और लग्न में बैठा हो अथवा कर्क राशिगत होकर कर्क के नवांश में हो तो जातक राजा होता है।

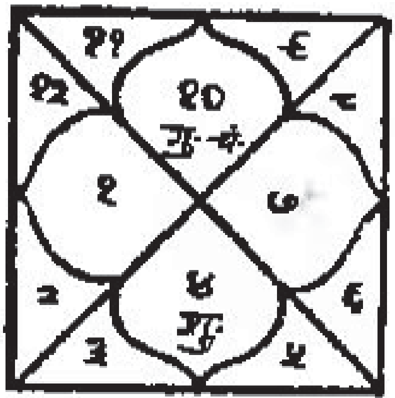

१९१०

(३८) गुरु चन्द्रमा के साथ केन्द्र में बैठा हो तथा उस पर शुक्र की दृष्टि हो एवं कोई ग्रह नीच का न हो तो ऐसा जातक यशस्वी राजा होता है।

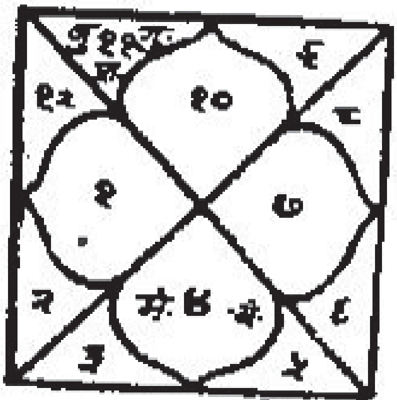

१९११

(३९) द्वितीय भाव में बुध, शुक्र और गुरु बैठे हों तथा सप्तम भाव में मंगल और चन्द्रमा हों, तो ऐसा व्यक्ति शत्रुजयी एवं अत्यन्त प्रतापी राजा होता है।

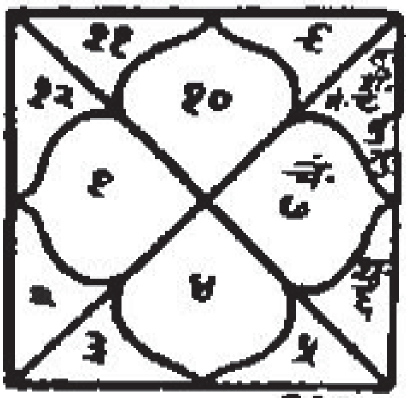

१९१२

(४०) शुक्र नवम भाव में हो, चन्द्रमा दशम भाव में हो तथा अन्य सभी ग्रह एकादश भाव में हों तो ऐसा जातक राजा होता है।

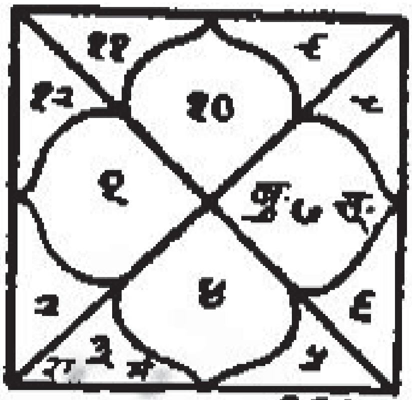

१९१३

(४१) राहु तथा मंगल षष्ठ भाव में हों तथा बुध और सूर्य दशम भाव में हों, तो जातक राजा होता है।

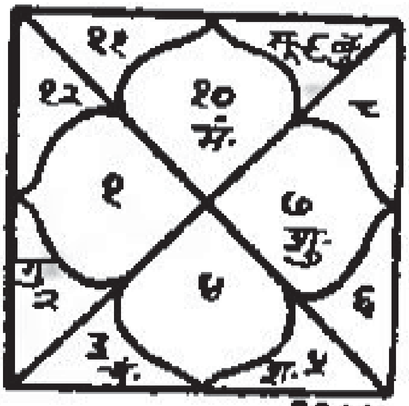

१९१४

(४२) वृष में बुध, मिथुन में चन्द्रमा, मकर में मंगल, सिंह में शनि, कन्या में सूर्य और बुध तथा तुला में शुक्र हो, तो जातक महाराजा होता है।

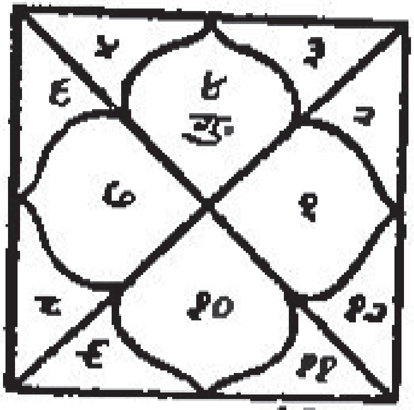

१९१५

(४३) बृहस्पति उच्च का होकर लग्न में बैठा हो तथा अन्य सभी गृह बुरे भी हों, तो भी जातक दीर्घायु, सेनापति, धनी, सुखी राजमान्य होता है।

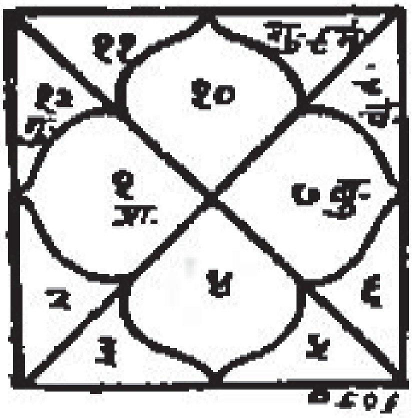

(४४) धनु का मंगल और शुक्र, मीन का वृहस्पति, तुला का बुध तथा नीच के शनि और चन्द्रमा हों, तो ऐसा जातक धनहीन राजा होता है।

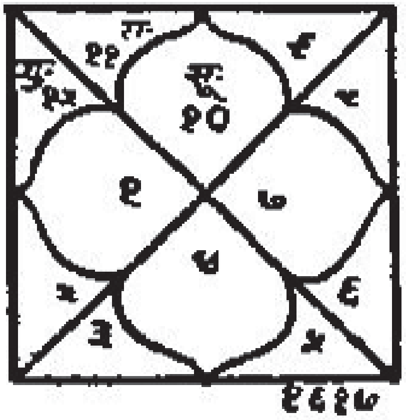

(४५) मीन का शुक्र अथवा बुध हो, द्वितीय भाव में राहु तथा लग्न में सूर्य हो तो जातक भोगी, दानी, यशस्वी, राजमान्य एवं पृथ्वी का स्वामी होता है।

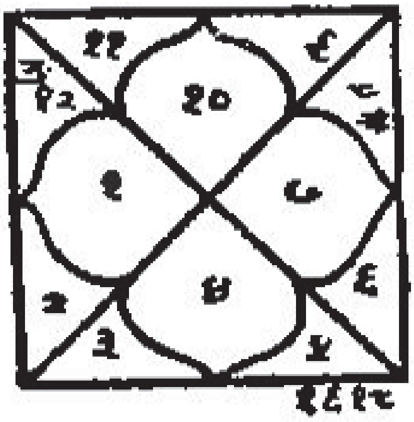

(४६) तृतीय भाव में गुरु तथा एकादश भाव में चन्द्रमा हो, तो जातक सब राजाओं में प्रसिद्ध राजा होता है।

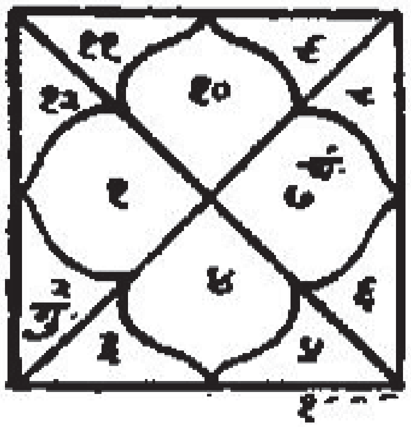

(४७) पंचम भाव में बुध तथा दशमभाव में चन्द्रमा हो, तो जातक अपने वंश का पालन करने वाला, बुद्धिमान्, जितेन्द्रिय तथा तपस्वी राजा होता है।

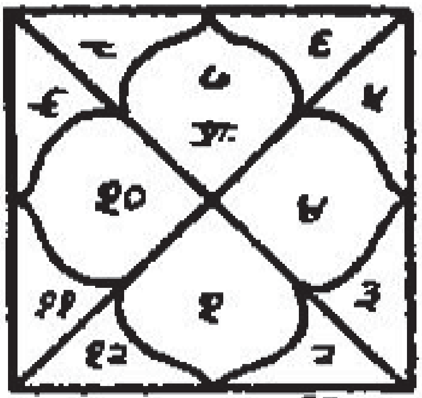

१६२०

(४८) तुला, धनु अथवा मीन राशि का शनि लग्न में स्थित हो, तो ऐसा जातक पृथ्वीपति (राजा) होता है।

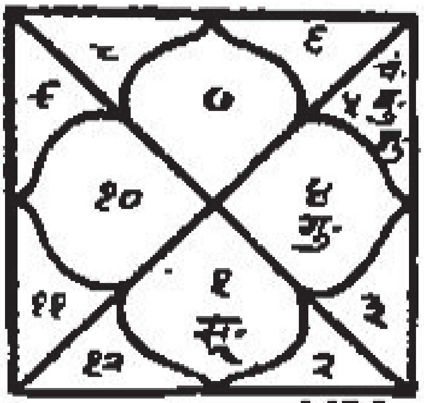

१६२१

(४९) कर्क में 'गुरु', एकादश भाव में चन्द्रमा, बुध और शुक्र तथा मेष राशि में सूर्य हो, तो जातक पृथ्वीपति होता है।

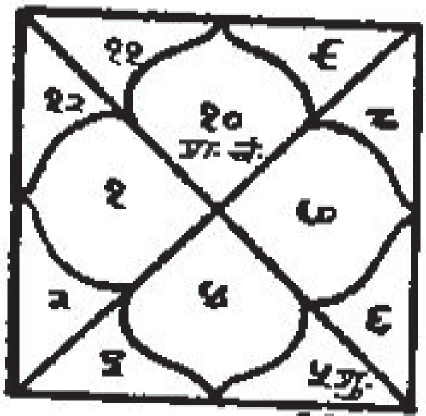

१६२२

(५०) लग्न में शनि और चन्द्रमा तथा अष्टम भाव में शुक्र हो, तो ऐसा जातक वेश्याप्रेमी मानी राजा होता है।

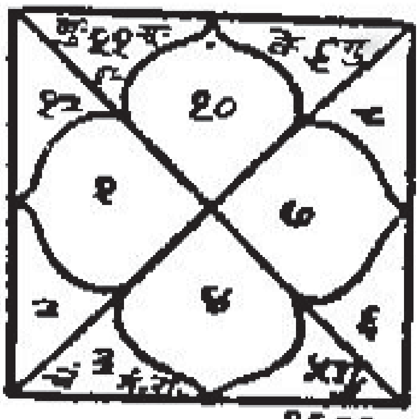

१६२३

सिंहासन-योग

षष्ठ, अष्टम, द्वितीय, तृतीय तथा द्वादश भाव में सभी ग्रह विद्यमान हों, तो ऐसा जातक राजसिंहासन पर बैठता है।

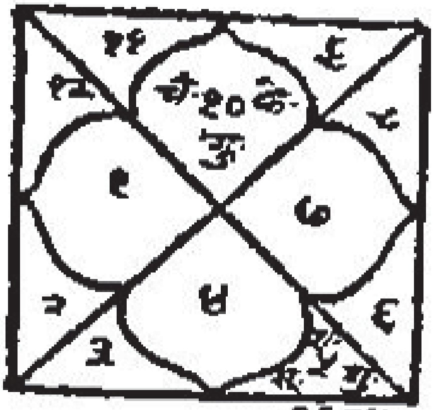

१६२४

ध्वज-योग

अष्टम भाव में पाप-ग्रह तथा लग्न में अन्य शुभ ग्रह हों, तो ऐसा जातक समाज का नेता होता है।

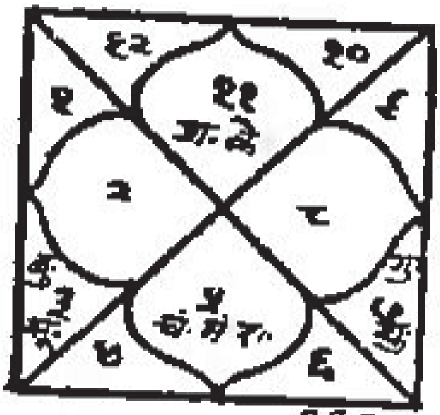

१६२५

हंस-योग

पंचम, नवम, सप्तम तथा लग्न—इन भावों में सभी ग्रह हों, तो ऐसा जातक अपने कुल को पालने वाला होता है।

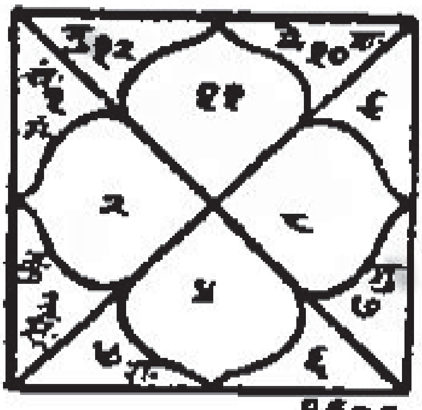

१६२६

चाप-योग

शुक्र तुला में, मंगल मेष में तथा गुरु स्वराशि पर स्थित हो, तो ऐसा जातक राजा होता है।

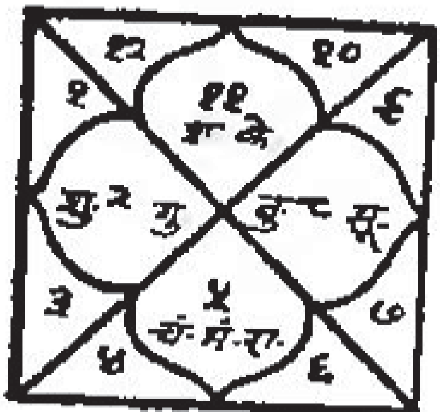

१६२७

प्रथम चतुःसार योग

यदि सभी ग्रह चारों केन्द्रों में स्थित हों तो ऐसा जातक महाधनी राजा होता है।

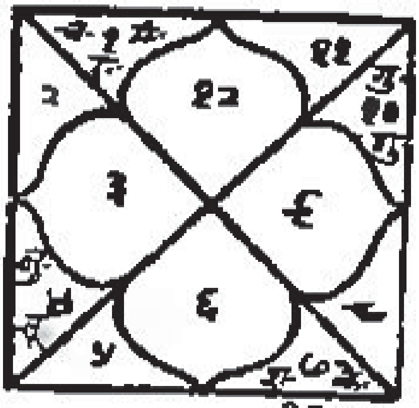
१६२८

द्वितीय चतुःसार योग

यदि सभी ग्रह मेष, कर्क, तुला तथा मकर इन चारों राशियों में स्थित हों, तो ऐसा जातक महाधनी राजा होता है।

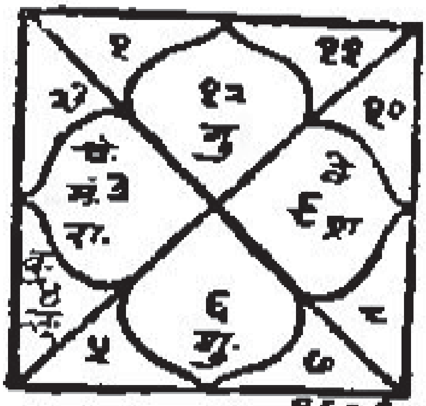
१६२९

दण्ड-योग

यदि सभी ग्रह कर्क, मिथुन, मीन, कन्या तथा धनु राशि में स्थित हों, तो ऐसा जातक राज्य-सिंहासन पर बैठता है।

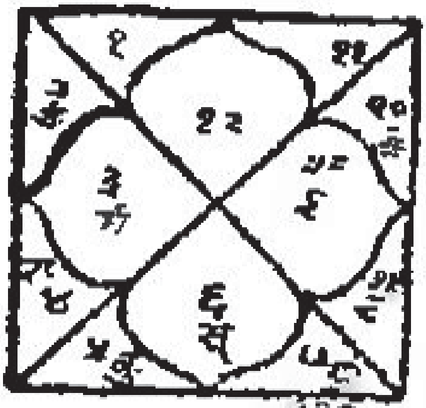
१६३०

वापी-योग

यदि प्रथम, द्वितीय तथा द्वादश भाव के अतिरिक्त अन्य सभी भावों में सभी ग्रहों की स्थिति हो तो ऐसा जातक अपने कुल का प्रधान, गुणी, धनी, प्रतापी, अत्यन्त धैर्यवान्, सुखी, प्रियवादी तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

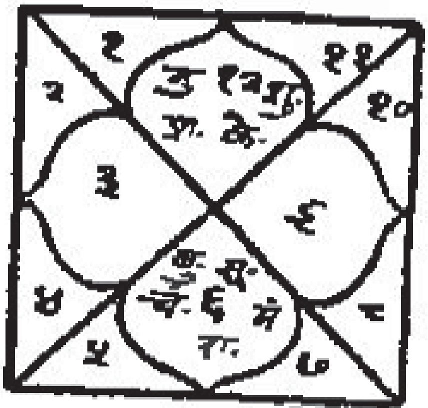
१६३१

कमी का योग

यदि सूर्यादि सातों ग्रह जन्म-कुण्डली के दशम तथा एकादश भाव में स्थित हों अथवा अन्य और सप्तम भाव में स्थित हों, तो नीच कुल में उत्पन्न जातक भी राजा होता है।

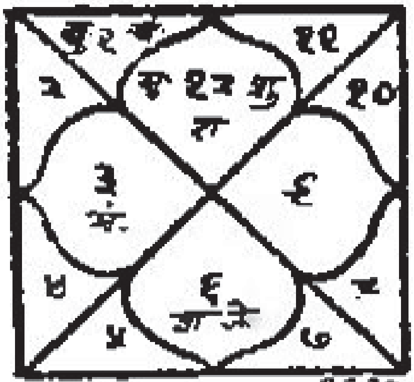

१६३२

अमर योग

यदि सभी पापग्रह केन्द्र में हों, अथवा सभी शुभ ग्रह केन्द्र में हों तो इन दोनों प्रकार से अमर योग बनता है। पापग्रहों के अमर योग में जन्म लेने वाला जातक क्रूर-स्वभावी राजा तथा शुभ ग्रहों के अमर योग में जन्म लेने वाला जातक सौम्य-स्वभावी राजा होता है।

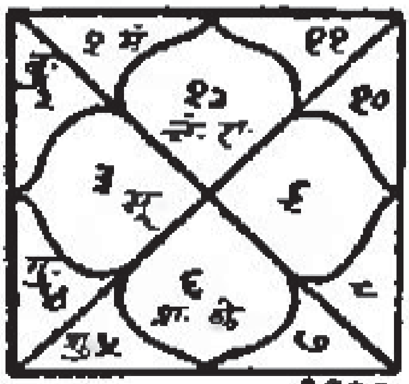

१६३३

एकावली योग

लग्न अथवा किसी भी भाव से आरम्भ करके क्रमशः सातभावों में सात ग्रह स्थित हों, तो ऐसा जातक महाराजा होता है।

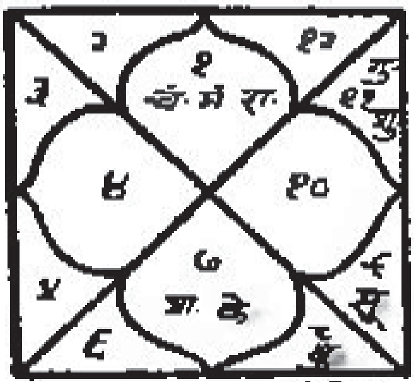

१६३४

द्वितीय हंस-योग

सभी ग्रह मेष, कुम्भ, धनु, तुला, मकर तथा वृश्चिक राशि में हों, तो ऐसा व्यक्ति राजा अथवा राजपूजित एवं सब प्रकार के ऐश्वर्यों का स्वामी होता है।

पंचधा मैत्री-चक्र

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बुध	शुक्र	शनि
अधिमित्र	चन्द्र मंगल	सूर्य बुध	सूर्य चन्द्र	शुक्र चन्द्र		बुध	
मित्र	गुरु	मंगल शुक्र	शनि		शनि		गुरु
सम	शुक्र		गुरु बुध	सूर्य मंगल	शुक्र चन्द्र मंगल	सूर्य चन्द्र शनि	बुध मंगल शुक्र
शत्रु	बुध	गुरु शनि	शुक्र	गुरु शनि		मंगल गुरु	
अधिशत्रु	शनि				बुध शुक्र		सूर्य चन्द्र

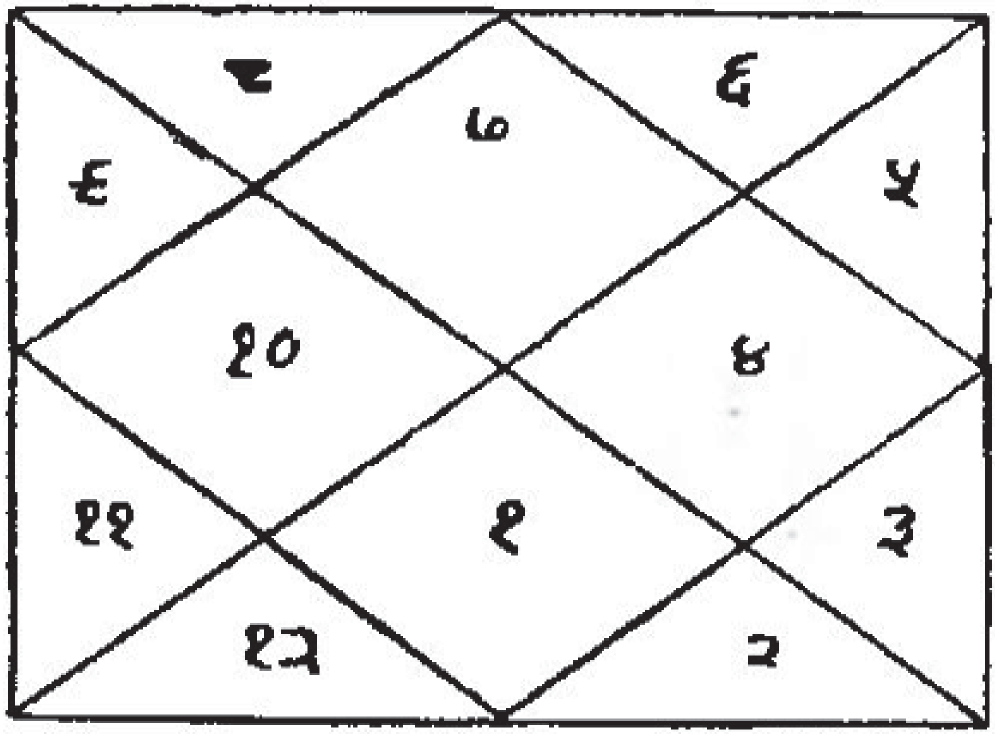

१६३५

सम्पूर्ण 1635 कुण्डलियों से युक्त

भृगु-संहिता फलित-दर्पण

(फलित-प्रकाश)

Bhrigu-Sanhita Phalit-Darpan

(Phalit-Prakash)